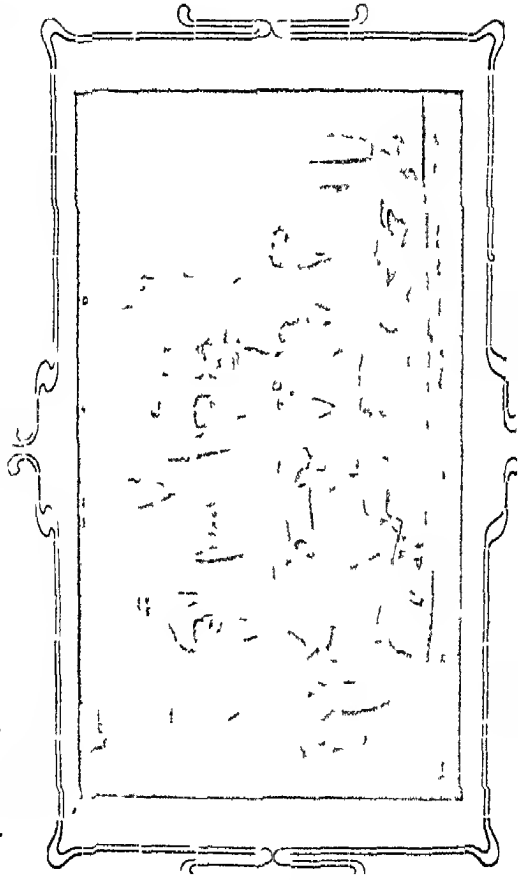


महाराष्ट्रकेशरी लो० मा० तिलकके वियोगमें हिन्दू देवी शोकमें ।

, गर्वना नरमें जेनी-मूरतसे प्राप्त)



दिगंबर जैन

THE DIGAMBAR JAIN.

नाना कलाभिरिविधेष्व तत्त्वैः सत्त्वोपदेशैस्सुगोपणामिः ।

सबोधयत्यत्रामद प्रवर्त्तताम्, दैगम्बरं जैन समाज-मात्रम् ॥

वर्ष १४ वॉ. ॥

वार संवत् २४४३. वार्ति ६. विक्रम सं० १९७३

अंक १ २

“ महावीराष्टकम् । ”

प्रभो ! महावीर ! सुधर्मनेतः ! संसारकल्याणकरमवीण !

हितोपदेष्टः ! सुसमस्तबन्धो ! तुभ्यं नमो नाथ ! सुशान्तये नः ॥ १ ॥

यः पूर्वमासीद्धि मरीचीनामा, पुराभितैः कर्मभिरादिषौत्रः ।

विद्या शरीरादि समग्रशिष्टो, गार्हस्थ्यसौख्येन युतः समन्तात् ॥ २ ॥

यं मान मोहादि विशिष्ट जीवं, व्यधात्पुस्ताद्भवितव्यतैव ।

यतोऽयमेशत्तमुदुःखभारः संसारपाथोधिपतौ पथात् ॥ ३ ॥

येनात्तमानादिकपायकेन चतुर्गतौ दुःखसमन्वितेन ॥

भ्रान्तं तदा सर्वं प्रदर्शनाय मानेन जीवस्य न दुर्गतिः का ? ॥ ४ ॥

यस्मै पुनः श्रेष्ठनरामरेन्द्राः नतीर्दधुः स्वोन्नतिकारकाय ॥

सम्यक्तरत्नस्य प्रधारकाय सत्त्वेषु मेर्त्रां प्रतिपादकाय ॥ ५ ॥

यस्मात् त्रिलोकस्थितवस्तुविज्ञात स्याद्वाग्दिव्यामृतवर्षिणो वै ॥

लब्धोपदेशान् ही सुभव्यजीवाः संसारतीरं व्यलभन्त हृष्टाः ॥ ६ ॥

यस्यार्हन्तो-दर्शनं लालसोपि स ददुरो देवगतिं ह्यवाय ॥

अन्ये न के तद्गुणदत्तचित्ता निश्रेयसं शीघ्रमवाप्नुयुर्वै ॥ ७ ॥

यस्मिन्ननन्ताः सुगुणाः समस्ताः न दृश्यते दोष लवस्तु कश्चित् ॥

आत्मे महावीरपुनामव्येये भूयान्मदीया चिरमेव भक्तिः ॥ ८ ॥

कुंवरलाल न्यायतीर्थः-अभिष्टाता

वाग्धर प्रांतीय दि० जैन विद्यालयस्य ।



Come, come, dear bewitching love, Union
Make us happy and gay with thy sweet smile,
And shower on us the blessings of prosperity
Oh! what are thy joys? Thou make the earth
heaven-like
One draught of thy nectar sweet will make us
immortal
Oh! crown our forehead with thy precious
divine glory
Digambara and Svetambars, in duty bound—
May stand together, as true sons of Lord Jina
No ill-feeling, no hatred shall abide them,
But lo peacefully they will walk hand in hand,
And pave a way to their long lost magnanimity
Oh! how gladly welcome be that day to Jains
Lord! my good will and benevolence be their
companions,
Happy may be they and sing songs of thy glory
Uns we are! True followers of Lord Vira!
Great warrior, who triumphed over mighty
Kamas,
Preached the true gospel of Truth & Peace
We will keep around and shake the slumber,
I will strive together to diffuse Jain canons
I how humanity is suffering of proud
materialism,
ut now we will fill it with wonder, at dazzling
powers of spiritualism
Waken we are and will be up and doing again,
And will stir the cold blood of our swooning
Mother
Again, stride she will towards, I progress and
hunker her sister,
In the construction of a new India
Hyderabadi (Sind)

K. P. JAIN.

પ્રેમ-પ્યાલા ।

દાદરા ।

વિયો જી વિયો પ્રેમ-પિયુષ વિયાલા ॥ પેદ ॥
હિન્દુ-મુસ્લમાન, જૈન-દશર્દ, વૃદ્ધ યુવા ઓર બાલા ।
સવ મિલિ વાલો મ્હાદ-પેમ રા, અજુદ અજબ નિગલા
વંદ-શિરોચ, ફૂટને પેવા, તુમ્હે કિયા મનવાલા ।

કેઈ જુગ વીસનજો આપ, બજટ ન હોય સંભાલા ॥૧॥
જેવે કુદશા હુદે તુમ્હારી, સો જાનત સવ ફાલા ।
તોટુ ન છોડત વાન આપની, સદેતે દુઃખ કરાલા ॥૩॥
ચડો! ચડો! અવ ચેત કામે તુમ, દેહો રાગ નિરાલા ।
પ્રેમ કરો ભપતકે પ્રેમી, સન્નિતિ હો તતવાલા ॥૪॥
'પ્રિયવર' એહી અવગર હૈ, સો કરો ન ટાલમટાલ ।
પેરિ દાન દેશ નરિં પાવે, જો યદ સમય નિકાલા ॥૫॥
'પ્રિય' ફૂલેરા.

“નૂતન વર્ષે શુભાશિષ”

ગાંધી.

અહા! ઓ જૈન સંતાને, મ્હળ “મહાવીરની ધારો”
મુખારક ધર્મ વૃત્તિથી, નૂતન શુભ વર્ષ પ્રગટાવો.
નજી હો માન માયાને, તથા તમ કોષ શત્રુને,
કરાતી મિત્ર થતિને, ધરી હો શાત થતિને.
બનો મૈ મુક્ત લાલચથી, સદા વૃષ્ટ્યા નિવારિને,
અહો સંતોષ આસીને, અરે ભવ કુપ્ત ટળવાને
નિહાળો ‘વીર’ના અથો, તથા તમ શાશ્વત સ્વને,
ધરી લઈ અંતરે તેને, પછી મુક્તિ સીડી પકડો.
અહા! રત કાર્ય કરવાના, રહેને શાશ્વત સન્માથી,
તથા સ્વાતંત્રી બનવાને, ન કરશો આત્મ બનોથી.
અવર આ જૈન જાતીની, તપાસો વસ્તીની સંખ્યા,
કમે કમ થાય દયમ ઝોછી, પૃથુ છું કારણે તેના.
પગથીયુ એક છે ઉત્કૃષ્ટ, તમારું શ્રેય થાવાના,
ન કરશો ‘વિક’ આધાના’, નથી લગ્નો કન્નેશનો
અવર નો જૈન જાતને, વિનતી નમ્ર છે મારી,
તમ્ને દુષ્કર્મની પાથી, બનો સ્તમભી ને ન્યાયી.
અરે મુજ કોમંતી અંદર, સુદર હો ધમ ને અતર,
મુખારક્યાદી મેજવત્રા “નવીન” શુભ વર્ષની અંદર.
અરે ના રેની મંડળમા, તથા મુજ જૈન ગાંધીમા
મુખારક્યાદી હો ધર્મે તથા શુભ રતન દોહનમા
પતાકા પ્રેમથી ધરને, અહા મુખારક્યાદી રહેને,
પાંત્રે ‘શુભ મિતિ’ રાખ્યાનો ‘નૂતન’ શુભ વર્ષ દીપાવો
અહા! મુજ નમ્ર આશિષો, દયાળુ કોમના બંધો,
પ્રિતેથી અંતરે ધરને, “મહાવીર” પ્રાર્થના કરને
શુભચિંતક વિદ્યાર્થી—
મુલચંદ કરતુરચંદ તડાટી-કાણેદ.



‘दिगंबर जैन’ को जैन समानकी सेवा करते २
तेरह वर्ष बीन चुके हैं
नूतन वर्ष । और हम ही वक्त से यह
चौदहवें वर्षमें प्रवेश करता

हैं । गत वर्षमें सौदुनिक वैमनस्य आदिके कार
णसे न तो हम सचित्र खास अंक प्रकट कर
सके थे और न छह मास तक अंक भी निकाल
सके थे इस लिये ६ अंक निकाल कर अर्ध
वर्षका ही मूल्य वसूल किया गया था ।
और वर्षका प्रारम्भ तो वीर निर्वाण स्वतन्त्र
प्रारम्भसे ही होना चाहिये । इस लिये हम
अगले १४ वा वर्ष गिना जायगा ।

* * *

गत आठ वर्षसे बड़ा भारी खर्च करके वर्षके

प्रारम्भमें हम सचित्र वि

विशेषांक । शेषांक प्रकट करते हैं ।

जिसमें सिर्फ गत वर्ष

विशेषांक नहीं प्रकट कर सके थे जिसके
कारण पाठकोंको विदित ही है परतु हर्ष है
कि फिर इस वर्ष अपने पाठकोंकी सेवामें यह
सचित्र विशेषांक समर्पण कर सके हैं । इस
अंकके ११२ पृष्ठोंमें संस्कृत, हिन्दी, गुजराती,
मराठी और अंगरेजी ऐसी पाब भाषाके अलग-
३६ लेख और कविताओंका संग्रह है
जिनके विषय विषय-सूचीसे मालूम ही होंगे ।
इस बार धार्मिक सामाजिक विषयोंके अतिरिक्त

सामाजिक उपन्यास भी हैं । अंगरेजी लेखोंमें
मि० हवर्टन वोरन लटनका कर्म (Karma)
विषयक तथा मि० मणिलाल उदानीका जैन
श्रेष्ठपुत्रोंका कर्तव्य (Duties of Jain Gra-
ndsons) ये दो लेख हर एक अंगरेजी पढ़े लिखे
जैन आँनको पढ़ने और मनन करने योग्य
हैं । इस बारके विशेषांकमें कुल ३८ चित्रोंमें
६ पृष्ठके २६ रंगीन चित्र ऐसे प्रकट कर
सके हैं जैसे कि आज तक किसी भी पत्रमें
नहीं प्रकट हुए हैं । बूरे छवियोंका नर्भमे क्या
१ बूरे फल भोगना पड़ता है उसका दृश्य
इन चित्रोंमें है । और चित्रोंके पीछे उनका
परिचय भी है । सभी चित्रोंका परिचय भी अलग
दिया गया है । सारांश कि चित्रोंके वशोक
वनने आदि कारणोंसे यह विशेषांक प्रकट होनेमें
त्रिलम्ब हो गया है । तौ भी यह अंक देखनेसे
पाठकोंको बिलम्बका कारण समझमें आ सकेगा ।

स्थानाभावसे हम कई लेख इस अंकमें प्रकट
नहीं कर सके हैं वे क्रमशः आगामी अंकोंमें प्रकट
होंगे और जिन २ लेखकोंने अपना अमूल्य
समय खर्च करके लेख भेजनेकी उदारता दिख-
लाई है उसके लिये उनके हम आभारी हैं ।

* * *

१२ वर्षसे हम अपने पाठकोंको सचित्र
तिथिदर्पण भेंट करते हैं

तिथि दर्पण । उसी मासिक इस वर्ष
भी वीर निर्वाण सप्त

२४८७ का जैन तिथिदर्पण इस अंकके साथमें
अलग बाटा गया है । इस बार विशेषता यह
है कि तिथियोंके राने ऐसे रक्खे गये हैं कि

गुजरात और हिंदुस्थानके सभी जैन भाईयोंको यह उपयोगी होगा। तिथिदर्पणके साथ २ हरएक वर्ष हम किसी न किसी प्रखर दानी या विद्वान्का चित्र प्रकट करते हैं उसी मुवाफिक इसवार सुप्रसिद्ध दानी और बम्बईकी दि० जैन समानके मुखिया सेठ गुरुमुखराय सुखानंदजीका चित्र प्रकट किया है। आपकी दान प्रणाली समानसे छिपी नहीं है। आपका सचित्र जीवन वृत्तांत हम पांच वर्ष पर प्रकट कर चुके हैं। अभी ही बम्बईमें तीन चार लाख रुपये खर्च करके बड़ी भारी धर्मशाला आपने तैयार करवाई है और जिसका मुहूर्त शीघ्रही होनेवाला है। बम्बईमें भूलेश्वर पर नया मंदिरका स्थापित होना आपकी उदारता और आपके ही परिश्रमका फल है। और करीब एक लाख रुपये खर्च करके फिर इसी मंदिरको शिखरबंद बना देनेकी भी आपकी पूर्ण अभिलाषा प्रकट हो चुकी है। अब हम सेठ सुखानंदजीसे एक सूचना यह भी करते हैं कि दूसरे दानोंके साथ २ बम्बईमें एक जैन व्यापारिक विद्यालयकी बड़ी भारी आवश्यकता है। क्या ही अच्छा हो यदि आप लाख दो लाख रुपये लगा कर बम्बईमें एक व्यापारिक विद्यालय ऐसा खोल देवे कि जिसमें व्या० विद्यालयके साथ २ धार्मिक शिक्षा भी दी जा सके।

* * *

कई वर हम लिख चुके हैं और फिर भी याद दिलाने हैं कि जैन संवत्। वही खाने, पत्रव्यवहार आदिमें अपना जैन संवत् अर्थात् वीर निर्वाण संवत् २४४७

लिखना न भूलें सभी संवत्तोसे हमारा संवत् पुराना है। और इसके लिखनेसे हमारे अंतिम तीर्थंकर श्री महावीर स्वामीको निर्वाण हुए कितने वर्ष व्यतीत हुए यह नित्य स्मरणमें रहता है। इसी लिये तथा जैन जातिकी गौरवताके लिये भी इस संवत्के प्रचार करनेकी परम आवश्यकता है। हर्ष है कि हमारे प्रयाससे मुंबई, बडौघा, अहमदाबाद आदिके गुजराती पंचांगकार अपने पंचांगमें वीर संवत् तथा दि० जैन त्यौहार प्रकट करते हैं जिससे अनेक भाई भी हमारे जैन संवत् तथा दि० जैन त्यौहारोंसे परिचित होते हैं।

* * *

कई दिनोंके आन्दोलनके बाद पं० घनालालजी के अद्वैत परिश्रमसे अखिल खंडेलवाल ल भारतवर्षीय दि० जैन महासभा। खंडेलवाल महासभा स्थापित हो चुकी और

उसका प्रथम अधिवेशन भी सेठ लालचंदजी सेठोंके सभापतित्वमें कलकत्तेमें सफलताके साथ हो गया है। यह तो निःसंशय है कि जो कार्य महासभा और प्रांतिक सभा नहीं कर सकती है वह कार्य जातीय सभा आसानीसे कर सकती है। क्योंकि जातीय सभा हरएक प्रस्ताव तुरंत ही अमलमें ला सकती है। इसके कितनेक प्रस्ताव महत्वके हैं जिनमें विवाह समय लड़केकी उम्र कमसेकम १५ और लड़कीकी ११ वर्षकी ठहराई है, परंतु हमारे ख्यालसे लड़कीकी १५ और लड़केकी उम्र १८ वर्षकी विवाहके समय कमसेकम होनी चाहिये।

जब कि दोनों योग्य वयके होते हैं और सामान्य विद्या संपादन भी कर सकते हैं । सगाईके समय लड़कीकी उम्र कमसेकम ९ वर्षकी रखी है वह भी ११ वर्ष होनी चाहिये । कम उम्रमें सगाई कर देनेसे अनेक अनिष्ट परिणाम होते हैं । २० वर्ष तककी उम्र वालेका नुकसान करना इसमें भी ४५ वर्ष कमसेकम रखना चाहिये । विधवा विवाह करनेवाले उद्यमालको जातिच्युत किये हैं यह योग्य ही है परन्तु उनका मंदिर व्यवहार भी बंद करना ठीक नहीं है । मंदिरके दर्शन तो सभी कर सकते हैं । महासभाकी ओरसे खंडेलवाल 'जैन हितेच्छु' पाक्षिक पत्र प्रकट हो कर हर एक खंडेलवाल पंचायतीकी मुफ्त भेजा जाने वाला है यह जान कर अतीव आनंद हुआ है । महासभाके कार्यकर्तागण सगाई, विवाह तथा नुकतेके प्रस्तावको अपने हर एक ग्राम और नगरमें अमलमें लानेके लिये वर्ष भर जीजानसे प्रयत्न करेंगे और आगामी वर्षके अधिवेशनमें इन प्रस्तावोंको हमारी उपरोक्त सूचनानुसार आगे बढ़ावेंगे ऐसी हमें पूर्ण उम्मेद है । विवाहके स्वर्चोंको कम करनेकी भी खास आवश्यकता है ।

* * *

जबसे हमारी भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभाका कार्य लाला भगवानदासजी बड़नगरके मंत्रीत्वमें आया है तबसे महासभामें उसको महासभा कहने योग्य कार्य उत्तरोत्तर होने लगे हैं । महासभाका

अधिवेशन गत साल अजमेरमें हुआ था और इस वर्ष कानपुरमें ता० १-२-३ अप्रैलको बड़े समारोहके साथ होगा । इस बार महासभामें एक अपूर्व नवीनता होनेवाली है वह यह है कि महासभाके साथ २ वहां जैन साहित्य प्रदर्शन करनेका निश्चित हुआ है । इस प्रदर्शनमें अनेक हस्त लिखित ताडपत्रके ग्रंथ, शिलालेख, प्राचीन जैन चित्र, अनेक भाषाके प्राचीन जैन ग्रंथ आदि सारे हिंदुस्थानमेंसे समग्र करके दिखाये जायेंगे । प्रदर्शनके मंत्री वेधराज प० कनैयालालजी, जैन औषधालय कानपुर हैं । आप प्रदर्शनको उपयोगी बनानेके लिये खूब परिश्रम कर रहे हैं । आरामके जैन सिद्धांत भवनसे सत्र प्राचीन जैन साहित्य वहां लाकर दिखाया जायगा । जहां २ प्राचीन जैन शास्त्र, शिलालेख, चित्र आदि हों वहांके भाई इस प्रदर्शनमें अवश्य भेजनेका प्रबंध करें तथा महासभाकी इस बैठकमें पधारनेकी तैयारी करें । इस बारका अधिवेशन अपूर्व ही होगा ।

* * *

सभी प्रांतिक सभाओंमें सबसे प्रथम बम्बई दि० जैन प्रांतिक सभाकी स्थापना स्वर्गीय पं० गोपालदासजी वैरध्या, स्व० सेठ भाणेशचंद्रजी, पं० घन्नालालजी, सेठ हीराचंद नेमचंद्रजी आदिके प्रयत्नसे हुई थी और उसको २० वर्ष हो चुके हैं । बहुत करके यह सभा प्रत्येक वर्ष अपना वार्षिक अधिवेशन अलग २ स्थानपर करती है । गत वर्षका अधिवेशन पावागढ़जी सिद्धेश्वर पर हुआ था । और इस वर्ष यह

सभा ।

करके भारतीय प्रजा पर उपकार कर रहे हैं । परन्तु इसके साथ २ वर्णाश्रमात्मक धर्मसे विरुद्ध स्पर्शास्पर्श भेदको मिटानेके उद्देश्यसे उच्च जातिके साथ १ नीच अस्पर्श जाति वालेको भी भरती करनेका आदेश करते हैं इसका समा विरोध करती है और प्रार्थना करती है कि धर्मरक्षार्थ अस्पर्श जातिको शामिल न कर उनका जूदा प्रवन्ध करें ।

अतीव शोकजनक मृत्यु—यास्टर सुन्दरलालजी बैनाडा झालरापाटन सीटिकी अतीव शोकजनक मृत्यु सिर्फ ४९ वर्षकी आयुमें यौव वय १२ को हो गई । आप हिंदी संस्कृत और जैन साहित्यके अच्छे जानकार थे । आपकी जाति सेवा और धर्म सेवा अपार थी । बम्बईमें तीर्थक्षेत्र कमीटिकी स्थापनाके समग काम जमाने वाले आप ही थे, सेठ विनोदीराम लालचंदजी वाले आपकी सहायता और सूचनासे अनेक धार्मिक कार्य कर रहे थे । नित्य आप कई बालकोंको विना फीस पढ़ाते थे । झालरापाटनकी सभी जैन संस्थाओंके आप परम सहायक थे । सांगंश—आपके विद्योगसे जैन जातिको और खास करके झालरापाटनकी जनताको एक जाति सेवककी अतीव कमी हुई है । आपकी आत्माको शान्ति लाभ हो ।

झालरापाटन-राज्य की ओरसे फिर जीव हिंसा दो वर्षसे प्रारंभ हुई है । उसको बन्द करानेके लिये सेठ लालचंदजीकी अतीव परिश्रम करना चाहिये ।

जातिसेवाका अवसर—देहलीसे सभी बड़ी २ यात्रा करनेके लिये ब्र० शीतलप्रसादजीके साथ ३००-४०० आदमियोंका एक संघ स्पेशल ट्रेन द्वारा ता० १४ जनवरीको रवाना होगा इनलिये जहां २ यह संघ सुकाम करे वहाके भाइयोंका फर्म है कि संघकी यथाशक्ति सेवा करे और ब्रह्मचारीजीके उपदेशका भी लाभ लेवें ।

रेशंदीगिरी—मे वार्षिक मेला हो गया । १० हजार यात्री हुए थे । और गोलापूर्व दि० जैन समाका वार्षिकोत्सव हुआ था जिसमें पं० गणेशप्रसादजी वर्णी खास पधारे थे और करीब ८००) का चंदा जातिय विद्यालय स्थापित करनेको हो गया तथा सत्कर्० दि० जैन पाठशाला सागरका उत्सव होकर उसको भी करीब २००००)की सहायता मिली थी । पं० मुन्नालाल राधिकीयका प्रयास अत्युत्तम था ।

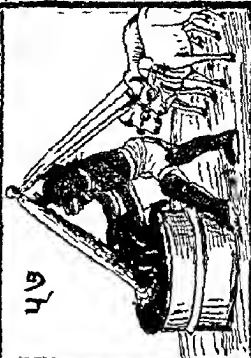
सहायता—रा० बा० सर सेठ हुक्मचंदजीने अपनी पुत्री ताराबाईके विवाहकी खुशामें ५०) दिगंबर जैनको सहायतार्थ भेजे हैं वे धन्यवाद पूर्वक स्वीकार करते हैं ।

नई केशर ।

भाव घटाया है—

नई स्वदेशी पवित्र काशमीरी केशर । शी मंदिरोंमें बर्तन योग्य है । काशमीरसे नई फसलकी केशर आ गई है । मूल्य भी घटाया गया है । अ द्य मगाईये । मूल्य १।=) तोल ।

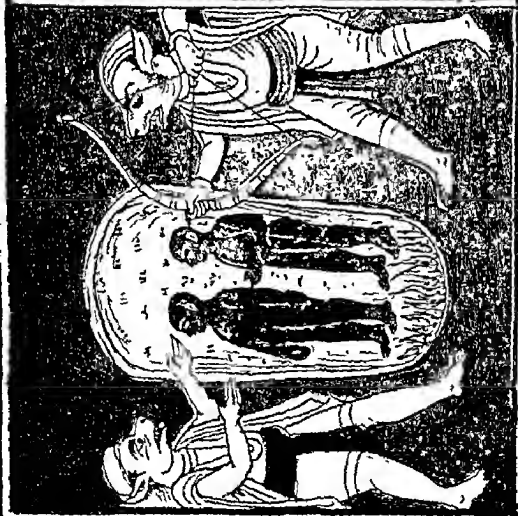
सैनेजर—दि० जैन पुस्तकालय—इतरत ।



५७



५६



॥ पचावनमाचित्रनादोहा ॥

धूम सखगायता घणा, भमरी केरे काज ॥ जय नरकमें उपन्यो, पाप
नगा असाज ॥ १ ॥ पाप किया छल लोकमें, मारयां भलका साट ॥
ज्ञानीका जया नहीं, अ (मूं) दीसे ठाठ ॥ २ ॥ तीर जोरथी मारता,
परमाधामी देव ॥ लोगवतुं ताइ कर्युं, पापकर्मने सेव ॥ ३ ॥

॥ पचावनमाचित्रनादोहा ॥

धूम सखगायता घणा, भमरी केरे काज ॥ जय नरकमें उपन्यो, पाप
नगा एसाज ॥ १ ॥ पाप किया छल लोकमें ॥ मान्यां भलका साट ॥
ज्ञानीका जाया नहीं, ए (मूं) दीसे ठाठ ॥ २ ॥ तीर जोरथी मारता,
परमाधामी देव ॥ लोगवतुं ताइ कर्युं, पापकर्मने सेव ॥ ३ ॥

छपनमा चित्रमा जतावेलां पापकर्म लोगववाना सतावनमा अंकना
चित्रना दोहा.

वांको राखी पग हाथथी, लीजारी स्वयमेव ॥ परमाधामी तेहने, दुः
प्रदिये अप्रमेय ॥ १ ॥ कर्त केउपर मूडिने, नाणे जहु करी क्रोध ॥
राडयो नाणे दुःखथी, बणी नरहे अंहि सूधि ॥ २ ॥ दुह्त कर्मनायो-
गथी, लोगवे नहीं तस लाग ॥ जेवां जय जांचे जरां, तेवां लो-
गवे लाग्य ॥ ३ ॥

छपनमा चित्रमा जतावेलां पापकर्म लोगववाना सतावनमा अंकना
चित्रना दोहा

वांको राखी पग हाथथी, लीजारी स्वयमेव ॥ परमाधामी तेहने, दुःख
दिये अप्रमेय ॥ १ ॥ कर्त केउपर मूडिने, नाणे बहु करि क्रोध ॥
राडयो नाणे दुःखथी बणी नरहे अंहि सूधि ॥ २ ॥ दुह्त कर्मना
योगथी, लोगवे नहीं तस लाग ॥ जेवां जीव बांधे खरां, तेवां लोग-
वे लाग्य ॥ ३ ॥

येरावजनाशेष्ट शिवयंष्टीसन ७-सूरतना गुलाज भाई मथा मोली-
यंष्टासुभाई-मारवाडी प्रथ्वीराज गुत्तमल मोडमयंष्टाजीबानीमल

ચોપનમાં અંકના ચિત્રના દોહા.

મદિરાવિણ ચાલે નહીં ॥ રાત દીવસ વલી પીધ ॥ પરમાધામી
તેહને, મુખમાં તરવાં દીધ ॥ ૧ ॥ દયા નહીં દિલમાં જરા, કરતા
પાપ અઘોર ॥ પરમાધામી તેહને, મારે છે બહુ જોર ॥ ૨ ॥

ચોપનમાં અંકના ચિત્રના દોહા.

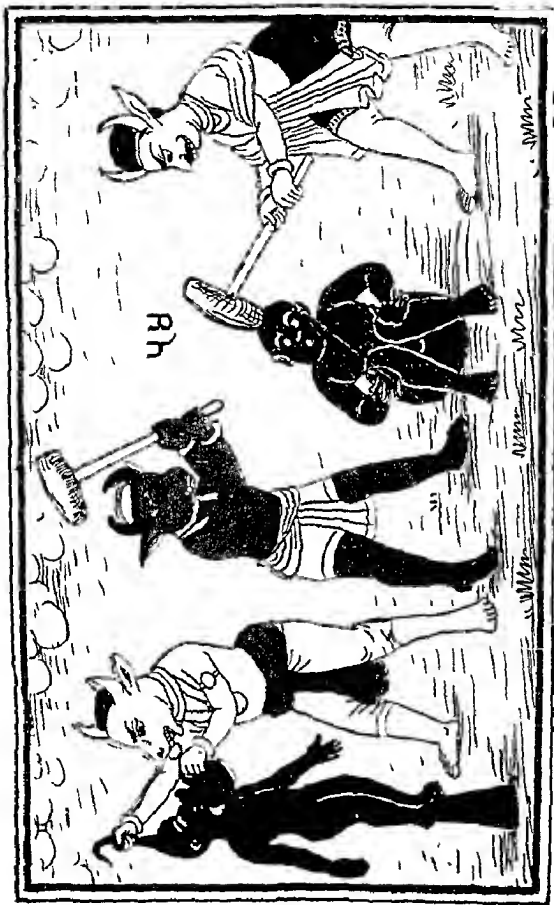
મદિરાવિણ ચાલે નહીં, રાત દીવસ વલી પીધ ॥ પરમાધામી
તેહને, મુખમાં તરવાં દીધ ॥ ૧ ॥ દયા નહીં દિલમાં જરા, ક-
રતા પાપ અઘોર ॥ પરમાધામી તેહને, મારે છે બહુ જોર ॥ ૨ ॥

ગુનેરબખ્ષર.

અમારી પાસેં જંબુદ્વીપના નકશા તેમાં પ્રથમ કરતાં સુધારાવધારા ચૌદ-
સપના મધબિંદુવા છલેશ્યા કાલચક્ર ચૌદરાજલોક તથા અઢી દ્વીપના
નકશામધ્યે અષ્ટમંગલિક રામરાવણ મરુદેવામાતાના ચિત્ર કર્યા
છે. ગ્નાનજાગીના નકશામધ્યે કાલચક્રને ચૌદરાજલોકના ચિત્ર
વધાર્યા છે. નારકીના ચિત્રના પાના પ્રથમ સોળ હતા હમણા વીશ
મધ્યે ચિત્ર વધાર્યા છે. કીમત પ્રથમની રૂ. ૧૧ બીજી મોટી પાના ૩૬
તેમાં ચિત્ર વધાર્યા છે. એક નવતત્ત્વનો નકશો સાથે આપવામાં આવશે.
કીમત રૂ. ૫ બીજા વૈરાગના, દેવલોકના ચિત્રો નૈયાર થાય છે.

ગુનેરબખ્ષર.

અમારી પાસેં જંબુદ્વીપના નકશા તેમાં પ્રથમ કરતાં સુધારાવધારા ચૌદસ-
પના મધબિંદુવા છલેશ્યા કાલચક્ર ચૌદરાજલોક તથા અઢી દ્વીપના
નકશામધ્યે અષ્ટમંગલિક રામરાવણ મરુદેવામાતાના ચિત્ર કર્યા છે.
ગ્નાનજાગીના નકશામધ્યે કાલચક્રને ચૌદરાજલોકના ચિત્ર વધા-
ર્યા છે. નારકીના ચિત્રના પાના પ્રથમ સોળ હતા હમણા વીશમ-
ધ્યે ચિત્ર વધાર્યા છે. કીમત પ્રથમની રૂ. ૧૧ બીજી મોટી પાના ૩૬
તેમાં ચિત્ર વધાર્યા છે. એક નવતત્ત્વનો નકશો સાથે આપવામાં આ-
વશે. કીમત રૂ. ૫ બીજા વૈરાગના, દેવલોકના ચિત્રો નૈયાર થાય છે.



चित्र-परिचय ।

(१) टाइटल पृष्ठ-पूज्यवर देशभक्त महात्मा गांधीजी भारतवर्षकी सेवा करनेके लिये हिंदू देवीकी आज्ञा मांगते हैं और हिंदू देवी आशीर्वाद दे रही हैं । म० गांधीजी अपने आफ्रिकाके पहिनावमें हैं । ऊपरसे स्व० देशभक्त म० गोखले महात्मा गांधीजी पर पुष्प वृष्टि कर रहे हैं । यह चित्र सूरैया चदसे जैनी मूर्तसे प्राप्त हुआ है ।

(२) हिंदू-देवी शोकमें-ऊपर परलोकवासी देशभक्त-दादाभाई, बटुदीन तेयवजी, विट्ठियम बैडरवर्न, गोखले, रोमेशचंद्र दत्त और फीरोजशाह हैं नीचेमें स्व० लो० तिलक हैं नीचे हिंदू देवी स्वराज्यकी झंडी लेकर शोकमें बैठी हैं । पासमें स्वराज्य मुकुट और सुधारका कायदा पड़ा है । हिंदू देवी शोकमें यही विचार कर रही हैं कि हिंदूकी जन्मसिद्ध हक कब मिलेगा । यह चित्र भी सूरैयाजीसे प्राप्त हुआ है ।

(३) जैन मित्रमंडल देहली-इस संस्थाका जन्म मिति भादो वदी ९ सं० १९७२ को हुआ था पांच वर्षके अल्पकालमें इस मंडलने अपने उद्देशानुसार इस प्रकार कार्य किया है ।

(१) इसने प्रथम ही पौष वदी २ के दिन जो रथयात्रा होती थी उसमें ठेलेंपर मनन उपादेशों द्वारा पब्लिक पर जैन धर्मका प्रचार किया ।

(२) यहां पर आये हुये पं० नरसिंहदेव शास्त्री आर्य समानोंने जैन धर्मपर झूठे आक्षेप लगा कर अन्य वर्गोंकी भांति चेलेंगरी धर्मकी दी उसको सुनकर मित्रमंडलके मेम्बरोंने शीघ्र चेलेंग मंजूर कर वृहत् शान्त्रार्थ करनेके

लिए आर्य समानको वाध्य किया और इस शास्त्रार्थमें दोनों समानोंके धुरंधर विद्वान पधारे हुये थे तौ भी जैन विद्वान न्यायालंकार पं० मन्खनलालजी शास्त्री द्वारा शास्त्रार्थ कराया जो कि बराबर छः दिन तक ईश्वर जगत्कर्ता, व सर्व सिद्धि पर लिखित शास्त्रार्थ हुवा जिसमें आर्य समानको बुरी तरह हार खानी पड़ी । इस विजयके उपलक्षमें पं० मन्खनलालजीको यहाँकी जैन पंचायतने वादी भक्तेशरीका पद देकर सम्मानित किया ।

(३) इस समाजी तरफसे जैन परोपकारी औपघाल्य व्यवहारी शीतलपकादनीके करकमलों द्वारा हुवा जिसने तीसरे साल महामारी (इन्फ्लुएंजा) के समय पर कई शाखाएं जगह २ पर स्थापित कर गरीबोंको भोजन दवा आदिका पूर्ण रूपसे प्रबंध किया था इसके अतिरिक्त इस संस्थाकी निम्न शाखामें कार्य कर रही हैं ।

(१) जैन तर्कशास्त्रिणी-इसमें प्रत्येक समाजका मनुष्य जैन धर्म संबंधी शंकाओंका समाधान कर सकता है ।

(२) जैन ट्रेड सोसाइटी-इसमें इस समय निम्न लिखित ६ ट्रेड निकल चुके हैं-मिथ्यातमोंविध्वंशार्क, घोर भ्रष्टाचार, जैन हितैषी भक्त संमेल, हितैषी गायन, तीर्थंकर दर्पण, देहली शास्त्रार्थ, पार्थपुराणकी वचनिका और ७ वा ट्रेड शीघ्र प्रकाशित होगा ।

(३) बर्द्धमान पब्लिक लाइब्रेरी ।

(४) दि० जैन कुमार सभा ।

उपरोक्त कार्योंमें लायब्रेरी और औपघाल्य चंदेकी कमीके कारण अभी बन्द हुये हैं, उनको देहलीके जैनियोंको मदद करके फिर चालू करने

श्रीमान्ने काशी स्याद्वाद पाठशालामें चार वर्ष सस्त्रुनका अध्ययन किया था और कुछ समय तक स्याद्वादवारिधि ५० गोपालदासजी वौरैयाके पास रह कर गोमटसारादि धर्म ग्रन्थोंका भी अध्ययन किया था । आपने अब तक १०-१५ शिष्योंको तय्यार किये हैं । अब ७-८ सालसे आप दक्षिण प्रातमें धर्म प्रचार कर रहे हैं और आपके शिष्य भी भिन्न २ प्रातोंमें धर्म प्रचार कर रहे हैं । दक्षिण देशमें धर्म जागृतिका यश श्रीमान्को है । आपके प्रयत्नसे ही म्हेसुरका जैन बोर्डिंग सेठ वर्द्धमानियाजी द्वारा चल रहा है । और आपकी कृपासे ही इस प्रातमें अनेक अनैन लोग भी जैन धर्मके विषयमें परिचित हुए हैं । आप व्याख्यान देनेमें अच्छी योग्यता रखते हैं आपसे जैन बोर्डिंग म्हेसुरके पतेसे पत्र व्यवहार हो सकता है ।

(३५) श्रीमान् सेठ घासीलालजी उज्जैन—आपके पिताका नाम सेठ हुक्मचंदजी था । आपका जन्म १९१२ में हुआ था । गवालियर प्रांतमें आप बड़े व्यापारी और दानी गिने जाते हैं । आपके दानकी सूची इस प्रकार है—स० १९५२ में १०००) खर्च करके श्रीगिर नारजीजी तलेटीमें धर्मशाला बनवाई । स० १९५१ में उज्जैन लूणमडीके मंदिर पर कूटश चढ़ाया उसमें ५५००) खर्च किये । स० १९६० में बडनगरमें विम्बप्रतिष्ठा ५००००) खर्च करके करवाई । स० १९७१ में उज्जैनमें २५०००) लगाकर एक आयुर्वेदी औषधालय खोल दिया है । तथा तारगानी, पावागढ़ आदि क्षेत्रोंमें भी धर्मशाला (कौठडी) बनवाई हैं । पहिले आप अफीमका व्यापार करते थे और

अभी कई वर्षोंसे रईका व्यापार है । आपके सुयोग्य पुत्र सेठ कल्याणमलजी बहुत ऊँसाही और धर्मप्रेमी है । हम यह आशा करते हैं कि आपका लक्ष विद्या दानकी तरफ झुक जावे और आपके हस्तसे बड़े २ स्थायी विद्यादान होवे और औद्योगिक-संस्थाएँ खुलें । हमारे बयोवृद्ध सेठजी हमारी इस प्रार्थना पर अवश्य ध्यान देंगे ऐसी पूर्ण उम्मेद है ।

(३६) सिवनीमें शास्त्रिय परिषद्—वीर स० २४४५ में सिवनीमें दि० जैन शास्त्रिय परिषदका अधिवेशन ५० भवस्त्र नलालजी शास्त्रके सभापतित्वमें हुआ था उस वक्तके अग्रगण्य पंडितों, श्रीमानों और खडेलवाल सभाके सभापति शेट गमीरमलजी पाठ्या आदिका यह ग्रूप फोटो खास भगा कर प्रकट किया गया है । खास २ महाशयोंकी नामावली चित्रके नीचे दी गई है ।

(३७) लाला रंजितसिंह जैन अग्रवाल B S C देहली—आपका जीवनचरित्र पृ० ८१ पर अग्र दिया गया है ।

(३८) उदैपुरमें त्यागी सम्मेलन—वीर सबत २४४५ में उदैपुर (मेवाड़) में भारत० दि० जैन महासभाका नैमित्तिक अधिवेशन लाला सोहनलालजी देहलीके सभापतित्वमें हुआ था उन वहा मुनि चंद्रसागरजी, ऐलक पन्नालालजी महाराज तथा ब्रह्मचारी शीतलप्रसादजी, ब० जानानंदजी, ब० भगीरथजी वर्णी, ब० ठाकुर-प्रसादजी, ब० छोटेलालजी, ब० जयचन्दजी, ब० चांदमलजी, ब० कु० दिग्विजयसिंहजी, ब० लहरीनावा आदि त्यागीगणोंका समुह पवारा था उनका यह सभा मंडपमें लिया हुआ ग्रूप फोटो है ।

सेठ पदमराजजीके व्या- ख्यानका कुछ अंश ।

नागपुरमें कौप्रके समयमें गन ता० २६ दि-म्बरको भारत जैन पोथीदिकठ कौन्फेरन्सकी चतुर्थ बैठक हुई थी जिसके सभापति सेठ पदमराज रानीबला (कठक्ता)ने महाराष्ट्राली व्याख्यान दिया था उसका कुछ अंश इस प्रकार है—

जैन समाज और उसकी पूर्वास्थिति ।

मान्यवर चान्चवो, मुझे यह बहनेकी कुछ विशेष आवश्यकता प्रतीत नहीं होती कि जैन धर्म तथा जैन समाज अपने अकाट्य सर्वतन्त्र उदार सिद्धांतों और आदर्शनीय पावन धर्मोंके आधार पर स्थित होनेके कारण एक समय संसारमें उच्चतम धर्म तथा समान माना गया था, हमारे ही सभदर्शी तीर्थंकरोंने प्राणमात्रको समभावसे देख सबसे प्रथम निरपेक्षतासे साम्यवाद तथा सत्यवादीकी घोषणा थी, उन्होंने अहिंसाकी परिभाषा “ प्रवृत्तयोगात् प्राणज्वपरोक्षणम् हिंसा ” निर्णीत की थी और “स्वार्थ” तथा परस्परके द्वेषको महानिंदनीय तथा त्याज्य प्रवाद धत्ता कर परोपकारी तथा निर्वैर होकर जीवन व्यतीत करना परमश्रेष्ठ ठहराते हुए अहिंसाको परम धर्म बताया था तभी तो उन देशतुदेवोंने अपनी धर्म शिक्षाकी समाओंमें नहीं इन्द्रादिको बैठनेकी आज्ञा दी थी वहां साधारणसे भावार्थण सुच्छसे सुच्छ प्राणी तकको भी बैठने और उन देश श्रवण तथा ग्रहण करनेका अधिकार दे रखा था इसीसे यह प्रत्यक्ष देख पड़ता है कि अपने अमृदयके समयमें समदर्शिता, निःस्वार्थ, निर्वैर, निर्दोष, अहिंसा और प्रवाद मूर्तमान हो

जैन समाजके अन्तर्गत विज्ञान के जिनके काण जैन समाजमें खोजप्रोत्त वंशुभावका प्रसर था और श्री अष्टरूपसे उसके घर विगजनी थी । उल्लेख गुणोंसे विभूषित होनेसे कोई किसीके उत्पत्ति पथमें बाधक न था जिससे निरपेक्ष प्रति निरर और विवेकमें अमिति उत्पत्ति होती जाती थी, निर नवीन अविष्कार होते थे जिनसे कला कौशलकी दिनोंदिन वृद्धि हो रही थी, वनित व्यापार, पटन पाठन, मन निर्यासन आदि सुख थे, कहां तक कहा जावे जातीय जीवनरूप वृक्ष उल्लेख साधनरूपी जल वायुकी अमुक्यत से सब प्रकार शांता प्रशस्तताय हराभा हो हल-हलकर फल फूलहा था, जैन समाजान्तर्गत ही महानुभाव इन्द्रभूतिगणवर गौतमस्वामी सम प्रबल उपनेष्टा, पुत्रप्राद पद्मबाहुस्वामी, प्रभाचंद्र, कुंद-कुंदाचार्य, उमास्वामी, अमितिगति, अरुल्लदेव, धनंजय, देवनंदी, वीरनंदी, सोमदेव, सुधर्म, नरचूस्वामी, यशोमद, संभूतिविजय, स्थूलपद, समंजस, दिगुन्गाचार्य, हेमचंद्र, हरिवद्रसुरि, हरिविजसुरिके समान उद्भूत तत्त्वदर्शी विद्वान तथा ग्रंथकार नाना शास्त्रोंके ज्ञाता, महाराज चंद्रगुप्त, सम्मति, विम्बसार, श्रेणिक, दधिकाहन, अशोकचंद्र, लक्षिक उदायन, शांतानिक, जम्बि-वर्धन, चंद्रप्रद्योत, प्रसेनचंद्र, प्रियचंद्र, कुमारपाल, सरसे नीतिनिपुण प्रभावस्तल पराक्रमी तथा प्रतापमान महाराजे, विजयपाल, वंशुपाल, विर-लनाह सरोखे धर्मवान, व्यवसायो श्रीमान् सेठ इमी जैन जाति हीके अंदर नमने थे ।

मेराङ्गाविवति महाराणा प्रतापसिंहके संकटके समयमें भी जिस देशप्रेमी धर्मवीर स्वामिमक्तिने

तिथीं आपको अवश्य देखनी पड़ेगी "श्रेयांसि बहु विद्वानां" की जन श्रुति मद्रासे चली आ रही है अतः विद्वान् अवश्य उद्दिष्ट होंगे परन्तु उद्योगशीलोंकी विनय अन्तर्गत अवश्य होती है इस पर आपको विश्वास करना चाहिये। साराज्य और स्वतंत्रताकी प्राप्तिके दो ही उपाय होते हैं एक तो शरीर-बल, दूसरे आत्मबल। हमें शरीर-बल प्रयोगकी आवश्यकता नहीं क्योंकि एक तो हमारे पास उसके साधन शस्त्रादि नहीं और यदि हों भी तो हम अहिंसाको मूलधर्म मानने वाले नि प्रयोजन शस्त्रोंके प्रयोगके अधिकारी नहीं, निरूपद्रव्यता सदैवसे हमारा भूषण रहा है, ऐसी दशामें हमारा दूसरा उपाय आत्मबल प्रयोगनीय है जिसके आधार पर हमें अहिंसाको सामने रखते हुए निरूपद्रव्यतासे शासकोंके विरुद्ध उपराम और असहयोगका प्रयोग करना चाहिये। हमें आपसके झगड़ोंके निवेष्टे अपने व्योवृद्ध निष्पक्ष और निष्पक्ष नेताओंको पंच करके निपटा लेना चाहिये। ऐसा करनेसे हमें न तो कर्षण की अधिक हानि सहना पड़ेगी, न सत्पर वैषम्य बड़ेगा, न अवशय ही सहना पड़ेगा न हमारा समय जो हृष और उपयोगी काम करनेमें व्यतीत कर सकते हैं नष्ट होगा। हमें पंचाशतकी परिपाटी ग्रहण करना योग्य है और अदालतोंसे सम्बन्ध छोड़ देना उचित होगा, इसी प्रकार गवर्नमेंटके दिये हुए टाइटलोंको छोड़ देना उचित होगा क्योंकि जिनके द्वारा हमारे लोकमनकी उपेक्षा होती है। हमारे निराशाच माद्योंका नक्षपात हो चुका है उनकी दी हुई पदवियोंसे अपनेको प्रतिष्ठित मानना हमारी

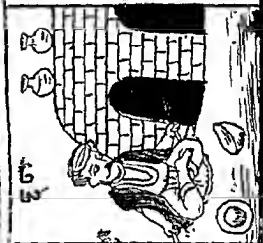
मर्यादाके विरुद्ध है।

असहयोगका प्रश्न बड़े स्वार्थ त्यागका है। देशकी स्वतंत्रता चाहने वालोंको बड़े २ उपद्रव सहने होंगे। आज भी जैनी टाइटलोंके कारण जनताका गला घोटना चाहते हैं। जो लोग राज्य-नैतिक क्षेत्रसे रोकते हैं वे जैन समाजके घोर शत्रु तो हैं ही परन्तु देशके भी वे शत्रु हैं। क्या भारतके जैनियोंका यह देश नहीं है? क्या यहाँका अन्न नष्ट जैनी नहीं लेते? जैनी मातृत्वानमे माग क्यों न लें—जैनियोंकी भी टाइटिड त्यागना होगा अदि।

हमें स्वदेशी वस्तुओंका व्यवहार और विदेशी वस्तुओंका बहिष्कार करना उचित है। इसके करनेसे हमारे देशके व्यापार और कलाकौशल भी वृद्धि होगी और हमारा जो घन विदेशोंको जा रहा है वह हमारे देशमें रहेगा।

हमारे बकील माद्योंको वकालतका काम छोड़ देना भी उचित है और हमको साथ ही साथ अपने बालकोंको स्कूल व बालबोसे हटाकर उनके दिये जातीय शिक्षाका प्रचलन कर देना उचित होगा क्योंकि वर्तमान शिक्षा हमारे जातीय जीवनके नाशका कारण है।

सक्षर यह कि हमें नृणांतक संभव हो विदेशियोंसे अहिंसात्मक असहयोग करना चाहिये। बांधवों! यदि आप असहयोगका प्रयोग करेंगे तो निश्चय जानिये कि क्या स्वतंत्रता ही में स्वायत्तकी प्राप्ति कर सकेंगे और आपका, आपके देश, जाति और धर्मका शीघ्र ही उत्थान होगा। बांधवों! मैं अन्नमें आने अन्नकाणसे आनेको धन्यवाद देकर मापणको समाप्त करता हूँ।



गोमठ अंकना चित्रमां जतावेलां पापकर्म लोभयवा पासठ अंकना
चित्रना दोहा.

पड्डां जांधिं भस्तके, नाजे घाणीमाय ॥ परमाधामी तेहने, पीले छे न दयाय ॥ १ ॥
ग्रांडे इरेने जहु, नाने मुदो मुजदेव ॥ परमाधामी तेहने, करुं भोगव्यनतनेव
असतठ नंजाम डरे निजे, तेना एह हवाल ॥ बिचारी जे चालो, ते थागो सुखियाल ॥ ३ ॥
चोसठ अंकना चित्रमां जतावेलां पापकर्म लोभयवा पासठ, अंकना चित्रना
॥ दोहा ॥

पकडी जंभे मस्तके, नाखे घाणीमाय ॥ परमाधामी तेहने, पीले छे न दयाय ॥ १ ॥
कोतबहु, कादो कादो मुजदेव ॥ परमाधामी तेहने, करुं भोगव्यनतनेव ॥ २ ॥
समजीने कामको जिको, तेना एह हवाल ॥ बिचारी जे चालो, ते थागो सुखियाल ॥ ३ ॥
छासठमा चित्रमां दर्शावेलां पापकर्म लोभयवाना सउसठमा अंकना

चित्रना दोहा.

रज्जुपाशधी बांधीने, अग्निचितामा नाखी ॥ आमासामां जेहुने, ताणे जला
राजी ॥ १ ॥ करे आकांश घणा तदा, घडी न पामे शर्म ॥ परमाधामी तेहने, लो-
भयवे दुष्कर्म ॥ २ ॥

वासठमा चित्रमां दर्शावेलां पापकर्म लोभयवाना सउसठमा अंकना
चित्रना दोहा.

रज्जुपाशधी बांधीने, अग्निचितामा नाखी ॥ आमासामां जेहुने, ताणे जला
राजी ॥ १ ॥ करे आकांश घणा तदा, घडी न पामे शर्म ॥ परमाधामी तेहने,
लोभयवे दुष्कर्म ॥ २ ॥

॥ असठमा चित्रमां दर्शावेलां पापकर्म लोभयवाना सउसठमा अंकना चित्रना दोहा
अतिप्रज्वलित चिताविषे, पड्डांना जे तेहेव ॥ अंधी दग्ध थचा थडी, रीच करे नतनेव
॥ १ ॥ अंशमाहे थि घुघवे, अग्निचिता विकला ॥ राखो ना जे जिंया डरी, हाथ क्यो
नारडी कला ॥ २ ॥ जोडो जोडो अम्हने, अहूत अखां अमे कर्म ॥ नेनुं दुःख अमे लोभयुं,
नजरियें हवे दुष्कर्म ॥ ३ ॥ मारमारतो अमे कहे, लज्जतिमां हूर ॥ परमा-
धामी तेहने, दुःखदियेलां कूर ॥ ४ ॥

असठमा चित्रमां दर्शावेलां पापकर्म लोभयवाना सउसठमा चित्रना दोहा.

अतिप्रज्वलित चिताविषे, पड्डांना जे तेहेव ॥ अंधी दग्ध थचा थडी, रीच करे नतनेव ॥ १ ॥
जोडो नाहे थि घुघवे, अग्निचिता विकला ॥ राखो ना जे जिंया डरी, हाथ क्यो मारकी कराला ॥ २ ॥
कादो कादो अम्हने, अहूत क्यो अम्हे कर्म ॥ नेनुं दुःख अमे लोभयुं, नकारियें हवे दुष्कर्म ॥ ३ ॥
मारमारतो अमे कहे, जा अग्निमां हूर ॥ परमाधामी तेहने, दुःखदियेलां कूर ॥ ४ ॥

अगमनमां अंकना चित्रमां यत्तावेला पापकर्म ते उगासाठमां लोगवे-
परस्त्रीने लोगवी, सुख लोगव्युं संसार ॥ मरीने नरके उपनो, त्या दुःख लोगवे
अपार ॥ १ ॥ जोहपुतळी धवावीने, जम लीडावे वाध ॥ मुको मुको मुखशी फळे,
कोनी नमणे आय ॥ २ ॥

अगमनमां अंकना चित्रमां यत्तावेला पापकर्म ते उगासाठमां लोगवे-
परस्त्रीने लोगवी, सुख लोगव्युं संसार ॥ मरीने नरके उपनो, त्या दुःख लोग-
वे अपार ॥ १ ॥ जोहपुतळी धवावीने, जम लीडावे वाध ॥ मुको मुको मुखशी
उहे, कोनी नमणे आय ॥ २ ॥

साठ अंकना चित्रमां दशाविला पापकर्म लोगवयाना-

एकसठमा अंकना चित्रना दोहा-

अग्निवितामानावीने, पगपर मुकी पाय ॥ परमाधामी तेहने, पकडी करदे
घाय ॥ १ ॥ अग्नि तस लोदा तणी, सली घाले मुखमाय ॥ वेदन अति घणी
लोगवे, करे रुदन दुःख पाय ॥ २ ॥ एक नरक जलो रही, परमाधामी देव ॥ वे
मुद्गर बेहु हाथ लही, मारे शिर ततुखेय ॥ ३ ॥

साठ अंकना चित्रमां दशाविला पापकर्म लोगवयाना

अंकना चित्रना दोहा-

अग्निवितामाना नावीने, पगपर मुकी पाय ॥ परमाधामी तेहने, पकडी करदे घाय
॥ १ ॥ अग्नि तस लोदा तणी, सली घाले मुखमाय ॥ वेदन अति घणी लोगवे,
करे रुदन दुःख पाय ॥ २ ॥ एक नरक जलो रही, परमाधामी देव ॥ वे मुद्गर
बेहु हाथ लही, मारे शिर ततुखेय ॥ ३ ॥

बासठमा अंकना चित्रमां दशाविला पापकर्म लोगवयाना त्रैसठमा

अंकना चित्रना दोहा-

तीव्रताप तपावीने, पकडी कपनी मांही ॥ नारवे बलवत्तरपणे, परमाधामी त्यां-
ही ॥ १ ॥ शिर सलग्गी गयु अग्निमां, हाथ हुताशनमांही ॥ क्रोश कर अति आक
रा, नचले तेनुं कांही ॥ २ ॥ जेयां ते कर्मां केल्यां, लोगवे तेया तेह ॥ कर्म धर्ममां
कोडमां, लागन होय ते रेह ॥ ३ ॥

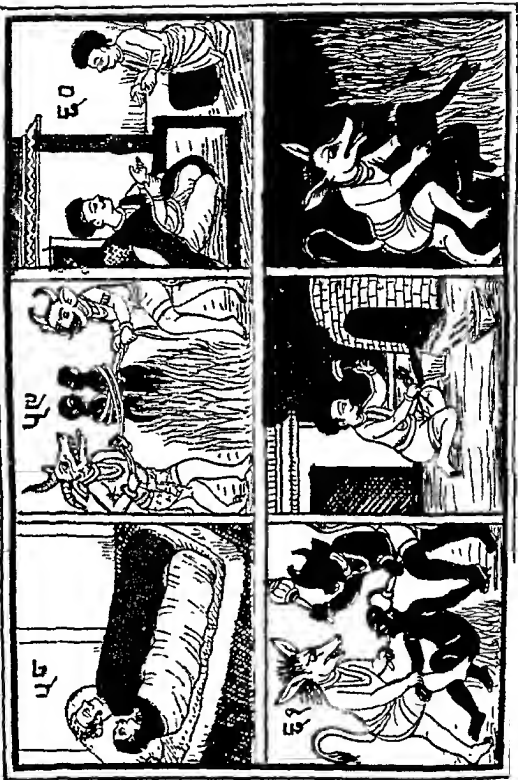
बासठमा अंकना चित्रमां दशाविला पापकर्म लोगवयाना

त्रैसठमा अंकना चित्रना दोहा-

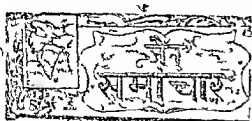
तीव्रताप तपावीने, पकडी कपनी मांही ॥ नाजे जलवत्तरपणे, परमाधामी
त्यांही ॥ १ ॥ शिर सलग्गी गयु अग्निमां, हाथ हुताशनमांही ॥ क्रोश कर
अति आकरा, नचले तेनुं कांही ॥ २ ॥ जेयां ते कर्मां केल्यां, लोगवे तेयां
तेह ॥ कर्म धर्ममां कोडमां, लागन होय ते रेह ॥ ३ ॥

गोटी भट्ट- नमीदासरतनली विधया शिव कुंजर लाईजे आपी छे-

नहिरंजणरपोपनमा चित्रमां छे-



तो उसे अपने को प्रतिष्ठित मानना हमारी धन्यवाद देकर मापणको सवाप्त करना है ।



स्या० महाविद्यालय-काशीका वार्षिकोत्सव गत ता० १८-१९को हिन्दू यूनिवर्सिटीके वाइस चान्सेलर और प्रोफेसर श्री० आनन्दशंकर धुवके सभापतित्वमें हुआ था। इसमें ब्र० शीतलप्रसादजी, प० देवकीनन्दनजी, बाबू निर्मलकुमारजी, प० नाथूरामजी प्रेमी, प० गणेशप्रसादजी वर्णा आदि पधरे थे। विद्यार्थियोंके संस्कृत और हिन्दीमें अच्छे व्याख्यान हुए थे तथा प्रो० धुवने अपने व्याख्यानमें कहा था कि वर्तमान वेदोंके पन्ने भी धर्म होना चाहिये। ऐतिहासिक दृष्टिसे 'जेनियों'के तीन तीर्थंकर प्रसिद्ध हैं-श्रीकृष्णके समयमें नेमनाथ, २८०० वर्ष हुए पार्थनाथ तथा बुद्धके समकालीन श्री महावीर स्वामी-इसके पूर्वके तीर्थंकरोंका हान्य बहुत ही पूर्वका है-जो एक प्राचीन जन न्युक्ति है। जैन ग्रन्थोंमें अहिंसा तत्व मग है यह अहिंसातत्व इन वेदोंमें पहलेका है। भारत एक प्राचीन देश व जाति है। एक ही प्रजा है एक ही भाषा है और एकसे ही रीति रिवाज है। एक ही धर्म था उसकी तीन शाखाएँ ब्राह्मण जैन और बौद्ध धर्म हैं। प्रो० धुवने आगे कहा कि स्याद्वाद प्रचारार्थ इस स्याद्वाद विद्यालयकी बहुत जरूरत थी। इसे अहिंसाका भी प्रचार करना चाहिये आदि। समाजमें ७०१ का चढ़ा हुआ तथा प० नाथूरामजी प्रेमीने १०१)

प्राकृत भाषामें परीक्षोत्तीर्ण छात्रको पारितोषिक देनेके लिये दिये। स्या० महाविद्यालयका कार्य और स्थान देख कर प्रो० धुव अति प्रसन्न हुए थे। साथ २ स्याद्वाद प्रचारिणी सभाका उत्सव प० देवकीनन्दनजीके सभापतित्वमें तथा अहिंसा प्रचारिणी सभाका उत्सव बाबू भगवानदास प० ए०के सभापतित्वमें हुआ था। सभापतिने अहिंसा धर्मकी बहुत प्रशंसा करके उसकी आवश्यकता प्रकट की थी। मुहम्मदअलीने कहा कि देशके लाभके लिये अहिंसा और दयाके प्रचारकी आवश्यकता है।

यात्रियोंको-तीर्थ क्षेत्र कमेटीके महामंत्री सूचित करते हैं कि जैनविद्वी, मूडविद्वी जानेके मार्गमें पानी काफी मिलता है इस लिये यात्री लोग खुशीके साथ प्यारे।

सुजानगढ़-में कन्या पाठशाला स्थापित हो गई।

देहली-में जैन अनाथाश्रमका वार्षिकोत्सव २३-२४ दिसम्बरको नदी हुआ परन्तु ता० ८-९ जनवरीको बहुत धूमधामसे होगा।

सम्मेलनशिरस्तरजी-पर बीसपची कोठीकी दूकानोंका मामला चला था उसकी अपील क्षेत्र भाईयोंने प्रोविन्सियल (विलायत) में की थी वहा अपील स्वीकृत हो गई। अर्थात् हाईकोर्टसे श्रेतावरी पर जो डीगरी हुई थी कायम रही। तथा इस मुकदमेंकी वजहसे श्रेतावरीका स० १८७२ का जो इकरारनामा राजा पालीगजके साथ था टूट गया।

हस्तिनापुर-में कार्तिकी मेले पर श्रेतावरी और दिगम्बरी भाईयोंकी एक संयुक्त

भिषेक ३० या ४० वर्षके बाद होता है और वह इस वर्ष माघ सुदी ९ से फाल्गुन वदी १ तक होगा । कारकल मूडविद्रीसे १० मील और मैंगलूर स्टेशनसे १६ मील है । पंचमीसे नित्य अनेक प्रकारकी विधि होम आदि होंगे और महामस्तकाभिषेक १२०८ कलशोंसे सुदी १९ को होगा । सबको ठहराने लिये कारकलकी जैन पंचायतने सब प्रकारका प्रबंध किया है । अंग्रेजीमें पत्र व्यवहार करनेका पंक्ति-शोनी मुखर, जैन पंचान, कारकल (दक्षिण केनेरा)

खंडेलवाल महासभा-कारकलमें भारत दि० जैन खंडेलवाल महासभाका प्रथम अधिवेशन मेलेके समयमें अतीव उत्साहके साथ भगसर वदी २-३-४ को झालरापाटन निवासी श्री० सेठ लालचंदजी (विनोदीराम बालचंदजी, के समापतित्वमें बड़े समारोहके साथ हो गया । दूर२के १५०० प्रतिष्ठित खंडेलवाल भाई उपस्थित हुए ये जिनमें २० व० सेठ कल्याणमलजी, २० व० सेठ कस्तूरचंदजी, कुंवर होरालालजी सेठ हुकमचंदजी, सेठ लक्ष्मणराजजी, सेठ राजमलजी नसीराबाद, श्री० घेवरचंदजी अलवर, चैनसुखजी सिवनी, सेठ केशरीमलजी गया, सेठ हरसुखजी सुसारी, सेठ खुशालचंदजी नांदगांव, पं० पन्नालालजी सोनी, खंडेलवाल कुलभूषण पं० पन्नालालजी महामंत्री आदि भी थे । समाकी ४ बैठकें हुई थीं जिनमें नित्य ३०६० आदमी उपस्थित होते थे । स्वागत क्रमेटीके अध्यक्ष सेठ कान्हादाके व्याख्यानके बाद सभापति सेठ लालचंदजीने बड़ा सारगर्भित व्याख्यान दिया था जिनमें समान

और धर्मोन्नतिकेलिये आपने कई नवीन बातें दर्शाई हैं (यह व्याख्यान आपके चित्र सहित पुस्तकाकार मौजूद है जो आष आनेका टिकट भेजनेसे सूत्रसे मुफ्त भेजा जायगा) सभामें कुल १७ प्रस्ताव पास हुए हैं जिनमें मुख्य २ ये हैं-(१) सभाके आधीनस्थ १९ प्रान्त नियत होना, (२) "खंडेलवाल जैन हितेच्छु" नामक पाक्षिक पत्र प्रकट करना और हरएक पंचायतिको मुफ्त भेजना, (३) कार्यव्यक्ष-सेठ लालचंदजी सभापति, सेठ लाञ्चंदजी पाटनी छिदवाडा उप सभापति, पं० पन्नालालजी महामंत्री, वा० माणिकचंदजी बेनाडा स० महामंत्री, हरएक प्रान्तके प्रांतिक मंत्री, सेठ राजमलजी आडिटर और सेठ जुहारमल मूलचंद खानांची नियत होना, (४) ७९ से १०१ मेम्बरोंकी प्रबंधक क्रमेटी बनाई जाना, ६३० वर्ष या इससे कम उमर वाले पुरुष या स्त्रीका मरणका नुक्ता न किया जाय, (६) लडकेका विवाह १९ वर्षसे पहले और फन्याका ११ वर्षसे पहले न करे तथा २५ वर्षसे ऊपर कोई भी विवाह न करे । (७) विधवा विवाहका आन्दोलन जैन धर्मसे सर्वथा नाजाइज है इसमें इसका पूर्ण विरोध (८) सभाके उद्देश्योंके प्रचारार्थ सहायक प्रौढ फंडका स्थापित होना (९) उदयलाल काशलीवालने कि सी अज्ञात जातीय विचवासे जैन विधिको बताकर विधवा विवाह किया है वह धर्म और जातिसे विरुद्ध होनेसे उनको जातिसे स्वारिज और मंदिर व्यवहार बंदके बमबई ख० पंचायतीके ठहरावका अनुमोदन (१०) पं० अर्जुन-

गल सेठीके जातिच्युत तथा मंदिर बन्दके तावका भी समर्थन, (११) लडकीकी सगाई २ वर्षसे कम ऊपरमें न की जाय, (१२) जैन हँतेपी, सत्योदय और जाति प्रबोधक मासिक 'नेनागमको' जुठा बतलाता है। और तीर्थकरों आचार्योंको गाड़ी तक देते हैं, इससे इन तीनों पत्र जैन पत्र न समझे जाय और इनका बहिष्कार किया जाय आदि ।

स्थायी फंडके लिये १००) के सो शेअर निकाले गये उनमें बहुत शेअर बिक गये तथा समापति सेठ लालचंदनीने ४०००) समाको और २५०) का अलग २ दान किया ।

डॉ० धामस-का बम्बई ही० गु० जैन बोर्डिङमें अच्छा स्वागत किया गया था और डॉ० साहबने जैन धर्म पर अपनी अटल श्रद्धा कैसे हुई उसका तथा विलायतमें जैन साहित्यके प्रचारका तथा जैनधर्मके उत्तम सिद्धांतोंका अच्छा वर्णन किया था । डॉ० सर साहबने प० रामप्रसादजीसे संस्कृतमें खूब धर्मचर्चा करके आनंद प्राप्त किया था । प्रवचनसार ग्रन्थका अंगरेजी अनुवाद आप तैयार करके यहां लाये हैं और संशोधन कराकर छपाना चाहते हैं ।

अमेरिका-के एलमन ए० लोकेने १००००) सिलिंग इस लिये दान किये हैं कि इसकी आमदनीसे स्कूलोंमें "पशुओंपर दया कैसे की जाय" यह सिखाया जाय ।

सर सेठ हकमचन्दजी-को इन्दौर नगरकी ओरसे 'राज्यभूषण' का पद मिला है ।

वीर पवनजयकी वीरता-श्री पवन-जय चौगुले (वेलगाम) दौडकी कई शतें-जीत

कर विलायतसे आये हैं और अभी बम्बईमें २६ नवम्बरको भाहिमसे ओवल तक ९॥ मीलकी पैदल दौडकी शर्त हुई थी जिसमें २५ दौडनेवालेमें २० तो भारतकी सेना विभागके थे तो भी भाई पवनजय सबसे प्रथम आये थे । चौगुलेने यह राह ५७ मिन्ट ११ सेकन्डमें पूर्ण की थी ।

देहलीसे त्रिवेद्यात्राका संच-ता० १४ नवम्बरको निकलनेवाला है । संचपति होंगे हुकमचन्द नगाधरमल जैन सर्राफ-देहली । आपने स्पेशल ट्रेन द्वारा दक्षिण उत्तर पूर्व पश्चिमकी बरीब सभी यात्राएं ३॥ महिनेमें करनेका प्रोग्राम प्रकट किया है । साथमें ब० शीतलप्रसादजी भी जानेकी खबर है । प्रथम गुजरात और दक्षिणकी यात्रा करके संच शिखरजी आदिको जायगा । हरएक यात्रीदीठ खर्च अनुमान १८०) लगाये गये हैं जिसमें १५०) प्रथम चलते समय देने पड़ेंगे ।

चातुर्मासका परिणाम-इसवार ब० शीतलप्रसादजीने देहलीमें चातुर्मास निर्गमन किया था वहां पांच महिनेमें क्या २ धर्मलाभ हुआ वह आपने 'जैनमित्र' में प्रकट किया है उसका संक्षेप इस प्रकार है-(१) सिवाय ४-५ घरोंमें प्रति दोवार प्रतिदिन नये घरमें भोजन हुआ जिससे हरएक घरवाले तथा उनके संबंधी स्त्री पुरुषोंने स्वाध्याय, जाप, दर्शन रात्रि भोजन त्याग, ताप्त चौपड़ त्याग, नशा त्याग, गाली त्याग, सामायिक, उपवास, एकासन आदि प्रतिज्ञाएं लीं (२) आत्मव्याप्ति समयसारका विशुद्ध अधिकार तक स्वाध्याय करनेसे १०-५

भाइयोंको अध्यात्मिक प्रेम पैदा हो गया ।
 (२) दो तीन अंग्रेजी पढे लिखे भाइयोंने हमसे
 तत्त्वार्थ तथा द्रव्य संग्रह अच्छी तरह समझ
 लिया (४) 'समाधिगतक' ग्रन्थकी टीका बनाई
 जो छपकर 'जैन मित्र' के १३०० ग्राहकोंको
 उपहारमें देहलीके भाई ही बांटेंगे (६) सरस्वति
 भंडारोंकी जांच करनेसे अनेक अप्रकट और
 प्राचीन ग्रन्थोंका पता लगा जिसकी सूची
 'जैन मित्र'में छपी है । (६) ला० जितसिंह
 जैनके निमित्तसे दो तीन बौद्ध पुस्तकोंका सुस्म-
 तासे पठन किया जिससे झलका कि बौद्ध मतके
 उपदेशोंमें जैन मतकी ही छाया है (७) सामायिक
 पाठ (अमितगति)के भाषा छंद बनाये जो
 छप चुका है और महावीरप्रसाद ठेकेदार धर्मपुरा
 देहलीसे मुफ्त मिलता है (८) सामायिक शैली
 स्थापित की गई जो मति चौदस हुआ करेगी
 (९) जैन संस्कृत व्यापारिक विद्यालय स्थापित
 हुआ जिसमें ५०० मासिक तथा २७०००
 का ध्रुव फंड हो गया (१०) श्राविकाशाला
 अमृतसरमें स्थापित की गई जिसमें २००० का
 ध्रुव फंड भी हो गया (११) कुतुबकी लाटके
 पास ६४ खंभेकी मसजिद है वहां एक या
 अनेक जैन मंदिर थे इसका साक्षात् प्रमाण
 छतों पर अंकित जैन प्रतिमाएं व खंभोंकी बना-
 वट है (१२) अशोकका स्तम्भ कोटला नामके
 स्थान पर खडसे उस पर जो लेख है उसका
 हाल मालूम हुआ इससे प्रकट हुआ कि उसमें
 सर्व शिक्षा जैन धर्मानुसार है तथा यह
 पूर्णतया प्रमाणित है कि जब यह स्तम्भ लिखा
 गया तब राजा अशोक जैन धर्मको माननेवाला

था । इस लेखका वर्णन पुस्तकाकार भी प्रकट
 होगा (१२) मालीवाड़ेके मंदिरमें महावीर
 स्वामीके भीलके भवसे अंत तकके अपूर्व
 चित्रोंका संग्रहरूप एक ग्रंथ मिला जिसके
 जीर्णोद्धारकी अतीव आवश्यकता है । भाइयोंने
 वचन भी दिया है (१४) बम्बई श्राविकाश्र-
 मके लिये मगनवाई आदिके आनेसे (८०००)
 का फंड कराया गया । (१५) न्या० महावि-
 द्यालय काशीके लिये १०३० की सहायता मिली
 तथा हस्तिनापुर आश्रम, उड़ीसा दुष्काल फंड
 आदिमें भी रकमें भिनवाई गई (१६) ऐलक
 अनंतकिर्तिको समजानेसे उनकी परिणति बदली
 और बहुत अंशमें उनका चारित्र्य शास्त्रोक्त
 होचला है आदि ।

विनामूल्य-श्री सम्मोदशिखर और सोना-
 गिरी यात्रा विवरण वैरंग या ॥ टीकट मेज
 कर मुफ्त मगानेका पता-गुलाबचंदजी काला
 दि० जैन फ्री बुक डिपो, सांभरलेक (राजपूताना)

गोम्मटस्वामी-(श्रवणबेलगोला)में चैत्र
 सुदी १५ को रथोत्सवका मेला होगा ।

मेरठमें-जैन घोटिंगका वार्षिकोत्सव व०
 शीतलप्रसादजीके सभापतित्वमें ता० ११-१२
 नवम्बरको हुआ था जिसमें घोटिंगके मकानके
 लिये (८०००) का चंदा था और ३०००)
 और हो गये और विशेष होनेकी संभावना है ।

यम्यई-की खंडेलवाल दि० जैन पंचायतने
 उदयलालजी, सेठी अर्जुनलालजी, नाथूराम
 प्रेमी, रामलालजी, वारेलालजी, आदिका जाति
 तथा धार्मिक संबंध उदयलालजीका विधवा विवाह
 करने कराने या उसमें सामिल होनेके लिये
 त्याग दिया है ।

नागपुर-में जैन व्याख्यानमाला प्रारंभ हुई है । प्रति बुधवारको सभा होती है । सेत-वाल डिरेक्टरों को भी निश्चित हुआ है । और फार्म भी तैयार हुए हैं । पञ्चव्यवहार लक्ष्मण गुवाजी श्रावणे मंत्री, सेतवाल मंदिर दीतवारी, नागपुर ।

विद्या और शास्त्रदान-बडगांव निवासी सेठ रघुनाथराम नारायणदासजीने (१००००) गोलार्धारीय दि० जैन बालकों की शिक्षा विभागमें तथा २०००० अन्य संस्थाओंको विद्यादान तथा जैन सिद्धांत संग्रह ग्रन्थ (मूल्य २ रुपये) की १०० कोपी विनामूल्य वितरण की है ।

अमरोहा-में प्रेमवर्द्धक जैन कुमार तथा स्थापित हुई है जिसके उद्देश-परस्पर ऐक्यता और मैत्रीभाव पैदा करना, कुरीतियों छुड़ाना, समाज और देशसेवा करना, स्वदेशी वस्तु प्रचार करना, जैन संस्कारोंका प्रचार करना, समासदोंको व्याख्यानदाता बनाना, पुस्तकालय स्थापित करना आदि हैं । मंत्री चांदविहारीलाल जैन, अमरोहा (मुरादाबाद) है ।

दान-चौरई छिंदवाडाके सि० नन्मलालजीका स्वर्गवास हो गया । अंत समय २०००० चौरई पर धर्मशाला तथा ५५६ तीर्थक्षेत्रों, संस्थाओं आदिको दिये गये हैं ।

रावलपिंडी-में महावीर जैन पुत्री शाहशाला स्थापित हुई है जिसमें सहायता तथा अव्यापिकाकी आवश्यकता है ।

पता-जैन धर्मप्रचारक सभा, रावलपिंडी ।

बड़वानीका मेला-सिद्धक्षेत्र श्री बाबल-गनानी (बड़वानी)का वार्षिक मेला आगामी पौष सुदी ८ से १५ तक होगा । इस मेलेमें

शास्त्र, उपदेश, भजन, कीर्तन आदि भी होंगे तथा स्थानीय व बाहरसे आये हुए विद्यार्थियोंकी परीक्षा लेकर उनके उत्साह वर्धनार्थ पारितोषिक दिया जावेगा । यह क्षेत्र मऊ स्टेशन (R. M. R.) से करीब ८० मील पक्की सड़क है । मोटोर सर्विस भी चालू हुई है । तथा तांगा बैलगाड़ी भी जाती हैं ।

बडनगर अनाथालय-में ४५ अनाथ भरोही हो चुके हैं और अनेक प्रार्थनापत्र आ रहे हैं अतः उदार सज्जनोंको सौ १०० के एकर दो २ भाग भर कर १००० भाग शीघ्र भर देने चाहिये ।

भगवानदास महामंत्री, बडनगर (मालवा)

महासभाके प्रस्ताव-(नं-९) सन् १९२१ मार्चमें जो मनुष्य गणना होगी उसमें दिगंबर जैनोकी संख्या ठीक लिखी जाय (धर्म के खानेमें "दिगंबर जैन" शब्द अवश्य लिखे) (प्रस्ताव नं० १४) भारतकी आर्थिक स्थितिके सुधार हेतु जैन भाईयोंको देशी माल बनानेकी ओर ध्यान देना चाहिये तथा यथाशक्ति देशी वस्तुएं काममें लेना चाहिये । ये दोनो प्रस्ताव अमलमें लाइये ।

पाटन-(जबलपुर) में उपदेशक पं० मौजीलालजीके उपदेशसे गत ता० १४ को यहकि कुल चमार, बत्तोर और भंगियोंने देवताओंपर बलि चढ़ाना तथा शराब पीनेका आज्ञान त्याग किया तथा उन्होंने यह ठहराव भी किया कि यदि कोई पीयेगा तो उससे ५० दंड और दो जीमन लेवेंगे और दंड न देवेगा तो जाति न्युत करेंगे । दो क्षीमरोंने मछली मारना व मांस खाना त्याग किया तथा परिवार और गोला-पूर्वमें फूट मिटकर एका हो गया ।



लो० तिलकका चित्र-स्वर्गीय लोक मान्य बालगगाध तिलक महात्मजा १६-२० की साईंअज्ञा रंगीन चित्र । प्रकाशक, चित्रशाला प्रेस-पूना सीटि । मूल्य आठ आने । यह ओइल पेन्टिंग जैसा बहुत ही अच्छे चित्र है । हरएकको मगाकर अपने घरको लोकमान्यके चित्रसे मुशोभित करना चाहिये जिससे आपकी देशसेवाका अहर्निश स्मरण रहेगा । कामके प्रमाणमें मूल्य भी कम है ।

अहिंसा-वर्ष १ अंक १-५ सं० द्र० ज्ञानानंदजी, काशी । वार्षिक मूल्य रु० ३॥) अहिंसा प्रचारिणी सभा काशीके इस साप्ताहिक पत्रमें नीवदयाके अतिरिक्त अनेक राजनैतिक लेख, समाचार, कविता आदि भी रहते हैं । बहुत ही योग्यतासे संपादन हो रहा है । पृ. १२ और छपाई सफाई भी ठीक है ।

मुख्यपत्रकी कविता इस प्रकार है-

इस पुण्य पृथिवी पर कभी तममें अहिंसा भाव था,
राना प्रना पशु पक्षि तक पर बड़ा प्रेम प्रगाव था ।
हिंसक विरोधी जीव भी थे शांत तन बीभत्सको ।
थी गो पिलाती मिहने पय, सिंहनी गोवत्सको ॥

हरएक जैन अंगेन सभीको यह पत्र मगाना चाहिये जिसमें जैनोंको तो नीवदयाके कार्यके उत्तेजनार्थ तुरंत ही आह्वक या समासद होना चाहिये ।

प्रजा चन्द्यु-पटना सीटिसे प्रकाशित नवंबर राजनैतिक साप्ताहिक पत्र । वर्ष १ अंक ३-५

वार्षिक मूल्य ३) इसमें देशोपयोगी तथा राजनैतिक अच्छे २ लेख टिप्पणियाँ आदि रहते हैं । पत्रकी लेखनशैली अच्छी है ।

जैनधर्मका महत्व-प्रकाशक निर्मयराम जैन धर्म प्रकाशक मंडल, कटडा अशरफी, वेहली । मूल्य सिर्फ एक आना और ९॥) सैरूडा । इसमें जैन धर्मके महत्व विषयक ब्र० शीतलप्रसादजी, बा० बनारसीदासजी और सेठ हीराचंदजीके व्याख्यानोका अपूर्व संग्रह एक साथ छपाकर प्रकट किया गया है । अंग्रेजोंमें जैन धर्मका प्रचार करनेके लिये बहुत उपयोगी है । प्रकाशक दूसरा भाग भी प्रकट करनेकी उम्मेद रखते हैं ।

जैन सिद्धान्त-दि० जैन शास्त्रिय परिपदका मासिक पत्र । वर्ष १ अंक १-२ संपादक न्यायतीर्थ पं० बशीधरजी शास्त्री, सोलापुर । वार्षिक मूल्य ३) जैन सिद्धान्त विषयक अनेक उपयोगी लेखके अतिरिक्त जैन धर्मपर मिथ्या ओक्षेपके लेखोंके मुहतोड़ उत्तर प्रकट होते हैं । इसको बराबर समय पर प्रकट करना चाहिये । जैन धर्मका भर्म जाननेके लिये यह पत्र अवश्य मगाने योग्य है ।

विभवा विवाहकी असिद्धता-कल-तेसे स्यादाट पुस्तकमाला विना मूल्य प्रकट हो रही है जिसका यह चौथा पृष्ठ है । इसके लेखक पं० श्रीलालजी अयोगद और प्रकाशक पं० जयदेव, राना उदमन खीट बानार, कलकत्ता । इसके ४३ पृष्ठोंमें विधवाहको अनेक प्रमाणोंसे असिद्ध किया है । इस पुस्तकमालाकी सर प्रुप्तके एक काटे लिखकर मगानेना चाहिये । यह प्रयास अतीव प्रशंसनीय है ।



श्रीयुक्त रायसाहब सेठ विजयचंदजी, बांसवाडा ।

(दि० जैन विद्यालय बांसवाडाके दानी स्थापक) •



श्रीयुक्त रायसाहब मेठ विजयचंदजी, यांसवाडा ।

(राजवशी पहनावमें अधारूढ चित्र)

जीवनचरित्र

श्रीयुक्त रायसाहब सेठ विजयचंदजी
वांसवाडा ।

एतन्नातर्गत तलवाडा ग्राममें दिगम्बर जैन धर्मानुयायियोंमें दशाहूमडोंकी अच्छी संख्या है। व्यापारादि तो सामान्य है तथापि वैद्योंके निर्वाहकी अपेक्षा अन्यान्य छंटेर गांवोंमें अच्छा है। इन ग्राममें श्रीयुक्त दोसी भोगजी नायजी नामक गृहस्थ रहते थे। आपकी सहचरिणी श्रीमती कुरीन्देन थीं तथा आप रनियाणा गोत्रके प्रसिद्ध व्यक्ति थे। इन प्रांतके व्यापारानुसार आप भी आपसियोंसे लेन देन और कपड़ेका व्यापार करते थे। इस दम्पत्तिके ४ पुत्रोंमें चतुर्थ अपने सेठ विजयचंदजी हुए तथा ३ पुत्रियां हुईं, परन्तु इस समय उक्त सेठजीके अतिरिक्त सर्व ही काष्ठवर्जित हो चुके हैं। उनके कुटुम्ब पुत्र पुत्री हैं।

सेठ विजयचंदजीका जन्म शुभ सम्मत १९२८ पौष मासमें हुआ। तदनंतर भई बड़ियोंके साथ शैशवकाळ सानंद व्यतित किया और इस प्रांतकी सार्वजनिक शिक्षा पद्धतिके अनुसार आपने ११ वर्षकी उम्र पर्यंत ही देशी भाषाकी शिक्षा प्राप्त कर ली। उसी समय (अर्थात् जब आप ११ वर्षके थे) आपके पिता नाथजी सं० १९२९ में स्वर्गवासी हुए। गृहस्थी का कुछ कार्य इन सब भाईयों पर ही रहा। उनकी मृत्युके लगभग ४ वर्षके बाद आपका प्रथम लग्न दोसी बालचंदजी दुआचंदजीकी पुत्री मुखीबाईके साथ १९४२ में हुआ। यह बहुत ही युद्धिस्ती, धार्मिका और शांतिस्वभाविनी थीं। इनका इस

शुभलग्नको लगभग एक ही साल बीता था कि मागने पलटा लाया और 'मयं फलिन सर्वत्र न विद्या न च वीर्यं' तथा 'कः कदा कीदृशो न स्याद्भग्नो सति यच्छ्रमे' वाली आचार्योंकी सल्लुकीयोंकी चरितार्थ का दिया, उसका संक्षेपमें हम पाठकोंको इस तरह परिचय कराये देते हैं कि—

वांसवाडा ग्राममें सुरैया मदनजी धनरामजीकी पेशपरम्परा जोकि दशाहूमडोंके ब्रह्मेश्वर गोत्रमें अच्छी व्यापारिणी और धनशालिनी एवं जनसम्मानित गिनी जाती है, में सेठ फतेचंदजीके सुपुत्र सेठ बहालचंदजी थे और उनके सुपुत्र सेठ हीराबालजी हुए इनके सुपुत्र सेठ लक्ष्मीचंदजी थे, इनके एक मात्र सुपुत्र सेठ चम्पालालजी थे, जो कि केवल २२ वर्षकी आयुमें निमन्तान २ पत्नियों और अपनी मानाको जोड़कर स्वर्गवासी हुए—उनके यहां अपने सेठ विजयचंदजी दत्तक पुत्र हुए (गोद बैठे), बड़ी दिन अर्थात् ज्येष्ठ वरी २ सम्मत १९४४ आपके जीवनलीलाको परिवर्तित एवं चिन्तन बनाने वाला हुआ। वस! आप तब ही से यहां सपत्नीक रहने लगे। आपने यहां आकर न केवल व्यापारोत्थान ही की, किन्तु साथमें लक्ष्मीका सदुपयोग भी करते रहे, सरा यहां पर आकर आपने अपनी अच्छा बाक बैठा ली। सं० १९५६ में जबकि प्रायः भारतवर्षमें दुष्कालका पूर्ण प्रकोप था, उस समय भी आपने (१००१) गरीबोंकी सहाय्यार्थ सरकारी चन्देके अतिरिक्त ४०००) का अनाज तथा कपड़ा अवहाय दीन हीन लोगोंके सहाय्यार्थ खर्च किया। इसही सालमें

हांके राज्यके अ.प. खानांची निपट हुए, और व लगाकर अस्तक अ.प. उक्त पद पर नियुक्त , इतना ही नहीं, किन्तु आने समय २ पर श और कालके विचारानुसार हमेशा ही अपनी माईके सद्व्यवसाय कुछ न कुछ अंश सदुपयोगमें लाते ही रहै। सं० १९५८ में ही इ.व. फ़ाउंडेशन न था, गरीब लोग तों मुठो २। नोंके दर्शनों तकको तारसँभाले थे, उस समय (१०००) रुपया सरकारी सेवेमें देनेके सेवाय २०००) का अनानमें घाटा टोकराते भावमें बैचा और कुछ गरीबोंको कपड़ा भी बांटा, यह नहीं कि आप सर्वदा सार्वजनिक दानादि कार्यके करते रहनेके कारण धार्मिक दान और विद्यादानसे विमुक्त रहते हों, किन्तु मानव इ.व. भी आपका पूर्ण लक्ष्य रहा। सं० १९६२ में आपने श्री वेसरियानी धुलेवजीको बड़ा मारी त्रैव निकाश और (१०००१) को रकम इस धार्मिक या यों समझिये कि समाज रचनामें पड़े होनेके कारण सामाजिक कार्य सम्पादनमें व्यय-की, और यथा उत्थर्जन किया।

यद्यपि आप स्वयं अच्छे विद्वान नहीं हैं, तथापि नित्यप्रति पूजन, जाप और स्वाध्यायके समाव तथा रत्नई आदि बड़े २ शहरोंके विद्यालय और बोर्डिङ्गके निरीक्षणसे आपके चित्तमें अपने यहां भी एक बोर्डिङ्ग तथा विद्यालय खोलनेकी धुन समाई हुई थी। इसका सबसे बड़ा प्रमाण यह है कि आपने सं० १९६८ में एक बहुत अच्छा 'मकान लगभग ७०००) लगाकर तैयार कराया (जिसमें कि अब विद्यालयका कार्य सानन्द चल रहा है) इसही सम्प्रति आपने

एक बहुत ही योग्य कार्य किया अर्थात् इस प्रान्तके तेमपुर नामक ग्राममें प्रतिवर्ष दशहरेके शुभोत्सवार भैसोंकी हत्या की जाती थी, वहांपर आपने पूर्ण उद्योग किया। वहां जागीरदार साहबको (१०००) नकद भेंट देकर हमेशाके लिये नियम करा लिया कि वहां पर कपी भी इस मौके पर बध न किया जाय, तथा उस समय भी जो १८ भैंसों पर छुरी चलनेकी तैयारी हो रही थी उसे भी आपने उन अवसरोंका मूल्य देकर रुकवा दी, इससे भी इस प्रान्तमें आपका अच्छा नाम हो गया !

आपको सं० १९७२में अकस्मात् बड़ी मारी बीमारीका सामना करना पड़ा। आपके जीवित रहने तककी किसीको भी आशा न रही, स्वयं आपको निश्चिन्त हो गया कि अब यह मनुष्य जीवनछोड़ा पूर्ण हुई। उस समय भी आपने अपने दानशील स्वभावके कारण (१०००१)की रकम अपनी गाड़ी कमाईके द्रव्यमेंसे पृथक् की, जिसमें सबसे बड़ी (१०००१) की रकम विद्यादानके लिये थी। जो कि इस वर्ष विद्यालयकी २७१९१) को रकममें मिली हुई है, परन्तु " नाकाळे म्रियते जन्तुः काले सति न जीवति " वाली शास्त्रोक्तिके अनुसार आपका मनुष्य आधुनिक अशिश्ट प, अतः आप कुछ दिन ही बीमारीकी पीड़ा अनुभव करके रास्त हो गये, कि सत्र कार्य करने लगे। सं० १९७५में भी आपने (१३००) गरीबोंके हितार्थ लगा दिये और गत वर्ष आपने इस प्रान्तके लिये सर्वथा नवीन उज्जिनीपु-समान सुधार, और मनुष्याहार पशुओंको मनुष्य बनानेके लिये दि० जैन विद्यालय खोल दिया।

इस समय आपही इस प्रातमें सचते बड़े वनाढ्य समझे जाते हैं । आपकी रतलाम, वास-वाड़ा, और गढीमें दुकानें हैं ।

आपने न केवल यहांके राज्यसे ही सम्मान पाया किन्तु न्यायशोभा गवर्नेमेन्टकी ओरसे भी आपको १९१४ ई०में **रायसाहिब**की उपाधि मिली है ।

आपको ६ पुत्र और एक पुत्री ऐसी ७ संतान अपनी दोनो पत्नियोंसे हुई थी परंतु अभी सिर्फ नूतन पत्नी जडावबाई और एक पुत्र मोतीचंद ही करीब ९ वर्षका विद्यमान है और नवीन विद्यालयमें विद्याभ्यास काता है ।

सेठ विजयचंदजीकी दान सूची ।

२०१) सं० १९४६ में परचूणी तथा चांदीका थूना सल्लम्पारक मंदिरमें चढ़ाया तथा शाखजी लिखाये ।

२१५०) सं० १९४७में (६००) माई दुली-चंदजीकी स्त्रीकी बीमारीमें दान किया । १५०) परचूणी शाखजी तथा कलश बगैरहमें खर्च किया ।

८०१) सं० १९४८ में ३११) सागवा-ड़में जुने मंदिरजीमें प्रतिष्ठा हुई उसमें दिये । ४५०) परचूणी श्री जीर्णोद्धार मंदिरजी गांववालोंके ।

३३०१) सं० १९४९ में ४५०) वाड़ो-दिया मंदिरमें प्रतिष्ठा हुई उसमें दिया, २००१) कार्तिकवदी ३ को श्री गिरिनारजीकी यात्रामें, ५२५) गढीमें जुना मंदिरकी प्रतिष्ठामें दिये ३२५) परचूणी चांदीका सिंहासन ।

१०१) सं० १९५० में १०१) परचूणी चांदीके फूत्र तथा चांदी धूप दान ।

११०१) सं० १८९१ में ७००) श्री खोडन मंदिरमें प्रतिष्ठा हुई उसमें खर्च पडा, ४०१) श्री गजपंथाजी, पावागढ मांगीतुंगी वैष्णवकी यात्रामें ।

२००) सं० १९५२ २००) परचूणी धर्म खाते खर्च किया ।

२००) सं० १९५३ ६००) परचूणी धर्म खाते ।

२००) सं० १९५४ २००) परचूणी धर्म खाते ।

२७१) सं० १९५५ २७१) परतापगढमें भाईजीके मंदिरजीमें ध्वजा दह चढानेके लिये तैयार कराने तथा खोकी बीमारीमें कपड़ा बगैरह बांटा ।

५००१) सं० १९५६, १०००) कैदसाड़ी दुष्कालकी वनहसे गरीब लोगोंको कपड़ा तथा अनाज बांटेनेके वास्ते चंदेमें दिया, घरसे ४००१) गरी-बोंको बांटा ।

४४१) सं० १९५७ परचूणी तथा श्री इन्द्राश्वरजी, १४१) गोमटसारजी, आदि ग्रन्थ लिखे हुए लिये ।

५९०१) सं० १९५८ में १००१) कालगुण सुदी ५ दुष्कालकी वनहसे गरीब लोगोंकी सहायताके लिये सरकारी चंदेमें दिया, २०००) दुष्काल पीड़ितोंको गांवोंसे तेज अनाज मंगा कर सस्ते भावमें बेचनेके दानमें, १००) गरीबोंको कपड़ा बांटा,

- २००) पाचूणी अन्य लोगोंको दिया, १९००) चम्पालालजीकी दोनों स्त्रियोंने श्री सम्मेशिलरजी की यात्रामें खर्च किये, ११००) सोनागिर, चौरासी, तथा सिद्धवर-फूट, पुरुषी पार्श्वनाथजीकी यात्रामें ।
- ९००) सं० १९०० में २००] मयसर वदी १२ शाहवाडी खुशीकी वमेंटीमें दिये, ७००] पाचूणी बाई बावाणी साधर्मियोंको दिया ।
- ९९१) सं० १९६०] कर्तिक वदी १ परतापाडकी पठशालामें दिये, ३९०] पाचूणी अन्न दानादिमें दिये ।
- ४३०१] सं० १९६१, १९००] अपनी बढो बढूके दशरक्षणीके १० उप वासोंके उत्सवमें खर्च किये, १००] लाहवेरीके चंदेमें, २००] पाचूणी बाई बावाणी साधर्मियोंको दिया, ३९०१] श्री सम्मेशिलरजीकी यात्रामें खर्च किये ।
- १०४७६) सं० १९६२में १०००१) श्री केसरियाजी धुलेवको संघ निकाला उसमें खर्च किया, २९०) साधर्मियोंको दिये, २२९) पाचूणी जीणोद्धार मंदिरमें दिये ।
- ३६६) सं० १९६३में १०१) गुवाडी ।।वने मन्दिरके जेणोंद्वारमें दिये, १६९) श्री ऋषभदेवजीके मन्दिर-जोमें श्री ती-लोन्जीका पूजन करानेमें कलश द्वारा तथा वरमाला

- पहने, १००) परचूणी साधर्मियों वाईवावणी ।
- १३९२) सं० १९६४में ९०१) श्री सम्मेशिलरजीके चन्देमें, २९१) चम्पालालजीका बढो स्त्रीके बीमारीमें दान किया, ४९०) घाटोडकी प्रतिष्ठामें खर्च किया, १९०) पाचूणी बाई वावणी साधर्मियोंको दिया
- २००) सं० १९६९में २००) पाचूणी बाई वावणी तथा साधर्मियोंको दिये ।
- १७०१) सं० १९६६में १६०१) श्री गोमटवासीकी यात्रामें खर्चमें किये, १००) पाचूणी कर्मनवायेलाके पण्ड तथा लाहवेरीके चन्देमें तथा पाचूणी ।
- ७९०) सं० १९६७ ९९०) सकुटुम्ब श्री अन्दीश्वर तथा ऋषभदेव भी गये सो खर्च किये, २००) परचूणी मन्दिरमें कलश, वरमाला, छत्र वगैरामें खर्च हुआ ।
- १३६७) सं० १९६८ ७२९) तटवाडामें पञ्चकल्याणोत्सवमें खर्च हुए ।
- २४२) वीरीगावके पञ्चकल्याणको-त्सवमें खर्च किये, २००) पोटण तथा साना तथा अस्थूणा मंदिरमें तथा पाचूणी खर्च, ९०१) सगवाडेकी धर्मशालाके चंदेमें दिये ।
- ८९११) सं० १९६९में ७००१) श्री ऋषभदेवके मन्दिरमें पाठशालाके लिये मकान बनवाया, ४०३) हेमलटन पण्डमें गरीब लड़कोंकी

वडाईके लिये सरकारी स्कूलमें दिये,
 १०१] अनायालयकण्ड अन्नमेरमें
 दिये, ३२५] इन्दौरमें गेन्दातालजी
 मन्दिरकी प्रतिष्ठामें गये, सो खर्च
 पडे, ६००] परचूणी, रतलाम
 बोर्डिङ्गके लड़कोंकी परीक्षामें तथा
 सावरागावकी पाठशालामें तथा
 विशावाडाकी धर्मशालामें तथा बाई
 बावणी साधर्मियोंको दान दिया तथा
 खीकी बीमारीमें दान वगैरह,
 १०८१] दशहरापर १८ भैसे
 बचाये गये तेनपुरमें ।

- [१०१] सं० १०७०में ५०१] हेमन्तकण्ड-
 गरीब लड़कोंकी पढाईमें,
 २५०] ईन्दौरियलकण्डके चन्देमें,
 १००] लखनौरीके चन्देमें दिये,
 २५०] परचूणी रतलाममें अन्नक्षे-
 त्रमें तथा छत्र चढ़ानेमें तथा धर्मादा ।
 (२६) सं० १९७१में १०१] श्री मालवा-
 प्रांतीय समा बहनगरको भेजे,
 ४२५] महाराजा आत्मानन्दजीने
 के केशओच किया तब सागवाडेकी
 पाठशालामें दिये, ३००] परचूणी
 बाइबावली साधर्मों माईको दिये ।
 ६३८८] सं० १९७२में ७३५ वांत्वाड़ेके
 ऋषभदेवजीके मन्दिरमें रखे लिये
 चांदीके छत्र भंग ३ बड़े गीन्यासुही
 तैयार करके रखे ऊपर हमारे घरसे
 चढ़ाया, २५०] अपनी बहूकी
 बीमारीमें जावरा तथा बम्बईमें

दवाई कराने गये सो वहां गरीबों-
 को बांटा । १००] हवाई नहाजके
 चन्देमें दिये ।

अरनी (माई विनयचन्दनीकी)
 बीमारी-मिती आषाढ सुदी ६ के
 दिन हुई उसमें निष्पुण किया
 उसकी विगत यह है-

१०००१] पाठशालाके लिये (जोकि १९७६
 में लिखे अतः यहां नहीं जोडे)

५०१] श्री ऋषभदेवजीके मंदिरमें पुनन
 प्रसादके लिये ।

२६५] श्री तीर्थक्षेत्रोंके लिये भेजे ।

९२६] श्री बागडोशके मंदिरनीमें ।

१००] श्री परतावगड कन्या पाठशालामें ।

६७५] ब्रह्ममानजी वगैरह

६९३] अनाम तथा काड़ा तथा गायोंको
 चारा वगैरह परचूणीमें ।

१८४०] अपने घरके चेत्यालयमें चांदीकी
 उत्तरीमें लगाना-तथा बचे तो दूसरी
 चीज करानी ।

१९००१]

१०१] अपने पुत्र कस्तुरचन्दनीकी मृत्युमें
 दान दिया ।

२०१] अपनी बड़ी बहूकी बीमारीमें दान
 किया ।

६३६] सं० १९७३ में २११] मुनिश्री
 बन्धुसागरजीने तलवाड़ामें केशओच
 किया सो पाठशालामें तथा कलश
 भरनेमें खर्च किये, ४२५] परचूणी
 धर्मादा ।

३२७७) सं० १९७४ में २९०१) श्री अन्दीधरजीमें समामण्डा बनानेके लिये दिये, १२९) कार्तिक वदी ३ को मुनिश्री चन्द्रसागरजीने बाणीदौरामें केशलोच किया सो पाठशाळामें दिये, २९१) परचुणी कलश वगैरह तथा जीर्णोद्धारमें दिये तथा बदीनेनारायण उत्तरखंडमें दुष्काल पड़ा तब गरीबोंको राहाय-ताके लिये दिये ।

१४००) सं० १९७५ में २३००) परचुणी बाई वावणीको दिये तथा दुष्काल होनेसे गरीबोंको कपड़ा और अनान बांटा । १०००) वायसरायके चंदामें वास्ते बीमारीसे सिपाहियोंकी सहायताके ।

२८१९९) सं० १९७६ में विद्यालय खोला । उसकी विगत यह है—कुल २७१९१)

२००४) सं० १९६५ पौष सुदी १४ पुत्र कस्तूरचंदके जन्मोत्सवपर

१००१) सं० १९६६ आश्विन सुदी ७ पुत्र भगवानदासके जन्मोत्सवपर ।

१००१) सं० १९६८ ज्येष्ठसुदी २ पुत्र मोतीचंदके जन्मोत्सवपर ।

१०००१) सं० १९७२ आपदासुदी ६ अपनी (विनयचंदजीकी) बीमारीमें

३१८३) पहिले दिये हुए रुपयोंके व्याजके उपजे ।

१०००१) श्रीमान् जैनधर्मभूषण ब्रह्मचारी शीतलप्रसादजीके आदेशानुसार मिति श्रावणवदी ६ सं० १९७६ को विद्यालय तथा बोर्डिङ्ग खोलनेके लिये दिये ।

२९७) मुनि श्री चन्द्रसागरजीने मिति आपाठ वदी ३को पारोदामें केश-लोच किया उस समय खर्च किये, पाठशाळामें १९१) कलश दारें १०२)

५००) श्री ऋषभदेवजीके मंदिरमें चौकमें फर्स जड़बाया ।

२९१) श्री माणिकचन्द्र जैन ग्रंथमाला मम्बईको दिये ।

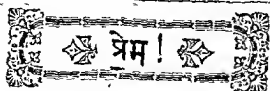
कुल जोड़ ९३५५२)

इस प्रकार आज तक आप करीब एक लाख रुपयेका दान कर चुके हैं । अंतमें हम यही चाहते हैं कि आप अपने विद्यालयको और भी बड़ा पारी दान करके उसका ट्रस्टडीड बना देवे और उसको एक ऐसा आदर्श विद्यालय बनावे कि जिससे वागड प्रांतके दि० जैनियोंका उद्धार हो जाय । आपके दो चित्र हमने प्रकट किये हैं जिनमें एक तो अश्वारूढ राजवंशी पहिनावमें हैं जो अतीव आकर्षक है । हमारी यही मानना है कि आप चिरायु होंगे और विद्यादानके और भी अनेक कार्य आपके करकपड़ोंसे हो ।

चर्चा समाधान ।

(धार्मिक प्रश्नोत्तर (मूल्य २॥=

जैनर, दि० जैन पुस्तकालय-सुरत ।



"प्रेम न बाढ़ी उपजे, प्रेम न हाट विद्या" - कबीर ।

Love is Divine—Pope.

प्रेम अपूर्व है ! अत्रौक्तिक है ! प्रेम्के शोभा, सौन्दर्य, प्रतिभा, आनंद एवं सुख उपरीके स्वादनमें भरे हैं ! प्रेममें पापाकी गन्ध नहीं । चाहे समस्त नगत एक स्त्र हो उसकी परिभाषा करनेको उतारू हो जाय तो भी उसके आगम भेदको तनिक भी न पा पाय ! प्रेम कहा नहीं जा सका ! उसका नज़रोंमें वृत्ता ही जानना है । प्रेम साम्राज्यमें अपूर्व शान्ति है—आगम सुख हैं । संसारमें उसका स्थान कठिनासे है । संसार प्रेम सुख-शान्ति का व्यापक अवश्य है; परंतु स्वार्थरश आने ही चहुं ओर फेरु अपने ही लिए उसको ताक शांतिमें है । फिर मठा प्रेम कहाँ ? संसारमें स्वार्थ है । स्वार्थ पूर्ण संसार है । वहाँ 'मेरे-मेरे' का बोल-बाज है । मोहका साम्रज्य है । ईर्ष्या, द्वेष, मान, प्रसार सहस्र उसके सहकरी बाग्वीर-रणवीर हैं जो अपना पंच फेंकाए हुए हैं । जहाँ अवसर पाया घर दबाया । साम्राज्य साम्राज्यका द्वेषो है उसके स्वतंत्र हृदय जानेका प्रयत्न कर रहा है—भाष्य राष्ट्रोंके-समान समा-ओंके-पिता पुत्रके-समस्त निर्वृत्तका और क्या संसारकी छोटीसी शक्तिसे लेकर मनुष्य तक इसी स्वार्थ पूर्ण स्वोद्देश्यकी पूर्तिमें लगे हुए हैं । प्रेमका स्थान 'मोह'ने ग्रहण कर रखा है । जिसके वश हो हजारों लाखों मोही अपनी

तानमें मस्त अपने जीवनकी इतिथी करते जाते हैं । परंतु विचार इत दैवी मंत्रकी फुंफुसे बंचित रहते हैं । पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण—ऊपर, नीचे—स्वर्ग, अपस्वर्ग—प्राधुनिक और प्राचीन सब ही छान डाले पान्त प्रेममयी शांति का उमोग काने काने कोई मार्ग ही न मित्र ! प्रेमकी महिमा—अगर पहिमा सुनी, अपरिमित तान—छापो पर सुख नहीं—शांति नहीं । बड़ी गलती खाई पर प्रेमको जाना नहीं—प्रेमको पहिचाना नहीं !

छिनदि चढ़ छिन ऊपर सो तो प्रेम न होय । अथ प्रेम विचार बमै, प्रेम कहाये सोय ॥

प्रेमका अन्त नहीं । प्रेमका तीर छुटा कि छुटा, फिर लौट कर नहीं आता ! यदि लौटा तो मृत्यु सी वेदनाका आह्वान साथ लाता है । प्रेमका तीर वेधता भी खूब है उससे बचनेका हारस काना व्यर्थ है । वह अपने ध्येय पर पहुंचता अवश्य है । वय, प्रेमियोंका मिलन प्रेम सरोवरमें अनिवार्य है । प्रेममित्र ही विवित्र सुखपूर्ण है । स्वार्थ और मोह द्रुम दवा कर माग न लेते हैं । द्वेषपूर्ण संसार प्रेममयी दृष्टिगोचर होने लगता है । अपने प्रेमीकी मूर्ति शनैः शनैः सर्व धाममें घुसने लगती है । अन्तमें प्रेमकी निमग्नता में ऐसी आत्म विस्मृति होती है कि समस्त संसार पवित्र दीक्षा है, जीवन पवित्रतासे बीरता है । और जीवन—पवित्रता ही पूर्ण सुख है । शांति है एवं पूर्ण स्वतंत्रता है । महात्मा तुलसीदासका अपनी छोमें प्रेम अत्याधिक था । वस उनके हृदयमें प्रेमकी प्रचुरता थी यद्यपि वह भी एकान्त ! पान्तः निमित्त या बड़ी प्रेम

सर्व व्यापक 'विश्वमेम'में पाणति हो गया । महात्माको अपनी सहचरीकी सुढौल मूर्तिसे चर्चित जगतकी समस्त वस्तु प्रदर्शित होने लगी और वं प्रेम सरोवरके निर्मल जलमें डुब-कियां लगाते लगाते पवित्र हो गए सुतरां दूसरोंके लिए सार्वभौमिक मार्ग दिखाया गए । वस्तुतः प्रेम प्रेम सब कोई कहें, प्रेम न चीन्हे कोई । भाठ पहर भीना रहै, प्रेम सदावै सोई ॥

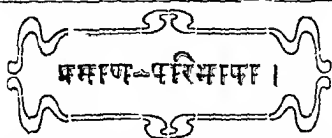
हर समय, हर घड़ी प्रेममें मग्न रहने ही प्रेम है । प्रत्येक पल अपने प्रेमीकी मोहनीसी मूरत अपनी आंखोंके आगे नाचती देखनेमें आनंद है, हर्ष है । यही प्रेम अखण्ड है । यही सांसारिक आपत्तियोंके सामने नीचा नहीं देखता बरिह स्वयं उनको नीचा दिखाता है । प्रेमी प्रेमोन्मत्त हो अपनेको भूल जाता है । फिर अपने प्रेमोके लिए-ध्येयके लिए-अन्तः जगतके लिए सर्वस्व अर्पण कर देता है । इसीमें उसे निराकुल आनंदका रसास्वादन होने लगता है । भेदभावका अभाव हो जाता है । संकीर्णताका ताठा टूट जाता है । संकीर्णताका कौंसो पता नहीं चहता । समदृष्टि-प्रेमीभावके ओकोंमें सुखकी हिलोरे अनं लगती हैं । सब धर्म-धर्म उसने सामने हेय हो जाने हैं । जैन धर्मका क्या, हिंदू धर्मका क्या, बौद्ध धर्मका क्या, किसी धर्मका क्या, किसी संप्रदायका क्या ! वह विश्वप्रेमी जगत दितराव सब प्राणियोंको सुखकर विश्वमेम एवं सर्व धर्मका ढंका समस्त भूमंडलमें बना देता है । और दुष्मार्गमें पड़े हुए जीवोंको सुमार्ग पर ला प्रेममयी शांतिसे मिला देता है । ऐसे महात्मा प्रत्येक समयमें

अवतीर्ण हो जगतका उपकार करते हैं । तीर्थंकर, बौद्धों और विविध हर्जरत महात्माओं इसी विश्वप्रेमका शांख बनाया था और अपनी व प्रेमोन्मत्तता-आत्मविस्मृतिके अनुसार सत्यक प्रचार किया है । ऐसे ही महात्माओंने मातृवर्षका मुख उज्ज्वल किया है । आधुनिक सम्प्रदाय इस मोहसे सटे हुए संसारमें अन्तरंग फैला दिया है । सम्प्रसमान प्रेमाभासको प्रेम मान प्रेमके मार्गसे विमृष्ट हो द्वेष और स्वार्थमें और भी फंसे जा रहे हैं । परन्तुः-प्रेम प्रकृतिकी लीला अद्भुत है । उनके नियम अटल, अलौकिक हैं । सदैव 'सत्य' ही प्रगट होगा । मेघमंडल सूर्य राशिको ढक दें परंतु अंतमें दिनकर चमकेहीगे । प्रेम ही-मैत्री ही-ऐक्य ही एवं सर्वस्व-त्याग ही विश्व विजय मंत्र है । तलवारके बार करनेमें तनिक भी बहादुरी नहीं सुतरां तलवारका बार सहनेमें सच्ची बहादुरी है । प्रेमसे ही स्वार्थी पापमय मार्ग साधने में विमुख किया जा सका है । यही विलक्षणता प्रेम है । आम सुल जाता है पर दूसरेका जो नहीं दुखाता । प्रेमी ही वीर है । समा वीरस्य भूषणं । प्रेमको नय ! अस्तु ।

विश्व प्रेम न भूलेंगे, मत्सरका सिर तोड़ेंगे । अब मद मान भगा देंगे, समय ना फिर त्यागेंगे ॥ जगनकी प्यं स सुसायगे, सुख शक्तिको अपनायगे । जगनके दुःख घटायगे, अपर प्रेम बरसायगे ॥ किसीको अब न मनायगे, फल चारोंके पायगे । सुखी देग बन जायेंगे, क्षण्टा प्रेम उठायगे ॥

प्रेमोन्मत्त—

कामताप्रसाद जैन, हैदराबाद बिध ।



लेखक पं. कुवरराय, न्यायतीर्थ दि. जैन विद्यालय, वांस्वादा.

हमें सुवर्ण, रजत आदि धातुओंकी परीक्षा करनेके लिये कसौटीकी आवश्यकता होती है, वेना कसौटीके हम धातुओंका यथार्थ निर्णय नहीं कर सकने, इसीलिये धातुओंका व्यापार करनेवालोंको सबसे पहिले उस हीका समझ करना पड़ता है, साथमें यह भी ध्यान रहता है कि हमारी कसौटी सच्ची है, उसकी सचाईका विश्वास स्वयं कर लिया जाय या दूसरोंसे करा लिया जाय । सत्यताकी आवश्यकता दोनों ही अवस्थाओंमें होती है । क्योंकि जब तक कसौटी ही सच्ची निर्णीत नहो जायगो तब तक उपपर कसे हुए धातुओंकी सच्चाई पर भी विज्ञानोंको विश्वास नहीं हो सकता ।

अथवा दूसरे शब्दोंमें यों समझिये कि अन्धकारमें पड़े हुए पदार्थोंको जाननेके वस्ते प्रदीप आवश्यक होता है । बिना मद पके [दियाके] उनका ज्ञान लेना प्राकृतिक मनुष्योंकी शक्तिके बाहर है, परन्तु वह प्रदीप भी किसी प्रयोगसे दूषित न होना चाहिये, नहीं तो सत्य ज्ञानमें सहायक होनेकी जगह बाधक हो जायगा । ठीक इस ही तरह वस्तुओं को जानने और उसकी सत्तासत्यता निर्णय करनेके लिये भी एक सहायककी आवश्यकता मालूम पड़ती है, उस सहायकका नाम प्राचीन विद्वानोंने

प्रमाण रखला है । तब यह भी बतलाया है कि अब धीरेमें पड़े हुए वस्तुओंका सामान्य ज्ञान हमें मार्गदर्शक और दूषित दीपकोंसे भी हो सकता है, परन्तु जब हम उनका सूक्ष्म दृष्ट्या चारीकीसे विज्ञान करने पर उतारू होंगे तब वे सामान्य दीपक, जो कि स्वयं भदे हैं, हमें उस दशमें सहायता नहीं दे सकते, और न वे ही दीपक हमारे सहायक बन सकने हैं कि जो सामने आने ही चकाचौंध पैदा कर हमें वस्तु विज्ञानसे पीछे हटानेवाले हैं ।

अस ! इस ही चान पर ध्यान देकर हम निश्चय कर सकने हैं कि पहिले हम पदार्थान्तर और उनका यथार्थ परीक्षण करानेवाले सच्चे " प्रमाण " को ही ढूँढ़ें । यदि हमारे हाथ सच्चा प्रमाण लग गया तो हम फिर किसी प्रकार भी तत्त्वविज्ञानमें भ्रान्त नहीं हो सकने, या सच्ची कसौटीवालेकी तरह कभी धोखा नहीं खा सकते । धोका और भ्रान्ति ना ही नक अपने अस्तित्वको रख सकने हैं जब तक कि हम सच्चाईमें पीछे हटे हैं या सच्ची परीक्षा करनेवाली सहायक शक्तियोंका हममें प्रभाव है ।

विचारशील वाचकगुरु ! समाज के तत्त्वान्वेषी और सिद्धान्तज्ञोंकी यह अनुमन आज्ञा है कि " यदि किसी पदार्थका विचार

करना और उसे यथार्थ ज्योंका त्यों जानना है तो सबसे पहिले उसकी परिभाषा बना लो । ” परिभाषाको ही दूसरे शब्द 'लक्षण' का पर्यायवाची माना है । साथ ही उन्होंने यह भी शिक्षा दी है कि वह लक्षण या परिभाषा भी दूषित नहीं होना चाहिये, क्योंकि यदि वही दूषित होगी तो फिर उससे हम पदार्थोंका निर्दोष ज्ञान कैसे कर पावेंगे ? जैसे कि भूँद या धुंघले चश्मेको लगाकर क्या ठीक जानना संभव है ? नहीं । इसलिये लिखा है कि अनेक चीजोंके आपसमें संगठन या समुदायरूप होने पर भी जिसके द्वारा हम अभीष्ट वस्तुको पृथक् अलहदा जान सकें वही वास्तविक परिभाषा या लक्षण है । और वह निश्चित परिभाषा भी अव्याप्ता अतिव्याप्ता तथा असम्भविता नहीं होना चाहिये । उन्होंने बतलाया है कि लक्ष्य जिसकी परिभाषा की हो, उसके किसी ही अंशमें रहनेवाली या उसके किसी अंश-हिस्सेमें नहीं रहनेवाली परिभाषा अव्याप्ता कहलाती है, जैसे कि यदि कोई पशुमात्रकी परिभाषा 'शृङ्गवत्' 'सींग' बना दे तो पशुमात्रके कुछ हिस्से गाय, बैल, भैंस, पकरी आदिमें वह परिभाषा रहनेपर भी उनकी अङ्गान्ग हाथी, घोड़ा, गधा और कुत्ता बिल्ली आदिमें नहीं रहनेसे अव्यक्ता है तथा लक्ष्यमें रहने पर भी जो उसके सिवाय अन्य (जिसकी परिभाषा नहीं बनाई है) में भी रह जाय वह अतिव्याप्ता परिभाषा मानी है, जैसे कि कोई केवड गायकी ही परिभाषा बननेवाला "सींग" 'शृङ्गवत्' बनादे, तो वह 'सींग' रूप परिभाषा गापमें

रहकर भैंस आदिमें रह जानेके कारण अतिव्याप्ता परिभाषामें परिगणित होनाती है और लक्ष्यमें जिसकी सम्भावना ही न हो वही असम्भविताके नामसे पुकारी जाती है जैसे कि मनुष्यकी परिभाषा "सींग", यह किसी भी दशमें मनुष्यके न होनेकी वजहसे असम्भविता परिभाषा कहलाई जाती है ।

अतः अब हमें भी यदि "प्रमाण" का विचार करना या उसका स्वरूप जानना है तो त्रिदोषसे रहित परिभाषा बना लें, परिभाषा या लक्षण बन जाने पर हमें फिर किसी बातकी झंझट नहीं पड़ सकती । प्रमाणकी सच्ची या सद्युक्तियोंसे अकाट्य परिभाषा यदि होसकती है तो वह "सम्यग्ज्ञान" हो सकती है, यद्यपि प्रमाणकी परिभाषाएं अनेक मतवालोंने अपनी मतिके अनुसार भिन्न २ बनाई हैं तथापि युक्तियुक्त विचार परम्परा चलाने पर अन्तमें यही पर अवसान करना पड़ता है । तीरादर्शिशकुनिके समान अन्तमें यही सिद्धांत आश्रयभूत होता है, हां ! यह बात दुपरी है कि माननेवाले भी 'अपनी नाक ऊंची रती' वालोंके समान इन शब्दोंमें स्वीकार नहीं करते किन्तु सच्चे परीक्षक और आत्महितपी अवश्य ही इस तत्त्वके सामने मस्तक नवाते हैं । आगे चलकर पाठकोंको हम दयकी भी थोड़ीसी मानगी (नमूना) दिसलावेगे ।

पहिले तो हमें यह विचार लेना है कि इस परिभाषान्तर्गत दोनों (सम्यक् और ज्ञान) शब्दोंका असली क्या अर्थ है ? इन दोनों शब्दों या यों समझिये कि इस परिभाषा "सम्य-

ज्ञान"का अर्थ "सकलतार्किकचक्रबूडामणिस्या-
द्वादविद्यापति श्रीमद्विद्यानन्दि स्वामीने अपने
तत्त्वार्थश्लोकवार्तिक नामक ग्रन्थमें इस भांति
लिखा है—

"स्वार्थाकारपरिच्छेदो निश्चितो बाधवर्जितः

सदा सर्वत्र सर्वस्य सम्यग्ज्ञानमनेकधा ॥"

यदि दूसरे २ ग्रन्थकारोंने भी उक्त परि-
भाषाका इस ही भावमें प्रतिपादन किया है,
तथापि जो महत्त्व या गौरव और स्पष्टता इनके
व्याख्यानसे झटक रही है, उतनी दूसरोंसे
नहीं। देखिये ! इन्होंने 'ज्ञान' शब्दका अर्थ
"स्वार्थाकार परिच्छेद" करके कई कठिन
ग्रन्थियां खोल दीं, अर्थात् जो स्व आत्म और
अपूर्व अर्थका साकार ग्रहण हो-वही ज्ञान
कहलाने योग्य है, निराकारको ज्ञान शब्दसे
नहीं फड़ सके क्योंकि वह तो केवल सामा-
न्य सत्तावग्राही दर्शन माना गया है। इतना
कह देनेसे अन्ध मतभिन्न "फलज्ञान प्रमाण"
[फलज्ञान प्रमाण होता है] "सन्निरूपः प्रमाण"
(इन्द्रिय और अर्थके सम्बन्धको प्रमाण कहते
हैं) तथा "निर्धिरूप प्रतिभासः प्रमाण (निर्धि-
कल्प प्रतिभास-सत्तामात्राग्राही-प्रमाण होता है)
आदि, २ अनेकों युक्तिसे खण्डित होनाने वाले
लक्षणोंको साफ फटकार दिया है (इन सबका
विस्तारपूर्वक खण्डन आगे किया जायगा) तथा
न केवल आत्म परिज्ञान और, न केवल अर्थ-
परिज्ञान ही प्रमाण कीटीमें गिना जा सकता
है। क्योंकि ऐसा ज्ञान होना सर्वथा असंभव
ही है। उक्त आचार्यने इतना ही कहकर नहीं
छोड़ दिया किन्तु आगे चलकर वह इसको भी

और विशेष स्पष्ट करनेके लिये यह बतला रहे
हैं कि हमारे लक्षण (सम्यग्ज्ञान, प्रमाण) में
आया हुआ "सम्यक्" शब्द अन्यलोगोंसे
दी हुई अविचारितरम्य-कुयुक्तियोंका परिभा-
जन बड़े होंसलेके साथ इस भांति कर देता है
कि "सम्यक्" शब्दकी ही शक्ति या व्या-
ख्यामें "निश्चित" बाधवर्जितत्व-आदि योग्य
विशेषणोंका अन्तर्भाव हो जाता है "क्योंकि
"निश्चित" कह देनेसे संशय और अनव्य-
वसायी अपने तद प्रमाण कहलानेका दावा
नहीं हो सकता, तथा 'बाधवर्जित' विशेषण
विपरीत ज्ञानको नहीं टिकने देता तथा यदि
कोई कह बैठे कि बाधकप्रत्यय उत्पन्न होनेसे
पहिले तो उस मिथ्याज्ञानको भी सम्यक्ज्ञानत्व
प्राप्त हो जा सकता है। क्योंकि न तो
उसमें कोई बाधकज्ञान ही पैदा हुआ है और
न उस बाधकको बाधित करनेवाला ही कोई
तृतीय ज्ञान। इस कुयुक्तिको भी हटानेके लिये
आचार्यने "सदा" विशेषण दे दिया है जो
कि यह बतला रहा है कि प्रमाणमें बाधवर्जितत्व
या निश्चितत्व थोड़ेसे समयके लिये ही नहीं
किन्तु त्रिकाल या सर्वदा-हमेशाके लिये है,
जिस ज्ञानमें कभी भी बाधा पैदा हो जाय-वह
अपनेको प्रमाण बननेका दावा नहीं कर सकता-
इतना होने पर भी मान लीजिये कि किसीको
"सीपमें चांदी" का ज्ञान हो गया और
बाधक प्रत्यय पैदा होनेसे पहिले ही वह व्यक्ति
कही देशान्तर चला जाय और कभी भी उसे
फिर उस सीपके देखनेका अवसर प्राप्त न हो
तो क्या उसके इस उल्टे ज्ञानको प्रमाण कहना

पडेगा क्योंकि प्रमाणके लक्षणमे आये हुए वाचवर्तित्व, निश्चितत्व और सदा विशेषणोंकी सत्ता बार बार मौजूद है—पर दर असल वह ज्ञान सच्चा नहीं ? बस ! हमीके निराकरणके लिए ग्रन्थकारने “सर्वत्र” विशेषण भी दिया है अर्थात् एक स्थानपर जिस चीज (सीप) में जिस वस्तु (चादी-रजत) का ज्ञान हो जाय तो भी वह उस रूपमें प्रमाण नहीं है । यदि सब जगह वैसा ही होवे तो उसे भी प्रमाण मान लेंगे लेकिन सर्वत्र वैसा होना कब सम्भव है ? इसलिये अन्य विशेषणोंके होने पर भी “सर्वत्र” विशेषण बहुत ही माँकेका लिखा है, इसी तरह किसी अतिमूढ़—अकस्मिक दुश्मनको किसी झूठे ज्ञानमें भी अभी और किसी स्थान पर भी पहले ज्ञानसे प्रकारान्तरेका ज्ञान ही न होने अर्थात् यदि उसे हमेशा और हर जगह सीपमें चादीका ही ज्ञान होता रहे, तो भी उसे प्रमाण नहीं कह सकने—कारण कि आचार्यक “सर्वत्र” विशेषणने इन कहनाको पहिले ही नज्जरित कर दठा दिया है—अतः अन्तमें यही निष्कर्ष निकला कि जो सर्वदेश, सर्वकाल और प्रायशः सर्व व्यक्तियोंकी अपेक्षा बाधा रहित, निश्चिन और स्व-परपार्थक्यका साकार गृहण हो वही सम्प्रज्ञान या प्रमाण है ।

इसी बातको इन्हीं विद्यानन्दि स्वामीने अपने अष्टमहत्वी नापक ग्रन्थान्तर्गत शब्दान्तरों द्वारा इस भाँति प्रतिपादन किया है कि “तत्त्व ज्ञान प्रमाण” अर्थात् यथार्थ ज्ञान हो वही प्रमाण है—ऐसा कह देने पर बौद्धदर्शनाभिमत निराकार दर्शन और अन्यान्य बादि

पवादियों द्वारा स्वीकृत सन्निकर्षादिकोंको अप्रमाणता भली भाँति सिद्ध हो जाती है—क्योंकि वे अज्ञान स्वरूप हैं । उन अज्ञानरूप सन्निकर्षादेकोंको स्वार्थाकार प्रमिते (स्व-आत्म और पर-पदार्थोंके ज्ञान)में नियमरूपसे साधकता मता—सहायकता नहीं हो सकना क्योंकि जो स्वयं अज्ञान है—वह स्वार्थाकार ज्ञानके प्रति कैसे सहायक हो सकता है ? स्वार्थाकार परिच्छेदमें तो ज्ञान ही नियमरूपसे पक्का सहायक होनेकी सामर्थ्य रखता है अन्य नहीं ।

क्योंकि न्यायशास्त्रोंका यह सर्वमताभिमत—सर्व मान्य नियम है कि “जितके होने पर ही जो होरे—और नहीं होने पर नहीं ही होवे वही उनके प्रति साधकत्व या नियमरूपसे पक्का कारण है । इसीका नाम दूसरे शब्दोंमें अवयव और व्यतिरेक है सो यह अवयव व्यतिरेक ज्ञान विरोधी—अज्ञान स्वरूप सन्निकर्षादिके साथी नहीं अर्थात् यह नियममे नहीं कहा जा सकता कि स्वार्थाकार प्रमितिके प्रति इन सन्निकर्षादिका अवयव व्यतिरेक बनता है क्योंकि बहुत दूर पर पड़े हुए सीपके टुकड़ेसे इन्द्रिय—चक्षु का सम्बन्ध होने पर भी—सीप रूपमें ज्ञान न होकर रजत या चादीके रूपमें भी हो जाता है । तथा वहीं पर लट्ठड़े अतएव दण्ड धारण करनेवाले दण्डकी बाह रखे हुए दण्ड मात्रके दर्शनमे उन लगडक ज्ञान बिना उस लगडके इन्द्रियोंके सम्बन्ध हुए ही पैदा हो जाता है तब कैसे मान लिया जाय कि सन्निकर्षादि अवश्य ही साधकत्वमया कारण है, क्योंकि “अवयवव्यतिरेकगन्धो हि कार्य

कारणभाव" अर्थात् कार्यकारणोंके नियायक अन्वयव्यतिरेक ही हुआ करते हैं सो यहां पर उनके अभावसे कभी भी साधकतमता (सन्निकर्षादिको) नहीं हो सकती और जब तक स्वार्थकार प्रमितिके प्रति साधकतमता न हो तब तक "प्रतीयतेऽनेनेति प्रमाणं" इस वाक्यके रहनेसे उन्हें कैसे प्रमाण कक्षामें स्थान दिया जाय ?

परन्तु अपने "तत्त्वज्ञानं प्रमाणं" इस लक्षणमें तत्त्व शब्दके ग्रहण कर लेनेसे कोई यह भी नहीं कह सकता कि "ज्ञानको भी साधकतमता नहीं मान सकते क्योंकि संशयादि ज्ञानोंके होनेपर भी सच्ची प्रमिति नहीं होती"। बल्कि "तत्त्वज्ञानं प्रमाणं" ऐसा कह देने मात्रसे ही संशय, विपर्यय, अनध्यवसाय और मर्याभासादि अपनी २ जान बचा कर दूर भाग जाते हैं—कोई अपनी दाढ़ गलानेकी ताक नहीं सोचते, अर्थात् "तत्त्वज्ञान"की सामर्थ्यसे उनका स्वयं ही व्यवच्छेद या नाश हो जाता है।

इन दोनों लक्षणोंके समझ लेने पर अन्य प्रमाण ग्रंथोंमें शब्दांतरोंसे आचार्योंने जो प्रमाण लक्षण बतलाये हैं उनका निष्कर्ष या सार इसी रूपमें निकरता है, अन्यथा नहीं।

तथा श्री माणिक्यनंदि महाराजने भी अपने परीक्षामुख नामक ग्रंथमें इसी बात अर्थात् "प्रमाणलक्षण" को इन शब्दोंमें प्रदर्शित किया है—कि "स्वावर्धव्यवसायात्मकं ज्ञानं प्रमाणं" अर्थात् स्व और अपूर्व—अर्थके व्यवसायात्मक-निश्चयात्मक ज्ञानको ही प्रमाण कहना चाहिये क्योंकि अन्य किसी भी प्रकार यमाणका निर्दोष लक्षण मनही नहीं सकता। "किसी भी लक्ष-

णमें पड़े हुए विशेषण, उस लक्षणके अर्थमें उदात्ता लाते हुए अलक्ष्यसे उसकी व्यावृत्ति-पार्थक्य या जुदाई किया करते हैं" इस नियमके अनुसार हमें विचारना है कि उक्त लक्षणमें कई विशेषण देकर आचार्योंने लक्षणार्थकी कितनी मजबूती की है (व्यावृत्ति आगे दिखलायेंगे)।

सबसे पहिले हमें यह सोचना चाहिये, कि "प्रमाणकी आवश्यकता ही क्या" ? यद्यपि इस विषयमें लेखके आदि भागने भी कुछ प्रकाश डाला है—तथापि वह पूरा नहीं इसीलिए यहां पर भी कुछ शब्द लिख देना उचित प्रतीत होता है। इस प्रश्नका उत्तर भी इन्हीं आचार्योंके शब्दोंमें "प्रमाणादर्थसंसिद्धिः" अर्थात् हेय, उपादेय और उपेक्षणीय पदार्थोंकी योग्य व्यवस्था, और उपादेय-ग्रहण करने योग्य पदार्थोंका ग्रहण तथा हेय-छोड़ने योग्य-और उपेक्षणीय-भिनकी उपेक्षा की जाय ऐसे पदार्थोंका त्याग करानेके लिये प्राणीमात्रको प्रमाणकी आवश्यकता हुआ करती है।

जाति प्रकृति आदिकी अपेक्षासे जो पदार्थ सुखरूप या सुखके कारण समझे जाते हैं, उनका संप्रह और जो उनसे विपरीत—दुःखरूप या दुःखके कारण समझे जाते हैं—उनका त्याग बिना मन उनके होना कयमपि और कदाचिदपि सम्भव नहीं, जैसे कि नीम (निम्बवृक्ष) के कीड़े और जंतु चोहरहको नेम (जो कि कटुवा और मनुष्योंकी स्वाधसामग्रीके हिसाबसे अस्वाद्य है—तथापि) अच्छा और हितकर मादस पड़ता है या जो चन्दन आदि—जिन्हें कि मनुष्य अपने

रफा झूलता हुआ और निर्णय रहित हो, जैसे सीपके टुकड़ेमें यह निर्णय न होना कि "यह सीप ही है या चांदी" ऐसे संशय, तथा पदार्थका चित्कुल उल्टा जान जैसे सीपमें यह निश्चय कर लेना कि "यह चांदी ही है" विपर्यय, और पदार्थके निर्णयकी ओर लक्ष्य ही न होना-विद्वान्के समान किसी भी पदार्थके स्पर्शादि होनेपर भी "यह कुछ है या क्या है" आदि विचार रहित ज्ञान अनध्यवसायिक होता है, इन्हीं तीनोंको मिथ्याज्ञान या एक शब्दमें "समारोप" कहते हैं। इस समारोपसे विरुद्ध ज्ञान वस्तुका यथार्थ परिचायक-परिचय कराने वाला या ग्राहक हो सकता है। और दरअसलमें वही प्रमाण भी है क्योंकि पहिले ही हमने यह बात बतला दी है कि "सम्यग्ज्ञान प्रमाण" अर्थात् सम्यक् शब्द द्वारा संशय, विपर्यय और अनध्यवसायमे रहितका ही बोध होता है। इसलिए इन तीनों रूप समारोपसे विरुद्ध या रहित ज्ञानमें ही प्रमाणता सचाई है। ऐसी दशामें यह बात भी अगत्य माननी ही पड़ती है कि वह सम्यग्ज्ञान या प्रमाण निश्चय रूप हो है क्योंकि इन तीनों रूपोंसे बचा हुआ ज्ञान अनिश्चयात्मक या निश्चिरूप नहीं हो सकता। दूसरी बात यह भी है कि जो पराई अपेक्षाके बिना ही स्वपर वस्तुओंका यथार्थ भाव बतलाने या जाननेवाला है वह स्वयं लक्ष्यार्थीच कैसे माना जा सकता है ! जब तक उसके भीतरी अंशकी पुष्ट मनवृत्ति न मान लें तब तक हमने पदार्थोंके यथार्थ निर्णय रूप कार्य कभी ले ही नहीं सकते। इसलिए

भी उसके भीतरी अंशकी पुष्टता या मनवृत्ती, व्यवसायात्मकता या निश्चयात्मकत्व, नियमसे माननी ही पड़ती है। इसीलिए ग्रन्थकारने "तद्विश्रयात्मकं समारोपविरुद्धत्वात्" यह हेतु पुरस्सर युक्ति दी है।

ऐसा सिद्ध कर देनेसे कोई यह कहनेका भी साहस नहीं कर सकता कि "व्यवसायात्मक ज्ञानको ही प्रमाण माननेसे नितने भी व्यवसायिक ज्ञान होंगे सब ही प्रमाण मानना पड़ेगा। और ऐसा माननेसे प्रमाण और अप्रमाणकी व्यवस्थाका सर्वथा लोप-अभाव हो जायगा; क्योंकि विपर्यय ज्ञान और धारावाहिक ज्ञान (एक ही पदार्थमें निर्विशेष रूप पुनः २ ज्ञान होना) भी प्रमाण कक्षमें परिगणित होनेके लिए इस वास्ते तैयार हो जायेंगे कि व्यवसायात्मकता उनमें भी है" कारण कि उक्त रूपसे प्रतिपादन करनेवालोंके लिए आचार्यने पहिले ही व्यवसायात्मक या निश्चयात्मक शब्दकी व्याख्यासे ही "विपर्ययज्ञान" को कोसो दूर भगा दिया, रते रते "धारावाहिक ज्ञान" की कलाई भी "अपूर्वार्थ" विशेषण खोल ही देता है क्योंकि किसी पदार्थमें पूर्वज्ञान सदृश निर्विशेष ज्ञानका नाम ही धारावाहिक ज्ञान है अर्थात् यदि वह विषयक एक ज्ञान है नेके बाद भी 'घटोय' "घटोयं" "घटोयं" इत्यादि इसी पहिले ज्ञानके संगन अनेक ज्ञानोंकी धाराका होना पहिले ज्ञानद्वारा जैसा कुछ बोध हुआ है उससे किञ्चिदपि तरनमता न होकर जैसाका जैसा ज्ञान होना "धारावाहिक" ज्ञान कहलाता है। यद्यपि ऐसे ज्ञानोंमें भी स्वपरत्ययके भाव



नमो नमो अंगना नमो नमो पापकर्म भोगवाना

सत्यानरं अंगना नमो नमो दाहा

पंथनीने मारीआ, गदकाक्या अनंक ॥ जमना फारशातां तेहने, मारे
वे बहुने ॥ १ ॥ मारी मांश जे वेचीआ, कथा अनर्थ बहुपाप ॥ जमना
जा तेहने, मारे मार अमाप ॥ २ ॥

छहोत्तर अंकमां चित्रमां दशावैला पापकर्म भोगवाना

संथोत्तर अंकना चित्रना दोहा

पशुपदीने मारीआ, गदका कथा अनेक ॥ जमना झिरशातां तेहने,
मारेछे जुहुरेउ ॥ १ ॥ मारी मांश जे वेचीआ, कथा अनर्थ जुहुरेउ ॥
जमना तेहने, मारे मार अमाप ॥ २ ॥

अठथोत्तर अंकमां चित्रमां दशावैला पापकर्म भोगवाना

आंगणोशीं अंकना चित्रना दोहा

मछी मार तपो लवे, मछ बींध्या घरी तान ॥ लाइ हवे दुःख भोगवो
क्यां गयुं तमाइं मान ॥ १ ॥ मछ मारी लोचन किया, प्राण बुद्ध्या जे
पां दश ॥ जमनाय हवे तेहने, पीली कादे कदा ॥ २ ॥

अठथोत्तर अंकमां चित्रमां दशावैला पापकर्म भोगवाना

आंगणोशीं अंकना चित्रना दोहा

मछी मार तपो लवे, मछ बींध्या घरी तान ॥ लाइ हवे दुःख भोगवो
क्यां गयुं तमाइं मान ॥ १ ॥ मछ मारी लोचन किया, प्राण बुद्ध्या जे
नेणे दश ॥ जमनाय हवे तेहने, पीली कादे कदा ॥ २ ॥

अर्थप्रत्यय या वाह्यपदार्थोंका बोध होता है । तथापि पहिले जानने बादमें उत्पन्न हुए सबही ज्ञान निष्कल है—इस लिए उन्हें प्रमाण नहीं माना कारण कि प्रमाण या सच्चे ज्ञान का कल-दृष्ट पदार्थोंका ग्रहण अनिष्टोंका त्याग और उपेक्ष्य पदार्थोंकी उपेक्षा माना गया है—तो यह बात पहिले ही जानसे यथामुम्भव हो जाती है । फिर क्यों कर बादमें होनेवाले निष्कल ज्ञानोंको प्रमाणोंकी कक्षामें बिठलाया जय ? बस ! इसी उद्देशसे महर्षियोंको धार्माधिक ज्ञानोंकी प्रमाणता स्वीकृत नहीं—और इसी कारणसे यहां पर प्रमाणलक्षणमें अपूर्वार्थविशेषण देनेकी आवश्यकता जानकर आचार्योंने इस विशेषणका प्रयोग किया है । क्योंकि धार्माधिक ज्ञानोंमें अपूर्वार्थत्वके अभावसे ही प्रमाणताका अभाव है ।

हां ! यहां पर कोई यह अदृश्य कह सकता है कि यदि हम यह नियम बना लेंगे कि जिस ज्ञानसे पूर्वज्ञान प्रतिभाषित पदार्थ प्रतिभाषित न हो वही प्रमाण है निम्नके द्वारा केवल ऐसा ही पदार्थ ज्ञान हो जो कभी और किसी ज्ञानसे न जाना गया हो—तो संसारभरमें मिलने भी ज्ञान उत्पन्न होते हैं—उनमें कोई भी प्रमाण नहीं कहलाया जा सकेगा । क्योंकि प्रथम तो ऐसा पदार्थ ही मिलना कठिन है कि जिसे सर्वज्ञानसे भी प्रतीत न हुआ हो, आदित्यक दार्शनिकोंमें कोई भी ऐसा नहीं मिलने सर्वज्ञा अस्तित्व न माना हो और नय सर्वज्ञका अस्तित्व माना तब यह माननेों भी कोई आपत्ति नहीं की जा सकती कि उसके अप्रतिभाषित पदार्थ संसारमें अपना अस्तित्व ही

नहीं रग सकेगा । ऐसा कोई पदार्थ नहीं हो सकता कि जो उस ज्ञानसे भी छिपा रहा हो । कारण कि उसके ज्ञानके विषयमें यह बात सर्वसम्मत और मान्य है कि 'त्रिकालवर्ती तीनों-छोहोंके समस्त पदार्थोंको समर्पण ज्ञाननेवाला सर्वज्ञका ज्ञान होता है' दूसरी बात; मान लिजिये कि यदि हमने किसी व्यक्तिसे अग्निका नाम सुनकर अत्रेन्द्रियगम्य शांडिक रूपमें लिया या किसीसे व्याप्ति-व्यतिनाभाव सवन्ध द्वारा अग्नि को ज्ञान लिया । इसके बाद हमें धूमजानसे होनेवाले अनुमानिक अग्निज्ञान को और अग्निके पास पहुंच माने पर चक्षुरिन्द्रिय या स्पर्शनेन्द्रियसे सुसुख सांख्यवहारिक प्रत्यक्षज्ञानको ही प्रमाण माननेसे हाथ खींचना पड़ेगा । हमें इन सब जनोंको भी 'प्रमाण' कहनेमें दिक्किचाहट होगी । और ऐसा होने पर "विनायकं प्रसूतार्थो रचयामास चानरं" वालो कहावतके अनुसार "अपूर्वार्थ" विशेषणसे प्रमाणमें विशेषता या अप्रमाणिक लक्षणकी वगावृत्ति न हो कर हाथसे प्रमाण भी निकट नायेंगे और ऐसा होना अनुचित है ।

इस प्रकार प्रतिपादन करने महाशयको विचारना चाहिये कि प्रमाणका लक्षण बतलाने-वाले अचार्यों यह अभिप्राय नहीं है कि "अपूर्वार्थ" विशेषण द्वारा हम उस अर्थ परार्थका ग्रहण करें कि जो 'सर्वार्थ' "अपूर्व" हो, कारण पहिले तो सर्वार्थ 'अपूर्व अर्थ' ऐसा जैन सिद्धान्त माननेवाला कोई भी व्यक्ति स्वीकार नहीं कर सकता, जैन दर्शनका मुख्य प्राण "म्याह्वार" है । उसे माननेवालेके हृदयसे

कभी "सर्वथा" शब्द ऐसे दार्शनिक विषयोंमें नहीं निकट सकता। शब्द निकले या न भी निकले किन्तु मुख्य अभिप्राय यह है कि जब कोई भी पदार्थ सर्वथा अपूर्व हो ही नहीं सकता तब यहां पर किसी स्वयं कहना करके दोषेन्द्रावन करना युक्तिरूपतः नहीं। अर्थका अपूर्व-विशेषण तो यही सिद्ध करता है कि अपने ही पूर्वज्ञानद्वारा जिन पदार्थों का स्वरूपमें दोष हो चुका है। ठीक वैसे ही रूपमें दूसरा जिसरा चौथा आदि ज्ञान होना निष्फल होनेसे अप्रमाण है। प्रमाण वही है जिसने उत्पन्न होकर हानि, उत्पादन और उपेक्षारूप फलव्रय-मेंसे यथायोग्य किसी फलकी निम्नति की हो। पूर्वज्ञानसे जाने हुए अर्थों भी कुछ विशेषता सहित ज्ञान प्रमाण कहाया जा सकता है। क्योंकि "ज्योंका त्यों ही" न होना अपूर्व विशेषणकी साधकता है। ठीक इसी बातके ध्यानमें आनेसे श्रावणज्ञान, वगैरिज्ञान, अनुमान और चाक्षुष या स्पर्शन सांख्यद्वारिक प्रत्यक्षों में जो दोषेन्द्रावन हुआ वह निराकृत हो जाता है क्योंकि उस सब हो ज्ञानमें एकता प्रतिभास नहीं है। 'कारणभेद नियमसे कार्यभेद कर देता है' अतः कारणभेद और प्रतिभास भेद समुपपन्न होनेसे उन स्वयं भेद हैं तथा जैसा श्रावण ज्ञान है ठीक वैसे ही दूसरे तीवरे-वगैरिज्ञान, अनुमान आदि नहीं। अतः अपूर्वार्थ विशेषणके ऊपर जो फलके लगानेका अनुचिन् माहम किया गया वह अपने औचित्यके अभावमें स्वयं ही नहीं टिक सकता।

और न जैनियोंके माने हुए प्रमाणमंशुवाद (किं ही एक ही विषयमें अनेक प्रमाणोंकी प्रवृत्ति "प्रमाणमंशु" कहलाना है-इसे जैनाचार्योंने भी स्वीकृत किया है मैं किसी व्याघात-आपत्ति या दोषकी ही सम्भावना हो सकती है-क्योंकि अपूर्वार्थ विशेषणका मुख्य प्रयोजन यही है कि "ज्योंका त्यों ही" विषय न होना, च हिये-किन्तु अर्थ ज्ञान विशेष होनेपर प्रमाणमंशुव, अपूर्वार्थ विशेषणका विरोधी न होकर सहायक ही है।

प्रथम प्रमाणसे जानी हुई वस्तुमें आकारादि विशेषको-ज्ञाननेवाला दूसरा प्रमाण भी अपूर्वार्थ (अपूर्व या नवीन अर्थ-विषय है जिसका) ही है। जैसे किसीने पहिले केवल इ ना जान पाया था कि 'यह वृक्ष है' इस प्रमाणसे गृहीत वृक्षो पुनः "यह वट वृक्ष है" इस प्रकार ज्ञाननेवाला द्वितीय ज्ञान भी प्रमाण ही है क्योंकि वृक्षरूपसे उस वस्तुका ज्ञान हो मानेपर भी वटरूपसे पहिले ज्ञान नहीं हुआ था इसलिये आचार्योंने स्वयं लिखा है कि 'अनिश्चितोऽपूर्वार्थः अथातु अपने स्पष्टरूपसे वा आकारादि विशेष रूपमें नहीं जाना हुआ सम्पूर्ण पदार्थ समुदाय "अपूर्वार्थ" ही है। तथा सिर्फ अनजान पदार्थ ही अपूर्वार्थ नहीं माना-किन्तु जाना हुआ भी समारोप या संशय, वार्षिक, अनद्यवस्था आदिके सद्भावमें माना ही "अपूर्वार्थ" मान लिया जाता है। जैसे किसी व्यक्तिने अपने बचानमें ग्रन्थका अध्ययन किया हो फिर उस ग्रन्थ या विषय का सम्पर्क सम्बन्ध न रहा हो तो गृह्यावस्थामें उस व्यक्तिके

लिये वह ग्रन्थ या विषय बिल्कुल हो नवीन ज्ञेय मानना पड़ेगा क्योंकि कालादि व्यवधानसे अब वह व्यक्ति नहीं पड़े हुएसे कुछ भी विशेष नहीं जनता । ठीक इसी प्रकार यदि किसी व्यक्तिको कभी और कहीं पर किसी पदार्थ का सम्बन्ध प्रमाण हो गया और बादमें सशयादि व्यवधान पड़ गया तो उस व्यक्तिके लिये वह पदार्थ भी अपूर्व ही है अतः ऐसे पदार्थोंमें भी जो निश्चयात्मक ज्ञान उत्पन्न होगा वह भी प्रमाण कोटिमें ही परिगणित समझा नयगा ।

“दृष्टोऽपि सैमारोपान्तादतिनि” ।

इस मान्त्रिक प्रमाण परिभाषामें दिये हुए सब शब्दों (पदों) की सार्थकता प्रदर्शन कर चुकने पर “स्व” शब्दकी सार्थकता प्रदर्शन करना भी आवश्यक जान कहना पड़ता है कि निम्न ताह अन्य विशेषणोंमेंसे किसी एक विशेषणके होन होनेसे प्रमाण लक्ष्य अपरपूर्ण रह जाता है उसी तरह यदि “स्व” शब्दकी अपेक्षा कर दी जाय तो भी प्रमाण परिभाषा सम्पूर्ण रीतिसे निर्दोश नहीं कइलाई जा सकती । यद्यपि कुछ दार्शनिकोंने कई स्वकल्पित कल्पनाओंके आधार “स्व” शब्दकी अनावश्यकता बताई है—उनमेंसे एकका कहना है कि “ज्ञान स्वका व्यवसायी नहीं हो सकता—ज्ञान दूसरे पदार्थोंको तो जान सकता है—परन्तु अपनेको नहीं, क्योंकि वह अचेतन है । और उसकी अचेतनता प्रमाण या प्रकृति की पर्याय होनेसे सिद्ध ही हो जायगी अर्थात् ज्ञानको अस्वसवेदी अपने आपकी नहीं जाननेवाले (सारूप) का कहना है कि जो चेतन होता है

वह प्रधान प्रकृतिको पर्याय नहीं होता जैसे आत्मा । न्तु यह ज्ञान, प्रकृतिकी पर्याय होनेसे अचेतन है और जब यह अचेतन है तब घट पट मट आदि अन्य अचेतन पदार्थोंकी तरह स्वयं अपनेको जान-वाला कैसे हो सकता है ? कतनीही तेन तलवार क्यों न हो स्वयं अपनेको ही नहीं काट सकती किन्तु ही शिक्षित नटवट (कलावाज, टिका लडका) क्यों न हो अपने ही कभेरे नहीं बैठ सकता । ठीक इसी नियमसे अनुमान ज्ञानको भी अपना जानना मान लेना उचित नही अतः “स्व” शब्दकी कोई आवश्यकता नहीं है ” तथापि इन कही हुई कल्पनापर थोडासा भी विचार रखनेपर “स्व” पद की आवश्यकता स्पष्ट शक्ती लग जाती है—क्योंकि निम्न आधार पर वक्त कल्पना की नींव रखी गई है वह ज्ञानको प्रकृति (पदार्थ) की पर्याय मान लेना ही है जोकि अनेकों प्रमाणोंद्वारा शीघ्र ही अतयत हो जाती है—ज्ञान वास्तवमें आत्माकी पर्याय है—जानना और देखना आत्मामें ही होनेसे ज्ञान पर्यायवाच्य आत्मा ही हो सकता है । जो ज्ञान पर्यायवाच्य नहीं होना उसमें जानने और देखनेकी शक्ति भी नहीं होती जैसे पटादि वस्तु पर जब आत्मामें जानने और देखनेकी शक्ति उत्पन्न हो रही है तब उसे ज्ञान पर्यायवाच्य मानना ही पड़ेगा ।

अगर प्रधान-प्रकृति (पदार्थ) को ज्ञानवान् माना जायगा तो फिर आत्माका अस्तित्व मानना भी कठिन पड़ जायगा—क्योंकि जब प्रधानमें ही जानने और देखनेकी शक्ति मान ली तब फिर

आत्माकी आवश्यकता ही क्या ? अथवा फिर किन हेतु 'के सहारे आत्माकी सिद्धि होगी ? और ऐसा होने पर 'जैसे नी चले छोके वनने और मार्गमें ही दुबे रह गये' वाली कहावतके अनुसार उनका (संख्योंका) यह मूल सिद्धान्त भी हाथसे नि ल ग्यगा " त्रिगुणमविरेकि विषयः सामान्यमचेतनं पुंश्वधमि, व्यक्तं तथा प्रधानं तद्विपरीतस्तथा च पुंश्वधमि । "

अतः उन्हें भी स्वसिद्धान्तसेरक्षणा के लिये 'चेतनोहं-मैं चेतन हूं' इस अनुभवके बलसे जिस तरह आत्माके चेतन स्वभावकी स्वीकृति की है उसी तरह 'ज्ञाताहं-मैं ज्ञाता-जानने और देखनेवाला हूं' इस सर्वजन प्रसिद्ध अनुभवके बलसे ज्ञान स्वभावता भी निर्विवाद रूपसे स्वीकार करना ही पड़ेगी क्योंकि अनुभव दोनों स्थलोंमें समान है । तथा यह भी एक निर्विवाद एवं प्रमाणसिद्ध सिद्धान्त है कि जो ज्ञान स्ववेदी नहीं होता वह प्रतिनियत-निषमिति पदार्थोंकी व्यवस्थापक भी नहीं हो सकेगा क्योंकि पदार्थोंकी व्यवस्थाका भाव ही यह है कि नियमित देश, काल अदिकी अपेक्षासे नियमित पदार्थका अनुभव होना सो ज्ञानके अस्वसंवेदी होनेसे वन नहीं सकता । इसलिये अनुपान रूपमें कहना पड़ता है कि "ज्ञान स्वव्यवस्थापक होता है । इन्द्रियादि कारणा तरकी अपेक्षाके बिना भी पदार्थोंका व्यवस्थापक होनेसे" और जो दर्पणादिकी तरह स्वव्यवस्थापी नहीं होता वह पदार्थोंकी व्यवस्था भी नहीं कर सकता है । अतएव स्वयं आत्मा के प्रतिपादन किया है कि "स्वमुत्पत्तया

प्रतिभासतं स्वम्य व्यवसाय, 'अर्थस्येव तदुन्मुखयति" अर्थात् जिस तरह घट, पट मट आदि पदार्थोंकी उन्मुखतासे ज्ञान निमंदेह निश्चयात्मक हो जाता है उसी तरह अपनी उन्मुखतासे अपना ज्ञान भी होता ही है । और जब स्व-अपना ज्ञान होना प्रमाणसिद्ध है तब स्वशब्द भी प्रमाण लक्षणमें आवश्यक ही है, अनावश्यक नहीं । बिना स्वशब्दके प्रमाण लक्षण परिपूर्ण ही नहीं हो सकता । अस्तु ।

अन्तमें हम अपने विचारशील पाठकोंसे साग्रह निवेदन कि प्रे बिना न रहेंगे कि यदि आप हमारे इस नियमका विचारपूर्वक अवलोकन कर कुछ लाभ उठाकर हमारे परिश्रमको सफल करेंगे तो सम्भव है कि ऐसे ही अन्य विषय भी आपके समक्ष उपस्थित करनेमें हम शीघ्र ही समर्थ होंगे । शुभमस्तु ।

तिलक-शोक ।

गजल ।

भारतके प्राण प्यारे, प्यारे तिलक हमारे ।
ऐने सभे में हमको, कहीं छोड़कर छिधारे ॥
भारत जो काल गलनमें छे रहाया करवट ।
तुमने जना दिया था, दे दे इसे सहारे ॥
इस फूटकी हटाकर, राग प्रेमका ये ऐसा ।
हमारे चढ़ाया उतारे न जो कभी उतारे ॥
इस देशका सुधाया जो, कुछ हुआ था अवतक ।
तैर प्रतपसे या, ए देशके दुलारे ॥
बाळक अशान घड़े, निर्धन धनी समीको ।
भक्तको है निहात ऐ लोकमान्य प्यारे ।
तैरी जुवाँ हमसे, होगी न दूर दमिज ॥
कहते गंगे हरदम आँखोंसे, अब पनरि ॥
पुरस्ठमे जर नलम भी चलतो नही अगाडी ।
करता हं पर इससे, आखिर यही पुकारे ॥
"प्रियेश" हमारी विनयी, स्वीकार इतना करना ।
मारतमें जग्न लेना, आकर यही बुकारे ॥

'प्रिय' प्रेरण ।

આદર્શ જીવન ।

લેક્ચર-માસ્ટર હોટલાઇ જી. ગાધી-સોનામળ ।

મંસારમા, એકેન્દ્રિકથી વધુ પચેન્દ્રિય સુનીના જે જે શ્રવે આપણને દૃષ્ટિગોચર પડે છે, તેમા મનુષ્યને સારાસાગનો વિચાર કરવાની શક્તિ બહેલી છે. જો તે ચાહે તો તે શક્તિદાર પોતાના જીવનને અમુક અંગે આદર્શ જનાવવામા ફગીમૂન થઈ શકે તે નિર્વિવાદ છે; કારણકે પ્રાચીન તેમજ આર્યવીન સમયનો ઇતિહાસ તેની સમગ્ર સાક્ષી પુરે છે. પોતાના જીવનને ઉચ્ચતાની પરાકાષ્ટાએ પહેચાડવાને, રક્ત તેમજ ગમ્મત, પુરુષ તેમજ સ્ત્રીને, બાળક તેમજ બાળિકાને, એક સરખો હક છે; અને તે હક બોગવવાને, ગમે તે રથળા કુપંડી યા મહેલ, ઘર યા જંગલ, રથળા યા જળી, ગણુ યા મેઘન, વિદ્યાગૃહ યા કારાગૃહ અવરૂંઘ છે.

આદર્શ જીવનને અનુશયો-મનુષ્ય, સર્વ સ્થિતિમા-ગરીબ યા સારી-દુઃખી યા સુખી-પોતાની કર્તવ્ય પરાયણતા, સત્ય નિષ્ઠા, પ્રમાણિકતા, અને શુદ્ધ વાસનાથી, સર્વ કોટના ઉચ્ચ એક નહિ અસર કરવાને સમર્થ થાય છે. તેના વચનો પર પૂણું જઢા બેસે છે. અને તેડું અનુકરણ કરવાને વારંવાર ઇચ્છા પ્રાદુર્ભાવ થય છે. તે નહિ કે એકદેશ પોતાનું આચર-કારણ કરે છે, પણ બીજાએને તે કરવાને આકર્ષતરી યા સીધી રીતે, પ્રેરણા યા પરેશ રૂપે એક કાચુ રૂપ થઈ પડે છે, અને આદિક તેમજ પારમાર્થિક મુખ સાધવાને સમર્થ થાય છે. તેની રંગ, વસ્ત્ર, પેન કુટુંબક-(વસુધા એજ માતૃ કુટુંબ છે)-તે સિદ્ધાંત પ્રસરી રહે છે, તેને જગત પ્રાંત નિરુચા પ્રેમ, પોતાનું સર્વસ્વ-જ્ઞાન, ધન, જલ અને સત્તા-બીજના હિનને માટે અર્પવાને તેને પ્રેરે છે, અને તેના હૃદયપટ પર, પવિત્રતાપ સર્ગ વિમુલક-(સન્ત પુરુષોની વિમુલકતા બીજના બધાને

વાસ્તેજ હોય છે)-અને " Inaction is a part of mercy, is an act in a deadly sin "—(દયાના કામમા ભાગ ન લેતો, તે અવકર પાપના કામમા ભાગ લેવા ગરેબર છે)-એ એક અમૂલ્ય સૂત્રની ચિરસ્થાયી છાં મારે છે. છાં તેના જીવનને સાર્થક જનાવવાની પૂર્ણ અંગે સદાયબુદ્ધ થાય છે. તે દરેક પ્રતિ મેત્રોમાન, પ્રાદુર્ભાવ, અર્થ પ્રેમ વૃત્તે દાખવે છે, આ સર્વને એક સંખી રીતે ઝાલ્ય છે, તેમના દુઃખ દળે અર્થ તેઓ સુખી થાય એવા બાના તેના દીવળા હમેશાં સ્ફુટી કરે છે, અર્થ તે દુઃખ દુર કરવાના ઉપાયો શોધી અમલમાં મૂકે છે. આવી ઉચ્ચ બાવના, આપું ઉચ્ચ પ્રકારનું જીવન, તેના મનને, ગગદેવરથી મલથી દૂર કરી, નિર્મલ અને શાન્ત રાખે છે. આના તેના નિર્મલ અને શાન્ત મન ઉપર આત્મચૂનો પ્રકાશ બગમર રીતે પડે છે, અને તેને આત્મવાનનું દિગ્ગંત કરાવી આપે છે. આ આત્મવાનથી તે શાશ્વત સુખને સાધી શકે છે અને અનુભવી શકે છે.

આદર્શ જીવનની અમૂલ્યતાથી ચકિત થઈ, વાંચકરૂપે, તેની આચર્યકતા જાણાય એ રસ આવિષ્ટ છે, અને તેની પ્રાપ્તિમા સાધનો જાણવા આગુર થાય તે દેનીતું છે. તે કદાચ પોતાની મેળે, તેની પ્રાપ્તિમા સાધન તરીકે વિચાર-જે સામાન્ય રીતે જ્ઞાન, જાણુતર, શુદ્ધિગ્રાહક વગેરે નામોથી ઓળખાય છે તે)-અને દ્રવ્યને માત્રી મે, પણ તે ક્યાસુની ન્યાયચક્ત અને શુક્તિમંત્રન છે, તે ક્યાસુની તકરિફ થાય નહિ ત્યાસુની તેના મધાર્થ નિર્ણય હોઈ શક નહિ.

આધુનિક રૂઢો તેમજ કોપેનેમા જી શિશુજી આપવામાં આવે છે, તે રૂઢ રચાયેપરાયણ શુદ્ધિ, આત્મજ્ઞાણ, પરસ્પ્રાણ, મૈત્રિચિત્તવૃત્તિ, ઇન્દ્રિય-

નિઃશ્વર શિથિલતા વગેરે વગેરે અવશ્યજ્ઞોના પ્રાદુર્ભાવ થવાને ઉત્તેજન આપે છે, અને આપણને સ્વાત્મ્યથી અલ્પે પરાત્મ્યથી બનાવી, મુક્તિને અલ્પે મુક્તિને માટે તૈયાર કરે છે. તે, દુનિયાને ગમે ને પ્રકારે હુડી, કળી, ભોળાઈ, સ્વાર્થ સાધવાને પ્રેરે છે. થોડા સમય ઉપર સમાપ્ત થએલી લલાઈમાં જેણે હજારો માણસોનું બલિદાન લીધું તે દુષ્ટ પિશાચણી વિદ્યાનું દુકામાં આધુનિક શિક્ષણ આપણા ચારિત્રની વૈષ્ણવતાને લીધે યા આત્મ-બળની ખામીને લીધે, અતિ ઉપર એવી સચોટ અસર કરે છે કે જાણે અમને પણ આપણાં, મનબલ, વચનબલ અને કાયબલ, તેમજ પરિણામે છે. એક અગ્રેજ વિદ્વાનના શબ્દોમાં કહીએ તો, “ચારિત્રની, એક મુઠ્ઠી વિદ્યાના એક મહુડી ખરાબર છે.” બંધુઓ, જ્યાં આવી કુટિલતા પોતાનું સામ્રાજ્ય ચલાવી રહી હોય, ત્યાં આદર્શતાના ચિન્હોની આશા કેમ રાખી શકાય ? જે આધુનિક વિદ્યાને એક મહાચારનું સોપાન બનાવામાં આવે, તો પછી જોઈએ કે તેની શક્તિ તે દિશામાં કેટલું કામ કરે છે. આ ઉપરથી સ્પષ્ટ છે કે જીવનની આદર્શતાનો આધાર, સામાન્ય રીતે કહેવાતી વિદ્યા ઉપર, સર્વથા હેવો સભરવે નથી.

દ્રવ્યથીજ જે ચારિત્રનો ધર્મરો રાખી શકાતો હોય, તો રાગ રજવાડાઓ અને ધર્મિકા એકલાજ, આદર્શ જીવન ગણતા માણસ પડવા જોઈએ; પરંતુ તે તો પ્રત્યક્ષ બાધિત છે. જે દ્રવ્યવાન પુરુષ, ‘પરોપકારાય સર્વો વિમુક્તયઃ’ એ સૂત્રને હૃદયમાં રાખી, તદ્દનુસાર વર્તન રાખે છે, તે અમુક અંશે જીવનને આદર્શ કરવામાં ફળીભૂત થાય છે, જે તેનાથી ઉલટું વર્તન રાખે છે તે અનીતિ, વિષયાસક્તિ, વ્યસન, વગેરે દુર્ગુણોના ભોગ થઈ પડે છે, દુનિયાની કન્દ-જાલમાં સપડાઈ જાય છે અને છેવટે દુઃખથી રીજાઈ રીજાઈ પંચતને આધીન થાય છે. ગરીબને ચારિત્ર સાથે સારો મેળ હોય છે. કારણકે દ્રવ્યનો દાસ બનવાના પ્રસંગ આવતો નથી, અને તેના ધેરકપોગથી ઉદ્ભવતા દુષ્ટ પરિણામોના ભોગી

બનતો નથી જે કે તેની પાસે ધન હોતું નથી છતાં જે ઘરે તો તન અને મનથી પણ ઉપરોક્ત સુત્રાનુસાર વર્તન રાખી શકે, અને ઉદયમ, કરકસર પ્રમાણિતતાથી, શુદ્ધ ચારિત્રરાગા મનુષ્યત્વનો અધિકારી બને.

આથી જણાવું કે વિદ્યા અને દ્રવ્યનો જે કે અભાવ વા સદ્ભાવ હોય, તો પણ જીવનની આદર્શતા પ્રાપ્ત કરી શકાય; કારણકે આદર્શતાનો ઉત્કૃષ્ટતાનો શુદ્ધ ચારિત્રનો-આધાર કામલ અને પ્રેમાગ્રહણ ઉપર છે હૃદયને દયાક્રિત અને પ્રેમ-મય-કર્તું તે દરેક વ્યક્તિ । હાથમાં છે. જો ઠેકણે લખ્યું છે કે-‘આત્મવાત્મનો વંશુદાયવેદિવિદુ’ રત્નને-આત્માજ મનુષ્યનો બધુ-મગ્ન-છે અને શત્રુ છે. આત્મા જ્યાં સુધી પોતાના જ્ઞાન દર્શન અને ચારિત્ર રૂપ શુણીતું પાલન કરી, આત્મ ધર્મનું રક્ષણ કરે છે, ત્યાં સુધી કયાવ-કોષ, માન, માયા અને લોભ-તેમજ રાગ દ્વેષ પોતાની સત્તા જમાવવાને અસમર્થ થાય છે. આથી આત્મા, બધુની માફક કિતકર નીવડે છે; પણ જ્યારે આત્મા પોતાના ધર્મથી જાણે થાય છે, ત્યારે ઉપરોક્ત રાગ દ્વેષ શત્રુઓ તેનામાં પ્રવેશ કરે છે, અને તેને, શત્રુની માફક આચરણ કરવાને પ્રેરે છે. દાખલા તરીકે, આપણી પાસે અખિ જ્યાં સુધી પોતાનો ઉચ્ચ ધર્મ સાચવી રાખે છે ત્યાં સુધી સિંહ, બ્યાદાદ બગર પ્રાણીઓ આપણા ઉપર હુમલો કરતા અટકે છે; પણ જ્યારે અખિ પોતાનું રક્ષણ ત્યજ દે છે-એટલે દુકો થઈ જાય છે, ત્યારે આપણી જાંઘી જોખમમાં નાખે છે. આપણે જરી આ બાબત વધુ સ્ફુટ કરીએ. અમુક મુન્હાની શિક્ષામાં જ્યારે કુતરને લાકડી મારવામાં આવે છે, ત્યારે તે મારનારને કડકના નાંદિ જતાં લાકડીને કડકવા જાય છે. આ તેની અજાનતા માનો યા ગમે ત માતા. આપણુ પણ તના જેવું જ વર્તન ચલાવીએ છીએ; કારણ કે અમુક બાંકન, જ્યારે આપણું આહન કરે છે, ત્યારે તન આપણે તિરસ્કારની દાટને જોઈએ છીએ. એ પ્રસંગે, આપ પણ જરા વિચાર કરવાને યોગ્ય

પી કે, જે વ્યક્તિદ્વારા હુખ પ્રાપ્ત થાય છે, તે પક્ષિ ખરી રીતે અદિત કર્તા નથી, તે તો એક નમિત કારણ છે. આપણું ખરું અદિત કરનાર । આપણે પૂર્વ બચ્ચા કરેલા અશુભ કૃતો છે મા કૃતો તેના કર્તાને (આત્માને) શિક્ષા આપવાને માટે તે વ્યક્તિને એક લાકડી રૂપ સાધન સિદ્ધિ વાપરે છે. માટે રૂપ છે કે આપણો થયું આપણો આત્માજ છે, અને આત્માનું રક્ષણ કરનાર પણ આત્માજ છે.

આત્મા બપારે નિર્મલ અને શાન્ત હોય ત્યારે તે સાચા સુખનો આપણને અનુભવ કરાવી, સાચા મિત્ર તરીકેની ફરજ અદા કરે છે; પરંતુ અપામૃતી તે મલીન અને અશાન્ત હોય, તપામૃતી તેનામાં, જીવનને આદર્શ બનાવવાની લાલકારતની અપેક્ષા રાખ શકેતી નથી. આત્મા અનાદિકાલથી, કૃમ-મલકથી લીધે રૂઢ રહ્યો છે, અને તે મલકથી તેને દૂર કરવો તેજ માનવ જીવનનો ઉચ્ચ આશય છે. આશયની સિદ્ધિ જીવનને આદર્શ બનાવે છે.

હવે પ્રશ્ન એ થાય છે કે આ આશયની સિદ્ધિને અર્થે કયા કયા હુખ શુભોત્તી સ્વાસ્થ્ય-કા છે? મ મ ધારવા પ્રમાણે સત્યનિષ્ઠા, પ્રમાણિતતા, આત્મસંયમ અને શુદ્ધ પ્રેમ-એ તાર શુભો તેને તારે પુરતા છે. આ શુભો આટલા અમૂલ્ય છે, છતાં ને પાપન કરવાને નથી. વર પડતી આર્થિક મોથી કેળવણીની કે દ્રવ્યની નથી જ્યુ પડતુ દેશ કે પદેશ. તેના નિત્ય વ્યવહારમાં ડગવે ડગવે અને પગમે પગમે આત્માને પોકારે છે કે, " આત્મન. તારા હૃદયમાં મને એકંદરે રચાન આપ, પછી જોઈએ કે તારો વ્યવહાર કેવો સરલ અને સુખમય ચાલે છે; " છતાં આત્મા, વ્યવહારમાં એટલેા હુખકેમોલિત રહી ગયો હોય છે કે તેઓને રચાન આપવાનું તે સું, પરંતુ તેઓના પોકારને પણ મશ્કારનો નથી. ઉપકાર કરવા ઇચ્છનારને અપમાન કરી અપમાન કરવો તેના જેવું બીજું કયું પણ હોઈ શકે? અસ્તુ હવે વિચારીએ કે આ શુભો કેટલી દરેક, નિત્ય વ્યવહારને કેવી રીતે સરલ અને

સુખમય બનાવી જીવનને આદર્શ બનાવવાને, આપણને યોગ્યતા મેળવી આપે છે.

સત્યનિષ્ઠા:-વિશ્વાસ પ્રાપ્ત કરવાની યોગ્યતા, અથવા બીજા રાષ્ટ્રોમાં 'કહીએ તો મન, વચ, કાપ્તી એકતા એજ સત્યનિષ્ઠા. " કુશલતા ધનુનામાં હોય છે, તેમ પૂર્વ પણ કાઈ અતિ વિરલ નથી; છતાં કુશલતા અથવા શુદ્ધ ઉપર આપણને પૂર્ણ વિશ્વાસ આવે છે. ને કુશલતા, શુદ્ધ, ઉભય સત્યનિષ્ઠ હોય તોજ, નહિ તો નહ. સત્યનિષ્ઠા એજ સંસ્કૃતું મન વચ કરે છે, સર્વમાં માનને પાત્ર કરે છે. માણસ સારો છે એમ તો તે સત્યનિષ્ઠ હોય ત્યારેજ કહેવાય છે. "

સત્યનિષ્ઠ પુરૂષ તરફ સર્વ મનુષ્યો આકર્ષાય છે. નેને ખના અંતઃકરણથી રક્ષાય છે અને તેની સાથેના વ્યવહારમાં જોડાવાને પ્રેમય છે. 'સર્વ મનુષ્યોનું' તેના પ્રતિ આકર્ષણ, તેને સાખ આખર પ્રતિષ્ઠા વા માન કે જેની પાછળ જનસમૂહનો મોટો ભાગ વલસી રહે છે તે સહેજ મેળવી આપે છે, તેઓની તેનાપર ચાલના, તેના સુખને વિદ્યસ કરનાર કોષાગિનને ખુલાવે છે, તેમનો તેની સાથેના વ્યવહાર, તેને પૈસા ધન વા દોલત કે જેને માટે દુનિયા દીવાની બને છે, જેના લોભથી અંગ્રહ વ. ઇ પોતાના જીવને જોખમમાં નાખે છે, તે સુખથી આણી આપે છે, જેથી તે પોતાની ઇચ્છાએને પૂરત કરવામાં સમર્થ થાય છે. હુકામાં સત્યનિષ્ઠ પુરૂષ, ખર્ચ અર્થ બો કામ એ ત્રણ પુ પાયને અનુક્રમે એક બીજાના વિરોધ રહિત સાધી પોતાની પુરૂષ સંગ, (પુરી રીતે દતિ પુરુષ: વિતમ ચેતન્યગુણના જે સ્વામી થઈ પ્રવૃત્ત છે તે પુ પ) સાથે કરી હતામોતમ સુખ-મોક્ષ જોપો અને હેટો પુરૂષાર્થ પ્રાપ્ત કરવાને પરવાને મેળવે છે.

સત્યનિષ્ઠ થવાને, પ્રથમ શું હેય છે તે હવે જરી વિચારીએ. સંસારમાં દનાલીક, ગવાલીક, દુભાલીક એ ત્રણ ભુંડ અત્યંત નિંદ્યારૂપે પ્રસિદ્ધ છે. બીજી ત્રણની અથવા બીજાની દુખાને, પોતાની જાતની અથવા પોતાની કહેતી; અથવા પોતાની જાતની કન્યાને બીજાની અથવા બીજી ગામીની અત્યાચારી તેને કન્યાલીક કહેવામાં આવે

છે. અહીંયાં કના ગજ્જથી, છોકરો, છોકરી; દામ, દામી, મનુષ્ય, આ વગેરે સમજી લેવા. તેવીજ રીતે ગાય બેસ આદિ પશુઓને, જે ચોરું દૂધ દેતી હોય તેને બહુ દૂધ વાળી કહેતી; અને બહુ દૂધ દેતી હોય તેને ચોડા દૂધ વાળી કહેતી, તેને ગરાવીક કહેવામા આવે છે. અહીંયાં ગાય શબ્દથી સર્વ પશુઓ સમજી લેવા. પોતાની ભૂમિ પોતાની મતાવરી, અને પોતાની ભૂમિ પીળતી બનાવતી તે કમાવીક કહેવાય છે. અહીંયાં ભૂમિ શબ્દથી દત્ત, મકન આદિ મર્વ ચાર (મર્વ, ચૂન, સેતુ, લેલી. સત્તનિરાના ઉપામકે, પ્રથમ એ ત્રણ પ્રમાણના રથન જુદીજુદી ગહેવુ પડી આગો-આગ જુદી આગો કે જે ધર્મને ઉચ્ચલિત કરવા વાળી છે, આ ન્યાસાપકાર કે જે દેખીતો અન્યાય છે, તેનાથી દૂર રહેવાશે; કારણકે ઉપ-રેક્ષિત ત્રણ પ્રકારનાં જુદાંમા નેઓતો સમાવેશ થઈ જાય છે;

સત્ય પણ ખીલને અપ્રિય હોય તેવા વચનથી પણ દૂર ગહેવુ, કોઈ મનુષ્યને પા. આચરતો જોઈ તેને બિહાનની લાગણીથી પાપી કહેવો, તેથી શુ તે પાપચરથી નિગમશે કે ? ઉપરો. આપણે અહત કરવાને તૈયાર થશે. સાદીથી ખગડાએના મુખતાના મનુષ્યને કહો કહેવો, તેના કાતા તેના મોં આગળ દર્શાવે છે. એ હું તે મર્વતમ આજે ૧૦ માટે અહીં ૧૪૧૦ બોલશે કાતા તેના આગળ રૂદ્ધગુણે દર્શાવે આર્થ - મુકવો કે જેથી તે પોતાની ભૂલ સમજી તેને સુધારવાને પ્રત્યક્ષ, તે તમાગથી પોતાના આત્માને ઉપદેશ સમજે.

હીઅર્થો બોલીથી પણ નાત્ય ગહેવું. કારણ કે તે સત્ય વાતને અનર્થત ગણે છે અને અસત્યને પ્રગટ કરે છે. કામવા તરીકે, જે જોઈ વચન આપ્યું એવું રજાત બેલવાને જાહેર, 'જોઈ વચન આપ્યું' એવા હીઅર્થો બોલામા જોવે છે. આ વાચ્ય બે નીને સમજાય છે. એ જોઈ વચન આપ્યું, અથવા ખીલ કોનજો જોઈ વચન આપ્યું આવી સામોત્રાતો હેતુગય છે, - જોગાય છે - કમાવ

છે, અને તેથી મોવનારને માયાચારી - ઇચકારી - પચીનુ દ્વાર્ય કાગે છે, " આગકાય આપણામ જોને કાભારી - પોલીરીલીયન" - કહે (માં આવેને તે બધાની ચતુરાઈ, માત્ર હીઅર્થ અને આડે માને રોરે તે વાર્તા કરી, જુદું બોલવામાજ ગરવી હોય છે "

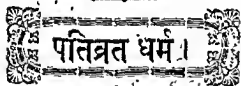
હવે સત્યનિર્વાને શુ ઉપાદેય છે તે ત્રિચારીએ તેજી લોકવ્યવહારને અનુસરીને, સત્યાસત્ય, અસત્યાસત્ય, અને મત્યઅસત્ય એ ત્રણ પ્રમાણના વચનો બોલવા જોઈએ. જે પદાર્થ જે દેશવર્ણ, જે કાલકાલે હોય તેવું જે કદા પ્રમાણ વા સખ્યા હોય તથા નેતો જે કદા ગંગ આકાર આદિ હોય તેને તેજ દેશનો, તેજ કાલનો કહેવો, તેજ પ્રમાણનો વા તેજ સખ્યાનો કહેવો, તથા તેજ રંગ આકારગદિતો કહેવો, તેને સત્ય મત્ય કહે છે. હુકમા દ્રવ્ય, ક્ષેત્ર, કાલ, આરૂપ ચતુષ્ટયને વિચરેદ કર્યા બિચાય પદાર્થને કહેવો તેને સત્ય સત્ય કહે છે કામવા તરીકે, " કપડ વણ " એ વાચ્યમા વણવાની ક્રિયા કપડા પર હોતી નથી, કિંતુ સુતરના તાતલા પર હોય છે. સુતર વણાય છે નહિ કે કપડું. તેટલા માટે કપડા ઉપર વણવાની ક્રિયાના પ્રયોગ કરવો યથાર્થ અમત્ય છે. તથા વિશેષરૂપદાર્થમા એવું વાદ્ય બોલવામા આવે છે અને તે અમત્ય માનવામા આવતું નથી તેથી તેને અમત્ય સત્ય કહેવામા આવે છે. જે સત્ય વચન અમત્યથી હોય તેને સત્યામત્ય કહે છે જેમકે " અમુક વસ્તુ હું તને દાન દિવ વસમા આપીશ. " એવું કહી તે વસ્તુ નહિ મર્વ વાથી અથવા કોઈ ખીલ કામજીથી, દશ દિવમત્ય નહિ આપવા મદિને જે મદિને વ વર્ષ દહાડે આવે છે. આથી તેનું બોલવું અસત્ય છે, કારણ કે તેજી જે વસ્તુ આપવાની હતી તે તેજી આપી તેથી એના બોલવા. એવું સત્ય છે, અદ્ય દિવસને જાહેર મદિને વા વર્ષ દહાડે આપ્યેટવું તેના બોલવામા અપત્ય છે

ઉરેક્ષિત ત્રણ પ્રમાણના વચનો કામવા ગી હોય છે, અને તેથી તેઓ દિમાના પાપ

આપણને બચાવે છે; કારણ કે જ્યાં ક્યાં છે ત્યાં દિસા છે. સત્ય પણ ક્યાં સુકત હોય, તો તે પ્રાપ્તિપ્રવૃત્તિ કારણ છે; અને વ્યવસ્થા, પણ ક્યાં રહિત હોય, તો તે પ્રવૃત્તિપ્રવૃત્તિ કારણ છે.

કુટુંબમાં સત્યનિષ્ઠ થવાને ક્યાંય સુકત વ્યવસ્થાથી ફર રહેવાનો પ્રયત્ન કરવો, અને તે પ્રયત્નને પોષવાને અર્થે અવિચ્છિન્ન આત્મનિરક્ષણ, આત્મશિક્ષણ અને આત્મયત્ન-એ ત્રણ વૃત્તિઓને અનુકૂળ અમલમાં મૂકવી. આથી શેષ ગુણી-પ્રમાણિકતા, આત્મસંયમ અને શુદ્ધ પ્રેમ-કેળવણી અને તેથી યથેષ સુખની પ્રાપ્તિ થશે, બીજાઓને તે પ્રાપ્ત કરવાને આદર્શ રૂપ થઈ પડશે, જનનું ઉચ્ચ લક્ષ્યબિંદુ સંધારશે, અને છેવટે સુકિતપુરીમાં નિવાસ કરી શકેલું સુખને અનુભવાશે.

ૐ શાન્તિ ! શાન્તિ !! શાન્તિ !!!



પતિવ્રત ધર્મ

(હે० મોહનલાલ મધુદાસ, કાળીસા ।)

સંસારમાં પતિવ્રત ધર્મની શ્રેષ્ઠતા જગતભરે છે, પતિવ્રત ધર્મ દરેક સ્ત્રીએ શ્રદ્ધા કરવાની જરૂર છે.

એક પતિનું જ ધ્યાન ધરવું-આખા જગતને એક પતિમય નિરખવું પતિના દુઃખે દુઃખી અને સુખે સુખી સ્થિતી મનોગત ધારણ કરવી-પોતાનું તન-મન-ધન પતિને જ, ગણવું-પતિને જોવાથી આનંદ માનવો-હવાદિ પતિવ્રતા સ્ત્રીના ઉચ્ચ લક્ષણો છે.

પતિવ્રત ધર્મને લીધે મન તૃપ્ત રહે છે, તેથી વિષય લાંઝા નિયમમાં રહી શકે છે, તેણે દરી આ લોકમાં યશ-અને પરલોકમાં સ્વર્ગીય સુખ મોગની શક્ય છે.

પતિની શુદ્ધ દિલથી મેવા-કરનાર સત્તારી-ઓની ઇચ્છાઓ સિદ્ધ થાય છે. તેના પ્રત્યક્ષ દાખલા આપણે સાંભળીએ છીએ સતિનું શીલ તોડનાર પાંખીઓ અને અંધ બની ફર્ગતિને

પ્રાપ્ત થાય છે. કર્મ સંજોગે સતિને કષ્ટ મોગવ-વું પડે, તો તે કષ્ટ તેને લાભદાયીજ નિવડે છે.

શીલનું ખંડન કરનાર સ્ત્રીઓને સર્વે જગ્યા-એ તિરસ્કાર વેઠવો પડે છે. તેઓને લોકો શીલ ખંડિતા-કુલકા-વ્યભિચારિણી-કુલકિતા-દુર્ગુણી-આદિ નિચ પ્રત્યયોથી સંજોગે કહે છે-વારેવારે સવારે છે-કોઈ વિશ્વાસ રાખવું નથી. કુટુંબમાં અણમાનીતી થાય, વળી તેમના જીવ હાલિજન અને ભયભીત રહ્યા કરે છે. તેનું મકાન સ્થગાન ગુણ્ય છે, તેમજ તેના શરીરમાં પ્રદર-સોમ, આદિ બચકર રોગો પ્રવેશ કરે છે.

જે સ્ત્રી પોતાના પતિના સહવાસથી તૃપ્ત થતી નથી તે સ્ત્રી કોઈના પણ સહવાસથી તૃપ્ત થતી નથી, જેથી તે ઘણા પુરુષોનો સમાગમ કરવા લલચાય છે અને વધારે પાપની ભોક્તા થાય છે.

પાણિ વલોત્રવાથી તેલ નીકળતું નથી-રેતીને પીલવાથી સત્ત નીકળતું નથી-તેથી જ રીતે જે સ્ત્રી પતિનો ત્યાગ કરી-પર પુરુષને સેવી-ધન ધાન્ય-પુત્ર અને વિષય તૃપ્તિની ઇચ્છા કરે છે, તે આખરે નિરાશ થઈ, પાપમાં નસ્યા કરે છે, લોકોથી તિરસ્કાર પામી પીયર અને સાસરીયામાં નીચ નજરથી જોવાશે છે, માટે સમગ્ર સ્ત્રીઓએ પતિ સિવાય કોઈ પણ પરપુરુષની ચામને પણ ઇચ્છા કરવી નહિ.

કોઈ કષ્ટ પુરુષ શીલ ખંડન કરવા બળા-ત્કાર કરે, તો શીલ ખંડન થવા નહિ દેતાં તેની સ્થાએ થઈ તેને નીતિને રસ્તે લઈ જવો એજ પતિવ્રતાનું જીવણ છે.

જેને એકવાર શીલ ખંડન થાય-પરપુરુષની ઇચ્છા થાય-તે પાતકીજ ગણાય છે, તેની ગણતરી શીલવ્રતવંતી ગણનામાં આવી શકતી નથી, માટે મરણાંતે પણ શીલ ખંડન થવા દેવું નહિ અને પરપુરુષની ઇચ્છા કરવી નહિ.

પૂર્વે સીતા, તારા, દોશ્યા, કુંતી, દમયંતી, અંજના, ગન્ધુક, આદિ સત્તારીઓએ અનેક સંકટો વેડી શીલનું રક્ષણ કર્યું છે. જેના ગુણો આપણે હોશી હોરો ગાંધીએ છીએ ને આનંદ

પામીયે છીએ, તો આતુ સમયમાં હૃદય ગુણો ધારણ કરતી-સતિત્વ ભાવ દર્શાવતી-પતિપ્રિય અંગના પૂન્ય ગણાય એમાં નવાઈ નથી.

સંસારમાં જીવવાનું આપ છે-મૃત્યુ આવવાનુંજ છે, તો પછી ક્ષણિક સુખના આનંદની ખાતર અપવિત્ર જીવની બનાવી-ધિકારની પદ્ધિ પ્રાપ્ત કરવા કરતાં હૃદય-ચારિત્રવાન-પતિવ્રતા બની-વિવિધ લાલસા ઓછી ગાખી-કંતમ જીવની ગાળી મરણ પછી સૌને સંભાળવા-લાયક અનુકરણ કરવા લાયક-બનવું તે વધારે યોગ્ય છે.

પતિ રાગી હોય-કણી હોય-કુરુ હોય-કુરુણી હોય-યા રૂપ હીણ હોય-યા દરકાર ન કરતો હોય, તોપણ પતિવ્રતા ઓછે તેને પરમેશ્વર ગણી માન આપવું-તેની શુદ્ધ મનથી સેવા કરતી, એજ સ્વર્ગીય સુખ આપનાર વચીકરણ મંત્ર છે.

અન્ય રૂપવાન, ગુણવાન પુરુષને જોઈ આસક્ત થનાર અને પતંગીવાની માફક મરવાનોજ સમય પ્રાપ્ત થાય છે.

પતિવ્રત સાચવવા સરસ ઉપાય એ છે કે-શીઘ્ર બંધ થાય તેવી જિવિતિ-તેની જગ્યા-અને તેના પુરુષથી દૂર રહેવું-પરપુરુષથી બોલવું હાન્ય કરવું-જાહેર કે-એકાંતમાં વિનોદ વાતાં કરતી-એકાંતને બેસવું-હત્યાદિ નિંદનીક અને શીઘ્ર બંધ કરનાર બાગતોથી પતિવ્રતાએ દૂર રહેવું જોઈએ-

પતિવ્રતાનો પતિ રૂપ હીણ કે-ગુણ વીણ-હોય તો તે તેના ધર્મ પ્રભાવે સુધરી જાય છે. મુકન્યાનો પતિ અવન નેત્ર પામ્યો હોય સાવિત્રી-નો પતિ સત્યવાન સજીવન થયો હોય.

પતિ નંદા કરે-આગ ચઢાવે-લાંબા સમય સુધી વિરહાતુર રાખે છતાં પતિવ્રતા સ્ત્રી પતિનેજ પોતાનું સર્વસ્વ માને છે-તેનાથીજ પોનાનેજ કૃત-કૃત્ય સમજે છે-તેના બલામાં પોતાનું બધું સમજી, તેની બક્તિ સ્મરણથીજ દિવસો વ્યતિત કરે છે. તેનું ખરૂં દ્રવ્યંત અંજનાત્મકી પુરું પાડે છે. તેનો લગની દેણ સિવાય તેના પતિ

પવનંજયે ત્યાગ કર્યો હોય. વળી સદવાસ કરી પ્રેમમાં લુપ્ત બન્યો હોય, છતાં અંજના પૂર્વ કર્મના દોષે તેને વનવાસ વેડવો પડ્યો હોય છતાં અંજના અનીતિ તરફ વળી નહોતી. તો તેજ પવનંજય અંજનાના સતિત્વથી લુપ્ત થઈ બળી મરવા તૈયાર થયો પણ શરી લગન કરવા તૈયાર થયો નહોતો-આજના એક દશાદિમા ખીજ કે નીજ અને સ્ત્રીના મરણાતે પુત્ર હોવા છતાં લગન કરવા ઉત્સુક બનતા પુરુષો-પરસ્ત્રી વિહારી અને વેરવા વિહારી પુરુષોને પવનંજયનું દ્રષ્ટાંત પૂરું બોધ આપે છે કે-સંસારમાં એક પ્રતિપતિજ સર્વ સુખના બોક્તા થઈ શકાય છે. આતુ જમાનાની ફળાંગાર સ્ત્રીઓ કે-જેઓ પતિ નાનો હોય-વૃદ્ધ હોય-રૂપ હીણ હોય-કુરુણી હોય-તેની નિંદા કરી તેનો ત્યાગ કરી પર પુરુષને આપ છે. પરપુરુષનેજ પોતાનું સર્વસ્વ અર્પે છે-અર્થાત્ પરપુરુષથી વિવિધ-સુખ ભોગવે છે, તેની સ્ત્રીઓને તેમજ યોગ્ય વખત માટે ત્વગ્નેહી-પતિ પરદેશમાં હોય તેની-અને વિધવા સ્ત્રીઓ કે જેઓ વિવિધને ઇચ્છતી પર પુરુષને શોધતી ફરે છે, તેમને અંજનાનું દ્રષ્ટાંત બોધ આપે છે કે પતિ ગમે તેટલી અવગણના કરતો હોય-છતાં તેનાથી વિમુખ થવું નહિ, પણ તેની ભક્તિમાં તત્પર રહેવું. વિધવાઓએ ધર્મ પૂરક જીવન ગુમારી આ લોકમાં શ્રેષ્ઠ બની પરલોકનું બાધું બાધતા જવું, પણ શીલ ખડિતા થવું નહિ.

શીઘ્ર ખંડીના સ્ત્રીઓને પર પુરુષથી સદવાસ કરતા સુખ જગ્યાની જરૂર પડે છે. વળી તેનું તે કાર્ય કોઈ જોઈ જાય નહિ, તેની ભક્તિ સ્થિતિ તેને ધારણ કરવી પડે છે. જેથી તેને પૂર્ણતયઃ પ્રેમ થયો નથી અને સંતાન પણ ઉત્પન્ન થઈ શકતા નથી કેમકે પોતાના પતિસાથેના સદવાસમાં પણ તે તેનીજ સ્થિતી ધારણ કરે છે તેથી પ્રેમની આપણે થઈ શકતી નથી, ને સંતાન પણ થઈ શકતાં નથી. સંસારમાં તે વધવાના વિશેષણથી બોધાવાય છે, તે અપશુકનની પાત્ર ગણાય છે અર્થાત્ તેનાં શુદ્ધ કોષ લેવું નથી. માટે સમજી સ્ત્રીએ

કદાપિ શિવબાહિતા યતુ નહિ. પતિવ્રતા સ્ત્રીઓ સદા પુત્રવાળીજ હોય છે. તેમને કાંઈનાથી ડરનાતુ હોતુ નથી. તેઓ પતિ તરફના પ્રેમને લીધે સંસારના મર્ગથી મુખતો આસ્વાદ લખ શકે છે ત્યારે કદાચિત સ્ત્રીઓના સંસાર સદા કલેશમયજ પસાર થાય છે. તેને દિન દિન પતિથી કુટુંબીથી લડાલડ કરવાની આતુજ હોય છે.

સમગ્રુ બહેનોને મારી એજ સલાહ છે કે—

તમે હવેથી પતિવિમુખ થશો નહિ તેમ તેમની મોગત પણ કરશો નહિ. વખતે બે તમે મુખ્યા હો તો “મુખ્યા ત્વાથી ફરી ગણો” પ્રમાણે હવેથી તમારા આગ્રિતને કવક આપવા દેશો નહિ ને પતિ સેવામા તત્પર રહેજો. એ પણ યાદમા રાખજો કે પતિવ્રતાતુ રક્ષણ કરવા દેવોને શુદ્ધાતને આનંદ પડે છે. બહેનો, તમે બે પતિવ્રત ધારણ કરશો તો તમારી દેવપણ સેવા કરશે.

પતિમેજા એજ સ્ત્રીઓના યજુગાર છે અને પતિ એજ અમળાઓના પરમેશ્વર છે.

દરેક સમગ્રુ પુરુષોને મિતની છે કે—

તમે પરનારીનો મોઢ છોડી બાળ નીચ કે ચોશીનો મોઢ છોડી સ્વદારસતોરીવત અડણુ કરો અર્થાત તમારીજ પતિ તરફ વિશુદ્ધ પ્રેમ રાખતા શીખો અને પતિના પ્રેમ બની સંસારમાં વેદ્યત પ્રાપ્ત કરો.

બે તમે પરનાર આસકા થશો, તો તમારી બી પગર વિદારી થશોજ. પણ બે તમે શુદ્ધ આગ્રિવાન બની સ્વદાર સંતોષી બનશો તો તમારી સ્ત્રીને મોખા આગળી દરડીને પણ પરનરનો મોઢ છોડવો પડશે. તમે તેનામા પ્રેમ રાખશો તો તે તમાગમા પ્રેમ રાખશે. તમે તેને એકબી નજરથી જોશો તો તે સેવા કરવા મુશ્કે નહિ એ નક્કી માનજો.

સ્ત્રીઓને કુમારો દોગવનારા હુદ પુરુષોજ છે.

પુરુષો ત્યારે શુદ્ધ પ્રેમી બનશે ત્યારજ સ્ત્રીઓ પતિવ્રત મુખથી અલકૃત થશે.

મહાત્મા ગાંધી ઔર, વ્રહ્મચર્ય ।

ગાંધીજીને અપને વત્રમે વ્રહ્મચર્યપર વહુત જોર દિયા હૈ । વે ઇસ તરહ કહતે હૈં “વ્રહ્મ-ચર્ય પ્રાચીન ભારતમા માવ હૈ । હમારે શાસ્ત્ર હમેં દંદ્રિય વ મનપર સંપમ સાધનેકી આજ્ઞા દેતે હૈં । માતાપિતાઓકો જાહિયે કિ બચોંકો વ્રહ્મચર્યકે લખ સિલખાવે । બાલકોંકી શાદી ૨૫ વર્ષસે નીચે ન હોની યાહિયે । મનમેં શાદી કરનો હૈ, મન માવસેહી સ્ત્રિયાં જલ્દી રજાવજા હોતો વ પુરુષોંકે કામ નગ જાતા હૈ । સર્વ હી સમ્બન્ધિયોંકો લડકે લડકિયોંસે યહી કહના યાહિયે કિ વહી ઉપરમેંહી વ્યાહ હોતા હૈ । હમેં ગુડેયોંકે સમાન બચોંકો સમતના ન યાહિયે । બચોંકો સિલજાના યાહિયે કિ વે નિર્દોષ વ પવિત્ર રહ સકે હૈં । ભોગોંકો ઉત્તેજક તથા કામોદીપક વદાર્થ ન જાને યાહિયે । પતિવત્રનીકો મિત્ર ૨ કમરેમેં જકેલે સોના યાહિયે । શરીર ઔર મનકો સદા ત્વાસ્થ્ય યુક્ત રહના યાહિયે । જલ્દી સોના વ જલ્દી ઉઠના યાહિયે । ઉત્ત સર્વ મંદે સહિત્યકો ન પઢના યાહિયે જો પવિત્ર માવોંકો વિગાઢતે હૈં । પિયેટા સિનેમા આદિ ન દેલના યાહિયે, યે માવોંકો કામી બનાતે હૈં । સ્વપ્રરોપસે બચનેકે હિયે ઠંડે પાનીસે સ્નાન કરના હી ઉપાય હૈં । કમી ૨ વિષય સેવન નહીં । પતિ વત્રનીકો મી પરસ્પર સંપમ વાઙ્મના યાહિયે । પ્રતિદેન પવિત્ર રહનેકી હ દિન માવના મ કી શુદ્ધિ મે રહ તી હૈ । યે મિતની શિક્ષા હૈં વે સચ જન શાસ્ત્રોંમે વ્રહ્મચર્ય જનકી પાંચ માવનાઓંમે સ્તાઈ ગઈ હૈં— સૂત્ર—સ્ત્રીશામજ્યાશ્રયણતત્ત્વનોહરાંગનિરીક્ષણસ્વૈર-તત્ત્વસ્મરણ, વૃષ્ટ્યેટસ, સ્વશરીસં સ્કાર ત્યાગાઃ પંચ ॥ તત્વા ૭ અ ૦) જૈનમિત્ર.

Duties of Jain Graduates.

(by-Manilal H. Udani, M A. LL B. F. L. L. C. Rajkot.)

Owing to the efforts of the educated Jains, the old idea of getting salvation only by building temples has totally vanished and the idea of building Jain Boardings, schools and educational institutions have been inculcated into the minds of the wealthy Jains. As a result of which in most of the prominent cities of India Jain Boardings have been constructed by liberal-minded Jains and efforts are still apparent for encouraging the cause of education amongst the Jains.

About two or three decades ago, we had very few Jain Graduates amongst us, but now owing to these facilities, we can count a large number of Jain Graduates, who have made their names in different lines. The wealthy gentlemen of the Jain community who earned their riches by commerce, were ignorant of the benevolence they would do towards their communal brothers by giving charitable grants in the cause of the propagation of higher education in the community and when this necessity of changing the channel of their charities was explained to them they took up the noble idea and their liberal help, many students who would have been obliged to stop their studies for want of help or facilities, could take higher education and could derive great benefit to them-

selves and make their life happy. It is still essentially necessary that these liberal minded Jains should continue the flow of their charities in the same direction and should construct more Jain Boardings, should found scholarships for sending intelligent young students to the foreign countries for getting special training in industrial lines, should make more Jain High schools and should found a Jain college in India. We expect these gifts from the rich and benevolent gentlemen of our community in the name of the Holy religion and our expectations will not be dissatisfied if efforts will be made unitedly in the right direction and if the donors can be assured of the services that the educated class would render to the community and the holy religion.

Now when we expect these Jain gentlemen to do so much for helping the cause of education in the community in the name of the sacred duty, it is quite just and fair that we should expect some reciprocal duties from these educated persons of the community so that the donors may be convinced that their charities are not wasted and that their moneys are well spent in bettering the condition of the community and the Holy religion. The educated persons have a greater responsibility upon them and they should be

rightly expected to perform their part of the duty. However it is a pity that except a few leading graduates who have been well known for their continued work in the cause of the community, very few persons have come forward from amongst the graduates for performing their duties in the work of the elevation of the community and the sacred religion. Most of the graduates after passing their examinations, seek service or profession and on getting settled in life they hardly care to study the religion or look to the condition of their community or do any work for improving the condition of their communal brothers.

Every person has an individual as well as a public life and if a person lives for himself only he lacks in the most sacred part of his life. The significance of individual and communal life is not properly understood in India and far less in the Jain community and for want of united work and co-operation we see that our community as well as our country has not made any remarkable progress in comparison with other nations. Every man owes a duty to himself, his community and his country and every educated man is much more expected to do these duties towards the public. For want of co-operation and a right appreciation of these duties, our graduates have not been able to do their duties towards the community and the public and hence we see no remarkable betterment in the condition of our people.

Jainism is a most liberal religion and if the educated persons would first take it into their minds to read the religious scriptures, they would find a

very happy solution of life in them and they would understand the utility of life in the service of others. It is the quality of learning to create independent and high thinking and high thoughts result in benevolent actions. Thus every man who has acquired the real qualities of learning would not remain without doing his duty towards himself as well as others. The Jains being the followers of Lord Mahavir, they expected to do more good than anybody else.

Now let us see what our Jain graduates have done for serving the cause of Jainism? When the other communities and countries are found making progress by leaps and bounds, it is a matter of regret that we have hardly made any real progress. The Jain scriptures bear an ample proof of the ancient civilization and the researches of the Jains in the primitive times. Our community is being thinned from day to day and if our Jain graduates will totally neglect the cause of the community we do not know what would be the condition of our sacred faith. It is the first place we expect a cooperation of all the Jain graduates leaving aside all sorts of differences. There are many societies but unless and until all the societies work in the common goal, the community cannot achieve any real advantage. The Bharat Mahamandal has been working for a number of years for the welfare of the community and our Jain graduates can find some duties to do by joining the Mahamandal. The graduates have many opportunities for doing work for the community if they have any desire to do so. They can start religious

finitude of such beings. But in our present stage of development these beings are beyond our ken, and in all the living beings with whom we are acquainted, karma is to be found. And there was a time when karma was also in those who now have no karma in them. There are no living beings anywhere in the universe in whom there never was any karma at any time. But in those in whom there is now no karma, in those there never will again be any karma.

Karma, then, is something in all those with whom we are acquainted, people, cats, dogs, trees, fish, birds, insects. And also in devils and angels, if we believe in such, and the Jains do. The bodies of devils and angels, though of a substance not visible to our physical eye, are still material, of an astral or subtle kind of matter.

Now as karma is only part of these living beings with whom we are acquainted it follows that there is in them some other part which is not karma. That is to say, living beings do not consist entirely of karma. And that being the case, the question arises which part of the living being is karma and which is not? Which part of man is karma and which is not?

Now as karma is to be found in living beings, it follows that if we want to know what it is we have the opportunity of finding it in ourselves; we can come to know what karma is by coming to know the karma that is in ourselves. And in this sense 'ourselves' means the whole person just as he is here, with body, mind, and emotions.

Which part, then, is and which part

is not karma? That part of the living being which is conscious and sentient is not karma, all the rest is karma or its result. Or another way of putting it is to say that karma is that part of us by reason of which we are ignorant, suffer pain and have pleasure, wrong ideas, false beliefs, and do wrong things, get born and die, have a body of a certain shape and size, with five or less organs of sense, eye, ear, nose, tongue (for taste), and skin and an instrument for thinking. This instrument for thinking is generally called the mind, but it is used in a technical sense in the Jain books (manas). Karma also is that part of us by reason of the operation of which we find ourselves in the particular social circumstances in which we are, among the wise or the foolish, the rich or the poor, etc., and karma is also that part of us by reason of which we are weak and powerless to whatever extent we are so. Or to sum up those things, karma is that factor in the living being which causes all his troubles, his pains and miseries, disease, old age, and death and which prevents him from living the kind of life that he would otherwise and should naturally have a life of limitless knowledge everlasting blissfulness, free after free making no mistakes always doing the right thing, in a continuous life, as the one individual that he is, in a society of equals, in whom there is no weakness or wrong doing.

This part of us which is called karma is a real substance. It cannot be seen by the eye, because, although its substance is matter, it is nevertheless too fine a kind for our bodily



आनरेबल रायबहादुर लाला सुलतानसिंहजी-देहली ।
(देहलीमें सुप्रसिद्ध राज्यमान्य, देशभक्त और लोकमान्य दि० जैन नररत्न)



श्रीमान् सेठ चर्द्धमानैयाजी-म्हैसुर ।
(म्हैसुर जैन वेडिंगके म्यापठ तथा म्हैसुर प्रान्तमें क्षमगण्य
दि० जैन दानी गरायन)

senses to discern But it can be known by the knower, the part of us which is not karma. That which knows is not karma We, knowers, are as different from the karma which is in us as is the gold different from the alloy in a ten-shilling piece The substance of the knower is not matter; it is an entirely different substance,—not perhaps entirely different, because there are natures common to it and to matter, but very different in its particular nature. There is no sentience or consciousness in matter, these are qualities of a different substance, a new substance if you like; but like matter it has always been in existence,—matter is not the only substance whose nature it is to exist.

The part of us, then, which is called karma, is matter. It is the nature of matter to attract and repel. And these natures are still operative when in the living being,—and are felt by him as respectively attachment and aversion, causing him to be greedy and deceitful by reason of feelings of attachment, and proud and angry by reason of feelings of aversion. And by reason of our anger, pride, deceitfulness, and greed we do all sorts of wrong things which bring upon us all kinds of misery and pain.

As far as the past is concerned karmas have always been in us. Not the particular ones which we now have, but nevertheless karmas of some sort or other. They are always coming in, operating, and so expending themselves, and falling away, giving place to new ones, and this goes on, has been going on, and will go on, unless we can do. Not only can we stop this continual inflow, but we can also work out before its natural time the karma which is already in us.

And in view of the kind of thing that karma is, a foreign element, an undesirable alloy, we naturally as soon as we come to understand it, set about stopping the inflow and working out what is in us. This getting rid of our karmas may be and generally is a long process, but when accomplished, and it is the only thing worth accomplishing, then we come to be actually the pure living soul that we ought to be leading the kind of life already mentioned, of unlimited knowledge, blissfulness, strength, goodness, and so forth; and this is the condition in which are now those living beings who are beyond our ken and in whom there are now no karmas.

When we have come to know what karma is then naturally we want to know how to get rid of it. Before we can begin to get rid of scientifically we must first believe that there is such a thing as karma and that it can and should be got rid of; if we do not, then of course we shall not set about it. The next thing would be to know what the method is by which it can be stopped and got rid of; and the next thing would be to follow the method, put it into practice. The method is given in the Jain books, it is the method of those who have themselves accomplished the work of stopping and removing their karmas. It is summed up in the maxim that non-injury to living beings is the highest religion, and if this method is followed we come in time to know what karma is, and to stop and get rid of it; karma is a force obscuring our natural godlike qualities. There are two kinds, those which help us to advance, and those which keep us in a backward condition; these should be

the first to be removed, and by practicing non-injury accompanied by the feeling that injury is wrong we gradually get rid of and stop the inflow of these undesirable karmas, and come to know what karma is

So, to repeat the points :-

True descriptions of karma must be the same, be the describer a Jain or Buddhist

Karma is part of living beings, and is not a thing by itself

But not of all living beings only of some, the embodied.

The other part of the living being is not karma, but is something else.

The part which is not karma is the part which is sentient and conscious.

If we want to make a study of karma, the place to find our specimens is in ourselves.

Karma is that part of the living being which causes all his troubles, and obscures the qualities of the other part.

Karma is a real substance, but of a different kind from the substance of the other part of the living being.

The nature of this substance, karma, is such that by reason of its influence upon the other part of the living being does all kinds of things which bring upon him all kinds of troubles

As far as the past is concerned the living being has always consisted of these two parts, but he need not continue to be a compound being, he can remove the part which is not sentient or conscious.

The result of its removal is experience of a much more desirable kind than without its removal.

The way to remove it is by believing it to be removable and by being careful not to injure anybody or anything else.

LONDON.]

H. WARREN.

मूले कहींसे गिनना।

(लेखक-मास्टर दीपचन्द्रजी परदार, नरविहपुर।)

(१)

शरदऋतुकी उजेली रात्रिको जब कि चन्द्रमा अपनी सम्पूर्ण कलाओंसे गगन मंडलकी शोभाको बढ़ा रहा था, और निर्मल आकाशमें जब तारागण विलखी हुई रत्नाशिकी उपमाको घारण कर रहे थे, हवाके ठंडे ठंडे झकोरोंसे वृक्ष अपनी डालियां हिला कर कृतज्ञता प्रगट कर रहे थे, ओस भी खेतोंमें पौधोंके पत्तों पर पड़ी हुई मोतियोंका आभास करा रही थी (जिनके भाग्यमें सचे मोती देखनेको नहीं लिखे हैं वे विचारे इन्हीं ओसकी बूंदों परसे मोतियोंका अनुमान कर लेते हैं। वे जानते हैं कि इसके सिवाय मोती और कोई पदार्थ नहीं होते, केवल कल्पना मात्र कवियोंने नाम घड़ रक्खा है) पशु अपनी शालमें और पक्षी अपने पोलमें निस्तब्ध हुये विश्राम ले रहे थे, नितनेक गरीब लोग जिनके न घर ही हैं और न वस्त्र ही हैं, वे विचारे यत्र तत्र आगके सहारे अपना समय बिता रहे हैं, यही ध्यान कर रहे हैं कि कब सुयोदय हो और हम लोगोंका दंटसे बचाव हो। कोई कह रहा है अभी रात्रि बहुत है, दवे दवाये पड़े रहो, कितनेक तो टंडके डरसे आंख दस्त (पेशाब पाखाना) भी मूल रहे थे, यदि इस रात्रिका पानी किसी तरह ज्येष्ठ मास तक इसी अवस्थामें रखा जा सक्ता तो क्या ही अच्छा होता, परन्तु आश्रय

है कि जो पानी गर्मियोंमें ठंडे नहीं मिलता है इस समय उसमें उंगली डुबाना दुप्तर हो रहा था, जलपात्र छूते ही हाथ गला जाता था, नदियोंके किनारे कहीं कहीं बर्फ जमा हुआ माछम पड़ता था, तात्पर्य—शर्दी इतने जोरकी पड़ रही थी, कि मानो वह उसकी युवावस्थाका अंतिम दिवस ही था, ऐसी ठंडी रात्रिमें नव कि अडे रात्रिसे भी कुछ समय अधिक दो चुका था, और चारों ओर सजाटा खिंचा हुआ था, एक तरुण पुरुष अपनी पत्नीको सोती हुई समझ कर चुपके उठा और धीरे धीरे दवे पांव चल कर दर्वाजा खोला । खड़खड़ाते दरवान जाग उठा और इकदम बोल उठा "कौन है" ।

युवा—कोई नहीं, हल्ला मत करो, दम है मालिक मकान ।

दर्वान—गरीब परवर इस समय कहां जा रहे हैं ? हुनम हो तो कोचवानको पुकार कर गाड़ी कसवा दूं ।

युवा—कुल आवश्यकता नहीं है, तुम सो जाओ, किवाड़ बंद कर लो, मैं अपने एक मित्रको देखने जाता हूं, पास ही जाना है ।

दर्वान—जो हुकम वह कर किवाड़ बंद कर सो रहा और वह युवा भी चलता बना ।

(२)

मिस युवाका वर्णन ऊपर कर आये हैं, उसीके मकानके बिल्कुल पिछवाड़े उत्तरकी ओर एक छोटासा बाग है जिसमें आम नारंगी नींबू आदिके थोड़ेसे झाड़ोंके सिवाय एक सुंदर पुष्प वाटिका लग रही है, रात्रिको गुलाबके फूल नवबोवना स्त्रीके कपोलोंके समान शोभा दे रहे

थे और हरी हरी पत्तियां, मानो उस स्त्रीकी हरित साड़ी ही माछम पड़ती थी, बागमें एक ओरको कुछ साग पात भी बोया गया था, बागमें न तो कोई आसपास दीवाल (चहार झाली) थी और न कोई पक्का फाटक ही था, केवल चारों ओर महदी लग रही व कहीं २ फांटोंसे रूख दिया गया ~~था~~ इसीसे इस बागमें सेही व स्यालादि जंगली जानवरोंके सिवाय कभी कभी बैल गाप बकरी आदि भी घुस आया करते थे ।

बागके दक्षिणकी ओर ठीक उस युवाके मकानके पीछे उत्तर दर्वाजेका एक छोटासा मकान है, यद्यपि मकान छोटासा है तथापि इसमें गृहस्थीका सब निस्तार मले प्रकार हो जाता है, मकानके नीचेके भागमें बैठक तथा रसोई आदिका स्थान है और ऊपरके भागमें शयन स्थान है । शयन गृहमें चारों दिशाओंमें खिड़की व उनालदान घने हुये हैं जिनमेंसे उजेला बाहर निकल कर उस युवाकी हवेली और साहने आप रुक पहुंचता है । इस घरमें एक छोटा दर्वाजा दक्षिणकी ओरको भी है जो प्रायः बंदता रहता है । यदि कभी आवश्यकता हो तो इस घरकी स्वामिनी ही इस दर्वाजेसे अपने किसी सम्बन्धी आदिसे मिलने जाया करती हैं, इसीसे इसकी चाची सदा स्वामिनी-जीके ही हस्तगत रहती है ।

ठंडी रातमें जब कि जोरकी ठंड पड़ रही थी और सब लोग दवे दवाये सो रहे थे, शरीरका कोई अंग यदि ऐसे जाड़ेमें बाहर रह जाता तो वह भी बर्फकी सदृश ठंडा हो जाता था, ऐसे

समयमें इस घरकी स्वामिनी अपनी चारपाई पर पड़ी हुई करवटें बदल रही हैं, कभी उठती है, कभी टहलने लगती है, कभी खिडकियोंमें झाक कर देखती है फिर जाकर लेट जाती है, उसके शरीरसे उष्ण ज्वालाएँ निकल रही हैं, नींद उसमें डर कर कि कहीं मैं जल न जाऊँ कोसों दूर भाग गई है, न मैं इस क्यों इसकी ऐसी विचित्र अवस्था हो रही है। उसके चेहरेसे विरह और भय दोनों झलक रहे हैं। आश्चर्य तो यह है कि जब उसका विवाहित पति ही उसके निकट उपस्थित है एक नन्हासा बच्चा भी गोदमें स्वस्थ शरीर सुशोभित हो रहा है तब वियोग किसका और भय क्या ?

जो कुछ हो श्रीजी जाने, प्रगटमें तो उसके मुँहसे कभी कभी दीर्घ निःस्वासे के साथ सीता राम सीताराम ही सुनाई देता है वस उसे इनी नामका आधार हो रहा है। घरकी स्वामिनीका नाम कमलावती है और उसके पतिका नाम पद्मचंद है।

(३)

रात्रिका तीसरा पहर बीतने पर था, इस समय द्यूयोगीजन उठकर अपनी प्रातःकालीन संध्या (सामायिक) स्वाध्यायादिके लिये तत्पर हो जाते हैं, रास्तागीर अपने दंड कमंडलु तैयार करके रास्ते पड़ते हैं, कुलवधुयें भी निद्रा छोड़कर अपने दिन भरके कार्योंका विचार करके पंच परमेष्ठीका ध्यान करती हुई चुपकेसे उठतीं और शौचादि कार्योंमें लग जाती हैं (चुपकेसे उठनेका प्रयोजन यह है कि जिससे छोड़े बच्चे न जाग उठें नहीं तो वे रोक

पतिकी निद्रामें भग डाल देंगे और ठडमें पीछे दौड़ तो जिससे उन्हें ठंड जुड़ हो जानेका भय है) आलसी पुरुष और कायर स्त्रिया ही ऐसे समयमें पड़े २ चारपाई तोड़ा करते हैं। इसी समय एक सुकुमार कुलागना जिसकी वय अभी १७ वर्षसे अधिक न होगी, और रूप सौन्दर्यमें वह अपने समान किसी दूसरी स्त्रीको नहीं रखती थी, मानो प्रकृतिकी सम्पूर्ण सुन्दरता उसीमें समा गई हो, अपने शयनागारमें अचेत पड़ी हुई स्वप्न देख रही है कि उसका प्राणनाथ पति उसके पाससे कहीं बाहर जाना चाहता है और वह उसे हाथ पकड़ कर कह रही है, नहीं मैं न जाने दूंगी, मैं तुम्हारा वियोग सहन नहीं कर सकती हूँ, तुम अभी कितने ही दिनोंमें आये हो और अब क्या फिर दासीको छोड़कर जाते हो ? स्वामी, जिस मार्गमें आप जाने हो वह बड़ा भयंकर दुखदाई है, इसमें रावण जैसे त्रिलोचनी और कीचक जैसे बली भी अपने किये हुये फलको (नरकादि गतिको) प्राप्त हो चुके हैं और अयश हुआ सो अलग। आप दया करो, और दासीको अभय वचन दो, इत्यादि और युवा उससे हाथ छुड़ा कर कह रहा है, तुम व्यर्थ भ्रम मत करो, मुझे छोड़ दो, मैं बहुत जल्दी आऊँगा, इत्यादि, ऐसा कहते हुये युवा (पति)ने हाथ छुड़ा कर ज्योंही जाना चाहा कि वह उसे पुनः पकड़नेके लिये उठ खड़ी हुई, उठने ही नींद खुल गई, स्वप्न टूट गया, आश्चर्यान्वित होकर विचारने लगी यह मैं क्या कर रही थी ? ऐसा स्वप्न, इसका क्या अर्थ है ? चलो अपने पतिसे

टुंगी, ऐसा विचार कर "अहंत सिद्ध, अहंत सिद्ध" कहती हुई तुरंत पतिके पलंगकी ओर फिरी और धीरेसे रजाई खेंचकर कहने लगी, सुनते हो, ए, क्या नौद लगी है, सुनो तो हमको डर लगता है, कैसा भयानक स्वप्न देखा है, देखो तो कैसे चुपसी लगाये सो रहे हैं, कुछ देर चुप रह कर फिर—भई हमें तो नौद नहीं आती है, क्या करें उठनेका भी समय आ है, अच्छी बात है लेवो सूच सो लेवो, ऐसा कह कर हास्य और भय सहित पतिकी रजाई जोरसे खींच दी ।

अब क्या था, देखती है चारपाई खाली पड़ी है, उस पर उसका पति नहीं है, आश्चर्यसे यहां वहां देखने लगी, परंतु कहीं भी दिखाई न दिया, अनेक प्रकारकी तरंगें उसके मनमें उठने लगीं, कभी स्वप्नका विचार कर विह्वल होनाती और कभी यह सोचकर कि प्रातःकाल होनेवाला है, कदाचित् स्वामी चुप चाप उठकर बगीचेकी ओर संध्या इत्यादिके निमित्त चले गये होंगे, क्योंकि वे नित्य बहुत जल्दी उठ जाया करते हैं, परंतु अभी रात्रि अधिक मालूम पड़ती है, शर्दी भी बहुत पड़ रही है, भला ऐसे समयमें घर ही क्यों संध्या नहीं कर लेते हैं ? कल अवश्य ही उन्हें घर हीमें संध्या करनेकी कहूंगी । परिचरियोंकी बात अलग रही, इत्यादि विचारोंमें निमग्न हुई, पड़ रही थी, कि उसे अपने पीछे वाले मकानकी ओरसे कमलावतीके द्वारा कहा हुआ, निम्न लिखित दोहा सुनाई दिया ।

रात गई पछि राति भई अब हिरनी फेर कर गईरे ।
बलि का चर्चा दूदा ददा दादा मेगारे ॥ १ ॥

यह सुनते ही वह स्त्री (कृष्णकुमारी) उठ कर खिड़कीमेंसे कमलावतीके घरकी ओर देखने लगी, चांदनी रात होनेसे दूर तक स्पष्ट दिखाई देता था, फिर विसपर कमलावतीके शयनगृहका प्रकाश दूर तक फैल रहा था, इसीसे कृष्णकुमारीको कुछ भी अड़चन न पड़ी और उसने तुरंत ही देख लिया कि कमलावतीके दक्षिण गुप्त द्वारपर एक तरुण विना सींग और पूंछका दाढ़ी मूलोंवाला बेल, अपने आपको छिपाता हुआ खड़ा है और किबाड खटखटा रहा है । कृष्णकुमारी इस दुपद बेलको देखकर दुःख आश्चर्य भय और ग्लानिसे भर गई कुछ काल निस्तब्ध हो रही, कुछ भी न सूझ पड़ा परन्तु तत्काल ही वह स्वस्थ हो बैठी और अपनी बुद्धि चातुर्यसे निम्न लिखित दोहा बनाकर पढ़ा और जाकर पीछे पलंग पर विचारोंमें निमग्न हो गई ।

हावदे हकायदे पिन ठीगन पध हमारारी ।
घरदी दासचिरोजी वज्जर भुवा खान गयो तेरारी ॥ १ ॥

(४)

कमलावती एक बयोवृद्ध स्त्री है, इसकी कुछ दिनसे अपने पड़ोसी रमानाथसे मित्रता हो गई है । रमानाथ नित्य चौथे पहरसे संध्या पूजादिके वहानेसे उठकर इसके यहां आता है, और प्रातः स्नानकर तिलक छापना लगा, भक्त बनकर घर पहुंच जाता है । इसीसे इसकी स्त्री कृष्णकुमारीको कुछ भी सन्देह नहीं होता था । आज रमानाथ कुछ जल्दीसे भी उठ गया था, और दरवानके छेड़ने पर उसने मित्रसे मिलनेकी बात कह कर चुप कर दिया था । परन्तु वह यह नहीं जानता था कि प्रारंभमें ही जब

समयमें इस घरकी स्वामिनी अपनी चारपाई पर पड़ी हुई कारवेंट पडल रही है, कभी उठती है, कभी टहलने लगती है, कभी खिडकियोंमें जाकर देखती है फिर जाकर लेट जाती है, उसके शरीरसे उष्ण ज्वालाएँ निकल रही हैं, नींद उसमें डर कर कि कहीं मैं जल न जाऊ, कोसों दूर भाग गई है, न मरुतम क्यों इसकी ऐसी विचित्र अवस्था हो रही है। उसके चेहरेसे विरह और भय दोनों झलक रहे हैं। आश्चर्य तो यह है कि जब उसका विवाहित पति ही उसके निकट उपस्थित है एक नन्हासा बच्चा भी गोदमें स्वस्थ शरीर सुशोभित हो रहा है तब वियोग किसका और भय क्या ?

जो कुछ हो श्रीजी जाने, प्रगटमें तो उसके मुहसे कभी कभी दीर्घ निःस्वासके साथ सीता राम सीताराम हो सुनई देता है वस उसे इमी नामका आधार हो रहा है। घरकी स्वामिनीका नाम कमलावती है और उसके पतिका नाम पद्मचंद है।

(३)

रात्रिका तीसरा पहर बीतने पर था, इस समय द्यूयोगीजन उठकर अपनी प्रातःकालीन सध्या (सामायिक) स्वाध्यायादिके लिये तत्पर हो जाते हैं, रास्तागीर अपने दंड कमंडलु तयार करके रास्ते पडते हैं, कुलबधुयें भी निद्रा छोड़कर अपने दिन भरके कार्योंका विचार करके पंच परमेष्ठीका ध्यान करती हुई चुपकेसे उठतीं और शौचादि कार्योंमें लग जाती हैं (चुपकेसे उठनेका प्रयोजन यह है कि जिससे छोटे बच्चे न जाग उठें नहीं तो वे रोकर

पतिकी निद्रामें भग टाल देंगे और ठडमें पीछे दौड़ तो जिससे उन्हें ठंड जुड़ हो जानका भय है) आन्सी पुरुष और कायर स्त्रिया ही ऐसे समयमें पडे २ चारपाई तोड़ा करते हैं। इसी समय एक सुकुमार कुलागना जिसकी वय अभी १७ वर्षसे अधिक न होगी, और रूप सौन्दर्यमें वह अपने समान किसी दूसरी स्त्रीको नहीं रखती थी, मानो प्रकृतिकी सम्पूर्ण सुन्दरता उसीमें समा गई हो, अपने शयनागारमें अचेत पड़ी हुई स्वप्न देस रही है कि उसका प्राणनाथ पति उसके पाससे कहीं बाहर जाना चाहता है और वह उसे हाथ पकड़ कर कह रही है, नहीं मैं न जाने दूंगी, मैं तुम्हारा वियोग सहन नहीं कर सकती हूँ, तुम अभी कितने ही दिनोंमें आये हो और अब क्या फिर दसीको छोड़कर जाते हो ? स्वामी, जिन मार्गमें आप जाने हो वह बड़ा भयंकर दुखदाई है, इसमें रावण जैसे त्रिलोदी और कीचक जैसे बली भी अपने किये हुये फलको (नरकादि गतिको) प्राप्त हो चुके हैं और अयश हुवा हो अलग। आप दया करो, और दासीको अभय दान दो, इत्यादि और युवा उससे हाथ छुड़ा कर कह रहा है, तुम व्यर्थ भ्रम मत करो, मुझे छोड़ दो, मैं बहुत जल्दी आऊंगा, इत्यादि, ऐसा कहते हुये युवा (पति)ने हाथ छुड़ा कर ज्योंही जाना चाहा कि वह उसे पुनः पकड़नेके लिये उठ खड़ी हुई, उठते ही नींद खुल गई, स्वप्न टूट गया, आश्चर्यान्वित होकर विचारने लगी यह मैं क्या कर रही थी ? ऐसा स्वप्न, इसका क्या अर्थ है ? चलो अपने पतिसे

पूछेगी, ऐसा विचार कर “अहंत सिद्ध, अहंत सिद्ध” कहती हुई तुरंत पतिके पलंगकी ओर फिरी और धीरेसे रमाई खेंचकर कहने लगी, सुनते हो, ए, क्या नींद लगी है, सुनो तो हमको डर लगता है, कैसा भयानक स्वप्न देखा है, देखो तो कैसे चुपभी लगाये सो रहे हैं, कुछ देर चुप रह कर फिर—भई हमें तो नींद नहीं आती है, क्या करें उठनेका भी समय हुआ है, अच्छी बात है लेवो खब सो लेवो, ऐसा कह कर हास्थ और भय सहित पतिकी रमाई जोरसे खींच दी।

अब क्या था, देखती है चारपाई खाली पड़ी है, उस पर उसका पति नहीं है, आश्चर्यसे यहां वहां देखने लगी, परंतु कहीं भी दिखाई न दिया, अनेक प्रकारकी तरंगें उसके मनमें उठने लगी, कभी स्वप्नका विचार कर विह्वल होजाती और कभी यह सोचकर कि प्रातःकाल होनेवाला है, कदाचित् स्वामी चुपचाप उठकर गयीचेकी ओर संध्या इत्यादिके निमित्त चले गये होंगे, क्योंकि वे नित्य बहुत जल्दी उठ जाया करते हैं, परंतु अभी रात्रि अधिक मालूम पड़ती है, शर्दी भी बहुत पड़ रही है, भला ऐसे समयमें घर ही क्यों संध्या नहीं कर लेते हैं? कल अवश्य ही उन्हें घर हीमें संध्या करनेको कहूंगी। गर्भविकी बात अलग रही, इत्यादि विचारोंमें निमग्न हुई, पड़ रही थी, कि उसे अपने पीछे गले मकानकी ओरसे कमलावतीके द्वारा कहा हुआ, निम्न लिखित दोहा सुनाई दिया।

धिरात गई पछि राति भई अब हिरनी केसर कर नंदरे।
ई सजिजा बधा छूटा दशा दारा मेगरे ॥ १ ॥

यह सुनते ही वह स्त्री (कृष्णकुमारी) उठ कर खिडकीमेंसे कमलावतीके घरकी ओर देखने लगी, चांदनी रात होनेसे दूर तक स्पष्ट दिखाई देता था, फिर तिसपर कमलावतीके शयनगृहका प्रकाश दूर तक फैल रहा था, इसीसे कृष्णकुमारीको कुछ भी अड़चन न पड़ी और उसने तुरंत ही देख लिया कि कमलावतीके दक्षिण गुप्त द्वारपर एक तरुण विना साँग और पृंछका दाढ़ी मूछोंवाला बेल, अपने आपको छिपाता हुआ खड़ा है और किबाड़ खटखटा रहा है। कृष्णकुमारी इस दुपद पैलको देखकर दुःख आश्चर्य भय और ग्लानिसे भर गई कुछ काल निस्तब्ध हो रही, कुछ भी न सूझ पडा परन्तु तत्काल ही वह स्वस्थ हो बैठी और अपनी बुद्धि चातुर्यसे निम्न लिखित दोहा बनाकर कहा और जाकर पीछे पलंग पर विचारोंमें निमग्न हो गई।

हाकदे हकायदे बिन हीगन यय हकसारी ।

घरकी दाखचिराँजी सजकर भुया छान गयो तेरारी ॥१॥

(५)

कमलावती एक वयोवृद्ध स्त्री है, इसकी कुछ दिनसे अपने पड़ोसी रमानाथसे मित्रता हो गई है। रमानाथ नित्य चौथे पहरसे संध्या पूजादिके बहानेसे उठकर इसके यहां आता है, और प्रातः स्नानकर तिलक छापा लगा, भक्त बनकर घर पहुंच जाता है। इसीसे इसकी स्त्री कृष्णकुमारीको कुछ भी सन्देह नहीं होता था। आज रमानाथ कुछ जल्दीसे भी उठ गया था, और दरवानके छेड़ने पर उसने मित्रसे मिलनेकी बात कह कर चुप करदिया था। परन्तु वह यह नहीं जानता था कि प्रारंभमें ही जब

पूठ लिया जाय, व्यर्थ किमी अच्छे आदमी बदनाम करना ठीक नहीं है इत्यादि क' कर लोगोंके मुँह बाध देंगे ।

ऐसा विचार कर वह चुपचाप पन्ना पर जा लेटा और सोच कर कि मानलो मैंने लोगोंका मुँह भीथाया दिया और किमी प्रकार टेल टाल कर मान मर्घ्यादा भी बदा रखी तो क्या हुवा ? क्या मैं सर्वज्ञ परमात्माकी दृष्टि दृष्टि भी बचासका हूँ । और क्या इस बचावसे मेरा मलिनात्मा भी उज्ज्वल हो सकता है ? हाय ! एक तो व्यभिचार (परस्त्री सेवन) ही पाप है, फिर उसके छुटानेको झूठ बोलना, मायाचार करना, इत्यादि और भी नितने ही पाप करना पड़ने हैं, इत्यादि सोचकर पश्चात्ताप पूर्वक विराप करने लगा, उमकी आँखोंसे अश्रुधारा गढ़ने लगी, गरम श्वास निकलने लगे, इतनेमें जोरकी हवा चली जिससे पासमें पड़ी हुई स्त्री की विचार मूर्छा दूर हुई । ज्यों ही उसने आँख खोल कर देखा तो उसका प्राणप्रिय पति रमानाथ पासमें पड़ा हुआ है, यह देख कर वह और भी विस्मय सागरमें मोने खाने लगी । सोचने लगी क्या मैं अभी तक स्वप्न ही स्वप्न देख रही थी ? क्या कमलावतीके द्वार पर किवाड़ नहीं खटखटाते थे ? क्या कमलावतीने उन्हें तिरस्कृत करके बेल नहीं बनाया था ? हाय ! मानलो कि उमने अपने पतिको ठगने हीके लिये उन्हें बैलझी उपाधि दी हो, परन्तु मैंने भी तो उन्हें वैर ही कर उसका समर्थन किया था, इससे प्राणनाथके निष्ठ पर क्या आपात हुवा होगा ? परन्तु प्राणनाथ तो पासमें

पड़े हुवे हैं, सपेरा होनेको आया है, आज वे नित्यके अनुमार पूजा स-प्राके लिये नहीं गये हैं, कदाचित् उनको गहरो नींद लग गई है, उन्हें जगाना तो अनुचित है, परन्तु सपेरा होना चान्ता है । और मध्या पूजाका समय भी चला जायगा जो कि कौट यत्न करने पर भी हाथ आना कठिन है, सिवाय इसके मेरे मनकी शल्य मन हीमें रह जायगी और वह भी दिन भर कटिके समान चुमा करेगी इस लिये उन्हें किमी प्रकार जगा देना ही उचित है, इससे मेरी शल्य भी निकल जायेगी और उनका नियम भी सध जानेगा । स्त्रियोंका कर्तव्य है कि अपने पतिसे कोई बात भी न छिपावें, पति ही उनका प्राण है, पति ही ईश्वर है इत्यादि सोच कर वह चुपसे उठी और पतिके पगचम्पी (पैर धा-वना) करने लगी । स्त्रियोंको पतिके गगानेका सन्ते अन्ठा और सरल यही उपाय है ।

रमानाथ जागने तो थे ही, अपनी स्त्रीके द्वारा पगचम्पी होने देख कर उनसे न रहा गया, वे समझ गये कि मेरी स्त्रीने अवश्य ही मुझे बदा देर लिया है, और वह मुझे छिन्नित करने हीके छिन्नित दाव रही है । वे गटे साहससे मनको रोककर बोले, प्रिये, अब मुझे अधिक छिन्नित न करो, मैं तुम्हारा सहन बार अपराधी हूँ, मैं बड़ा पापी हूँ, यथार्थमें आज तुम्हारे उम दोहेने जो तुमने उस कुन्दा कमलावतीके दोहेके उत्तरमें कहा था, मेरे निष्ठको बदर दिया है, मुझे सच्चा नाग दिया दिया है, और भविष्य होनेवाले योगतिनोरदुखोंमें बचा लिया है, तुम कुन्दा हो, सखी गृध्णी हो, मुझे



सिंतेर चित्रमां वतावेलां पापकर्म लोगववाना अंकोत्तरमा अंकना

चित्रना दोहा-

लोहशंकु गय्या करी, लांजो करी सुवाडी ॥ परमाधामी देवतो, मारे असिने ऊ-
टी ॥ १ ॥ अंकोत्तरङ्गिलो रही, परमाधामी देव ॥ छाती मांहि दबावीने, जालो
नयावा देव ॥ २ ॥ रीव करे छे आकरी, मारपडे तेवार ॥ नेमतेम मारे घणुं, कहेतां
नावेपार ॥ ३ ॥ कस्यां कर्मने लोगवे, तूं अज्ञानी जीव ॥ हसी हसीने जेकियां, रोझो
जोगवसदीव ॥ ४ ॥

सिंतेर चित्रमां वतावेलां पापकर्म लोगववाना एकोत्तरमा अंकना चित्रना

॥ दोहा ॥

लोहशंकु गय्या करी, लांजो करी सुवाडी ॥ परमाधामी देवतो, मारे असिने कादी
॥ १ ॥ एकतरफ जलो रही, परमाधामी देव ॥ छाती मांहि दबावीने, जालो नयावा
देव ॥ २ ॥ रीव करे छे आकरी, मारपडे तेवार ॥ नेमतेम मारे घणुं, कहेतां नावेपार
॥ ३ ॥ कस्यां कर्मने लोगवे, तूं अज्ञानी जीव ॥ हसी हसीने जेकियां, रोझो
जोगवसदीव ॥ ४ ॥

अंकोत्तर अंकना चित्रमां दशाविलां पापकर्म लोगववाना तमोत्तर

अंकना चित्रना दोहा-

जिंघे मस्तक राखीने, हाथ पग बांधी घोर ॥ परमाधामी तो बली, मारे मुद्गर घो-
र ॥ १ ॥ मुद्गर मारना दुःखयी, रीव करे अत्यंत ॥ जो जो जो मुझने, न कइ हुं
हुष्ट ॥ २ ॥

यहोत्तर अंकना चित्रमां दशाविलां पापकर्म लोगववाना तमोत्तर

अंकना चित्रना दोहा-

नंधे मस्तक राखीने, हाथ पग बांधी घोर ॥ परमाधामी तो बली, मारे मुद्गर घोर ॥ १ ॥
मुद्गर मारना दुःखयी, रीव करे अत्यंत ॥ जो जो जो मुझने, न कइ हुं हुष्ट ॥ २ ॥

अंकोत्तर अंकना चित्रमां दशाविलां पापकर्म लोगववाना पंचोत्तर अंकना

चित्रना दोहा-

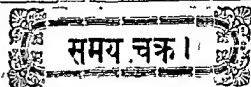
अग्निचितामानाखीने, परमाधामी देवत रूखीने तो जहुं दुःख दिये, त्रास पमाडे
अती ॥ १ ॥ अंकोत्तरङ्गिलो रही, रूल मोवे तस गिर ॥ अंकोत्तरङ्गिलो रही, शिरमारे
कुंतलूरि ॥ २ ॥ रीव करे नेतो घणुं, मूकी सर्वे लाज ॥ जोई दिन तो करीशनही, हवे जेराहुं झर
चमोत्तर अंकना चित्रमां दशाविलां पापकर्म लोगववाना पंचोत्तर अंकना चित्रना दोहा- ॥ ३ ॥

अग्निचितामानाखीने, परमाधामी देव ॥ रूखीने तो जहुं दुःख दिये, त्रास पमामे अती
य ॥ १ ॥ एकतरफ बेसी करी, शूल मोवे तस गिर ॥ एकतरफ जलो रही, शिरमारे कुंतलू-
रि ॥ २ ॥ रीव करे नेतो घणुं, मूकी सर्वे लाज ॥ जोई दिन तो करीशनही, हवे जेराहुं झर ॥ ३ ॥

क्षमा करो, मैं आजसे प्रतिज्ञा करता हूँ कि अब फिर यावज्जीव कभी भी ऐसे दुष्टत्वमें प्रवृत्त न होऊँगा, तुम दयालु नेक और उदार हृदय हो इस लिये तुमसे यह आशा नहीं है, कि इस पापीका पाप प्रसिद्ध करके उसे और भी दण्डित करोगी, क्योंकि मैं आपका घोर दण्ड पा चुका हूँ इत्यादि ।

कृष्णकुमारीकी शंका निवृत्त होगई, उसे स्वप्न साक्षात् हो गया, जान गई कि वे हमारे प्राणनाथ ही थे, और मैंने अवश्य ही उन्हें दुःख पहुंचाया है, इस लिये वह नम्र होकर बोली—स्वामी, दासीने जो अज्ञानता वश शब्दोंमें आपका अपमान किया है, उसे क्षमा कीजिये, अब मैं भ्रम ही में पड़ी थी, और समझती थी कि मैं स्वप्न ही देख रही हूँ, परन्तु आपके द्वारा मुझे अपनी शंका सत्य प्रतीत हुई, परन्तु गई बातका पदचांताप व्यर्थ है, वस, यदि मनुष्य पाप न करनेकी प्रतिज्ञा करने और पापसे अभिमत बना रहे तो ही सब कुछ है, भूले वहाँसे गिनना प्रारंभ कर देना ही युक्त है । आप चाहे जो कहें और चाहे सो करें, परन्तु स्त्रियोंका कर्तव्य है, कि अपने मनमें बात न छिपावें और जो कुछ भी आपसे (पति) कहें तथा परकी बात कभी बाहर न कहें, इस लिये आप भरोसा रखें दासी कभी अपने मुँहसे कुछ कहनेवाली नहीं है ।

इस प्रकार दम्पति प्रतिज्ञावच्य होकर शयनागारसे निकले और भास्कर भी उदयाचलसे निकल आये, रमानाथका पाप रात्रिके अंधकारके साथ ही विलुप्त होगया, और यावज्जीव दम्पति सुखपूर्वक रहे ।



समय चक्र ।

(ले० नौरत्नमल वरजाया, अजमेर ।)

रात्रिका सपन है । चंद्रदेव अपने प्रकाशमें लिप होकर आकाशमंडल शोभयमान कर रहे हैं, तरागणोंके संसर्गसे आकाशमंडल महफिश्के समान दृष्टिगत हो रहा है । घंटीमें टरटन-१ बारह बज गये, अर्ध रात्रि हो चुकी है, निद्रा-देवीने अपना राज्य चंद्र और प्रभा छिया है, समस्त संसार निद्रादेवीकी गोदमें अचैन पड़ा हुआ है । मैं भी निद्रादेवीकी गोदमें विश्राम करनेके प्रति नेत्र मुंदे ही था कि अकस्मात् एक अद्भुत स्वप्नका निरीक्षण करने लगा । क्या दृष्टिगत होता है कि एक कीर गंभीर मनुष्य अपने चौड़े सीने पर दोनों हाथ धर कर उदासीन होकर नदीके तट पर खूब रहा है और लंबी लंबी स्वांसे भर कर मुछंद स्वर द्वारा कह रहा है, कि हे जैन जाति ! तू तो प्राचीन समयमें सर्व जातियोंकी अपेक्षा उच्च एवं श्रेष्ठ गिनी जाती थी अब तू दुर्दशा रूपो क्षेत्रमें क्यों उतर रही है ? जो कुहूत्योंका अवलंबन प्राचीन कालमें अवमसे अधम जाति भी नहीं कर्ती थी उन्हीं कुहूत्योंको आन नू प्रमत्तता पूर्वक कर रही है । क्या पूर्व समयमें तुम उच्च समाजमें नलंकाह, वृद्धविवाह, अनमंथ विवाह, विववाविवाह, व्यर्थ व्यय, कन्याविक्रय आदि जो मज्जन पतित हैं ऐसे कृत्योंका अवलंबन होता था ? नहीं नहीं, वद्वापि नहीं । हाय ! जैन समान इन्हीं कृत्योंके प्रभावसे तू अवश्यमेव लोपोपतिकी ओर जागो,

इतना कहते बढ़ते उम वीर पुरुषका गला
चुट गया ।

पश्चात् उस पुरुषने स्नान करनेके निमित्त
नदीमें पैर रखे ही थे कि संयोगसे एक कर्ण-
गोचर शब्द आसमानकी ओरसे श्रवण करनेके
प्रयोगमें आया कि ऐसे वीर गंभीर पुरुष ! तेरे
हृदयमें जो महान उत्तम विचार उपस्थित हैं,
कठिनसे कठिन आपत्ति उपस्थित होने पर भी
ऐसे उच्च कोटिक विचारोंसे विमुक्त न होना ।
इन उत्तम विचारोंको अपने प्राणोंसे प्रिय सम-
झेंगे तो तुम्हारा कल्याण होगा । इस प्रकारके
वाक्य श्रवण कर वह पुरुष आश्चर्यमें पड़ा गया
कि ऐसे उत्तम विचार स्थान पर यह वचन
किसने कहे ? यथार्थमें आश्चर्यकारी वाक्य है ।
उक्त वाक्योंको हृदयमें स्थान दे जिस ओरसे
कि वे वर्णगोचर शब्द हुये थे उस ही ओर
गमन कर गया । २

प्रातःकाटका समय है । चांद व तारे छिप
चुके हैं । सुहावनी गुदगुदानीवाली पवन चल
रही है । स्वच्छ तथा निर्मल आकाश है ।
चिड़िया चूं-चूं करने लग गई है । दिवाकर-
नापकी भी सबारी धीमी धीमी चाहसे चली आ
रही है । रात्रि भारकी गरमीसे पसीने हुये प्राणी
जलमें क्रीड़ा करने चले गये हैं । इसी अवसर
पर हम एक वीर पुरुषको कुछ वेगसे आंत हुये
देख रहे हैं । क्या इसे कुछ चिंता तो नहीं है ?
यह आगे विदित होगा । यह पुरुष सना-सना
चला जा रहा है । कुछ दूर पर हम एक बालक
जिसकी अवस्था हमारे अनुमानसे लगभग बारह
वर्षकी होगी दर्शन कर रहे हैं । वह एक वृक्षके

नीचे खड़ा हुआ है । उस गंभीर मनुष्यने उस
लड़केकी ओर अपनी दृष्टि चलाई तो ज्ञात हुआ
कि यह तो मेरा ही प्रिय बालक रविन्द्र है
निश्चय पूर्वक उस बालकको चिन्ह कर उसके
सम्मुख गया और प्रेमपूर्वक कहने लगा—

(पिता)—हे पुत्र रविन्द्र ! तू यहाँ ऐसे
असीम स्थान पर क्यों कर आये ? क्या तुम्हें
छाते हुये कुछ भी मय मालूम नहीं हुआ ?
तुम्हें ऐसा योग्य नहीं । क्या तुम्हारे साथ और
कोई तुम्हारे मित्र महोदय भी है ? या अकेले
ही हो ?

(पुत्र)—हे पिताजी ! जबकि आप घरके द्वारके
बाह्य निकले थे मैं भी आपके पीछे हो लिया, मैं
अकेला ही आया हूँ । मेरे संग कोई मित्रादिक
नहीं है ।

(पिता)—हे पुत्र ! यदि तू मेरे संग ही घरसे
निकले थे तो इतने समय कहां थे ? प्रकाशमें
क्यों नहीं आये ? गुप्त रीतिसे मेरे पीछे पीछे
छुपे हुये आना योग्य नहीं । यह एक प्रकारसे
अपराध है ।

(पुत्र)—पिताजी ! इतने समय में आपके
प्रकाशमें नहीं आया अतएव मैं अवश्य अप-
राधी हूँ । अतः नम्रभावसे क्षमाप्रार्थी हूँ । मैं
इतने तक इस ही पेड़के नीचे खड़ा हुआ इस
चिन्तित सख्त मनका अलोकन कर रहा था ।

[पिता]—पुत्र ! इस अपराधके प्रति मश्वास्त्य
करो । आगामी ध्यान रखना ।

[पुत्र]—अच्छा पिताजी, आपकी आज्ञा
शिरोधार्य है ।

[पिता]—पुत्र ! अब तो घरसे निकलेको

अपनको बहुत विलंब हो गया । तुम्हारी माता बिता कर रही होगी । घरकी भी सुष लेना प्रयोजनीय है । अतएव अब घर चलना चाहिये ।

[पुत्र]—अच्छ पिताजी बलिये । विगेव बार्तालाप न कह कर दोनों वहांसे चल दिये ।

३

पाठकगण, कुछ दिन चढ़ चुका है । सूर्यदेव आकाशमंडलमें भ्रमण करनेके प्रति उपस्थित हो गये हैं । रातभर मुझमें हुये कमलके फूल भी धीरे धीरे शिर उठा रहे हैं । गुलाब, केवडा, मोतिदा, चमेछी, हीनादिक फूलोंकी बहार ही निराली है । ठंडो ठंडो सपौर बह रही है । मनुष्यगण शौचादिसे निश्चित होकर अपने अपने उद्योगोंमें लग गये । इसी समयमें हम एक पुरष एव एत नाटकके दर्शन बाजारमें कर रहे हैं । संभव है कि हमारे प्रिय पाठक इनसे कुछ परिचित भी होंगे । पाठकवृंद, यह और कोई नहीं यह वही रविन्द्र एवं रविन्द्रके पिता हैं । मालूम होता है कि यह कहींसे तैर करके हुए पड़े आ रहे हैं । रविन्द्र और रविन्द्रका पिता परस्पर वार्तालाप करते हुये अपने घरकी ओर भा रहे हैं ।

(रविन्द्र)—पिताजी, आज आपका चित्त कुछ उदासीन प्रतीत होता है । किस चिंताने आपके ऊपर आक्रमण किया है ? आपकी उदासीनताका क्या हेतु है ? मैं उपस्थित रहने हुये आपको चिंतित रहनेकी आवश्यकता नहीं, क्या पूर्वक उदासीनताका हाल कहिये ।

[पिता]—प्रिय पुत्र, मुझे कोई चिंता नहीं है, सिर्फ जातिकी दशाका अवलोकन हृदयको

विदीर्ण कर रहा है । देखो, वर्तमानमें जैन समाजमें बालविवाह, टबलविवाह, वृद्धविवाह, विधवाविवाह, कन्याविक्रय, फजूल खर्चादि कैसे कैसे अत्याचार खड़े हो रहे हैं, जिनके प्रभावसे जाति समूल नष्ट हो रही है । सिर्फ यही एक दुःख हृदयको खेदित कर रहा है ।

[पुत्र]—पिताजी, यह कुपयायें तो बहुत दिनोंसे समाजमें हो रही हैं । विचारे साहित्य पत्र भी अपना कलण कंदन रोर कर समानको मुनाया करते हैं । आपने मां तो पहिले उपदेशादि दिये थे क्या कुछ फल नहीं हुआ ? क्या हेतु है कि समान इतने निष्ठुर हृदयकी बन रही है ?

पित—पुत्र, मैंसे सन्मुख चाहे किता ही मृदंग बनाया जाय अंतमें कुछ फल नहीं । उसी प्रकार जैन समान.... इस प्रकारकी वार्तालाप पिता व पुत्रके परस्पर हो रही थी कि अकस्मात् कुछ सरकारी प्यादे आ धमके और रविन्द्रके पिताके हाथमें छोहेकी जंजीरें ढालके पकड़के लेगये । निराश्रित रविन्द्र व्याकुल हो कर विलल विछल करने लगा । देखनेवाले भी चढ़े ही आश्चर्यमें मूठ गये ।

४

संसारचक्र अत्यंत विचित्र है । आज जिसको विश्वास करनेके प्रति मुलायम मलमलके गद्दे उपस्थित हैं कल वही एक फटे टूटे वस्त्रके मति भी दृढ़ हैं । आज जिसको खुवा लगने पर नाना प्रकारके उत्तमोच्चम स्वादिष्ट भोजन भक्षण करनेको मित्रता है कल उसके मति सुखी रोटीका टुकड़ा भी महान दुर्लभ है । आज जिसको

प्यास लगने पर नाना प्रकारका अमृत दिया जाता है कल उसके होठों पर फेफड़ी जमने पर भी तनिलसी जलकी बिन्दु भी मिलना महान वज्रि है । कान जो नाना प्रकारकी बँसबके नगेमें चुर हो रहा है कल वही एक ताँबेकी नासरीके प्रति भी भिन्न है । इस असर संसारकी लीला अपार है । जो रविन्द्रके पिता बड़े ही मान्यवर बुद्धिमान एवं अनुपवी तार्त्विक समझे जाते थे आन वही समयचक्रके फंदेमें गिरते हुये हाथोंमें लोहेकी जेजोरेँ मूषिन कर सरकारी प्यादोंके संग चले जा रहे हैं । इस समय उनको यह आश्चर्य उपस्थित हो रहा है कि मेरेसे ऐसा क्या अनिष्ट अराध हो गया जिसके द्वारा मुझे बंदिगृहमें लेना रहे हैं । वाचस्पति उनके कुटुम्बिकमनोंको भी यह दुर्घटनाका वृत्त श्रवण कर बहुत खेद हो रहा है । व रविन्द्रकी माताको भी दुःख तो अवश्य है परन्तु वह ना-तो है कि मेरे पति निरंकुश निर्दोष हैं । यदि सरकार न्यायाधीश है तो न्यायपूर्वक मेरे पतिको अभी बंधनसे मुक्त कर देंगी । क्योंकि सांचको कहीं आँच नहीं, एवं अराध रहितको समा नहीं । हमारे रविन्द्रकी इस समय क्या दशा होगी इसका अनुमान हमारे प्रिय पाठक लगा देंगे—रागु इतना कहना तो मैं भी उचिन्त समझता हूँ कि रविन्द्रका दृश्य सबसे अधिक चिंतित होगा । उन सरकारी सिपाहियों रविन्द्रके पिताको बिना न्याय सीधा ले जाके बंदिगृहमें डाल दिया । निगम्रित रविन्द्र बहुत व्याकुल हुआ । कुछ विलम्बके प्रश्नात् स्दन करते हुये रविन्द्रको सरकारी नौकरोंने उस

स्थानसे निकाल दिया । इस प्रकारके हालका अवशोकन मैं कर रहा था कि अकम्पात् मेरी माताने आके मुझे निद्रादेवीकी गोदमेंसे उठा लिया । फिर क्या था ? देखने देखते सर्व दृष्टिसे छिप गया । अशक्त हुआ अरे रे-यह तो स्वप्न था—मगवान—यह हाल कभी भी आगामी किसीको न दिगवावे । ऐसे नेत के बंधनसे हमारी समानकी दुर्दशा है !

जातिकी उन्नति कैसे हो ?

(लेखक—मुशी केशरीमल मोतीदास रांम व्यावर ।)

(१) प्यारे बन्धुओं, आनकल चारों ओरसे “कन्य विक्कय” व “वृद्ध विवाह” व “पेनोड विवाह” रोकनेके लिये और जाति उन्नति करनेके लिए बहुतसे बनाइय और बुद्धिवाले व जातिके मुखिया व जातिके प्रत्येक माईकी इच्छा है ।

(२) इनको मिटानेके लिये नेता व घन टय सेकड़ों रुपैया खर्च करके समा व पंचायतियाँ करते हैं । और इतनामा करानेके लिये कायदे बनाते हैं । और कायदेके विरुद्ध चलनेपर उनको जाति बाहिर निकालने तककी सजा कर देते हैं कि जिससे जातिमें एक वरकी और कमी हो जाती है । और अगर कमी न हुई तो जुल्मा (बड़ा) बंध जाता है और कारवाही पंचायतमें खलब हो जाती है । और कायदेकी पाबंदीकी सामील नहीं होने पती है ।

(३) अब सवाल यह है कि “कन्याविक्कय” करनेवाले कौन हैं ? और किम मतलबसे करते हैं ।

(४) प्यारे जातिमाईयों, पस और स्वार्थको

त्याग कर इस सवाल पर गौर करनेसे आपको मालूम हो जायगा कि जो ज्यादा पूनीवाले हैं वह तो बेटीका पैसा लेते ही नहीं बल्कि बौंटी छोरा, बंटी आदि नेवर दुल्हा (बौंद) को देते हैं और विवाहमें दस बीस हजार रु. तक खर्च करते हैं। इससे मालूम हुआ कि बेटीका पैसा लेनेवाले बिना पूनीवाले ही हैं।

(५) अब यह सवाल होता है कि बिना पूनी-वाला पैसा क्यों लेता है ? नीचे लिखे कारण पैसा लेनेवाले मालूम हुए—

(१) बिना पूनीवालेके लड़के व लड़की दोनों ही होते हैं। वह समझना है कि अगर बगैर पैसा लिये लड़कीका सगाण कर दूंगा तो तो लड़का कबारा ही रह जावेगा, और यों ही ग्वानदान (कुटुम्ब) बट होकर जातिसे एक घर कम हो जावेगा और नाम बला जावेगा क्योंकि इस समय ऐसा ही रिवाज जारी है—कि पूनी-वाला तो बिना पूनीवालेके खुशमूरत, हट्टे, कट्टे कमाऊ लड़केको अपनी लड़की देना चाहते ही नहीं है। बल्कि लड़की लेनेको तैयार रहते हैं और रुपैया देनेको भी तैयार हैं मानों बेटीका पैसा लेना पूनी वालोंने ही सिखाया है।

(२) घनाछ नम विवाह मोसर बगैर करते हैं तो जातिके सब भाईयोंको बुझाते हैं और निमाते हैं। जब कोई कम पूनीवाला भाई अपने घर काम पढ़ने पर ज्यादा खर्च न कर सकनेके कारण नहीं बुझाता है तो पूनीवाले महाशय उनको ताना मारते हैं और कहते हैं कि स्वा ही जानते हो इत्यादि, इस तानेके मयसे और दूसरा जरिया आमदनीका न देख कर

अरनी लड़कीका मजबूरन लया लेकर निमाता है।

(३) बेटीके रुपये लेनेके ऐसे कई कारण हैं कि जिनको हर एक महाशय जानते हैं पान्ठ भरम खुल जानेके मयसे भवान पर छाना नहीं चाहते हैं। लेख भी लेख विशेष बढ जानेके मयसे यहां पर दर्ज करनेसे मूत्रवृ हैं।

४-न्तीजा-१-पूनीवालोंसे लड़की मिलनेकी उम्मेद न रही।

२-अगर काम पढ़ने पर नहीं निमाता है तो ताना सहन नहीं कर सकता।

३-लड़का कबारा रह जाता है।

(६) जातिमें अच्छी रीत व रिवाज व खोटे रीत व रिवाज चशनेवाले नेता पूनीवाले ही हैं उनकी देखादेखी बिना पूनीवालों व कम पूनीवालोंको भी करनी पड़ती है।

(७) समयकी बलिहारी है कि इस समय बहुतसे जाति भाई कम पूनीवाले जो पैसा नहीं लेते हैं, अपनी लड़की अपनेसे ज्यादा पूनीवालेको देने हैं। और शादीमें अरनी हैसियतसे ज्यादा खर्च करते हैं इस मयसे कि कहीं मेरा सम्बन्धी जो ज्यादा पूनीवाला है नाराज न हो जाय या मेरा भरम न खुल जावे कि कम पूनीवाला है। आयदा लड़केकी सगाईमें बाधा न आवे, नाम हासिल हो जाये और आपसकी तानाबाजी न सहनी पड़े। इस मयसे ज्यादा खर्चा करके अपनेको कर्मदार बना लेता है। क्या करे पूनीवालोंकी देखादेखी करनी पड़नी है।

(८) घनाढ्य अपनी लड़की कम पूंजीवालोंको न देनेकी वजहसे विना पूंजीवालोंके खुबसूरत, हटे, कटे होशियार व पढेलिखे लड़के कँवारे रह जाते हैं। और घनाढ्योंके गैले (पागल), गुमे, बहिरे लड़के भी कँवारे दिखाई नहीं पड़ते।

(९) मिपल मशहूर है कि "लड़की घर हाण देनी, पर घर हाण देणी नहीं" प्रिय मित्रों यहा पर घरहाणसे मतलब निर्धनका है। कई उपकारी जातिका सच्चे दिलसे भ्रष्टा चाहनेवाले घनवानोंने जातिकी उन्नति करनेके लिये इस कहावतके मुनब ही किया है। उन्होंने अपनी लड़कियाँ अपनेसे बहुत कम पूंजीवालोंको दी और पूंजी व जायदाद व जागीर देकर अपने बराबरीका बना लिया।

(१०) अब आपको मालूम हो गया होगा कि इस समयमें वही रिवाज जारी है कि हर-एक शम्स चाहे दुख पावे या सुख पावे अपनी लड़की अपनेसे ज्यादा पूंजीवालोंको देता है। ज्यादा पूंजीवालेको लड़की देनेमें जातिको ओ नुकसान है उनमेंसे यहां पर कुछ दर्ज करते हैं किन्तु लेख बढ़ जानेके भयसे कुछ नहीं बतला सकते।

(१) कम पूंजीवाला सगा कोई भी रुदन (कामकान) पूंजीवाले समेकी मर्जीके मुआफिक न करे तो शीघ्र ही अनबन हो जाती है। ज्यादा पूंजीवाले समचीनी उल्टी गुराईयाँ करते हैं और कहते हैं कि खटाव न था तो मुझसे क्यों बिट्टा।

२-अब पूंजीवाला अपनी हैसियतसे ज्यादा खर्च करता है तो भी उनके पसंद नहीं आता।

गोया दिया हुआ वन योंही बूझा जाता है।

३-जियादा पूंजी वालेके यहां लड़की (सुख) आराम पावेगी इस खयालसे देते हैं। परन्तु यदि लड़कीके तकदीर सिकंदर हुवे तो सुख मिल सकता है। नहीं तो विचारीके पीहरकी निंदा व उसके घरानेका बखान हर समय उसकी समु व श्वसुर किया करते हैं। आदर काना तो अलग रहा परन्तु अनादर करनेको तैयार रहते हैं। अगर किसी तरह अनबन हो गई तो लोंडी, सोक तक ढानेमें नहीं चूकते हैं इसी तरह लड़की सारी ऊपर दुखी रहती है।

४-अगर ज्यादा पूंजीवाले समेकी खातिर, तबज्जे बराबर न हो या सीक बाडी इत्यादिमें कुछ कम घन दिया तो अनबन हो जाती है। बोलना तक भी बंद हो जाता है। कम पूंजी-वालेकी अपकीर्ति होती है। कई २ मर्तबा तो "बड़े घर बेटी दीनी, मिलवाका सांसा," यह कहने तकका अवसर मिल जाता है।

५-अगर लड़कीवालेका बाप भी ज्यादा खर्चा कर देनेकी वजहसे कर्नदार बन जाता है। अगर तगदीर अच्छी हुई और कमाई हो गई तो कर्जेके दुखसे मुक्त हो जाता है। अगर कमाई न हुई तो कमा खानेसे भी जाता रहता है। कहावत है कि "कने जेसा दुख संसारमें दूसरा कोई नहीं है"। वह सब दुःख कम पूंजीवालोंको भोगना पड़ता है।

नेक सलाह।

प्यारे मालदार सेठों, जातिके नेताओं, मुखिया पर्वों, जाति मुखारका ढोंग न रख कर सच्चा मुखार चाहनेवालों, यदि आपको जातिसे सच्चा

प्रेम है और आप जातिकी सच्ची मछाई चाहते हैं, यदि आप सच्चे दिलसे “कन्याविक्रय” व “वृद्ध” व जेनोड विवाह बंद कराना चाहते हैं और ऊंचे शिक्षा पर ले जाना अपना कर्तव्य व धर्म समझते हैं और किसीको कंधारा नहीं रखना चाहते हैं तो अपनी लड़की अपनेसे कम पूंजीवालेके हट्टे, कट्टे, पट्टे लिखे, खुरसुरत, होशियार, और कमाऊ लड़केको दो। अपनेसे ज्यादा पूंजीवालेको देनेकी प्रथा (चाल) जो इस समय चालू है उसको उलट दी जावे। मनोमाद पलट दिये जावे तो वही प्रथा जारी हो जावेगी जो कि आप सच्चे दिलसे चाह रहे हैं। विवाहमें ज्यादा खर्च न कर उससे बचा हुआ धन बेटी, जेनोडके सुपुर्द करे। अपने जेनोडको व्यापारादिकमें मदद देकर अपने समन बनालो। तो खानदान भी ऊंचे दर्जेमें आजावेगा और जातिकी उन्नति भी हो जावेगी। जब आप महाशय याने ज्यादा पूंजीवाले कम पूंजीवालोंके लड़कोंको लड़कियों देना शुरू कर देंगे और अपनेसे ज्यादा पूंजीवालेको लड़की देनेका रिवाज उलट दिगा जावेगा तो कम पूंजीवाला कमी अपनी लड़कीका पैसा लेनेका नाम ही न लेगा और यों “कन्याविक्रय” आप ही आप बंद हो जावेगा। और जाति-माईको दंड देनेकी नीचे दरजेके गिननेकी जरूरत ही न रहेगी। न सगाईके रुपये देने लेनेकी तादाद (मंख्या) मुकर्रर करनी पड़ेगी। गीतोंमें गाया जाता है कि “राव उमरावकी होड न कीजे, जोड़ीका बर देखने दीजे,” ऐसी प्रथा जारी करनेसे नीचे लिखे फायदे (लाभ) होंगे।

१-जब कम पूंजीवालेका यह मय जाता रहे कि मेरा लड़का कंधारा न रहेगा और बिना पैसा दिये ही लड़केकी सगाई हो जावेगी तो वह भी अपनी लड़कीका बिना पैसा लिये ही अच्छा लड़का, जोड़ीका बर देकर विवाह कर देगा। जब अपने लड़केका पैसा उसे न लगेगा तो क्या उसे अपनी लड़कीका पैसा लेनेमें शर्म नहीं आवेगी और उसको पैसा कौन देगा? वस इस तरह “कन्याविक्रय” अपने आपही बंद हो जावेगा।

(२) जब लड़केको उम्मेद अपनी सगाईकी हो जावेगी तब वह विद्या पढ़ने व सदाचारी व्यापारी बननेकी इच्छा रखेगा कि जिससे जातिमें विद्या, कला, कौशल्य व व्यापार बढ़ेगा। जब लड़केको हष्टा कष्टा खुरसुरत होशियार पदा लिखा देखकर सगाईयें होंगी तो “नालविवाह” व जेनोड विवाह आप ही रुक जावेगा।

(३) जब कि प्रत्येक जातिमाई अपनेसे कम पूंजीवालेके लड़केके साथ अपनी लड़कीकी सगाई करना शुरू कर देंगे तो उनकी अपनी हैसियतसे ज्यादा खर्चा न करना पड़ेगा जिससे कर्जदार न होगा और न समधीजीकी बानाबानी सहनी पड़ेगी। बल्कि जिसादा पूंजीवाले समधीजीका उपकार, यश और अहसान ही सुननेमें आवेगा।

(४) कम पूंजीवाला समधी ज्यादा पूंजीवाले समधीजीका ज्यादा आदर भक्तिकार करेंगे और मोड़ी रस्म, रीत देने पर भी राजी होकर लेगा और दुल्ल सुल्लमें फौरन काम आवेगा।

(९) लड़का व उसकी औलाद तीन पीढ़ी तक अहमान मानते रहेंगे । जवाई व लड़कीको कम दोगे तो भी ज्यादा मानेगा और तुम्हारी बाह बाह करेगा ।

(६) जवाई पूंजी वालेकी लड़की नर सास-रेमें आवेगी तब ससुर, शसुर, पति बौर: कुछ खानदान उसका आदर करेंगे और सारी उमर सुख देंगे ।

(७) ज्यादा पूंजीवाला यह खयाल न करे कि कम पूंजी बाटा हमेशा ऐसा ही रहेगा । आप यह निश्चय समझिये कि किसीके दिन हमेशा एकसे नहीं रहते । जाइके नसीब चाइके साथ है, वह आपकर्मी है न कि बापकर्मी, कई निर्धन थे, लखपती हो गये और कई लखपति थे वह निर्धन हो गये ।

(८) "कन्याविक्रय" न होनेसे "वृद्धविवाह" रुक जावेगा ।

(९) फजूल खर्ची रुकनेसे वैश्यान्त्य इत्यादि रुक जावेंगे ।

(१०) आर्यदाकी संतान आप ही मटावारी व कुलीन बनेगी ।

(११) अंग व नपुंसकका विवाह रुक जावेगा ।

(१२) जब जाति घन न देख कर लड़के अच्छे देख कर सगाई व विवाह करेगो तो बेमोड़ विवाह न होगा ।

(१३) जातिको किसी प्रकारके कापदे व रीत न बांधनी पड़ेगी ।

(१४) नाटविवाह, वृद्धविवाह, बेमोड़ विवाह जब बंद हो गये तब आर्यदाकी संतान पठवान साहसी और शास्त्री पैदा होगी ।

(१५) विद्यार्थीकी संख्या न बढ़ेगी ।

(१६) पंचायतका झगड़ा न ठठेगा इसलिये परस्पर प्रेम बढ़ेगा ।

(१७) जब जातिमें विद्वानोंकी संख्या बढ़ जावेगी तो वह अपने आप ही कुरीतियोंको छोड़ते जावेंगे जिससे कुरीतिका जातिसे सदाके लिये काला मुंह हो जावेगा ।

(१८) हटे कटे, कमाउ, निर्धन कई माई अपने विवाह न होनेसे अन्य धर्म व जानिमें चले जते हैं उससे जातिमें कमी पड़ती है । जब उनके विवाह स्वजातिमें होने लग जावेंगे तो वह सजानि व धर्मको न छोड़ेंगे जिससे जाति न बटेगी बहिक बढ़ेगी ।

(१९) कुछ ही दिनोंमें जातिमें निर्धनका नाश हो जावेगा ।

(२०) जातिमें सर्व प्रकारकी उन्नति होजावेगी ।

उपयोगी पुस्तकें:-

ज्ञानदर्पण	१)
इन्द्रियवर्णन शतक	२)
मंत्रहरण विनती	३)
सप्त व्यसन चरित्र	४)
पंच स्तोत्रम्	५)
श्रावण धर्मसंग्रह	६)
सम्पन्नचित्त बहम	७)
मिनेन्द्रप्रतदर्पण	८)
रत्नाम्रचन कथा	९)
आत्मरुपाति समयसार	१०)
सर्वार्थसिद्धि	११)
तत्त्वार्थसूत्र मूळ	१२)
भैरव-दि० जैन पुस्तकालय-मुरत ।	

नारियलके गुण ।

नारियल बहुत बड़ा वृक्ष होता है, आकार खजूर और ताड़के समान होता है, यह वृक्ष पूर्वकी ओर कलकत्ते और श्रीजगत थलीमें और बम्बईमें बहुत होते हैं, विशेष करके नदी अथवा समुद्रके निकट अधिक उत्पन्न होते हैं। इसमें शाखा नहीं होती, इसमें ऊपर के भाग खजूरसे पत्ते होते हैं, उन्हीं पत्तोंके नीचेमें नारियल लगते हैं। उस नारियलको फोड़के निचोड़नेसे जो रस निकलता है उसको नारियलका दुध कहते हैं, जब यह नारियल सुख जावे हैं तो उनके भीतरके भागको गोला अथवा खोपड़ा कहते हैं। ये फल मगलादि वायोंमें बहुत लिये जाते हैं।

नाम ।

हिन्दी भाषामें नारियल, बगला भाषामें नर-केल, मरहटीमें नरली, गुजरातीमें नालिपर, फारसीमें जौन हि दी, अरबीमें नारिजल, इंगलिशमें कोकोनट पाम, लैटिनमें कोकोस्यूसेफरा, संस्कृतमें नालिकेर, टा फल, सदाफल, लागली, कर्कशर्ष, तुण स्कन्ध फल, तृणान, नारीकेली नारिकारी, नारिकेरि, नारिकेली सदापुष्प, श्रीफल, मृदुफल, पुटोदक, नारिकेर रसफल, सुतुंग, कुर्कशेखर, दहनर, नीलवक्र, गगलय, उच्चतर, स्कन्धतर, वसिणात्य, दुरारुह, प्यम्बकफल, शिराफल, कराम्बा, पयोधर, पुच्छुण, कौशिकफल, फलमृदाह, जटाफल, मृदाहफल, विश्वामित्रप्रिय, नावेर, सुभग, फलकेशर, वर फल, महाफल, श्रीफल, तेजार्घ, और व्यस्तफल।

नारियलका फल, शीतल, दुर्जर, मूत्राशय शोषक, प्रहाप्रष्टिकाक, बलदायक और वात पित्त रक्तविकार तथा दाह नाशक है।

कोरल नारियलका फल विशेष करके पित्त ज्वर तथा पित्तके दोषोंको नष्ट करता है। नारियल पुनाकारी पित्तका विनाही तथा विष्टम्भ कारक है।

नारियलका पानी शीतल हृदयको प्रिय, अग्नि-को दीपन करनेवाला, बीर्यवर्धक, हल्का, तृष्ण तथा पित्तको नष्ट करने वाला, मधुर और मूत्राशयको शुद्ध करता है। नारियलकी शिशा कसैली, सिन्ध, मधुर, पुष्टिकाक और मारी है।

प्रयोग ।

१. नारियलकी गरी उत्तम, मुहा रोगवाला पानकी तरह चबाय तो मुहा रोग दूर हो।

२. गीला नारियल पानी भरे हुएके पेटमें मछोमाणि नमक भरे, पीछे कण्डा मिट्टी कर सुला कर विनुआ बण्डा यान अन्ने उपग्रोंसे पूंक देवे मरम हो जाये तब यह मरम मात्रा ४ रत्ती पीवत १॥ मशेमें मित्राकर खाये तो इसमें बाधु स्म्वधी परिणाम शुद्ध दूर हो।

३. नारियलकी जटा १३ तोले, काला लोन २ मासे, जल आधशेरमें चुरा, बफारा कुछ बदनेमें ले। बफारा लेनेकी विधि यह है कि हाडीमें मर आगपर चार बख ओट बफारा के तो खासो बहुत जल्द अच्छी हो जाती है।

४. बच्चे नारियलके पेटमें फटकरी मर १ रात काचढमें गड दे सुबह रस सहित १ तोला खानेसे पुरतन प्रमेह दूर हो।

५. नारियल शक में पीस बच्चोंको मात्रा देश काठ बलाचल देव का दानो बच्चोंको हुबका दूर हो।

६. नारियलके गोलामें तालमखाना, इतरगोल, एक एक छंटाक पिस कर भरे फिर बरगद वृक्ष वा दूध घर छायामें सुखा ४० छुहारा ले, गुठली निकल उनके भीतर उक्त दवा भर उन पर बच्चा सुन लपेट कर बडाहीमें गऊ दूध डाल कर छुहारा तल ले जब थोड़ा दूध रहे तब छुहारा निकाल के रखले । १ छुहारा सुबहके वक्त खाकर ऊपरसे सहस्रमूली (गुर्नदस्ती), घृत, इस तरह पर तैयार का ले कि गुर्नदस्ती, १ तोला कांस, कुशा एक तोला, बिदारी कंद १ तोला, ईखका रस, और अंबरा ये एक एक तोला ले, पीस एक सेर जलमें काढा करे, सो काढा अने, तिसमें एक पाव गऊ दूध तिसमें एक पाव घृत मिला अग्नि पर पका घृत सिद्ध कर ऊपर लिखी हुई दवाको खा कर एक तोले घृत खाले । इन दोनों किस्मकी दवा पानी छुहा व घृतको सब अमीर व गरीबोंको सेवन करना चाहिये, यह रामा और रंक ब्रह्मा हित साधने वाला है । इसके सेवन व नसे वीर्य बढ़ता है । बलको बढ़ाता है, घृतको पृष्ठ करता है, प्रमेहको खोता है, उदर रोग, अफरा, मूत्र ज्वाना, इन सब रोगोंको सिंहकी माफिक दण्ट कर मगाता है । नेत्र रोग, सातों धातोंको पृष्ठ करता है, हमेशा सब ऋतुओंमें यही दवायें मंगलरूप हैं । प्रीतको बढ़ने वाला, स्नेहको बढ़ाने वाला, शरीरको निरोग रखने वाला, अमोल रस, पुत्र देने वाला, मरमें श्रेष्ठ काम रूप ये दोनों दवा हैं । ये अग्निको बढ़ती है, वाति और शोषा बढ़ती है असाध्यम असाध्य प्रमेह (जिभ्यान मनी) अर्श्य ही नष्ट हो जाती है । इन्हीं दवाओंके सहित और अनेक तरहकी मडी, घृतीसे महाशनमूली घृत बनता है जिनको पड़े

दिन सेवनसे स्त्रियोंके सर्व रोगोंको कैसा मगाता है, जैसे अग्नि समूलके मरफ करती है । इस महाशनमूली घृतके प्रतापमे छाल, सफेद, कांठा, नीला प्रदर ऋतु सबधी जितनी बिमारी हैं सबको तत्काल मगा देती है । स्त्रियोंको मनो-वाञ्छित फल देने वाला यह घृत है । इस घृतके प्रतापसे बीर और पराक्रमी शुद्ध बुद्धि वाला और सुंदर रूप वाला ऐसे २ पुत्रोंसे नारीकी गोद हमेशा हरी मरी रहती है, इसके सेवनसे कभी रोगकी शिकायत नहीं रहती । सन्तानके सर्वग्रह दोष मगे कि नै हैं । उनको बढ़ाने वाला सब मनोकामना पूर्ण काने वाला, अर्थ, धर्म, काम, मोक्ष, सबको देने वाला, यही घृत है ।

७. नारियलके तेजमें किंचित घृतका पानी मिला जली हुई जगह पर लगा दो तो मछन तुरन्त बढ़ हो जाती है ।

८. नारियलके तेल एक सेरमें तेनपात आदि सुगंधित मसाला आध पाव, छारछवीछ आध पाव, गुडाके कूळ आध पाव मिठा कर १५ दिन तक शीशरीमें रखको, फिर इस हिना दो तोला, चदनका तेज २॥ तोले मिला दो तोला सुशुद्धा सुगंधित तेज बन जाता है । अगर आपको रंगीन करना हो तेलका तो अलकोनेट हट मिला कर विलिंगसे डाललो अत्यन्त उम्दा तेज बनता है ।

९. नारियलका ठिठका नडा राखकर बाराबर शक्कर मिला कर ३-३ माशेकी मात्रा खा कर कुछ दिन सेवन करे तो सब सीर एक साल की अच्छी हो, अगर अपाध्य हो तो एक साल तक सब सीर नहीं उमड़ेगी । 'न्य नी प्रना ।'

આપણી પુત્રીઓ વિષે વિચાર.

(લે. માસ્ટર નાનચંદ પુલ્લભાઈ બી. એ. વંશદેશ)

જ્યારે કોઈને ઘેર છોકરાનો જન્મ થાય છે ત્યારે સગા વડાકાને ખમર આપવામાં આવે છે, વધાનણીઓ ખવાય છે, સાકર પેંડા વેહેવાય છે, ઘેર લાપસી રંધાય છે, પૂજન થાય છે વગેરે અનેક રીતે આનંદ મનાય છે, પણ જ્યારે છોકરીનો જન્મ થાય છે ત્યારે આપણું કંઈ પણ થતું નથી પણ એથી ઉલટું પુત્રીને ઘણી દબકી કપમા આપવામાં આવે છે. તેને પથરા ગણે છે, ઉકરો ગણે છે અને તેને ફરેક બાપતમાં દલકી ગણવામાં આવે છે. છોકરાની માતું માન વધે છે ત્યારે છોકરીની માતું માન ભંગ થાય છે. કુટુંબમાં તે દલકી લેખાય છે અને તેની સુચાવક પણ જરોખર થતી નથી. છોકરાને ત્રી કોઈ રમા હવા આવે છે અને છોકરીને બે પેમાનો કુરો સરખો પણ યગતો નથી. છોકરાને બાપ સોનાની કંચીઓ, કંદારો વગેરે કરાવે છે ત્યારે છોકરીને કાંડીઆ મણકા મેહેરાવે છે. છોકરાને દુધ માવે મીઠાઈ રજ વગેરે ખવરાવવામાં આવે છે ત્યારે છોકરીને સુકો રોટલો આમળગે પડે છે. છોકરો જરા માદો થાય તો મા કાંઈ અહો અહો વાના કરે છે અને છોકરી માંદી પડે તો વેળના ઘરની મે પેસાની પડી પથુ ન મે, પણ ઉલટું ખીન ખેશ કહે છે કે છોકરીની માત્રીને શા ઝટકા પડવાના છે. છોકરાને ભણાવવાને હજારો રૂપીઆનો ખર્ચ કરાય છે તો છોકરીને ભણાવવામાં એક પેસો પણ ખરચવેા ઝેર જેવો લાગે છે.

આ રીતે છોકરીઓ વિશે આપણા જે દલકો વિચાર બંધાયો છે તેવું કારણ સ્વાર્થ-પોતાનો સ્વાર્થ છે. છોકરો કમાઈને ખવરાવશે અને ઘડ, પણમા ચાકરી કરશે અને પોતાની ગીલન સાચ

વશે. છોકરી પારકા ઘરની વરતી છે. છોકરી બાપને વહાવે છે અને છોકરી મને વહાવી છે. છોકરીનું મને લાગે છે પણ બાપ છોકરીને ન વહાય તો મા લાચાર બને છે. આવો વિચાર ઢેર રાખનાર લોકોમાં જેવામાં આવે છે. ભેંસને પાડી આવે તો તેની સંભાળ જરોખર લેવાય છે, પાડીને જરોખર ધવાડે છે, પુત્રી પાય છે અને પાડો આવે તો તેને રીખાવી રીખાવીને કેટલાક પાપી લોકો માગી નાખે છે અથવા ગમે ત્યાં દાકી મૂકે છે. તેવુંજ આપણા અને ગાયની બાપતમા બને છે. પાડી ભેંસ ઘણું દુધ આપે, વાછરડી બાપ ઘણું દુધ આપે. આ ઉપરથી સમજાય છે કે જે વધારે ઉપયોગી હોય તેવું જાતનું કરવાનું સાહે લાગે છે અને જે પોતાને ઉપયોગી નથી પણ પારકાને ઉપયોગી છે એની આપણી દાકરોની સંભાળ લેવી એ ઠીક લાગતું નથી.

શા માટે ભેદ રાખવાની જરૂર નથી ?

પુત્ર અને પુત્રી એ આપણાજ સંતાન છે. બંને પોતપોતાની શક્તિ મુજબ ધરકા માન, બાપને કામ લાગે છે, ચાકરી કરે છે, છોકરો પેસાની વારસ થાય છે. છોકરીને ભાગ વહેંચી આપતા નથી પણ છોકરા અને છોકરી વચ્ચે ભેદ સમજવાની જરૂર નથી. પુત્ર અને પુત્રી એ આપણા સંતાન છે. જન્મ્યા ત્યારથી તે આપણા બન્ન્યા છે. જેવી કેળવણી, શીખામણ સોખત મળે તેવા તેમનામા ગુણ આવે છે. જેવું જુએ છે તેવુંજ શીખે છે. માટે બંનેને સમાન ભાવથી ઉછેરવા એ આપણી ધાર્મિક ફરજ છે.

પુત્ર એ સપુત. નીકળે છે તો મામાપની સેવા ચાકરી કરે છે. કપુત નીકળે છે તો મામાપને તેવું મોહું જેવાવું પણ ગમતું નથી. કેટલાક પુત્રો મામાપનું કહું કરતા નથી. મરણમાં આવે તેમ બોલે અને વખતે લાકડી પણ ઉગામે છે. આ પુત્ર ન કહેવાય પણ હુમન સમજાવા. આવો પુત્રને જન્મ આપી મામાપ પસ્તાવો કરે છે. સપુત હોય છે તે મામાપની મેંત્ર ચાકરી કરે છે કેટલાક ખરા મનથી અને કેટલાક લોક લગભગથી પણ કરે છે. આજ પ્રમાણે પુત્રી સપુતી હોય છે

તે પણ માયાપની આકરી કરે છે, માયાપનું કદી ઘસાતું બોલતી નથી, સાસરે રાજ્યવંશ હોય અને કદી ખીયેરીઆ ગરીબ હોય તોપણ માયાપનું સાથે દેખાય તેમજ બોલે ચાલે છે.

એવા આકરીની દૃષ્ટિએ જોતાં પણ પુત્ર અને પુત્રી પોતાના અધિકાર પ્રમાણે આકરી કરી શકે છે. જે માયાપને છેકરીના ઉપર બરાબર ભાવ, હેત હોતાં નથી તે છેકરીને પોતાના માયાપ ઉપર હેત નજ હોય અને તેની છેકરી માયાપની આકરી નજ કરી શકે.

ધરમા અને ન્યાતમા સારી મજબુત સંતાન જોવા ઇચ્છા હોય તો છેકરા અને છેકરી વચ્ચેનો તફાવત કાઢી નાખવો જોઈએ. છેકરીની બરદાશ નાનપણમા બરાબર ચલી નથી તેથી બાપી એકત્રીએ અને બળદીણુ બને છે નાની ઉંમરમા પરણીએ છે. જે વખત શીખવાને, ડરવા ફરવાનો, ચંતોરની વૃદ્ધિ કરવાનો તેજ વખત તેને સાસરે વળાવે છે, નજરકેદમા રહેવું પડે છે અને કવખતે સુવાડ આવવાથી પ્રજા નજળી પાકે છે અને ઉપરાઉપરી વર્ષે દોઢ વર્ષે સુવાડ આવવાથી પાંચ દશ વસંતમા તો ધોળી પુણી જેવી ચર્ધ જાય છે, વાણુ આવે છે, પ્રદર લાગુ પડે છે, ગોળો ચડે છે અનેક રોગ ચઢ જાય છે, અને નજળી થરીરે સુવાડમાં ઘણી મરી પણ જાય છે. જેવી સામાને ત્યાં નજળી પ્રજા ચાય છે તેવીજ આપણે ત્યાં પાકે છે માટે જે આપણે થરીરે બળવાન, સાહસિક, ઉત્તમ ચારિત્રવાળી, ધર્મ પુરધર, દાનવીર પ્રજા જોઈતી હોય તો આ બેદ જાલી જવો જોઈએ.

છોકરીએને શું શીખવાડીએ છીએ ?

આપણી છોકરીએને બહુવર્તનો વહેમ જોડો થયો છે. પહેલા તો ક્યાને બહુવર્તમા ખરે ઘણા વિરુદ્ધ દના. હાલ યૈસ પણ કહે છે કે વાંચતલખતાં તો આવડુ જોઈએ. શ્રીમંત ગાયકવાડના રાજ્યમાં ફરજીયાત કેળવણી થયાથી છોકરીએને ત્રણ ચાર ચોપડીનું તો દંધક તાન ચાય છે. દેખાદેખી ઇચ્છા રાજ્યમાં પણ ઉચ્ચ કામનાં માયાપ પોતાની પુત્રીએને નીચાને

એકલે છે, પણ હાલ છેકરી સાસરે જતા પહેલાં જે દંધ બણે છે તે એટલું થોડું સમજ્યા વગરનું અને ઉપરચોટીઉં હોય છે કે ભાંગુ તુટ્યું લખતા અને ચાન્દેશખંદ છૂટું વાંચતાં બણી શકે છે. ઉચ્ચાર બરાબર આવડતા નથી. 'લ' તો સેંકડે તેવું જણીને બોલતાં નથી આવડતો. સહેલાં લેખા હોય તો હીસાળ કરી શકે, બહુ તો ચાર પાંચ ચોપડીના અભ્યાસ કરે છે. પરણી એટલે નીચાણે ન એકલાય એવો વેહેમ હોય છે તેથી નીચાણેથી ઉઠાડી લેવામા આવે છે. સાસરે જાય એટલે સાધુ એમ સમજે છે કે વહુ બહુ બણેલાં બણેલાં ડાહ્યા છે. છેડીને મા રાધતાં દળતાં પાણી ભરતાં અને ચણિયો જોડણી કેમ પહેરવાં અને વળતે કેમ ચીંગડાં દેવાં એટલું શીખવાડે છે. મા જણે કે મારી છેકરીને કામ આવડાયુ એટલે ડાહી બની ગઈ પણ સાસરે સાધુ સસરા, ભેઠ, દીપેર અને નણું સાથે કેમ બોલવું, તેમની સાથે કેમ વર્તવું, પડોશી સાથે કેવો સંબંધ રાખવો, દેવ દર્શન કરતાં શું બોલવું, ધર્મ એટલે શું, વીજેરની તો કોઈને પડી નથી. બાપ તો એમજ સમજે છે કે કીકરીને કોઈપણ જાતની શીખામણુ મારે તો દેવાનીજ નથી. બાપે દંધ છેકરીને શીખવાડવાનુંજ નથી. છેકરા હોય તો સરકારે છેકરા બહુવા નીચાણે ઉપાડી છે ત્યાં જાય, ગમે ત્યાં બેસતો રહે, મહીના થયે બાપ ઝીના પૈસા આપે, ખાવાનું આપે, કપડા આપે. આટલું કામ બાપે કયું એટલે તેમની ફરજ પુરી થઈ એમ સમજે છે. આટલું કામ તો કોઈ માયાપ વગરનો છેકરા હોય અને તેનો ટ્રસ્ટી કોઈ થયો હોય તો તે પણ કરી શકે, પણ બાપે જેણે છેકરાને પેના કયો છે તેણે છેકરાને ઘણું શીખવવાનું છે. બાપ તો એમજ સમજે છે કે છેકરાને બહુવર્તુ એ સરકારનું કામ છે. નહિં બણે ત્યારે ક્યાને બેસશે, તોફારી કરશે. પણ આ સંસારના અવશમાં ઉતરવા માટે ચાલ્યા સાધનની જરૂર છે તે છેકરાને પૂરા પાડવા એ બાપની પહેલી ફરજ છે એવું યોગજ સમજે છે. આનો ગેર સમજ છેકરા પ્રત્યે ચાય છે તો છેકરીને તો કયું શીખવાડવાનુંજ

રહેતું નથી એવી માન્યતા હોય એ રસાભાવિક છે, આવી અધુરી કેળવણી લઈને કન્યાઓ (રક્તી) સાસરે નાનપણમાં જાય છે તેમની જીવનની દેવી જાય છે તે આપણને ખબર છે એટલે આમાં વિશેષ લખવાની જરૂર નથી

છોકરીને શું શીખવવું જોઈએ ?

છોકરીની આ' નવ વરસની ઉંમર થઈ એટલે મા કાચદો કરે કે તેણે વરમાથી પૂંજે કાઢવો, લોટા અજવાળરા અને ઘડે પાણી લાવવું દર અગીયાર વરસની થાય એટલે ખીચડી દાળખાત, બાજરીની ચાનકી ઘડતા શીખવો. ના આવડે બચ પડે કે અરજ ન હોય તો ગાલમાં ચુકીઓ ખણે, હાથમાં લાકડી ચરે અને ગાળાતું તો પૂજી જ નહિ. સાસરે જઈને શું કરશે, તારી સાસુ તો આવી છે ને તેરી છે, પેલી નહુદ જોડે કેમ બનશે. તાગમાં ગો ભડીઓ છે, તને શું આવડે છે, ખીચારી છોકરીને આ' નવ વરસમાં ફનીઆદારીનું જોખમનું જાન કમરે છે. આખ-માથી આસુ પડવા જાય ને છોકરીને કામ કરવું પડે.

દાળ, ખીચડી, રોટલા, રોટલી વગેરે શીખવાનું કામ છોડીનામાં જરા સમજ આવે એટલે કે તેજ આદ વગેરે સાથે શીખી જકે, દાળમાં મીઠું મરચું કેટલું નાખવું તેમાં યુદ્ધિનો ઉપયોગ કરવાનો છે. તે મોટી ઉંમરે વધારે સાંઝ સમજે. પૂંજે કાઢવાનો, લોટા અજવાળરા, શીરના વીં-રેનું કામ આ' નવ વરસની ઉંમરમાં શીખી શકે કારણકે તેમાં બહુ યુદ્ધિનું કામ નથી.

ખારથી સોગ આ ચાર વરસ છોડીના ઘણા કામના છે. આ ચાર વરસમાં માયાપ ઘણું શીખવાડી શકે જાગ તેર વરસે લગ્ન થાય ત પહેલા ઘરનું સાધારણ કામ શીખી ગઈ હોય અને પગલા પછી કેટલીક જીંદગીમાં ઉપયોગી થઈ પડે એવી વિદ્યા શીખવા રાકામ લખવા તરિક્કે આપણુ દેહની ગ્યના, તેમાં જુલ જુલ અવખેલો, તે શું કામ કરે છે વગેરે દરેક સ્ત્રી પુરુષે જાણવાની જરૂર છે. આ વિદ્યાને પ્રજેટ્યા (Physiology) કહે છે. ડાકતરો તેના તેનો ઉપો અભ્યાસ કરે છે, પણ માયાજી મહિની દરેકને લેવાની જરૂર છે.

આ દેહ ધર્મવિદ્યા નહી જાણનાર સ્ત્રી અને પુરુષ પોતાનું દરદ બરાબર પારખી શકતા નથી કે વેધને જાણી શકતા નથી. સ્ત્રી ઝાડા થાય છે તો આખો જીવન છે એવ સમજ પેટને ખૂન રગ-ડાને છે, ચોળાને છે અને બહુ દુખી થાય છે. પણ સમજવું જોઈએ કે આખો જીવન કંઈ પેટમાં નથી, જેને આખો જીવ છે તે મોટા આતરડાનો ભાગ છે. તે કટવાક વખતે મળથી ભરાઈ જાય છે ત્યારે જીવાનની દનાથી સાદ થાય છે, વારા સુકવાથી સાજ થાય છે, પણ ચોળા-વનાથી દરદી બહુ પીડા પામે છે તે નગ દીને પડી જવાથી બહુ તુકશાન થવા સંભવ છે. આ આતરડા જાગ તે જ હાથ લાગ્યા જીવનમાં મા/ક પેડામાં સુચાગના આકારમાં ગો'નામાં આગા છે. મોઢાનું બુક બુક કામનું છે. આનાજનો કેળીઓ બુકના ગસ સાથે મળી એકરસ થાય ત્યારે મળથી નીચે ઉતારવો અને પેટમાં ગયા પછી જ ગાલમાં ખાકીનો ભાગ પચે છે અને છેડનો ભાગ આતરડામાં પચે છે પચે છે એટલે ખોરાકનો એક ગસ થાય છે કે જેથી તેનું બોલી જલદી બની શકે. નાના છોકરાએ કરી પાછ લખોટી મળી તો તેને જીવાન આપવો, કંઈ ખાવા આપવું નહીં, આનું જાન કપારે આવે કે જ્યારે આની પેડી મોઢીનું હોય તોજ. નાના છોકરા માદ થઈ જાય અને મા કંઈ દવા જાણવી ન હોય તો કેડમાં ધાળી વેધ ડાકતરને ત્યા દોડે છે. (કેડલાકને કેડમાં છોડી લેવા રામ આવે છે) ડાકીઓ પહેલા દરડે, કરીઆનું વગેરે સુગીઆ વાપરી જાણતા અને જરૂર થતી પાછ દેતા, બીચ-કુન ગમગતા નહિ. નાના છોકરાના માવારજી રોગની દવા દરેક છોકરીને આપવાની હવે જરૂર છે કારણકે આ વિદ્યા દરેક જણ જીવનમાં લાગ્યું છે. વગી અકરમાત અને તાકાલિક ઉપાય એ વિશે પણ મહિતી આપવાની ખામુ જરૂર છે. સ્ત્રીઓને પાણી દેવના નીચે માથે કામ હોય છે અને અકરમાત વેળા બચક પરિણામ લાગી શકે છે. સુવા આગળ રાધતા એકાએક કપડા મળે તો શું કરું કે કરે તળાવ ગયા અને

અંદર ડુગાયુ તો શું કરયું, ખાણીમાંથી બહાર કઢી તેની કેવી સારવાર કરવી, જેની જ્વનવર સાપ વીછી વીજેરે કરે તો શો ઉપાય કરવો, કંઈક જેની વસ્તુ, તાબાનો કાઢ, ધતુરો, વજનાગ, અરીણ ખાધામાં આવે તો તરત શું કરવું, આ બધી માહિતિ અકસ્માત અને તાત્કાલિક ઉપાય નામના પુસ્તકમાં મળેલી છે. આવા બનાવોના પુસ્તક જે ઉપાય કરવામાં આવે છે તેના ઉપર મઠવાનો ધણો આધાર રહેલો છે નહિં તો વાહતુ વટેથર થઈ જાય છે.

આરોગ્ય વિજ્ઞાનનો વિષય પણ સ્ત્રીઓને બહુ ઉપયોગી છે આપણું આરોગ્ય જાળવવા કેટલાં એક નિયમ આપણે ખાસ જાળવવાના છે. કેટલાંએક નખીયાત યાગે ત્યારે અસાતા વેદનીય કર્મોના વાક કાઢે છે. પણ આરોગ્ય સાચવવાનો નિયમ તોયો છે કે બહુવા દાકલા ખાઈને જે અપચો થયો તેનો હાડો થયો છે કે દાહુ ખાઈને તળાને નાહવા ધોવાથી સારી થઈ છે ને તાવ આવ્યો છે તે સમજતા નથી જેની રીતે સરકારનો કાપડો તોડવાથી આપણને શિક્ષા થાય છે, તેની રીતે કુદરતી નિયમ તોડવાથી આપણને દુઃખ ભોગવવું પડે છે. આપણે ગંધ મારતા ઓરડાની અંદર સ્પર્શ રહીએ કે મનઃ કરા જુગ કરે તો પણ દરકાર ના કરીએ તો જરૂર તાવ લાગુ પડે. એમાં નથી જોવા વાંક નથી. ચોખ્ખી દવાની કીમત સ્ત્રીઓ તો શું પણ ઘણા પુરો સમજતા નથી તેથી ધણું ચોખવું પડે છે. જે ઓરડામાં એકે બારી કે જાળી નહિં હોય ને ઓરડાને ખાસો પેટી લેવો ગણે છે. અને તાંજ ધરને સુખ્ય માણસ સ્ત્રી કે પુરુષ સુવાળું પસંદ કરે છે, પણ આપણે જે અંગાર વાયુ નાક વાટે બહાર કાઢીએ છીએ તે જેની વાયુ શરીરથી શ્વાસ મા લેવો પડે છે અને ગુગળાવા જેવું લાગે છે. તેની સમજૂતી દહાડો મધુ રહેનાર માણસને પડતી નથી પણ તેની ખરાબ અસર તેના શરીર ઉપર થવા કરે છે. રોગકાળી ચોર ધોને ધોને તેના શરીરમાં પેસે છે. સુવાચક વખતે તો ચોખ્ખી દવાનો નિયમ તાન બાળુએ સુધાય

છે અને તે ઓરડાનું વર્ણન ધણું લાંબુ આપવું પડશે માટે અહીં એ વિશે વિશેષ કહીશું નહિં. આરોગ્ય સાચવ સહેલું છે. અને તે દરેકે વાંચવા જેવું છે.

માંદા માણસની માવજત કેવી રીતે કરવી તે પણ ખાસ બેરોએ જણાવ્યું છે. આપણા હિંદુ સંસારમાં માદાની આગળ બેરાજ વિશેષ ઉપયોગી થઈ પડે છે, પણ જો આ બાબતનું જ્ઞાન ધરાવતાં હોત તો બહુ સારું કામ કરે. અત્યારે તો માંદાની તળીયત કેમ જાળવવી, તેને શું કરવાથી સારું લાગશે તેનો કાંઈ વિચાર નથી.

કક્કત આપણી બોળી સ્ત્રીઓ સાથે દીકરી હોય તેથી જે દરદી માગે તે આવે છે. માદાનો ખાટલો કે પથારી કયા આગળ કરવી જોઈએ, તેની સાથે ક્યારે વાત કરવી જોઈએ, તેનું તેને બાજેન જ્ઞાન હોય છે. તાવ આવતો હોય તો પરાણે પરાણે પણ બે ટોળીઆ ખવરાવવા મપશે પણ તાવમાં વેંચ લંગન કરાવે છે તે જાણે છે છતાં મહેવાતુ નથી. માતા માણસ માટે દાક્તર એમ કહે કે હલકો પચે તેવો બોરાક આપજો તો બેરી એમ સમજે કે હલકો બોરાક કેને કહેવો. ઝટ દાળ ભાત આગળ લાવી ખસા કરે કે રોટ લાવી ચાનપ્રી લાવે. માદાને ખાવું બાંધે નહિં તેમ પચે પણ નહિં. વળી વધારે ડાહ્યા શરીર કરી આવે છે, પણ મગની દાળનું ચોસામણ ને ખાત, સામુ ચોખાની કાચ, રામડી, દુધ, બડકા વીજેરે હલકા ઝટ પચે તેવા બોરાક કેમ બનાવવા તે જણવાની જરૂર છે, માંદા માણસને વખત પ્રમાણે જરાબર દવા તપાસી જોઈએ તેટલી કારીને આપવી તે ચપુર નારનું કામ છે, નહિં તો પીવાની દવા ચોખવામાં અને ચોખવાની દવા પીવા આપી. માંદાની આગળ કેવી રીતે બોલવું, જેવા આવેલા નકામા મરનડ કરી ધાધલ મચારી મૂકે છે. જાણ તમે તો બહુજ સેવાઈ ગયા, હા, શું સારીરમાં રહ્યું છે, કુદા હાડકા ને મળ્યા નહોતાં છે. દરદી શ્રીચારો જોઈ કે મહુ દવે આવી જન્યું ખરેખર દવે છવાશે નહિં. ચાર દહાડા મોડો મરતો હોય તો આવા લોકો વહેલો મારે ! દરદીને આખી રાતનો ઉઠામરો હોય ત્યારે તેના સગા ગામ પરગામથી

જોવા જાય છે, પહોં ધડીક આંખ મીચાય ત્યારે
આવી બહોળી આવી ખખર પૂછે છે કે કેમ
ભાઈ હવે દીક છે કેને ? દરદી પરાણે આંખ
હચી કરી બવાળ કંઈકે દે કે વખતે ના પણ
આપે. બેરીથી પોતાનાં ગુજરાનના જલોપરની
અવરજા કરવાનું માદા ધણીને આખર વખત
સંધી પણ પૂછાઈ નથી. પછી વીધવા થયા પછી
આખો જન્મરો દુઃખમાં ગુજારવો પડે છે. મોટી
ઉમરની સ્ત્રીઓ દાયણ (maidenlike) ના
કામની માહિતિ આપવાની જરૂર છે. ગામડામાં
તો ખાસ કરીને સારી દાયણની ખોટ હોય છે.
ગામડામાં ગાયજળ દાયણ અને ગાયને દાક્ટર
Surgeon હોય છે. અબણુ દાયણ મળવાથી
માનો આખો જન્મરો વખતે દુઃખમાં જાય છે.
આવી દાયણને કંઈ નથી હોઈ સારી રચનાનું
જ્ઞાન કે નથી હોતું આરોગ્ય શાસ્ત્રનું જ્ઞાન. ડોસીની
ડોસી ને પ્રમાણે કરતી હોય તેજ પ્રમાણે નવી
ઉમેદવાર કરે છે. આવી સ્ત્રીઓ પછી વરૂંથી
હોય છે અને દુરામદી હોય છે. ગામડામાં જ્યારે
કેહને પ્રસૂતી થાય હોય ત્યારે ચાર પાંચ બેરો
એકઠા થાય છે અને પ્રસવ થતા વાર લાગે તો
કાઠડા મારી તે બેરીના આંધા કાઠી નાંખે છે.
પેટું, ગુંદે છે. વખતે માથા પણ મારે છે, જમ
પડાવે છે. બાઈની પીડાની કોષ પરવા કરતું નથી
પણ શેહેરમાં બેરી દાયણ હાથમાં પીચકાટી
હારે દવા મુકે છે કે તરતજ છટા છટા થઈ
જાય છે. સુનાવડના ઓરડાની હડીત તથા
ખાંવાનો જલોપર તો આખા ઉપર આપણે
કહીશું. આવા લોકાનમાં નાચુક બાંધાની છે.
સ્ત્રીઓ તો રામચરણનું ચંદ્ર જાય છે. આ જાન-
વમાં પુરોએ વિશેષ લક્ષ આપવા જેવું છે.
ગામડામાં તો કેટલીક વખત બીજે ગામથી દાય-
ણને બોલાવવાની પડે છે ત્યારે તો પુરણની મુશ્કેલીનો
ખાર રહેતો નથી, પણ જ્યારે મોટી ઉમરની
સ્ત્રીઓ આ જાનવનું શિક્ષણ લે તો ધણી જોન
થતા અટકે અને હજારો જીવાન સ્ત્રીઓ આથી
વંદે આપે. પ્રજા પણ સહન થાય.

બ્રહ્મ-અગ્નિ ।

(લેખક-કે. પી. જૈન, અલિંગજ)

સંમારમેં એક સમય અગ્નિ પૂજાની મી પ્રાચી-
નતાં હો ચુકી છે । મારતવર્ષકે વિષયમેં કહા
જાતા હૈ કિ વેદાદિ ગ્રન્થોમેં અગ્નિ પૂજાકા
વિધાન હૈ । एवं प्राचीन द्राविड जातीय भारतीय
મો સુર્યની પૂજા ક્રિયા કરતે થે । પાન્તુ દેલના
હૈ યહ અગ્નિ કૌનસો અગ્નિ હૈ ? કયા હમ હમસે
બહા વસ્તુ હૈ ? યથાર્થ હૈ કિ સુર્ય એક અદ્ભુત
પદાર્થ હૈ પર કયા હમ કારણ હમ ઉસની
પૂજા કર સકે હૈ ? વેશક હમારા સુર્ય બઢા હૈ
પર હમ સુર્યસે મો વહે સુર્ય વિચમાન હૈ । હાલ-
ન્ડકે પ્રોફેસર વેપ્ટેચન (Prof. Kapteyn) ને
હાલ હીમેં લોન કી હૈ કિ રિગલ (Rigel)
નામક તારા હમારે સુર્યસે ૧૨૦૦૦ ગુણા
પ્રકાશમાન હૈ एवं ૧૯૦૦૦ ગુણા ઉત્તરે બઢા
હૈ । સુતારાં હમ રિગલ તારેસે મો વહે ૨ અન્ય
સુર્ય વિચમાન હૈ ! ઔર યે હૈ મો વિસ્મયપૂર્ણ !
વહતે હૈં કિસીર મેં જીવવારી મો રહતે હૈં ।
પાન્તુ 'મનુષ્યની' શક્તિયાં હમસે મો વિલક્ષણ
હૈં । વહ હમ સુર્યની પૂજા નહીં કર સક્તા ।
નિમ અગ્નિકા વેદાદિમેં વર્ણન હૈ વહ અગ્નિ હમારે
હૃદયની અગ્નિ હૈ । ઉસકા વિદ્યાસ્થાન મનુ-
ષ્યકા હૃદય હૈ । યહી અગ્નિ 'બ્રહ્મ અગ્નિ' હૈ । ઔર
અનાદિનિરત અનંત શક્તિધારી આત્માની શક્તિ
રૂપ હૈ । વેદમેં મો એક સ્થાન પર કહા હૈ-અમરલો-
કસે ઉતર મૃતલોકમેં મનુષ્યોકે ઘરોમેં મેહમાન

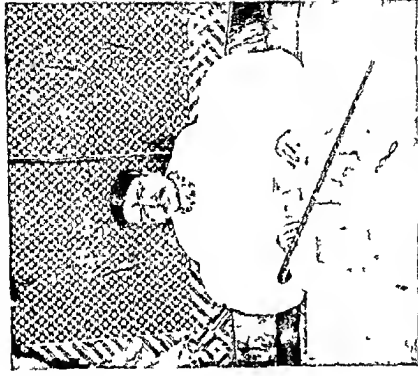
वत आ रही । इस प्रकार भी हमारे हृदयमें ही वह ब्रह्म शक्ति विद्यमान है । परन्तु विचारिए कि क्या हम इस महिमानकी ब्रह्म रूपरत आवा प्राप्त करते हैं ?—अन्य समस्त देशोंमें भी इस अग्नि शक्तिको पृथक् दृष्टिसे ब्रह्मरूप माना गया है । प्राचीन काँछे इरलो देशके अग्नि मंदिरोंकी पूनादि अष्टितीयकुमारिकाएं Vestal virgins किया करती थी । जियू लोग Jews लड़ाईके समय अग्निको लेकर चलते थे । आन तक इसके मो छे किसान अग्निकी प्रशस्तिगा दे उसका आह्वानन करते हैं । जेवोहा (Jehovah) ने मोजेज (Moses) से अग्नि द्वारा बातचीत की और प्रत्येक Moses—प्रत्येक वीरात्मा जीवनेदेख्य इस पवित्र अग्निकी ध्वनिसे अव-
णित कर स्वपाकलगाणी होगा ।

अर्जुनने भी वृष्णको स्वप्नमें अग्नि सदृश देहदारी और घघरते हुए मुख सदृश देखा था । इन कारणोंवश हमें आवश्यक है कि हम इस अपूर्व ब्रह्म अग्निको अपने हृदयमें सदा सुलभ रखें । परन्तु यह किस तरह सुलभी रखी जा सकती है ? कौनसा ईश्वर इसकी तत् उत्पत्ति में श्रद्धा लायगा ? कौन कौनसी वस्तुएं इस ब्रह्माग्निही बलि-बन्ध हो भित की जायगी ? प्रथम वस्तु द्रव्य है । गीताके अनुसार द्रव्यको ही इस अग्निकी भोज्यताके लिए होमित करना आवश्यक है । द्रव्यके अर्थ धन सम्पदासे हैं । हम चाँहीके साथ २ ब्रह्माग्निही भी अपनाना चाहते हैं परन्तु 'सैरा धर्म'की पवित्र वेदी पर इसकी आहुति देनेकी हम तत्पर नहीं हैं । तो क्या विस्मय हमारे हृदय टण्डे हो नाय-

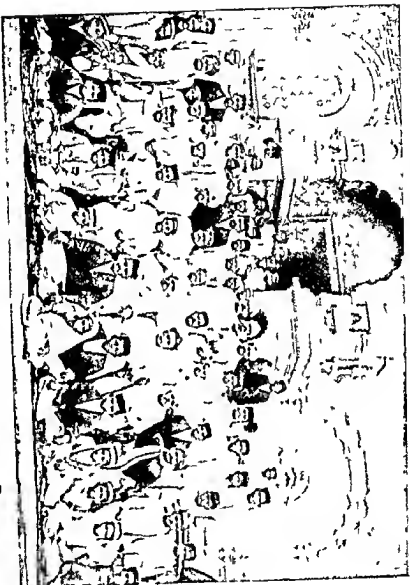
हमारी ब्रह्माग्नि घीमी पड़ जाड ? पर माईसा-हब ! दूसरी वस्तुका त्याग इस धन त्यागसे भी परम दुष्कर है और वह है इन्द्रियाहुति । हमें अपनी इन्द्रियोंको भी बलिरूप चढ़ांना होगा । पर कैसे ? केवळ दृढ़ संयमसे । इन्द्रियोंके पछे जितने हम मँगेंगे—मठेंगे उतनी २ ही हमारे हृदयकी ब्रह्माग्नि कमती होती जायगी । यदि हम अपनी इन्द्रियों पर अपना अधिकार रखेंगे तो उतना ही हमारा हृदय बलवान होगा और तदुक्त स्वरूप ब्रह्माग्नि दृढ़ हो चमकेगी । तृतीय बलिदान इस ब्रह्माग्नि हेतु हमें विद्याका करना होगा । हां ! विद्याका । हमें यह विस्मय पूर्ण विदित होगी और कालेनों आदिकी हम व्याख्या पेश करेंगे पर तब भी विद्याकी आहुति देने होगी पर यह कैसे हो सकती है ? यह मान्य है कि आधुनिक समय समाजमें प्राचीन पारतर्पसे विद्याका प्रचार अधिक है । अर्थात् शास्त्रीय, राशनैतिक, वैज्ञानिक, ऐतिहासिक, भौगोलिक रूप ही तरहकी आधुनिक विद्या उस म चीन समयसे उन्नततात्पर्यमें हम मानने हैं । पठशालाएं और विश्वविद्यालय भी बहुत हैं । परन्तु क्या केवळ विद्या उपासना करना ही जीवनव्र अंतिम ध्येय है ? आधुनिक विद्याका ज्ञान रूप होना आवश्यक है । उसका बुद्धिरूप होना ही उत्कृष्ट है । और ज्ञानमें प्राचीन भारतीय हमसे कहीं बड़े चढ़े थे । केवळ पठ्य विद्या हमारी बुद्धिको तेज करती है जिसके फल स्वरूप हम अपने 'सदृश' अर्थ-नीयों-प गटा काटनेको सदैव त-पर रहते हैं । और हमारा विज्ञान केवल संहारक शक्ति बन



श्रीमान् दत्तचारी-
नेमीसागरजी वर्णी-म्हैसुर ।



श्रीमान् दाना सेठ घाभीलालजी गोवा-उज्जैन,
(आमतक करीब १०००००) आप दान कर चुके हैं)



सिवनीमे नागपुर प्रां० खं० दि० जैन समाके समयमे आम्हिय परिपदका मूष ।

वेठे हुए-(१) प० द० लालजी शाही, (३) प० पन्नालालजी सोनी, (३) प० गुरुचन्दजी शाही, (४) ग्या० प० मधुनलालजी शाही, (५) छेठ गभीरमलजी पाड्या, (६) स० कु० म० प० धनलालजी, (७) प० पद्मलालजी बागडीया, (८) ग्या० प० बनीयजी शाही, (९) प० धामुदेवजी ।

सवे हुए-(१) छेठ द० शालचन्दजी, (२) उदयलालजी, (३) द० हरालालजी, (४) प० नन्दनलालजी, (५) म० प० करमचन्दजी, (६) प० छेठलालजी, (७) दालचन्दजी, (८) केदारचन्दजी ।

रहा है। और इस सशक्त सम्प्रदायसे संसारमें सुखका साम्राज्य कभी भी स्थापित नहीं हो सका है। मान मांको बढ़ानेवाला साहित्य वभी भी राष्ट्रीय दुःख दूर नहीं कर सका है। आधुनिक विद्याका ज्ञानसे पूर्ण होना नितांत आवश्यक है। हवारा साहित्य जीवन प्राणी समुदायके लिए होना योग्य है। विद्या जितनी हम सीख सकें सखें पर अंतमें अपने हृदयकी महाग्निसे समर्पण करें निपसे प्रेमका संचार हो, और एकता की शलघ्वनीसे सब मानवत्ता सुभट द्रवीभूत हो जाय।—हम सेवा धर्मभी भी बहुत उषड पुपल किया काते हैं। पर देखना है कि कितने हममेंसे सेवाधर्मसे विषम मार्ग पर चलनेको तैयार हैं। श्रीकृष्णने सेवाधर्मके विषयमें कहा है कि 'सेवाधर्मके अनुयायियोंमें गुरुवृत्ता दो गुणोंकी आवश्यकता है अर्थात् प्राणीपति Reverence और-परिग्रह Questioning) वर्तमानमें जो मानव राष्ट्रोंकी सेवा करने चाहते हैं उ-में इ। गुणोंका होना परमावश्यक है। इन दोनों गुणोंका अविनाभाव ही सा संबंध है। और वास्तवमें है भी ठीक। एकके अभावमें एक अधूरा रह जाता है। पान्थ हममेंसे एकका भी अपव सेवाधर्ममें बाधक है। विज्ञान द्वारा, अन्याय देशोंके इतिहास द्वारा, और सम्प्रदायके विकास संबंधी तुलनात्मक अध्ययन द्वारा एवं देशपर्यटन व वास्तविक रीति रिवाजोंके अध्ययन द्वारा इ। मार्गोंको अपनेमें उदय होने दीजिए। भारतार्थके मनुष्य इस दुनियांमें क्यों पिछड़े हुए हैं? हममें क्या दोष हैं? किन बातोंकी कमी है? हमें अपनी गत

मर्यादाको (Defects) अवश्य ही शुद्ध दृष्टयसे परमात्मा एवं जगतके निःट प्रष्ट करना योग्य है। अपनी वर्तमान अवस्था पर खूब विचार करिए। अपनी जातिमेंसे समस्त कपताहयोंको दूर करनेका प्रयत्न कीजिए। यह न कहिए कि अब भारतवर्षका हास हो होना है। और जीनेकी आशा है तो केवल पाश्चात्य देशोंके सदृश जीवन वृत्ति धारण करनेमें। भारतवर्षकी उन्नति उसीके वास्तविक रूपमें ही विद्यमान है। अन्यके अनुकरणमें नहीं। हमें उसकी आत्मिक शक्ति पर भरोसा करना चाहिए। और समस्त जगतको आत्मिक तत्व, एवं अहिंसा और 'दया' के अपूर्व मंत्रको बताना चाहिए।

नोट:-Devalya Review के लेखका भावानुवाद।

नैतिक-शिष्यामणु.

श्रीय अंधुरे सुभो शिष्यामणु सारी, बात कहुं विचारी
आ जगभारे शीव सदा तमे पावो, नवविषयभा दिनगावो।

छे जन्म भण्यु जन्म भायेरे
पुन्य करो तमे निज छायेरे
छन आवा यदावे। भायेरे—

तथी यायेरे काम सधन तभारा, नवविषयभा दिन गावो
लाभ होय के-ओक पायेरे
बुद्धि भायेरे न शुभ भायेरे
काम करो जे ओक आडीरे—

सत्य भायेरे दर ओक कामनी भाडी वान कहुं विचारी
कोष टोरा छेते करावेरे
गान वकर सदा सुकावेरे
भाषा संसार देरा देरावेरे
नथी छोडारे वीर वचन उर धारी, बात कहुं विचारी.
ओक २००० ददय.

मुलांस मरटी शाळा, हायस्कूल व कॉलेज इत्यादि मध्ये शिक्षण देऊन विद्या संयत्न वर प्याचा, कोंढामाऊर खाऊन दिवसपर दुसऱ्यांचे इधें न.कीं नळ येईपर्यंत शारीरिक श्रम करणाऱ्या मजुरांचा; घंडीवासा, लहानाह यांत सारखे रूपून वर्षपर शेतांत काम करणाऱ्या कृशीवशाचा; शास्त्रीय शोध लावण्यास्तव दिवसपर डोके खानवून शोध लावणाऱ्या शास्त्रज्ञांचा, जगांत वरचेवर घडून देणाऱ्या मयकर संप्रामाचा इतकेच नव्हेतर शानावनांत भटकणाऱ्या स्वैर-संचारी पक्षादिकांचा काय उद्देश असेल नों ?

मुखात घेईमवाना मतः सर्वा प्रकृतय ॥

अशा प्रकारे सर्व प्राणी मात्रांचा सुख मिळवे हा मुख्य उद्देश आहे. आणि ते मिळणारे सुख शरीर द्वारे मोगावयाचे असल्याने—

धर्मार्थकाममोक्षणामारोग्य कारण मतः ॥

धर्मादि पुरुषार्थ साधण्यास, सुख मिळवून त्याचा उपभोग घेण्यास शरिराचे आरोग्य प्रथम प्राप्त व्हावयास पाहिजे. सद्यकालीन परंतु जे पविण्यांत होणारे राष्ट्राचे आधारस्तम्भज्यांच्या पासून समान हिताचे कार्य करण्या लायक अशी यशोपकारी, उदारवी, सफस प्रजोत्पत्ति होणार ते विद्यार्थी आरोग्ययुक्त अवश्य अनावयास पाहिजेत. परंतु अति खेदाची गोष्ट ही कीं, सध्या निकडे पाहें तिकडे अशक्त, क्षुब्ध चर्चेचे अरुंद छातीचे असे रोगी व दिसून येतात. म्हणूनच सद्यकालीं हीन स्थितीत अवलेडा विद्यार्थी वगैरे अरोग्य प्राप्त करून देणारा नियमा पासून कसा विश्रुत आहे हे आम दाखविणें आहे.

विद्या आणि ब्रह्मचर्य यांना निश्च

संबंध आहे. निवडुना विद्यार्थी म्हणजेच ब्रह्मचारी. कारण प्राचीनकालीं विद्यार्थ्यांचा वय च्या दोन तसा इतका काला भरण्यात गुरु गृहीं विद्यार्थना बरोबर ब्रह्मचर्य पाळण्यांत जात होता. त्यामुळे तो विद्यार्थी वयाच्या २४ वर्षे प.वे तो ब्रह्मचारी या पदाला पात्र होत असे. परंतु सया तो मनु पलटला पूर्वीना काल विरक्तपणाचा होता. या उलट सयाचा काळ म्हणजे स्वैरसंचारी शृंगारिक काळ वगैरा आहे. पौराणिक कालीं विद्यार्थी भरण्यांत गुरु आश्रमी विद्या संपादन करीत. त्यावेळेचे विषय धार्मिक, आध्यात्मिक, व्यवहारक, शारीरिक असे असत. विद्यार्थी या विषयांचे ज्ञान ते ज्ञात्याने व सदाचारण चा ठसा त्यांच्या मनावर चांगला उमटविता गेला कारणाने ते धैर्यवान, शक्तिमान, पूर्ण आरोग्यवान व वर्तुष्व-वान निपजत असत. आरोग्य रक्षणचे जे अहार, निद्रा, व्यायाम, ब्रह्मचर्य इत्यादि नियम योग्य रीतिने पाळले जात व शृंगारिक, कामविकार उत्पन्न होणाऱ्या अशा वस्तू पासून त्यांना अलिप्त ठेवण्यांत येत असे. परंतु सद्यस्थितीत त्या उलट आहे. ब्रह्मचर्य विघातक अशा शृंगारादि रसाने पूर्ण मनननलेल्या शहरातून विद्यापीठे स्थापन झालेली आहेत. व होत आहेत. तसेच शिक्षण वमही बदलेला आहे. शारीरिक व मानसिक आरोग्याच्या रक्षणाचा व सद्गर्तनाचा ठसा विद्यार्थ्यांच्या मनावर उमटविला जात नही त्यामुळे सध्या धैर्यवान, शक्तिमान, पूर्ण आरोग्यवान व वर्तुष्ववान विद्यार्थी विद्याविठांतून निघालेले कचित्तव द्योत्पत्तीस येते. जर शारीरिक व मानसिक आरोग्याच्या रक्षणाचा व

सद्वर्तनाचा उत्तमसा ठप्पा विद्यार्थ्यांतून व र्थी।
अज्ञ पाठकांकडून विद्यार्थ्यांच्या मनावर उमट-
विष्टा जात नाही, तर मग अव्यक्तस्थितीत
'असलेली विद्यार्थ्यांची मने' आरोग्य विघातक
शृंगारादि रसाने-पूर्ण मरलेली नाटके पाहून व
वाचून पवित्र विचाराची, धैर्यवान, नीतिमान कशी
वणतील ?

नाटकाने आरोग्यचे नियम पाळजे जात
नाहीत म्हणून सध्याचे विद्यार्थी अशक्त, कम-
कुवत, धैर्य हीन असलेले दिसून येतात असे
वर दाखविण्यांत आले आहे. विद्यार्थीदशा म्हा-
णजे ब्रह्मचर्यावस्थेचा काळ आहे. आणि काम-
विकार उत्पन्न करणाऱ्या अशा नाटक दि विप-
र्यांत त्याचे मन जर पंगेष्ट तर मग ब्रह्मचर्य
कसे टिबे ? नाटक पाहणारे कित्येक विद्यार्थी
नाटक पाही स्थानंतर नाटकी पार्टी प्रमाणे
आपले स्वतःचे वर्तन ठेवण्याच्या नाहीत दगतात.
व त्या मुळे नुकसान करून घेतात.

नाटकाचा शिक्षण देऊन मनोविचार जागृत
करणे आणि मनोरंजन करणे हे जे उद्देश अस-
तात त्यांपैकी मनोनिग्रही मुक्त असे चोडे विद्यार्थी
शिक्षणाचा माग घे। असतील परन्तु तसले
विद्यार्थी सांपडणे मुष्कील. चवदा, पंधरा वर्षा-
च्या मुलांचे मुद्दा कामविकार लवकर जागृत
होत आहेत. त्यामुळे जास्त काळ ब्रह्मचर्य पाळजे
जात नाही. अगदीच ब्रह्मचर्य विषडते. मनाने
कामविचार उत्पन्न करणाऱ्या शृंगारिक वस्तूंचे
स्मरण किंवा वाचन व त्या वस्तूंचे दर्शन आणि
मानसिक शृंगारिक चेष्टा यांचा त्याग हेच विद्या
र्थ्यांचे ब्रह्मचर्य होय. ब्रह्मचर्य हे काविक,

काविक व मानसिक अशा तीन प्रकारांनी पाळावे
लागते. तशांत मन स्वाधीन ठेवून ब्रह्मचर्य पाळणे
मुख्य व कठिण आहे. वीर्याचा साठा असणे
हेच आरोग्याचे बीज आहे. परन्तु प्रणयी नाटक
वादवऱ्या व सिनेमे वरचेर निघत आहेत.
त्यांच्या वाचनाने व पाहण्याने कोवळ्या व
अल्पवयी मुलांमुलींच्या मनावर या शृंगार रसाचा
परिणाम झाल्याने ब्रह्मचर्य अगदी नष्ट होऊं
लागले आहे. सतरा आठरा वर्षांचे बालवना
तहण पितृ पदास पोहचत आहेत व तेरा-चवदा
वर्षांच्या बाळीका केडवर मूळ घेऊन माता म्हा-
णून फिरत आहेत परन्तु सुशिक्षण किंवा दुःशि-
क्षण देण्याच्या हेतु मुळे की काय न वळे, कित्येक
शाश, हापस्कुळे व कोळेजे मधून विद्यार्थ्यांना
खीपटी देऊन शिक्षक वर्ग पुढे बसून विद्यार्थ्या-
ंच्या तोंडून प्रेमी, कामविकार उत्पन्न करून देणारी
नाटकांतील प्रणयी मागणे सध्या ऐकण्यांत येत आ-
हेत. सध्या जगांत शळतील शिक्षण बरोबर कामी
प्रेमविचार दस्तऐवज करून देणाऱ्या विषयांचे (गोष्टींचे)
शिक्षणही द्यावे लागते की काय ? अनेक सन्नेह्या
शृंगारिक रसाचे चटक लावणारे सिनेमा नाटका
सारखे लेळ बाल बाळीकांना मुद्दा कामवश
करीत आहेत. ही शरमेची गोष्ट आहे की
पंधरा सोळा वर्षांच्या मुलांना वीर्यात होतो.
व स्वभावस्ता होऊं लागते. अशा अनेक प्रकारे
आयुष्यवृत्ती इमारतीचा वीर्यरूपी पाया दसळता
आहे. हे शिक्षित व सुशारक लोक मुद्दा जाणत
आहेत. सध्या अज्ञान मृत्युचे प्रपुण जास्त
दाढत असल्याने त्यांत नव्व त काय ! अशा
स्थितीला सुधारणा-शिक्षण समनव असतील

तर तुमती सुवारणा एवढेच नांव न देतां अप
मृत्यु येणाऱ्या रामबाण व यशस्वी उपायांची
उन्नति अपवा सुवारणा असे नांव द्यावे. बरील
प्रकारचा प्रश्न उठणे म्हणजे आपल्या राष्ट्राचा
नाशच होय. कारण विद्यार्थ्यांना शारीरिक
शिक्षण देऊन शूर, वीर बणवीण्याची इच्छा न
होता खो पार्टी बगविण्याची इच्छा ठहावी
हे मावी राष्ट्रप्रीतीचे दुर्दैवच नाही तर दुसरें काय !

कोणत्याही देशाचे सद्गतेने त्या देशांतील
लहान मुला मुलींचा शारीरिक व नैतिक शि-
क्षणाचा पूर्णत्वावर अवलंबून असतो. परंतु
नाटकांनी मुला मुलींचे शारीरिक व नैतिक
शिक्षण पूर्ण होते काय ? कोणत्याही नाही. उलट
मात्र तोटाच होत आहे. सध्याची श्रृंगारिक
नाटके व कादंबऱ्या वाचनाऱ्या किंबहुना त्यांचे
अध्ययन करणाऱ्या व पाहणाऱ्या विद्यार्थ्यांचे
मनात असे केव्हातरी येते काय की, असे कर-
ण्यांत आपले हातून ग्रन्थचर्य पाळण्या संबंधी-
च्या एका महत्त्वाच्या नियमाचे उल्लंघन होत
असून त्यामुळे आपण आपला सर्वस्वी लुप्त
वरून घेऊ आहो ! हल्लीची नाटके म्हणजे
संगीताचा बुरखा घेतलेले एक प्रकारचे तमाजेच
असून लहान मुलांस विद्यार्थांस एताद्या वाईट
गोष्टीचे ज्ञान नसेल तर ते करून देणारी आहेत.
परंतु अशी पोचट व फानील श्रृंगारांनी मारलेली
नाटके मोठ्या उत्सुकतेने पहाऊ असतांना विद्यार्थी
प्रेक्षकांस कधीतरी वाटते काय ? कीं असे कर-
ण्यात आपण शिष्यांमधील फानीलपणाचा एक
सेलका घडा शिस्त असून त्या पाहून आपण
आपल्या ग्रन्थचर्याची हानी करून घेत आहो !

नाहीं. कधीही नाही. काय हा प्रश्न शत्रू आहे.
त्यानेतर पूर्वीच्या महान तपस्वी लोकांचीं तपें
अष्ट वेली आहेत. तर मग हल्लीच्या सुवारणेच्या
स्वैरसवारी काशांतील अज्ञ व अपक्व मनाच्या
बाळवालीकांस तो कसा नीट राहू देईल ?
आपल्या देवापेक्षा इंग्लंड सारख्या देशांत गाणे
बनावणे नाटक सीनेमे वृत्त इत्यादीचे प्रकार जास्त
प्रमाणांत असल्याने त्यांच्यात वारंवार प्रेमांत
करण्याचे (कळीमाडण्याचे) प्रकार जास्त
होतात. कारण श्रृंगाररसाने त्यांचीं मने प्रेमी
बणतात व मग ते एक वस्तू (स्त्री किंवा पुरुष)
सोडून दुसऱ्या वस्तुवर प्रेम वरून लागतात आणि
श्रृंगारिक स्वरूपाने कोणत्याही सद्गुणाची चाड
न राहिल्याने शीघ्र विघटनून घेतात.

एकादा वाचक अशी ही शंका घेईल कीं,
जर विद्यार्थ्यांनी नाटके कादंबऱ्या सारखीं पुस्तके
वाचू नयेत व नाटके पाहू नयेत तर मग हीं
नाटके किंवा काव्ये, चंपूजी पूर्वीच्या आचार्य,
ऋषींनी शृंगार इत्यादिरस मरून छिहली ती
कसा करिता ? ते लोकांना वेडे होते ? याचे
उत्तर असे अहे कीं ते लोक वेडे नव्हते तर
पुष्कळ शहाणे व घोरणी होते. त्यांनी छिह-
लेली नाटक, काव्ये, चंपू इत्यादि विद्यार्थ्यांच्या
हार्ती वाचण्यास कादाचिन पडत असतील
विद्यार्थी वयाच्या १४ वर्षे पाने तो अरण्यातील
गुरू आश्रयां विद्याध्ययन करीत त्यावेळ पावेतो
त्यांच्या मनावर चार्मिक शिक्षणाचा परिणाम
जरदस्त झाल्याने सद्गतेनाचा व शारीरिक आणि
मानसिक आरोग्याच्या रक्षणाचा ठसा उतमपण
उमडविता जात असे. त्यामुळे त्यांची मने पक्क

होत व ह्या नाटकादि विषयांना परिणाम मागे पडत असे-ब्रह्मचर्य विषय अशा गोष्टी पासून दूर ठेवण्यासाठी धार्मिक शिक्षणाच्या परिणाम नवईस्त केला जात असे परंतु तशा प्रकारचा धार्मिक शिक्षणाचा नवईस्त परिणाम हल्लींच्या शाळेतून विद्यार्थ्यांच्या मनावर होत नाही. म्हणूनच वरील प्रकारची नटके विद्यार्थ्यां प वरन होत. पुष्कळ अंशी विद्यार्थ्यांस श्रृंगारिक नाटक काढण्याचा चिपडवीत आहेत. या कारणास्तव त्यां पासून त्यांनी अल्प राहिल्यात ब्रह्मचर्य पाळन करण्यास बरे पडेऊ.

आता पर्यंत कामविकार उत्पन्न होऊन ब्रह्मचर्य निघडेऊ अशीं नाटके विद्यार्थ्यांनी पाहून घेत म्हणून सांगितले परंतु नाटकाचा शिक्षण देऊन उच्च व निम्न मनोविचार जागृत करण्याच्या कार्या उपयोग होत असेल तर खास विद्यार्थ्यां वरिताच म्हणून वरील कामविकार इत्यादि दोषांनी व छी पाईत घालून राहिल आणि वीरभाव, उदारपणा, देशभिमानी इत्यादि उच्च गुणाने युक्त अशीं नाटके तयार वळू राज्याच्या ऐकनी दिवसा करवून विद्यार्थ्यांन दस्तविले अस बरे पडेऊ. परंतु वरील प्रकारचा नाटके हल्ली बोटार मोठ्या इतकी सुद्धा नाहीत. तरी मविद्यां होणारी नाटके पाहण्यास हरवत नाही असे समजून विद्यार्थ्यांनी स्वभावाची कामविकार उत्पन्न करणारी नटके पाहणे हिताचे होणा नाही म्हणून सध्या त्यांनी नाटका पासून दूर राहणे इष्ट आहे.

उपसंहार ।

विद्या आणि ब्रह्मचर्य याचा निकट संबंध आहे म्हणून मागे सांगण्यात आलेच आहे. विद्या संपादन करणारा जो विद्यार्थी 'वर्ग' तो ब्रह्मचारी अप्रत्यक्ष पाहिजे. देशाचे सद्गते त्यांतील विद्यार्थ्यांच्या शारीरिक व नैतिक शिक्षणाच्या पूर्णत्वावर अवलंबून आहे. तेव्हा विद्यार्थी वर्ग ज्या शिक्षणाचे योगे सद्गतेनी वणेत असा शिक्षणक्रम असला पाहिजे. ज्याच्या योगाने शारीरिक व नैतिक शिक्षण मिळून मन उदार, देशभिमानी, धर्माभिमानी वणेत अशाच गोष्टी विद्यार्थी वर्गा पूर्वे सरचेवर यावयास पाहिजेत. म्हणजे त्यांचे तो अनुकरण वळू लागेल. शरीर व मन ही परस्परावलंबी आहेत. 'निकोप शरीरांत जोमदार मन असते व जोमदार मनाचे शरीर निकोप राहते. बीर्वाचा साठा असणे हेच आरोग्याचे बीज आहे. विद्येशिवाय ब्रह्मचर्य टिकणार नाही व ब्रह्मचर्या शिवाय विद्या (मा ती कोणतीही असो) साध्य होणार नाही.

या प्रमाणे जोमदार मन, निकोप शरीर, शारीरिक व मानसिक पूर्ण अरोग्य, सद्गतेन हें प्राप्त होण्यास नटकापासून हल्लीचा विद्यार्थी वर्गाने दूर अतावयास पाहिजे म्हणजे त्यांचे कल्याण होईल. इत्यलं विस्तरग.

तत्त्वार्थ सूत्र ।

चटे अक्षरोंमें सूत्र - ॥

मैनेन-दि० जैन पुस्तकालय-सुरत ।

कुर्तकनाएँ और

समाजका भविष्य ।

यद्यपि यह निर्विवाद सिद्ध है कि जब विचारशील पुरुष ही नहीं किन्तु सर्व साधारण भी अमुक वस्तुके लिए अपनी गाँठसे एक पैसा भी व्यय करते हैं तो स्वयं अमुक वस्तुकी परीक्षा करते हैं और यदि वे अमुक वस्तुकी परीक्षा करनेमें अशक्य एवं असमर्थ हों तो अन्य व्यक्तियोंसे परीक्षा करनेको अनुरोध करते हैं और अन्तमें अमुक वस्तुके संतोषजनक प्रमाणित हो जानेपर वे अमुक वस्तुका मूल्य अपने अपने पाससे देनेको उद्यत होते हैं। अग्रेया नहीं। तो मला जिप धर्मको हमें आत्मन्य नियम बद्ध होकर परिपालन करना हो, और जिस धर्मके आचार्योंको हमें अपने पुण्य पुरुष मानकर सदैव आदर एवं सम्मानकी दृष्टिसे देखना हो, जिस धर्मके प्रसादसे हमें सांसारिक और पारमार्थिक एवं उभय लौकिक सुखोपभोग करना हो, और चिरस्थायी सुदृश लाभ करना हो, वहांतक वहाँ जिस धर्मके संरक्षणार्थ अपने तन, मन, धन एवं प्राणोंको भी न्यौठाकर करना हो, उसकी परीक्षा करनेमें वे प्रणयणसे चेष्टा क्यों नहीं करें ? अतः हमारे जेनाचर्योंने भी यही सोच विचार कर परीक्षा-प्रधानियोंके जिनात्म सम्मानके अन्य श्रद्धालुओंसे उच्च श्रेणिमें स्थान दिया है। फलतः यह निवेदन करना अनुचित नहीं होगा कि ऐसी भीतोंको दाह देना चाहिए कि जिनकी नम बाहुरेतपर हो। यानि नीचता सुदृढ़ होना परमावश्यक है।

अन्यथा न जाने किस दिन, किस अवसरपर किस क्षणमें वह भीति गिरकर अन्य निरदस्य (समीपवर्त्ती) स्थानोंका अधःपतन करदे और उनसे कुछ दूरीके स्थानोंको भी विचलित करदे। अर्थात् वह व्यक्ति जिसने अमुक धर्मको बिना परीक्षा किए ही ग्रहण कर लिया है कभी न कभी समानको कलंकका टीका न लगा दे, यह भय समानको प्रतिक्षण चिंतित रखता है। अतएव जिस धर्मको अंगीकार करना हो, उसके वास्तविक तत्त्वोंका मनन और अनुभव श्रेयस्कर जान पड़, जिससे भविष्यमें सुमेरु पर्वतके सदृश अन्य कुमायोंकी वायुसे तनिक भी विवर्लित न हो किन्तु उनसे सदैव सावधान एवं सचेत रहें। साथमें ही यह भी कतिपय अंशोंमें सत्य है कि सर्वसाधारणमें असाधारण बुद्धि, विशुद्ध प्रतिभा और चारुयतादि सुदृगुणोंका अभाव होनेके कारण ही, ऐसे वदित कठिन, गहनान्गीर विषयोंको दृश्यरूप कानमें आशङ्काएँ और कुतर्कन एवं स्मृपस्थित होती हैं और निज शब्दोंका समाधान होना आवश्यक समझ, कई स्मृ पुरुष दैनिक, साप्ताहिक और मासिक पत्रोंमें प्रगट करवा कर जनताके समक्ष उपस्थित कर देते हैं। किन्तु प्यारे पाठक गण, उन स्मृ पुरुषोंको यह ज्ञान नहीं कि उन शब्दाओंका यथोचित समाधान हो सकने पर, अन्य मोले भाव्योंका श्रद्धान भी उत्तरोत्तर प्राप्त होता जायगा और वे ही पुरुष जो आज समानके नेता कहलाते हैं कष्ट कष्ट प्रतिपक्षी होनेमें (पूर्वमें जिस प्रयासों धर्मका अङ्ग मानने थे, उमी प्रयास गोर विरोध

कानमें) तनिक भी संतोष नहीं करेंगे । यह तो हुआ तो हुआ किन्तु प्यारे वर्तमानियों ! यह जान कर आपको भी अभीम कष्ट और हार्दिक वेदना होगी कि हमारी वर्तमान शक्तीएँ और कुनर्कनाएँ हमारे भविष्यमें भारी कुठाराघात होगी यानि हमारी सन्ततिके उत्पन्न-पथमें भी वे ही बाधक हो कर उन्हें ऐसे १ अशुभ एवं निष्ठ कर्मों और दुराचारोंमें रत कर देंगी जो इतिहास वेत्ताओंसे अविदित नहीं हैं । इतिहास-वेत्तासे मेरा अभिप्राय यह नहीं है कि कोई वर्तमान समयानुकुल तथारीखोंको वण्डित याद रखनेवाला हो किन्तु जो अपनी सुस्थ दृष्टिसे यह जान सकना हो कि वर्तमानमें किन व्यक्तिविशेषके योग्य पथें सिद्धि प्राप्त हो सकती है । किन्तु व्यक्तिके कार्यावधिसे भविष्यमें उन्नति या अवनति किस तादृश होगी । सच तो यह है कि सबसे भारतमें अंग्रेजी शासन, अंग्रेजी सम्पत्ता और अंग्रेजी शिक्षाका प्रचार हुआ है, तबसे ही हम वर्तमान समयानुकुल सम्पत्तिरोपण, कुनर्कनाओंमें सिद्धहस्त बन बैठे हैं क्योंकि निम्नसे तो आप भी सहमत हैं कि हमारे लक्ष्य सत्र शिक्षा विभागोंकी बागडोर ग्या। निम्न गान्धेयनके हाथमें है और हम निम्न उनके अधिकारमें हैं । मद्रासमें रेखा निम्न और नीतमणित पढानेसे एवं तब निम्नसे हमें, हमारी विशुद्ध विपल मासिक शक्तियोंसे भी हाथ धो पता है, और जो कुछ थोड़ा बहुत बुद्धि अङ्गोंके है, उससे भी हमें अन्य कारणोंसे पडा है ।

वर्तमान समयमें हमारी शांतिप्रिय जैन जातिमें विद्वज्जन जुगनुके सदृश हैं—वैसे तो प्रत्येक व्यक्ति आने आपकी विद्वान् और बुद्धिमान समझता किन्तु यदि दिग्ग दृष्टिसे देखा जाए तो विदित होगा कि जैन शास्त्रोंके मध्येनेता इनेगिने दो चार यानि बहुत थोड़े हैं । हां, हैं अवश्य । अभी तक सर्वथा भ्रम नहीं हुआ है । तो प्यारे पाठक ! क्या यह कभी संभा है कि दो चार इने गिने समानके विद्वान् अन्य शेष सर्व व्यक्तियोंकी भ्रान्तिओंको दूर करनेमें समर्थ होंगे ? बलिक मेरो तो यह अनुमति है कि अन्तमें वे दो चार मत वक्ता भी अन्य व्यक्तियोंका समर्थन एवं अनुमोदन न करने लगनाएं । जहां ऐसा हुआ कि पस ध्रुवान् प्रकाशे तात्त रख दिया, मायगा । और भ्रम, ध्रुवन ही नहीं रहेगा तो सम्प्रज्ञाकी चर्चा कैसी ! गुरुज यह है कि हम वर्तमानसे मराड्नुल हो कर ऐसी ऐसी शिक्षा प्रवृत्तिओंमें रत हो जाऐंगे कि फिर हमारा उद्वार होना दुःसाध्य होगा । अतः पाठकगण ! आप इस छत्रु लेख-का पान यह न समझिए कि आरा शक्तीएँ न करें किन्तु इ-ना तो मैं अवश्य कहूंगा—चहे आप क्रोध करें—कि ऐसी मावाण निर्मूढ शक्तीएँ व कुनर्कनाएँ न करें कि निजसे अन्य व्यक्तियोंको आपकी अधोवासका ज्ञान हो और निजसे समानके भविष्यमें निवा हानि लाभ कुछ न हो । मैं यह नहीं कहता कि कोई विषय यदि समझने नहीं आया हो तो भ्रमोंमार्ति नहीं समझा नार चालिक घेरें बार बार समय समय पर अवुरोध करनेका तात्पर्य यह है कि ऐसे शक्तीएँ द्वेष विषयमें नहीं होनी चाहिए निजसे वर्तमानसे

असहि उत्पन्न हो जाए और हम "इसके रहे न उसके रहे" की कहावत चरितार्थ होने लगे ।

प्यारे सहृदय पाठकगण ! आप यह सुनकर मेरा हास्य न करें कि शङ्खाओंसे भी समानका भविष्य विगड़ता है या वर्तमानमें भी समानको अनेक प्रकारके असह्य दुःख भोगने पड़ते हैं ।

प्रथम तो समान व्यक्तियोंका समूह है अतः व्यक्तिगत दुःखसे समान दुखित, व्यक्तिगत अश्रद्धाननक शङ्खाओंसे, समान अश्रद्धानी, व्यक्तिगत उन्नतिसे समान उन्नत और व्यक्तिगत अवनतिसे समान अवनत होता है । अतः यह सिद्ध हुआ कि अश्रद्धाननक शङ्खाओंसे समानका भविष्य विगड़ता है । द्वितीय उदाहरणार्थ आपको मले प्रकर ज्ञात है कि कभी उदयपुरमें कुछ तेरहवथी और बीस पंधियाँ प्रतिमाजी पर केशर और पुष्पा चढ़ानेके विषयमें ऐसी हृदयविदारक और करुणाननक घटना हुई जिससे प्यारे पाठक ! यदि आपके

होंमें सांक्रान्ते हस्त-क्षोभना प्रारम्भ कर दिया और पंचापनोंके स्वातन्त्र्यको कुतर्कनाओंके बंदोबस्त छीने जा चुके हैं और रहे सहे भी छीने जा रहे हैं ॥ सावधान ॥ सचेत ॥ अन्यथा फिर पश्चात्ताप करनेसे कुछ न बन पड़ेगा जब "चिह्नित चुगाई खे" अश्रमिति विस्तरेण ।

एक भातिसेवक ।

कन्या पुकार ।

कन्या कहें किससे कहें सुनते नहीं परियाद भी ।
सख्त मुदिकल है महारवां हो गए नछाद भी ॥
ऐ कौमके पंचौ तुम्हें भी मौत आएगी कभी ।
या मूल दी है कहीं उसने तुम्हारी याद भी ॥
जुलम बरपा कर रहे हैं इस कदर ये वीर-प्रतिभा
रोकता कोई नहीं है ये बुरी बुनियाद प्रतिभा
बाधते हैं उन्नीस गर्दनमें बकरी हाथ हाथ ।
हो रहे हैं इस तरह घर-तहकों बरबाद भी ॥
होगा नही कुछ हकमें अच्छा, वरना देवना ।



चरित्र-

लाला रंजीतसिंह जैन अप्रवाह B. S. C. (L. S. A.)

('अप्रवाह बन्धु' भागवतसे वृद्ध)

मिसेन एनी चेपण्ट जुन सन् १९१९ में लंडन के सुप्रसिद्ध पत्र "डेली हेराल्ड" में लिखती हैं:-

"भारतके लगभग आधे आदिमियोंको दिन-मरमें केवल एक बेर रोटी मिलती है और वह भी अर्थात् ।"

अमेरिकन सिनेटर मिफ्टर फ्रांसने अपनी सिनेटमें भारतकी मयंकर दरिद्रताका चित्र इस प्रकार खींचा है.-

नाम देश	मातीय घन व व्यक्तिगत	मातीय आय, व्यक्तिगत
यूनाइटेडस्टेट्स U.S.A.	डालर	डालर
ग्रेट ब्रिटेन	१,१५४.००	१७२.००
फ्रांस	१,१२३.००	२३२.००
जर्मनी	१,२३८.००	१८२.००
ऑस्ट्रिया-हंगरी	१,५१२.००	१५६.००
इटली	१,१२१.००	११२.००
हिन्दोस्तान	९९९.००	११२.००
	७०.००	९.७५

अश्रुगत किये बिना नहीं रह सकीं । देशमें चढ़ती हुई कंगालीको देख हमारे पूज्य नेता प्रकार २ का एक स्वासे कह रहे हैं कि "भारतका कल्याण केवल यहां शिक्षा तथा कला कौशलकी वृद्धिसे ही हो सकता है" । किसीने कहा है "भूले भजन नहीं होत गोपाल ।"

हम आज एक ऐसे ही भारत संपन्न नव-युवकका सचित्र जीवन चरित्र लिखित करने हैं, जो भारतके कल्याणार्थ कला कौशलकी उच्चतम शिक्षा प्राप्तिके लिये सात वर्ष पर्यंत पाताल देश अर्थात् अमेरिका रह कर आये हैं ।

हमारे चरित्रनायक लाला रंजीतसिंहजी जैनका जन्म ३ अक्टूबर सन् १८९२ को दिल्लीके एक उच्च अप्रवाह घरानेमें हुआ । आपके पितामह बाबू प्यरेडालजी पब्लिक वर्कस डिपार्टमेंट P. W. D. में डिस्ट्रिक्ट इन्जिनियर थे और आपके पिता बाबू मोतीलालजी दिल्लीके सुप्रसिद्ध गणेश पटोेर मिल्समें सहायक मिलर हैं । बालक रंजीतको शिशु अवस्थासे ही मशीनें देखनेका बहुत शौक था, उनका शोर इन्हें हारमोनियम जैसा मधुर और उनके पूजाकी चाल इन्हें हंसकी चालसे भी अधिक मृदुवाणी मालूम हुआ करती थी । चुभाचि दादरापट्टर, सीनेकी कल, हारमोनियम, और घड़ी आदीकी छोटी मोटी मरम्मत करवा बालक रंजीत बिना किसीके सिखाये ही सीख गये थे, और इसी इष्टमे विवश होकर सन् १९०९में एक.ए. (E. A.) परीक्षा में उत्तीर्ण होनेके पश्चात् यह लंडनकी एक पत्र द्वारा मिलानेवाले विद्यालय (Corresponding Academy) से बिजलीकी एंजिनियरिंग

पक्षप ती लोग जो चाहे सो कहें परन्तु इन अङ्कोंको देख कर देशभक्त भारतीयोंकी आँखें

(Electric Engineering) सीखने लगे । परन्तु विज्ञान विद्या तथा कौशलसे उन्हें जितना प्रेम था, अंग्रेजी अदि मापामें सीखनेमें उन्हें उतनी ही कठिनाई प्रतीत होती थी और अन्तमें सन् १९११ में बो.ए. परीक्षामें अनुत्तीर्ण होने पर उन्होंने स्पष्टता आने पिताजीसे कह दिया कि “अब मैं पंजाब यूनिवर्सिटीमें आगे नहीं बढ़ सकना, मुझे पढ़ाने ही की इच्छा है तो वहीं विदेश भेज दीजिये ।”

इकलौते पुत्रको सात सशुद्ध पार भेजनेका प्रस्ताव उनके पिताको पहले २ तो अवश्य कठि। प्रतीत हुआ परन्तु उनके पास विज्ञान अर्थात् वर्तमान सम्पादक “अग्राल बन्धु” और हमारे कालिन्के प्रिन्सिपल परमपूज्य मिस्टर एस. के. रुद्रके एकपक्ष होने पर लालाजीने शीघ्रही उन्हें अमेरिका भेजना स्वीकार कर लिया और १६ मई सन् १९१२ को प्रातःकाल हमारे चरित्रनायकने विदेशको प्रस्थान किया ।

भारतीय सरकारी यूनिवर्सिटियोंकी शिक्षा-प्रणाली संसारके अन्य देशोंकी शिक्षाप्रणालियोंसे सर्वथा भिन्न है। यहां विद्यार्थियोंको अपने व्यक्तित्वनुसार कार्य करने और शिक्षा प्राप्त करनेका कोई अवसर नहीं मिलता और न विद्यार्थियोंकी रुचि अरुचि पर ध्यान दिया जाता है। यही कारण है कि यहां परीक्षाओंके परिणाम इतने भयंकर होते हैं कि उन्हें विद्यार्थियोंका हृत्पाकण्ड कड़ा नाय तो अनुचिन्तन होगा। हमारे चरित्रनायक भी जो पंजाब यूनिवर्सिटीमें नलायक बनकर भागे थे यूनिवर्सिटी और वर्कसेमें जाते ही ऊँटसे कुन हो गये।

यहां वह १०० मेंसे ३३ नम्बर भी प्राप्त न कर सके थे, परन्तु उनकी प्रथम वर्षकी परीक्षाका] फल जो यूनिवर्सिटीसे उनके पिताके पास आया उसे देखकर हम सब चकिन रह गये। दो मज-मूर्तोंमें १०० मेंसे ९९ और १०० के बीचमें नम्बर आये थे, दोमें ८५ और ९९ के बीच और केवल एकमें ६९ और ८५ के बीचमें। सन् १९१३ में हमारे चरित्रनायक (Berkeley) वर्कसेइल्लोय (Illinois) की यूनिवर्सिटीको चले गये और दो वर्ष बाद सन् १९१५ में वहींने (Electrical Engineering) विनलीके इन्जिनियरिंगमें ग्रेजुएट हो गये। इन्जीनोवमें मिस्टर जैनका कार्य बहुत ही संतोषजनक था और उनके शिक्षक उनसे बहुत ही प्रसन्न रहे।

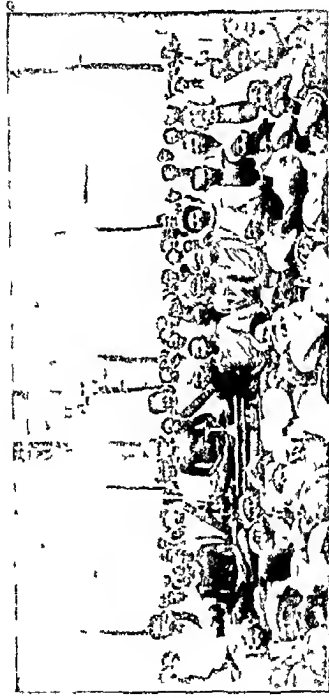
सौभाग्यसे ग्रेजुएट होनेके घोड़े ही दिनों पीछे हमारे चरित्रनायक अमेरिका की एक नवरदस्त विनलीके औजार बनानेवाली कम्पनीमें एग्जिनियर हो गये और वहां भी बहुत शीघ्र ही अपनी योग्यताका परिचय दिया। १८ फरवरी सन् १९१६ को उनके प्रोफेसर मिस्टर ऐलैरी बी. पेनने एक पत्र द्वारा उनके पिताको लिख :—

“Judging from the reports, which I received, your son is making splendid progress since he left the University last June. I might say however, that we had perfect confidence in the ability of your son to carry successfully such work, and we are not surprised to find that he is filling his position



लाला रंजीतसिंह जैन अग्रवाल B S C (U S A) देहली ।

('अग्रवाल वरु' आगरामे प्राप्त ।)



वीर सं० २४४९में उदैपुरमें भारत० दि० जैन महासभाका नैमित्तिक अधिवेशन हुआ था उस समय वहाँ अनेक स्थायी ब्रह्मचारीगण यथार्थे उनका रूप ।

with apparent success and satisfaction.

It may take several years for him, but we are sure that he will ultimately develop into a man who will be the pride of all of us.

अर्थात् जो रिपोर्ट मेरे पास आई है उससे स्पष्ट होता है कि गत जून में यूनीवर्सिटी बोर्ड ने के पञ्चान् आपका पुत्र बहुत अच्छी प्रगति कर रहा है। परन्तु मैं यह भी कहूँ कि हमें आपके पुत्र की योग्यता में पूर्ण विश्वास है कि वह इस प्रकार का कार्य सफलता से करेगा और हमको आश्चर्य नहीं है कि उसने अपनी गहन सफ़लता और संतोषजनक कार्य के साथ पूरी है। उसे कई वर्ष मले हो चुके होंगे, परन्तु हमें विश्वास है कि अन्त में वह ऐसा मनुष्य बनेगा कि हम सबके लिए गौरव का कारण होगा।

शनैः शनैः हमारे चरित्रनायक का बतन और दर्जा कम्पनी में बढ़ता गया और जब अमेरिकाने गत मर्यादक संग्राम में प्रवेश किया तो उनकी कम्पनी के चीफ एग्जिक्यूटिव लड़ाई पर चले गये। उसी समय मिस्टर जैन ने भी लड़ाई पर जाने का विचार प्रकट किया तो कम्पनी के मैनेजिंग ने उन्हें यह कह कर लड़ाई पर जाने से रोका कि "यदि तुम भी लड़ाई पर चले गये तो कम्पनी का काम कैसे चलेगा" और चीफ एग्जिक्यूटिव को अनुपस्थिति में हमारे चरित्रनायक ही चीफ एग्जिक्यूटिव बनाये गये। देश जाने पर वे लेखक से कहने थे कि "चीफ एग्जिक्यूटिव होने के बाद मैं वरह २ तरह २ भेद रोज काम करता था। और जब कभी कम्पनी के

प्रेसिडेंट ने मुझसे आराम करने को कहा तो मैंने यह उत्तर दिया कि 'आपने मुझे लड़ाई पर तो न जाने दिया जो मैं ज़रूर जर्मनों को अपनी बन्दूक का निशान बनाता, पर' अ। यहाँ बैठे बैठे तो आना जी समझा कि अमेरिकाने जो जहाज जर्मनों से लड़ने जा रहे हैं, उनके लिये बढ़िया से बढ़िया डाइनमो और मोटर बना बना कर मैंने जर्मनों के कुचक्र में कुछ कुछ सहायता तो दी" उनके इन परिश्रम का फल यह हुआ कि उनके आफिसर और प्रोफेसर उनसे बहुत ही प्रभाव हुए। उनके प्रोफेसर मिस्टर ऐंथ्री, बी, पैनेने एक पत्र के द्वारा उन्हें लिखा—

"You will pardon me if I say frankly that I do not now think of our graduates in Electrical Engineering of recent years who have seemed to make better progress in actual Engineering work than has been the case with yourself."

आप मुझे क्षमा करेंगे यदि मैं स्पष्टतया यह कह दूँ कि हमारे यहां के पिछले सालों के ग्रेजुएट्स में कोई भी ऐसा दीक्षित नहीं पड़ता कि जिसने बिगली की एग्जिक्यूटिव के वास्तविक कार्य में आते अधिक उन्नति की हो।" जब मिस्टर जैन अमेरिका से "मातृ" जन्मभूमि आने की तैयारियां कर रहे थे तो इन्हीं प्रोफेसर साहबों ने उन्हें एक सर्टिफिकेट भेजा जिसमें उन्होंने लिखा:—

This young man made an excellent scholastic record at the University. On graduation he accep-

पञ्चम कालका दुःप्रभाव ।

(ले० श्रीरत्नर जैन, पिहारा ।)

प्रिय सज्जनों ! यह बात यथार्थमें बहुत ही ठीक है कि इस दुःखदाई पंचम कालमें कु-रीतियोंका इतना प्रबल जोर हो रहा है कि इन कुरीतियोंके फंदमें फस कर यह संसारी जीव अनेक दुःखमई संसाररूपी समुद्रमें ऐसा गोता खा रहा है कि जिसका थाह अगम्य है अर्थात् इस संसारसे पार होना मुश्किल है और यह भवरूपी सागर कैसा अगम्य है कि जन्म मरण रूपी व्याधि कर भरा हुआ है; परंतु क्या करें मनुष्य ऐसा बहुत ही उपाय करते हैं कि जिससे हम दुर्गतियोंसे बच कर अनंत सुखमई स्थानमें पहुंच जाएं परंतु पहुंचे क्यों ? इसका तो उपाय जानता ही नहीं अर्थात् मोहनी कर्मके उदयसे कुटुम्बादिमें लीन होकर निज स्वरूपको भूला हुआ है और इन्हींमें सुख और अपना कल्याण मानता है और देखो यह कैसी अचरनकी बात है कि इस धनी कालमें सत व्यसन वा पंच पाप आदि दुर्गतियोंके कारणमें विशेष प्रीति होती है । इस निष्ठुर कालमें सत व्यसन वा अंतिम व्यसन वा पंच पापका चौथा पाप जो परस्त्री सेवन है सो अब स्वेच्छे साथ रहना पड़ता है कि इस स्त्रीका शरीर मल, मूत्र, हाड रधिर आदि अपवित्र निर्दनीक वस्तुओं का व्याप्त है । ऐसी दुर्गंध युक्त अपावन शरीरमें मूढ लोग कैसे लीन हो रहे हैं किन्तु काग बिष्टाके उपर बैठकर उसको ग्रहण करनेमें आनंद मानता है, अपना सौभाग्य समझता है, ठीक उसी प्रकार मिथ्यादृष्टी पार्श्वडी जीव परस्त्री सेवनमें अपना सौभाग्य समझता है । यह नहीं

जानता कि ये विषय भोग दुर्गतियोंके लेजाने-वाले हैं और कैसे हैं किंपाक फलके समान हैं जैसे कि किंपाक फल देखनेमें सुंदर परंतु खानेमें दुःखदाई है । ठीक, इसी प्रकार ये विषय भोग सेवनमें बहुत ही अच्छा मालूम होता है परंतु इसका जो फल मिलनेवाला है वह दुःखदाई है अर्थात् अनेक दुःखोंसे व्याप्त नरकस्थान इसका फल है । इसका दृष्टान्त भी आप लोगोंसे अपरिचित नहीं है । आप लोगोंको भली भांति ज्ञात है कि रावण तीन खंड पृथ्वीका राजा राक्षसवंशीमें श्रेष्ठ वह भी सती सीताके हरण मात्रसे कुल सहित नाश होकर नरकोंमें आज पर्यंत दुःखका पात्र बना है । विषय भोग दुःखका कारण जानकर इनसे चित्त हटाना सज्जनोंका मुख्य कार्य है । प्रायः आजकल जहां नजर उठा कर देखो तहां ही पापका प्रचार बढ़ा हुआ है और धर्मकी ओर जरा भी ध्यान नहीं देते और कई पुण्यात्मा भाई धर्मकी ओर जरा ख्याल भी करते हैं तो इस पंचमकाल वा मोहनी कर्मका प्रबल उदयसे वह भी पूर्ण नहीं कर पाते । कालका प्रभाव ही विपरीत वर्तता है कि जिसमें संसारी जीव धर्मको छोड़कर पापके ऊपर कमर कसते हैं । यह पाप कुयोनियोंमें ले जाकर जन्म के उपार्जन किये हुए पुण्यको नाश करता है सो अब हम सबोंको दुर्गंतिका पात्र जो पाप है सो उसके क्षय करनेका उद्यम करना चाहिये । यह उद्यम कैसा करें ? श्री जिनेन्द्र भगवानके स्याद्वाद रूपी परमागमका अध्ययन करके तथा कुण्ड कुदेव और कुधर्मकी संगति छोड़कर च सप्त व्यसन, पंच, पाप, पाच उद्वार, तीन मकार आदि इनका त्याग करो जिससे सच्चा सुख अविनाशी स्वयमेव प्राप्ति हो जाय ।

छः लेश्याओंके परिणाम ।

(क्षेमहागर कृत वामविषाह ग्रन्थसे)

पुण्य पाप बंध ।

संसारियोंको पुण्य पापका बंध परिणामोंसे होता है—उनमें मुख्यतासे लेश्याओंका विचार है । लेश्या योगको कहते हैं जो कर्मायोंसे रंगा हुआ हो—इनका स्वरूप जानना जरूरी है इसीसे पठकोंके लिये उपयोगी ज्ञान न चे दिया जाता है—

छः लेश्याओंका स्वरूप ।

चौपाई—छः प्रश चारुया परिस ।

यात्रा नर आ बैठा हेठ ॥

क्षुधा वस एक धरो अण मणो ।

फठ देखो बोले-ते सुणो ॥

अनमूलो एक बोल्यो अप ।

एक कहे संध थू काप ॥

एक कहे ईलां करो पण ।

एक कहे सुभैंसां ल्यो अण ॥

एक वहे पांकां खाईए ।

सुपे पैंज्यांछे ते लीजिए ॥

एहवो भाव जे हईडे सह ।

तेहनीं तेरी लेशा कही ॥

शिष्य बोल्यो हईडे गह गही ।

श्रोगह पाते पूछे सही ॥

जेह नर जे लेश्या कहव ये ।

कुण लक्षण ते नर ओखाये ॥

तन गह बोलवा वचन रमाळ ।

सुणनो सुउ को बल गोपाठ ॥

रीत वसे त्यां रातो धाये ।

क्रं धे कदेश-वरे मनमाये ॥

कर्कश वचन कातरणी समान ।

रागद्वेष अंतर नहीं सांन ॥

बेरेवडे दया नव होए ।

लेशा काळो ते नर सोर ॥१॥

दुहा—कृश लेश्या लक्षण कहो ।

सुणो चतुर मन लाये ॥

अङ्गुण निळो लेशको ।

कहे सुनो मन लाय ॥

चे पाई—परम करंतां अलस करे ।

सुत्र आधं नव हईडे करे ॥

स्त्री सु मगन रहे दिन रात ।

वाम वसे नव जाणे जात ॥

मान बसी मन मधू सु मरो ।

कामे खरब मोटरी करो ॥

हईया माहि कातरणी फरे ।

अमे करांतां पण ए नव करे ॥

ते नर लेश्या नीलो मर्यो ।

पाप पंचमें ते परवर्षो ॥

खांधेयी बढारे जेह ।

नगनारी लक्षण छे एह ॥ २ ॥

दोहा—नीली लेश्यामें कही ।

अंतरगतनी वान ॥

समाप्तो जील्लेसस् ॥ ५०१ ॥

मा० जो नींद बहुत ले, दूसरोंको बहुत उगे,
घन चान्पादिमें तीव्र इच्छावान हो, सो नील-
लेखावाला जानना ।

कापोत लेखा—

गाय—रुसहर्णिदइ अण्णो, दूवइ बहुसोय—
सोय मयबहुलो
अमुपह परिमव पां, पसंसेय अप्पयं बहुमो
॥ ५०२ ॥

जय पत्तिइ परं सो, अप्पाणं विपवि म्पणो ।
तूदइ अमिथुवतो, जय माणइ हाणिदो वा
॥ ५०३ ॥

मरण पायेहणे, देह सुवहंगेवि सुयमाणो दु ।
ण गणइ कज्जाकज्जं, लखणा मेयंत काउत्त
॥ ५०४ ॥

मा०—दूसरे पर क्रोध करे, दूसरोंकी निंदा
करे, बहुत तरह दूसरोंको दुखावे, बहुत शोक
तथा मय करे, दूसरोंको देख न मरे, औरोंका
अपमान करे, अपनी बहुत प्रकार प्रशंसा बढ़ाई
करे । व्यापसमान पापी कपटी औरको मानता
हुआ औरका विश्वास न करे, अपनी प्रशंसा
होने पर बहुत संतुष्ट हो, अपनी व परकी हानि
वृद्धिको न जान । युद्धमें मरण न रहे, अपनी
बढ़ाई कानेवालेको बहुत पन दे, कार्य अकर्षको
न गिने, ऐसा कापोत लेखावान् होता है ।

शीत लेखा—

माणइ कज्जाकज्जं सेयमसेयं च सव सनगसो ।
दयमाणइपेय मि, लखण मेयंतुज्जहस ॥ ५०५ ॥

भावार्थ—जो कार्य, अवार्थ, सेवनेयोग्य, न
सेवने योग्यको जाने, सर्वमें समदर्शी हो, दया

दानमें प्रीतिवां हो, मन चंचल कायमें कोमल
हो, सो पीत लेखावान है ॥

लेखा—

वर्णीमहो चोखो, उज्जुव कम्मोय समदि बहुगंवि ।
पाहु गुण पुत्तणाउं, लखणमेयंतु पम्मस ॥ ५०६ ॥
भावार्थ—त्यागी हो, मद्र परिगामी हो, उत्तम
कार्य करनेवा जिसका स्वभाव हो, वष्ट व
अनिष्ट उपद्रवको सहने वाला हो तथा मुनि और
गुरुजनकी पूजानें छीन हो सो पद्म लेखावान है ।

शुक्र लेखा—

गज्जणह पाखावां, रतविपणिदाणं समोय
सज्जेसि ।

जतिप राय दोसा जेहो विप शुल्लेसस
॥ ५०७ ॥

मा०—नो पक्षपात न करे, निंदा न करे, सर्व
जीवमें समान भाव हो, १८ अनिष्टमें रागद्वेष न
करे पुत्र कष्टादिमें स्नेह रहित हो सो शुक्र
लेखावान है ।

कर्मविपाकके लेखका भावार्थ—

इन लेखाओंको समझनेके लिये एक दृष्टांत
है कि छः पुरुष प देशको जाते थे । मार्गमें मूल
लगने पर उन्होंने एक कष्टदा वृक्षको देखा—तब
वृष्ण लेखावालेके भाव यह हुए कि हम इसे
नष्ट मूलसे काट डालें, नील लेखावालेके भाव
हुए, हम नष्ट रहने देकर उमरा खन काट डालें,
कापोत लेखावालेके भाव हुए कि हम श ख एं
वाँटें, पीतलेखावालेके भाव हुए कि हम
फलोंके गुच्छे काटे, पद्मलेखावालेके भाव हुए
कि वेवत्र पके फल तोड़ डालें । शुक्र लेखावालेके
भाव हुए कि मृमिमें पड़े फलोंको ही खावें ।

જો ક્રોધસે લાઝ હો જાય, મનમેં ક્રેશ વરે,
કર્કશ વચન બોલે, રાગદ્વેષ અંતર્ગમેં મારા રહે,
વાં કરે, દેવ્યા હીન હો સો કાલી લેટ્યાવાલા હૈ ।

જો ધર્મ વરતે આલસ્ય કરે, સુષ્ત તથા અર્થ
દિલમેં ન ધરે, દિન રાત ત્રિયોમેં મગન રહે,
કામી હો, જાતિ કુમાતિ ન જાને, એવા માન કરે
કિ મેંને વહુત મોટા સર્વ કર્યા હૈ, હૃદયમેં
વિચારે મેં તો કરતા હું પર દુસરા કુઝ નહીં
કરતા હૈ સો નીલ લેટ્યાવાલા હૈ ।

જો રાત દિન શોકાતુર દીલે, કમી સુખી ન
માલુમ પડે, પરકી નિંદા હમેશા કરે, ધર્મચારણ ન
કરે, પરચન દેલ્લદર્પી કરે, ધર્મ કરને દુષ્ટ વિચારે કિ
ગુનેં તો કુઝ કઝ નહીં હોતા હૈ, લડાઈ જાગડા ચુગલ
કરે, કુટુમ્બમેં મગન રહે, જ્ઞાનવૃદ્ધ કર જાગડે
મોઢલે, રાગસે દંડ કાપે, વહા વિચારે કિ
હમારે ઘર વહુત સર્વ હૈ કયા વહુ, સાંવ કહે
તૌમી યુગા માલુમ પડે સો કાપોત લેટ્યાવાન હૈ ।

જો જિનવાણીકે અર્થકો સમજે, બુદ્ધિજ્ઞાન,
દયાજ્ઞાન વ કાર્ય અકાર્ય વિચારને વાલા હો,
ધર્મવ્યાનમેં મન રમાવે, સાધુ સંગિનિ જિસે જ્ઞાપા
સુહાવે, જો ગુણ દેલ્લતર સ્તુતિ કરે તથા ઔગુણ
દેલ્લતર ઉસે અંગીકાર ન કરે સો પીત લેટ્યાવાન
હૈ ।

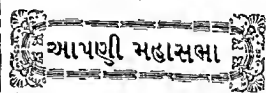
જો ક્ષમાવાન હો, શીતલ સ્વભાવ હો, દિન
રાત શાંત માવ રચ્ચે, અદ્ય અમદ્યકે ત્યાગકા
વિચાર વરે, પાંચ ઇન્દ્રિય ઔર મનકો વશ કરે,
આત્મા રૂપી દેવ પર અપના મત લગાવે, મનસે
ક્રોધ લોમ ટાઝ ઉસે વવેજ વરે, રાતદિન આનં-
દમેં મગન રહે, શાસ્ત્રમેં મન રમાવે, ધનવાન્યાદિ
તિણા સમાન જાને સો વ્રજ લેટ્યાવાન હૈ ।

જો પાલોકકે કાનમેં લીન હો, આત્મકલ્યા-
નમેં પ્રવીણ હો, રાત દિન અખી નિંદા કરે,
પાકે દોષ ન ગ્રહણ કરે, શોક મનાપ વિચકુઝ
ન કરે, રાગદ્વેષકો પૂદ્ગલ કામ જાને, છી
પુત્ર ધન ધાન્યાદિકો કાઝકુટ વિપત્તિમાન જાને,
અંતર્ગ આત્મ્યમેં લીન હો, શિશુ માર્ગકા જ્ઞાના
હો, સો શુદ્ધ લેટ્યાવાન હૈ ।

ફલ ।

કૃપ્પા લેટ્યાવાન નર્ક ગતિકો, નીલ લેટ્યાવાન
પંચ સ્થાવરોંકી તિર્યચ ગતિકો, ક પોતવાન તિર્યચ
ગતિકો, પીતવાન મનુષ્ય ગતિકો, વ્રજાવાન દેવ
ગતિકો, તથા શુદ્ધ લેટ્યાવાન મોક્ષકો પ્રાપ્ત
હોતા હૈ ।

શીતલપ્રસાદ વ્રજાચારી ।



(લિ. મા. નાનચ દ પુ. નવભાઈ બી. એ. મ. ત્રી, શુભરાત
પ્રાત, દિ. ૧૦ પ્રા. સમા, મુ. ૫૭.)

આત્મી એપીલ તા ૧-૨-૩ના રોજ ભારત-
વાસી દિગંબર જૈન મહાસભાની બેઠક કાનપુરમાં
જૈનસાહિત્ય પ્રેર્યને સહિત થવાની છે તે સર્વ
કેટલીના જાણવામાં આવ્યું હશે. આ મહાસભાની
બેઠક વખતે કામ પણ મગન થવા જોઈએ એમ
સર્વ કેટલાંક નામ ઉપરથી આશા રાખશે. મહાસ-
ભાએ કેટલાંક સારા કામ કર્યા છે, પણ શુભરાતના
ધણ જણ મુખાર્થ દિ. જૈન પ્રાતિક સમાને
આગમતા નથી તો એની ઉપરથી મહાસભાને ન
આગમે એ સ્વાભાવિક છે. આમા દોષ જનસમુ-
દાયનો નથી પણ કાર્ય કરવાનો દોષ મને લાગે
છે. આને મહાસભા ગાંધીના નામથી યોગ્ય
અભિપ્રાય હતો. એમનો સ્વરાજ્યનો મંત્ર એ
પોને હિંદુસ્તાનમા ગામે ગામ નેગરનેગર ઘેર ઘેર

જાને ફો લોકોને સમજાવે છે તો પછી લોકો તેમને સાગી પેડે જાય, તેમના મંત્રની વાતો ઘેરેરે ચાલ અને પગાય, પણ છાપામાં ફક્ત છાપી મદા-ત્મા સંતોષ માને તો ચોટાજ તેમને ઓલખે. તેવીજ રીતે મહાસભાના નિયમો તેના હોય, તેણે કરેલા કાર્યો પુસ્તક છાપાની દરેક ગાને મોઢ-લવાની જરૂર છે.

કાનપુર ગેડેરમાં જ્યારે સભાની બેઠક ચાલ ત્યારે હિંદુસ્તાનના મોટાં સંસ્થાઓથી અમુક અમુક માણસોએ તો આનંદ જોઈએ એવો જ દોષસ્ત મહામંત્રી તન્દ્રથી થવો જોઈએ.

એ આનંદ પેકી ક્યા ક્યા ગુરુચર હોવા જોઈએ તેનું મનાવોચન અહીં કરવાની જરૂર છે. દરેક જાતના આચારો, પ્રાતિક સભાના મનુષ્યો, તે ઉપરાંત ફેલ્ડર શેડીઓ, પડિતો અને વિદ્વાનો, અને જાતના ગ્રેન્ડુઓને ખાસ બોલાવવાની જરૂર છે. જૈન કોમના માસિકોના સપાટકો, છાપાના અધિપતિઓને પણ ખાસ બોલાવવાની જરૂર છે.

મહાસભા ક્યાં ક્યાં કરી શકે ?

મહાસભા સમગ્ર જિલ્લો જૈન કોમને લગતા પદ્ધતિ કોમો હાય ધરી શકે જેવાકે કેળવણી-ધાર્મિક અને વ્યવસાયિક, સામાજિક અને ગૃહસ્થ. ધાર્મિક કેળવણીમાં પાઠશાળાઓ સ્થાપન કરાવે. બદારક અભ્યાસી ધીમેરે શરૂઆતની સભા બોલાવવી ધર્મની ચર્ચા કરે, જેનોમા જે સરકાર અત્યારે તદ્દન ભુમાર્થ ગયા છે તેના સંસ્કાર ફોર્મો કેમ દાખલ ચાલ તેનો વિચાર કરે. બદારકો સંપૂર્ણ હોવાનું બુદ્ધતા નથી પણ તેમના જેનો નિષ્વાસી સમ વોગેરે વિધિ કરે તે તેઓ જુએ છે, જુએ છે કે આ અનાચાર છે, પોતાના જેનો નિષ્વાસી દેવોને નમસ્કાર કરતાં જુએ છે હાય જેને છે ધીમેરે થતા અનાચાર તરફ આખા આશ કામ કરે છે તે હાથના જમાનામાં સડન થઈ શકે એનું નથી માટે મહાસભાનું પણ આ એક અગત્યનું કામ છે. જ્યાં જ્યાં આવું અધિર આવવું દોષ તથાથી દર કરવા સભા તન્દ્રથી

પ્રયત્ન થવો જોઈએ, શરૂ, મહાધિપતિ પાંચે ફેલ્ડર પૈસા છે તેનો ઉપયોગ ફેરી ગેતે ચાલ છે તેની તપાસ પણ કરવી જોઈએ.

ગુજરાતમાં હિંદી દરેક જી પુરૂષ વાચી શકે, સમજી શકે એવો પ્રયાત પ્રાતિક સભા તરફથી થવો જોઈએ પણ આ કામ ઉપર મહાસભાએ દેખરેખ રાખવી જોઈએ.

વ્યવહારિક કેળવણી મેળવવાના સાધન ધણું જગ્યાએ મળી શકે છે, પણ હુમરકળા સીખવાનું હાલ ધણી જરૂર જણાયું છે. કોલેજનું ઉચ્ચ શિક્ષણ ઘણું મોલું થયું છે. તેના શિક્ષણ લેનારની સખ્યા ધણી થોડી હોય છે, પણ માત્ર બાપા અને છોજી ચાર પાંચ ચોપડી જાણનાર માટે હુમર કળા શીખવાડવા કલાલયનો (Industrial Schools) બોલાવવાની જરૂર છે. આમાં અવગત ધણા પેસાની જરૂર છે, પણ મહાસભા ધારે તે સાધે, રૂપીઆ એકલા કરી શકે. હિંદુસ્તાનમાં દિગંધર જેનોનાં ને બે લાખ ધર હોય અને ધર દોઢ વાર્ષિક એક રૂપીઓ મહાસભા ઉપાવે તો બે લાખ રૂપીઆ એક વરમમાં મેળવી શકે. આપણે સમેદશીખરની બાગતમાં ક્યોગમાં લદવાને વીશ લાખ રૂપીઆ એકલા કરવાની ઉમેદ રૂપીઓ છીએ તે રૂપીઆ આપણા સંતોને ધર્મિક અને વ્યવહારિક કેળવણી આપવામાં ખરચીએ તો અધરિત કહેવાશે નહીં. ચેતાવરી બાળો સાથેનાં ગ્રંથો ખાનગી રીતે મહાસભા ગાધી જેવા પુરૂષોને વચ્ચે રાખી સમાધાની પર લાવી શકાય તો ધણું હુમર ચાલ; પણ તેને માટે આપણા, કહેવાના આપણોએ ખતથી મેહેનન ઉઠાવવી જોઈએ. તે ઉપરાંત એક સામાન્ય ફેંડ એનું ચું જોઈએ કે તેમાંથી ઉંચા અભ્યાસ માટે જાપાન અમેરિકા, જર્મની વગેરે દેશોમાં આપણા જેન પુત્રોને મોકલી શકાય. આ ફેંડની વ્યવસ્થા મહાસભાને હસ્તે રહેવી જોઈએ. પ્રાતિક સભા પોતાના પ્રાંતના શુદ્ધિયાગી પુત્રાન વિદ્યાર્થી કોલેજમાં બહુના દોષ તે પેકી એકલાને ચુંદી કાઢી મગ

ખડેરવાળ	પોરવાળ -	મેવાડા
અમરવાળ	રાયકવાળ -	મેડતરાળ
યસવાળ	પરવાર	સંહપરા
બગેરવાળ	હુબડ	નરસિંહપરા

વિક્રમ સંવત ૧૩૫ ની સાલમાં બહારક શ્રી.....ઉત્તરનૃપાં જૈનના ગુરુ તરીકે વિદાર કરતા હતા. તેમના હાથ નીચે સાત શિષ્યો વિદ્યાધ્યયન કરતા હતા, આચાર્ય શ્રી.....એ સંવત ૧૬૫ ની સાલમાં પોતાના મુખ્ય શિષ્ય શ્રી તેમીસેનજીએ આચાર્ય પદ પર સ્થાપન કરી પોતે યોગારાધન કરવા લાગ્યા.

નવીન આચાર્યે ગુરુ પાસે 'માંગણી કરી કે હું ચાતુર્માસના ઉપવાસ કરું. વડીલ આચાર્ય બોલ્યા કે કળી કાળમાં એ તપ ચર્ચ શકે નહિ. આચાર્યેનું કહેવું 'માન્યું' નહિ ને નવીન આચાર્યજીએ ઉપવાસ કરવા માડ્યા.

ત્રણ માસ પુરા થયા ને આમો માસ આવ્યો. છેલ્લો વરસાદ થયો. આચાર્ય નદી કંઠે ધ્યાનગ્રસ્ત થયેલા હતા. વરસાદથી નદીમા પુર આવ્યું. રાત્રિ અને વરસાદનાં સખત ઝાપટા અને તેમા વળી નદીતીરનાં પાણીના ધુધવાટાવાળો શીતળ પવન એમ ત્રણ આપાતોથી આચાર્યજી હરી ગયા છંપ દશમે દારે ચડી ગયો અને બેભાન બની ડગો પડ્યા.

પ્રભાત થયું, વરસાદ બધ થયો, લોકોની આવજાન શરૂ થઈ, લોકોએ આચાર્યને મૃત સરખા જોઈ શ્રાવકોને ખબર આપી, આવકો દિલગીર થયા, સુખડના લાકડાની ચેદ બનાવી આચાર્યને અગ્નિદાદ દીધો.

અગ્નિના જ્વેરે હડી આચાર્યના શરીરમાથી ટાક ઉડી ગઈ અને આચાર્ય ચેદમાથી કુમિ બહાર પડ્યા, શ્રાવકો ભુત સમજી નાંધી ગયા. અને વડીલ આચાર્યને ખબર આપી.

આચાર્યજીએ વિચાર કીધો કે-લુપ્તવાણું શરીર વરસાદના પોણે નદીની કંઠીમા હરી ગયેવું તે અગ્નિના પોણે સંજોન થયેવું છે. તેમજે દારૂ હરી શ્રાવકોને કહ્યું કે-તેમજે મારો આજ્ઞાનો અનારદ કીધો તેથીજ આ અગ્નિ પ્રાપ્ત થઈ છે.

હવેથી એ આજ્ઞાભંગી આચાર્યને કોઈ આહાર પાણી આપશો નહી એવું ઉપવાસ કરનાર આચાર્યના બળશુભા આવતા તેઓ દિલગીર થયા અને ક્રોધ કરી બોલ્યા કે- નવા શ્રાવક બનાવી પછોજ આહાર લેવો.

આચાર્યે ત્યાંથી નીકળી રાજસ્થાનમાં પ્રખ્યાત પામેલા ઉદેપુરના રાણાની સરહદમાં ઉદેપુરની પામેજ ભટ્ટેરા નામના ગામમા ગયા તે વખતે ત્યાં ગોહીલ જાતના રજપુતોની વસ્તી હોયોતીમ ધરની હતી, જેઓ ઉદેપુરના આશ્રમે રહી ખેતીવાડી કરી આજીવિકા ચલાવતા ને જરૂર પડે ઉદેપુરના રાણાને મદદ કરવા જતા હતા તેથી તેમની જાગીરા વંશપરંપરાની બાંધી આપેથી હતી.

આચાર્યે શ્રી તેમના મહોદલામાં જઈ વચ્ચે ચોકમા આસન નાખી ધ્યાનસ્થ થયા, વળી તેમજે આહાર પાણીનો ત્યાગ કરી કદ પદ્માસનથી ઇન્દ્રિયનિગ્રહ કરવા માડ્યો.

રજપુતો શરૂથી હોવા છતાં તેમનામા સત્યાગ તરફ દયાનો બાપ વિશેષ હોય છે, એ ભુલવું જોઈતું નથી.

પાંચ દિવસ થયા એટલે રજપુત લોકો મહારાજ પામે આવી વિનંતી કરવા લાગ્યા કે મહારાજ હમારે જાતજે બેસી તમે લાલણુ ક્યો અને અમે જાગીએ, એ બની શકતું નથી માટે આપ આહાર લઈ પછો ખુશીથી અડી રહેા.

આચાર્યે બોલ્યા કે-મારે મારા સંપ્રદાયમાં શ્રાવક નથી, માટે તમે મારા શ્રાવક બનો નો હું આહાર લઉં. રજપુતોએ કહ્યું-મહારાજ, એમ શ્રાવક માટે લાલણુ શાય નહિ. તેમજ હમારાથી હમારો તોવ ધર્મ છોડી શકાય નહિ. આચાર્યે કહ્યું. તમે ત્યા મુધી મારો ધર્મ સ્વીકાર કરશો નહિ. ત્યા મુધી હું અત્રેથી જવાનો નથી. તમે તમારા ધર્મની ને મારા ધર્મની પરીક્ષા કરો. જો તમને મારો જન ધર્મ શ્રેષ્ઠ લાગે તોજ ધારણુ કરવો.

રજપુતોએ ધર્મ પરીક્ષા કરવાની દા પાડી પોતે પેલાને ઘેર ગયા. બીજે દિવસે તેઓ પેલાના કુટુમ્બક પરિનેને લઈ આચાર્ય પામે આવ્યા.

અહીં આચાર્યે પોતાની ઉપાસ્ય દેવતા લક્ષ્મી દેવીનું આદ્વાન કર્યું. લક્ષ્મીએ આત્મ રંજપુતવાદમાં ચમત્કારો બતાવવા માડ્યા ચમત્કારો જોઈ કૃત્વીત રંજપુતાણીઓ પુન પુનનીની ઈચ્છા કરતી આચાર્ય પાસે આરત લાગી. આચાર્યે તેમને પોતાના ધર્મ સીકાર કરાવી યોગ્ય દવા આપવા માડી !

આ બાબત રંજપુતાણી પડિતો સાથે આચાર્ય પાસે વાદ કરાવવા માડ્યો, શાસ્ત્રનાદમાં સેત ધર્મની હાર થઈને આચાર્ય લક્ષ્મીદેવીની સહાયથી જ્યાં પ્રાપ્ત, રંજપુતાણી જૈન ધર્મનો સીકાર કીધો, ને આચાર્યે આહાર લીધો.

આચાર્યે બીજે દીવસે મોટો સમારંભ કરી જિનેન્દ્ર દેવનું મહાપૂજન કરી લક્ષ્મીદેવીને શાસ્ત્ર થવા વિનંતી કરી. લક્ષ્મીદેવી હાજર થયા, તેમની પાસે દરેકના મુખમાં અમૃત મુકાની દરેકના શિર- પર હાથ મુકાની આશીર્વાદ આપી દરેકને જૈન વિધિથી જળોષ્ઠનો સીકાર કરાવ્યો ને લક્ષ્મીદેવીના મંદિરની રથાપના કરી, જૈન મંદિર બનાવવા આરંભ કર્યો.

રંજપુતાણી વંશમાં ઉત્પન્ન થયેલા પ્રાચીન મુનિઓના વંશજો બતાવવા અને જુદા જુદા કુટુંબના વિભાગ જુદા દેખાડવા જોતરની રથાપના કરી, દરેકની કુળદેવતા મુકર કરી સર્વેને પોતા પોતાના ભાયાતથી (જોતરથી) એકજ ઘરનાની માફક ચાલવા મુચ્છ્યુ. તેજ સપ્રદાયથી હાથ પજ આપ્યા આત્મીએ છીએ

કહેવત છે કે-પાય પેટી સુધી કુટુંબી, દશમી સુધી ભાયાત. પચીસમી સુધી પિત્રાઇ અને પચાસથી જોતરની કહેવાય છે આચાર્ય શ્રી તેમની મેનજીએ જોતરની રથાપના કરી તેના ઉચ્ચેષ અને આપવો હીક પડી એમ ધારી નીચે આપુરું. તે અરથને ગણાશે હાહ.

જોતર દેવીસહિત.

જોતર	દેવી	જોતર	દેવી
શ્રીવત્સ	શીવદેવી	બીડલ	ગામેરદેવી
જમદગ્નિ	જમદગ્નીદેવી	હવ	વાગ્નેરીદેવી

કોશીક	માત્રકાદેવી	સુવત્સ	માધવીદેવી
વશીષ્ઠ	વાસુદેવી	કાર્ત્તવ્ય	મહામનસીદેવી
ગોતમ	વિભવજીદેવી	કુલરત	જશજગાદેવી
કૌણ્ય	ગ્યાદેવી	જમાન	મૌરીજીદેવી
અર્ષ	ગૌરીજીદેવી	પારાશર	કાળીકાદેવી
સોતપા	લખ્યાદેવી	કૃપાચાર્ય	અંબીકાદેવી
બુદ્ધ	મતમીસાદેવી	જલ્મીગર્ગ	ગૌરીદેવી
બારમવ	ચક્રેશ્વરી	વિજયમાન	સારીજીદેવી
પરકર્ષિ	અમીતાદેવી	ગાસરત	નારાયણીદેવી
વિભવ	ગંધારીદેવી	બંદભોગ	નાયણીદેવી
સેતમપા	માતરીદેવી	નાનાજન	નારીકાદેવી
માડલ	સુરાશ્રીદેવી	મત્સ્યેન્દ્ર	સોમાદેવી
આત્રેય	પદ્માવતીદેવી	હરિસ	માયદેવી
નારાયણ	ભરૂદેવી	કૃકપાણ	લક્ષ્મીદેવી

ઉપર પ્રમાણે જોતરમાં બધારણ બાધી તેમને શ્રાવકની ક્રિયા સમજાવવામાં, પાય વર્ષે તેઓ પુરા શ્રાવક થયા અર્થાત રંજપુત મઠી વૈશ્યત્વને પ્રાપ્ત થયા અર્થાત ગોહીય મઠી, બટેરા શ્રાવક થયા જે હાલ ક્ષત્રિય વડે ગુમારી વૈશ્યત્વને બધારણકર્તા હુનિયામાં સર્વોચ્ચ ગણાતા સુધર્મવંશી ક્ષત્રિય અથો દશાને પ્રાપ્ત થયા છે, જેદ છે કે જેવી રીતે શ્રાવકો વીરત્વ ગુમારી બેદા છે, તેવીજ રીતે આચાર્ય (હાલના બટારકો) પજુ ધર્મત્વ ગુમારી બેદા છે. અરે, લક્ષ્મી (પંસા) ના યાગે યજ્ઞ ગયા છે. આજથી પેણીચારમે વર્ષ પહેલા અર્થાત ઈસ્વીસન્ ૧૫૨૭ માં દિલ્હીના મોગલ બાદશાહ અકબરે ઉદેપુરના નામ્બપરે દવાગે કરી, તે વખતે ઉદેપુરમાં બટેરા (ગોહીય)ના સમાજ સોસાઈથી રંજપુત રાજ્ય કરતા હતા.

અકબર શહે સિમોદીવાને નમાવવા તેમની સ્થિતિ નષ્ટ બ્રહ્મ કરી દીધી ઉદેપુરના રાણાને મદદ કરવા બટેરા શ્રાવક પેણીચણાં જણુ ગયા હતા. જેમનો લઠાઇમાં અંત આવ્યો, તેમનાં સંતાનોને લઈ બીજા કુટુંબાકે જે ઘર આગળ રહેવા તેઓ વારંવારના મોગલોના હુમલાથી-હુટથી ત્રાસી, ગરીબા-વરથા ધારણ કરી ત્યાંથી નાશી છુ'વા.

તે વખતે હાલની માફક રેલ્વેનું સાધન હવું નહિ, જેથી તે લોકોને પગરસ્તે ચાલવામાં અનેક

લુટારના ભોગ થવું પડ્યું હતું. એમ કરતા વ્યારે તે પહેલ વહેલા ગુજરાતમાં આવ્યા, ત્યારે તેમની સ્થિતિ તદ્દન શેત્રીનીય થઈ ગઈ હતી.

ખેડ છે કે-આત્યારની માફક તે વખતે અજ નળની સામથી પુરતા પ્રભાષમાં મળતી નહિ, જેથી તેમને સખત મજુરી કરવી પડતી.

આપકોના ન્દાસિમામના સમયે આચાર્યશ્રી દક્ષિણમાં ચાલ્યા ગયા હતા, તે ત્યાંજ પંચતને પામ્યા હતા. મેવાડા લોક ગુજરાતમાં પ્રથમ બૃગુકૃષ્ણ (ભરૂચ) માં ઉતર્યા હતા. કેમકે, તે વખતે ત્યાંના વ્યાપાર હીક ચાલતો હતો. મહેનત-માથી થોડી થોડી રકમ બચાવી તેઓ વ્યાપાર કરવા લાગ્યા. તે હાલ પણ વ્યાપારી જીંદગીજ ગુજરે છે.

મેવાડા લોકે ગુજરાતમાં આવ્યા પછી સુરતની ગાંધીના આચાર્યને પોતાના યુર તરિકે માની લીધા. (જન્ને ગમ્જને સરખા ભાગે માનવા લાગ્યા)

... ઇસવી સન્ ૧૬૭૦ થી ૧૭૦૦ ની અંદરના મગાના સખત દુમલાથી ત્રાસી-કંટાળી મેવાડા લોકો ગુજરાતના પાદરા, અંકેશ્વર, સોજીત્રા, ખેડા, વગેરે, ખંભાત વિગેરે સ્થળે વ્યાપારાર્થે રહેવા ગયા હોય તેમ જણાય છે.

ઉપરનાં સ્થળોમાં ચોક્કસ ક્ષમ સાલમાં આવ્યા તે જાણવા માટે આપણી પામે એક પંખ મદિર મેવાડાનું પ્રતિષ્ઠિત નથી, તેમજ કોઈ પ્રગળ પુરાવો પણ નથી, છતાં એટલું તો ચોક્કસ કહી શકાય કે-ભરૂચપાથી નિકળવાને તેમને ખાસ બાવાનક કારણ અવરય પ્રાપ્ત થયેલુજ.

વારંવારની ન્દાસ-ન્દાસથી તે લોકોની સ્થિતિ બેઠાએ તેવી કુચ્ચ થયેલી નહિ, તેમજ મુસલમાનોના હરથી બાળલગ્ન જેવી પ્રથા દાખલ થઈ ગયેલી જેથી કન્યાએની અગતને લગ તેમની રચીત નદરાય થતી ચાલી.

ઇસવીસન્ ૧૭૮૧ ની સાલમાં ધણાજાએ વેપ્યુર ધર્મ (કન્યાની અગતને લઈ) પાસજુ કરવા માંડ્યા. તે વખતે આચાર્ય શ્રીએ શ્રીમંત સરદાર શ્વેતસિંહરાવ દામજીજીવના દરબારમાં

અરજ કરી તેમને મૂર્તિ ધર્મમાં દ્રઢ બનાવ્યા હતા, પણ જાણન સમાજના યુરા નસીએ તે આચાર્ય તેજ સાલમાં પરલોકાસી થયા તે તે લોકોમાં ધર્મ બાળત મોટો ઝમટો ઉત્પન્ન થયો.

ફતેસિંહરાવ મહારાજે પાટણના જૈન શાસ્ત્ર બંદારમાથી ૮૪ ન્યાતિનાં નામવળા શ્રેયે મંગાવી દરેકની ન્યાતિના ગોળ બાધી આવ્યા, તે વખતે કેટલાક જણે જૈન ધર્મમાં રહેવા સાફ ના પાડી અન્ય ધર્મ ગ્રહણ કર્યો હતો જે હાલ પણ તેજ ધર્મ પાળે છે.

ન્યાતિનાં તક બધાયા તે વખતે પાદરા, માલા-વાડા, સોજીત્રા, વસો, દેત્રી, ખંભાત, ખેડામાં યથા મેવાડા દિગંજીનીનાં ઘર ૩૦૦૦ હતાં.

આજથી ૧૪૦ વર્ષના ૩૦૦૦ ઘર દશા તે વીસા મેવાડાના હતાં. ખેડ છે કે અત્યારે ફક્ત વીસા મેવાડાનાંજ ઘર સોજીત્રા અને અંકેશ્વર મળી ૮૦૦ ની સંખ્યામાં બાકેજ છે. વસ્તી ઘટવાનું અર કારણ કોઈ જાણવા ઇચ્છિતું હોય તો તે કુળવાનને ખોટો આકંબરજ છે.

હાલમાં મેવાડા લોકોમાં ૧૬ દિગંજી જૈન મદિર હોઈ પાદરાના એકપણ નથી. વસ્તી ૭૦ ગામમાં ગુજરાતમાં છે. આર્થિક રિચીત મધ્યમ હોઈ ધર્મપ્રેમ જુજ છે.

હવે મોહિલવંશી બરેરા લોકોના સમાજની શદિ યાઓ જોજ માગી બાવના છે.

પાકો, મારા કેટલાક અન્યના વાચન, કેટલાક મંદિરોના દર્શન અને કેટલાક જાણથી પુણ્યાર્થથી ઉપર પ્રમણે હરીકત મેવાડા લોકોનાં સંબંધમાં મળી આવી છે.

મારી "દિગંજી જૈન" ની જાહેર ખબરથી શ્રીયુત મોતીલાલ ત્રોટમદામ માગની બાકોલ એમણે કેટલીક હરીકત લખી મોકલો હતી જેથી તેમને ઉપકાર માનું છું.

મારા આ પ્રયાસમાં કેટલીક હરીકત અરપટ અને ઉત્પટમ લાગશે, પણ વિદ્વાન વાચકોને વિનતી છે કે તેથી નહિ કંટોળતા મારી હરીકતથી વધારાની હરીકત જાહેરમાં લાવવા પ્રયાસ કરશે.

જે બધું આથી પણ વિશેષ એટલે ક્યો પુરુષ નિમાડમાંથી શુભરાતમાં આવ્યો, ચોખ્ખા સાલ-વંશાવળી વિગેરે હકીકત સમાજમાં બહાર પાડશે, તેને મારા તરફથી બહાર પડેલું ધનમાં અવરજી મળશે, માટે દરેક બધુએને વિનંતી છે, કે દરેક હકીકત બહાર પાડના પ્રયત્ન કરવો.

આ સ્થળે મારે કહેવાની જરૂર પડે છે કે-મેવાડા બધુએ પોતાનું ગૌરવ જાળવવાનું નથી, જેથી લગ્નાદિ ક્રિયા વખતે તેઓને બહુજી વિમાનનું પડે છે એમ સાબળ્યું છે, તો હું જાણવવાની રજા લઈશ કે-તેમણે એક વખતે સમગ્ર ગાંધીએ એક જ યજ્ઞ, પોતાપોતાના કુટુંબીએ એક જ યજ્ઞમાં રહી, પોતાપોતાનું ગૌરવ એક જ માત્રી લેવું તેમ કરવાથી એક જ ગૌરવમાં લગ્ન જોઈ જવાની બીજી નાશ પામશે. એક જ ગૌરવમાં લગ્ન કરનાર અને કરાવનાર બંનેનું અકલ્યાણ જ થાય છે. આ લેખકે એવા અનેક દાખલા નજરોનજર જોએલા છે, પરંતુ સ્થાનાભાસથી તે પ્રકાશ કરી શકતા નથી.

છેવટે દરેક બધુએને મારી નમ્ર વિનંતી છે કે-

અ પોતાના કુટુંબમાંથી, ગામમાંથી, નાતમાંથી વદ લગ્ન, બાળ લગ્ન દર કરવા પ્રયાસ કરવો !
ચ સાથી પ્રથમ તમારી કોમના આગેવાનો નિરુદ્ધોને હરેલ સ્વમાનના નિષેધ કરવા જોઈએ કે જ્યાં સુધી લાયક ઉમરના લગ્ન સંબંધ જોશો નહિ ત્યાં સુધી તમારી ઉન્નતિની વાત ન ભૂતો ન બંધિયો માત્રી લેવી.

હું ગાંધીના ઉદ્યમ અર્થે તન મન ધન અર્પણ કરે એવા આંક દશ કે વધારે માણુએથી એક મેવાડા સ્વયં સેવક મહાળા નામની સંસ્થા બોલી તેમાંના આદ્ય પુરોએ ચારિત્રવાન બની અન્યને ચારિત્રવાન બનાવવા પ્રયાસ કરે.

સમાજો ભરી મોટા મોટા બાબતો કરી લાગા લાગા હરાવો પામ કરી મોટાજી મેળવ્યાથી સમાજ સુધારો થવાનો નથી, પણ હરાવ પાસ કરવા જનાર પ્રથમ સુધારી પછી પોતાના કુટુંબને સુધારી પોતાના ગામના સુધારી પછી સમાજ સુધારવા જાય તોજ કઈ અસર થઈ સમાજ સુધારે ?

ઈંડરકી ગદ્દીકે મટારક વિજયકીર્તિકે નામ ખુલા પત્ર ।

શ્રીમાન્ મિત્ર ! હવે પત્રકો પ્રકાશિત કર મેં આના કર્મના પુર્ણ કર રહા હું, મુझे આશા છે કે, હવે પત્રકે પ્રાયેક વાચકના મનન કરિયે, ઔર અપને જીવનકો પવિત્ર, ઉત્તમ ઔર ઉપયોગી બનાવેકે હિયે પ્રયત્ન કોઝિયે । 'મેં' હવે વાતકા સ્મરણ િલાના ચાહતા હું કે આપકો અનેક વાર ચેતાયા છે, સવન ન કિયા છે, મિત્રકે કર્મચોક્કા પલન કિયા છે, પરંતુ આપ હવે વધારે મોહમેં ફંસે હૂએ છે, કે આપકો પૂજ્યપાદ યાગી પન્નાલાલની પેલક મહારાજને કુઝ પ્રતિજ્ઞા પે દિલાઈ થી, પૂજ્ય ગુરુચર્ય સ્વ૦ પં૦ 'ગોપાલદાસ'ની ચરેયાને પ્રતિજ્ઞા ઔર કેમૌલિક ઉપદેશ દિયા યા, શ્રીમાન્ જગત્સિંહીયી ગુરુમી પં૦ 'પન્નાલાલ'ની વાકલીવાલસે મો આપને પ્રતિજ્ઞા પે લી થી, સ્ત્રવાદિ મહાન પુરુષોકે સ્મરણ આપને અપને જીવનકો પવિત્ર ઔર ઉપયોગી બનાવેકે હિયે મટારકકો ગાદી બેઠનેકે પ્રવચ હી પ્રતિજ્ઞા પે લી થી, આપને ઉદાર વિચાર દિલગાયે થે, અપની માવનાકો ઉચ અર્થે રૂપ રસનેકે હિયે આપને બહો લંબી ૨ ચાંતે પ્રકાશિત કરી, પરંતુ વે સત્ર ચાંતે આપને આને સ્વર્થ સિદ્ધિકે હિયે ઢોંગ ચના કર કી થી । આ મટારક બનકર મોજ મજા માર અપની આત્માકો ઠગના ચાહતે થે ઔર પંચોંકી આંખોમે ધૂઝ ઝોંકના ચાહતે થે । આપ અપને મનમેં સમજ રહે થે કે હવે

बातोंमें क्या रहा है, ये तो अपने मतलबको बनानेके लिये बहाना है, हृदयकी मायाचारीको कौन जानता है, इस विचारसे, रायदेशके मोले धर्मात्मा माइयोंको ठगा और धेखा दिया।

मन्तु मित्र ! आपका यह जाल तत्काल ही कुछ दूरदर्शी विचारशील महानुभावोंके पवित्र हृदयमें जागृत हुआ था, आपको युवराज पद मिठनेके समयमें वतिपय सज्जनोंके पत्र आपके चालचलन वास्तवमें आये थे परन्तु आपकी मीठी बातों मोले रायदेशके माई सपक्ष नहीं सके इस लिये ऐसे पत्रोंपर कुछ भो ध्यान न देकर आपकी सराहना को और युवराजपद दिया, अस्तु ! युवराजके समय भी आपने बहुत मारी डोंग मारी थी कि (१) मैं अपने जीवनको पवित्र सदचरी रखूंगा, (२) विद्या अध्यास कर आने पदका गौरव बढ़ाऊंगा और सरस्वती भंडा का जीर्णोद्धार करूंगा (३) गुनरात बाण्ड और मेवाड़में माठशालाएँ खोल कर समाजका द्रव्य समानसेवामें व्यय करूंगा, (४) अपत्य्य घोडा गढी सिपाई पणदेमें न लगाऊंगा आदि ।

परन्तु मित्र ! यह कपटकी भरी डोंग थी, आपको गादी धारणमन होकर कुनार्गमें धन व्यय करना, मोन मज़ा मानना, बोडा गढी रखना, भांग आदि पीना, तेउ कुठेउ लगा कर शौकको पूरा करना मोनेकी बंठा कंदोरे आदि आभूषण सहन कर ऐसा आगमसे रहना, सिपाई पणदे रख कर घाका दुरायोग करना, आदि बातोंमें पानपौ रूपया महीनाका खर्च कर समाजकी शक्तिको बिगाडना, और गादीको कलंकित

करना है । आपकी इस दुर्नीतिसे धर्मकी हंसी होनेके सिवाय मनुष्यक पदको भी लज्जा प्रप्त होती है ।

मित्र ! आपके आचरण ऐसे हैं कि समानको देख कर मथ्याताप होता है । आपकी प्रतिज्ञा वहां पर गई ? आपका पवित्र विचार किपर गया ?

सच है कपट अधिष्ठ दिवस तक नहीं टहर सकता । युवराज पदके सपाचार समानमें प्रकाशित होते ही दूरदर्शी महानुभाव समाजोद्धारक सेठ साहब माणोचंद हेराचंदजी बम्बई, लल्लू माई लखमोचंद चोकसी बम्बई, मा० दीपचंदजी पंवार, सेठ मूलचंद किमनदानी कापाड़िया संपादक 'दिगंबर जैन' सूरत, और पं० नाथू रामजी प्रेमी आदि सज्जनोंने आपको गादी बैठा लेनेका पूर्ण विरोध किया, रायदेशके पंचोंकी पत्र द्वारा समझाया, वर्तमान समाचार पत्रोंमें लेख निकाले तो भी रायदेशके पंचोंकी आंखें न खुलीं । टाकाटूकाकी प्रतिष्ठा महोत्सव पर आपने सन्मार्ग चलनेकी प्रतिज्ञा श्री निनेन्द्र सन्मुख ली । उस प्रतिज्ञाके अनुसार यदि मित्र आप चउते तो मेरी तो यह धारणा है कि उस प्रतिज्ञा धर्मसे वैसा ही अवगम मनुष्य क्यों न हो रूप समयमें नरपुंगव हो सकता था । गत साल श्री पुण्य व्र० म गीरपजी, व्र० ठाकुर प्रसदजी, व्र० ज्ञानानंदजी, व्र० छोटेलालजी, माई मूठचंदजी कितनदासजी आदि सज्जनोंने आपको किस प्रकार समझाया था मिससे मित्र मुझे पूर्ण आशा हो गई थी कि अब आ। अश्वय सुवर नायगे, परन्तु पत्थर पर पानी बह गया ।

रायदेशके पंचोंने आपका हिसाब गत सल्ल मांगा था परंतु वह साफ नहीं होनेसे और गड़बड़ होनेसे आपको कितना शर्मिदा होना पड़ा था। यह बात भी स्मरण होगी कि आपके ऊपर रायदेशने १८ कठम 'छगाई' थे, और आपको अपना पद त्याग करनेका मौका हुआ था उस समय आप "अर मैं अपने, चारित्रको सुधारंगा" ऐसी पंचोंके समक्ष प्रतिज्ञा कर प्रकाशमान हो गये।

मित्र, इन बातों पर मुझे विश्वास नहीं है। और न मैं आपकी तरफसे शंकाशील हूं, परंतु सर्वत्र आपकी आकीर्ति फैल रही है वह सहन नहीं होती है और न धर्मकी अश्लेषता देखी जाती है। आप जैसे चतुर मनुष्यसे मृदुरूपकी हंसी होना उज्जाकी बात है। मैं इन बातोंमें खून मारीक विचार करता हूं तो श्रीमान् गुरुवर्य पं० पन्नालालजीने 'दिगंबर जैन' वर्ष ८ अंक १० पत्र २७में आपका प्रतिज्ञा पत्र (आपके हस्ताक्षरका ब्लोक) छापा है उसकी सत्यता प्रतीत नहीं होती है। प्रतिज्ञापत्रमें आपने अपनी जो प्रतिज्ञायें लिखी हैं उनका लेश मात्र पाठन नहीं किया है।

यदि उन प्रतिज्ञाओंको जो आपने अपने हाथसे लिख दी थी उसका पाठन किया होता तो मैं दावेके साथ कह सकता हूं कि आपके ऊपर १८ कठम 'स्वप्न' भी नहीं लग सकती थी जिससे आपको इतना नीचा देखना पड़ा। अस्तु।

मित्र ! वर्तमान वर्षमें भी आपने अपने आचरण नहीं सुधारे।

परन्तु मित्र ! आपने तो ये प्रतिज्ञायें तपा वचनामृत्तोंको लोगोंको दिखानेके लिये छीं रहीं,

न कि आत्मचरित्रको सुधारनेके लिये। यदि आत्माका सुधार करनेकी आत्मीय प्रवृत्ति भावना होती तो आप समानके नेता बन कर महान् पृष्ठभूमि भागी नामांकित नरत्न बन सकते थे परन्तु यह बात नहीं थी। आपको प्रतिज्ञा कोरी नाम मात्रकी प्रतिज्ञा थी। आपको इन कुछ नीतिका जिनने विरोध किया था उसको आप शत्रु रूप समझने लगे। वयोवृद्ध पं० पन्नालालजी साहबने आपकी इन कुछ नीति पर आपकी प्रतिज्ञाओंकी नकल छपा कर खेद प्रकाशित किया तो आप ऐसे पवित्र मनुष्यको बुरी निगाहसे देखने लगे।

मित्र ! उत्तम पद पाकर क्या किया ? आत्मचरित्र आदर्श-उत्तम नहीं हो सकता अस्तु।

सुवरान पदके समय आपने विद्याभ्यास करनेको प्रतिज्ञा की थी। आज तक आपने क्या शिक्षा ली ? आपमें एक साधारण मनुष्यके समान ज्ञानकी योग्यता नहीं है तो इस महान् पदको आप किस प्रकार योग्यतासे चला सकते हैं। मित्र ! वामुदेव उपाध्याय आपको शिक्षा देनेके लिये कितना प्रयत्नशील रहा, परन्तु खेद है कि आपने शिक्षा लेनेके बदले उस विचारको मांग पीनेके लिये दबाया और झंझी लिखा पढ़ी कर बंटकको दूर किया।

मित्र, आपको किसी प्रकारके आजीविकाकी चिंता नहीं, पुत्र मित्र कछिरका मोह नहीं, आप शिक्षा प्राप्त करते तो आपको अवकाश बहुत था परन्तु आप कुछ न कर सके। दुःख है आप क्या सोचते थे और क्या कर रहे हैं। अस्तु।

मित्र, अधिक न पढ़ सके तो हानि नहीं, परन्तु ब्रह्मचरी बन कर चारित्र्यकी यात्रा अत्यंत पवित्र तो रखते । दुःख है कि आपका चारित्र्य आदर्श न रहा । माननीय पं० कुंभविहारीलालजीने आपको सन्मार्गपर चढानेकी पूर्ण कोशिश की परन्तु कौन सुना है । सुना है इंडरमें आपकी यथेष्ट प्रतिष्ठ नहीं है । यह भी सुना है कि आपकी भावनायें इंडरमें नहीं होतीं । ऐसा है तो मुझे आपके ऊपर पूर्ण दया आती है । मनुष्य आपने अपने जीवनको ऊंचे पदके लोपमें बहा दिया ।

मित्र ! आमें प्रत्येक कार्य करनेकी पूर्ण शक्ति है । आका पद महान है । आपका अधिकार सर्वोपरि है । आपको सत्ता प्रचल है । आपका क्षेत्र विशाल है । शक्ति सशुदायका होनेसे अनन्य है व्यापक है परन्तु मित्र, आपसे कुछ भी परमार्थ कार्य न हो सका । आपका यश शुष्क ही निर्मल है । आपका गौरव आपको लज्जायमान करता है । आपका पद आपको नहीं शोभा देता है । वीतराग पदमें शृंगार कैसे निभ सकता है । सन्मार्गमें अतदाचरण विष प्रहार शोभाको प्रस हो सके हैं, चारित्र्यकी धुरा में मलिन भेष कैसा बुरा मालूम पड़ता है । मित्र, क्या यह आपने कभी सोचा है ?

सुना है कि हुंकारकी पाटशाळा भी बंद कर दी है, वदाचित्र यह संगठना हो सची है क्योंकि घोड़ा सिपाही आदिका ५००) रु. का स्वर्च आपके पीछे है । यह स्वर्च बिचकुल व्यर्थ है । अस्तु, मुझे लिखना बहुत है परन्तु शायद आप मुझसे दृष्ट हो भांय इस दिये में अपने लेखको पूर्ण करना चाहता हूं । हां, मंत्र

तंत्रके ढोंगमें अपना जीवन नहीं गमा देना औ न ऐसा कार्य कर बैठना जिससे धर्मकी हंसी हो ।

मेरे इस लेखसे आप अत्यंत बुरा मानेंगे परंतु आने आनी प्रतिज्ञापत्रमें ऐसा लिखा है कि 'यदि मेरे वर्त्ताव धर्म विरुद्ध और नीति विरुद्ध हों तो विद्वज्जन और रायदेशके पंच योग्य दण्ड दे सकते हैं । आपको भंडारक हुए ८ वर्ष हो गये हैं, आज तकके कार्योंका विचार किया जाय तो आपने भंडारक पदको लनाया है । इसी लिये गत साल ऐसा मौफा उपस्थित हुआ था, परन्तु वह दैव कृपासे दूर हो गया, परन्तु सुना है कि हालमें आपसे रायदेश बहुत ही अमत्त है और आपके कार्योंकी तीव्र आलोचना हो रहा है ।

आपको भंडारक हुए ८ वर्ष हुए । यदि आप चाहते तो इन्ने विशाल समयमें इंडरके प्रसिद्ध सरस्वती भंडारका जीर्णोद्धार कर कर महान पुण्य और पशके भगी हो सकते थे । ग्रन्थाध्यक्ष समान जैनियोंको अन्य निधी नहीं है । शास्त्र भंडार हमारे सर्वस्व है । उसकी रक्षा करना आपका प्रथम कर्तव्य था परन्तु दुःख है कि आज तक ग्रन्थोंका उद्धार करना अलग रहा धूप तक नहीं दी और न सुनी पत्र बना कर प्रसिद्ध किया । आप अपना काल किम प्रकार व्यतीत करते हैं सपत्तमें नहीं आता ।

मित्र, मेरे इस लेखके कटु शब्दोंसे आपका गाली देंगे, परन्तु आप सावधानीसे कार्य करें यही समा । उपहार चाहता हूं ।

आपका सदैव हितैषी—

एक स्नेही ।

रायदेशके पंचोंका कर्तव्य ।

मट्टारक विनयकीर्तिके विरोधमें आज नितने वर्षोंसे आंदोलन हो रहा है इस बातको सब विद्वान और समाननेता प्रकार का कहते हैं कि ये मट्टारकके योग्य नहीं हैं, तो फिर इस बातका आप क्यों नहीं विचार करते हैं। यदि मट्टारक विनयकीर्ति इस पदके सर्वथा अयोग्य हैं तो उनको गादीसे उठा देना चाहिये, जिसमें धर्मकी हंसी न हो। और यदि मट्टारक पदके योग्य आपमें योग्यता है तो इनके विरुद्ध जैलोक प्रयुक्त देकर समाजको शांत कीजिये। समाज कह रही है कि मट्टारकजी महान १००) मासिक घेरा आदि व्यर्थ खर्चमें उठा रहे हैं। इतने खर्चसे एक एक गांवमें पाठशाला खुल सकती है। रायदेशके माई इस बातका विचार कर खुलासा 'दिग्गजर' जैनमें छायेगे ऐसी अशा है। मध्यां दास—

जीवनलाल आत्माराम ।

प्रेमोपहार ग्रन्थ ।

प्रेम-पुष्पांजली ॥) शान्ति धर्म ॥
 प्रेम-कली १) वैसा अंधे ॥) प्रेम-वर्म ॥)
 प्रेम-शतक २) निरन्धर रत्न-माला ॥)
 सौम्य रत्नमाला ॥) उपदेश रत्नमाला ॥)
 बालिका विनय २) प्रेमांजली २) हितशिक्षा २)
 मेरी मावना २) सच्चा विश्वास २)
 मावना लहरी २) प्रेम परीक्षण २)
 त्रिवेणी २) भैत्री धर्म २) मोहिनी ॥)
 मैनेजर, दि० जैन पुस्तकालय-सुरत ।

चतुर्विंशति स्तोत्रम् ।

देवेंद्र भू० । मालाभिः सेवितं सत्पदांबुजम् ।
 वृत्तं लोचनं संयुक्तं वंदे श्री वृषभं जिनम् ॥
 मिथ्यास्त महारण्ये योऽस्ति वन्दे महेसरी ।
 कुंभरां सप्तायुक्तं स्तुयेऽजितं जिनेश्वरम् ॥
 येऽज्ञानध्वात्मास्तैर्दो ज्ञानसिंधु सुवाकरः ।
 तुरगांकं समापन्नं यजे तं शंभवं जिनम् ॥
 यद्गमन्धे विबुधैर्गृहीतं ज्ञानवीथ्युपम् ।
 कपिलांजनं संयुक्तं अभिनंदनमाश्रये ॥
 संसरोदधिपन्ननां यः सदा तपणीयते ।
 चक्रांकं धर्मवक्त्रेशं यजे तं सुमतिं वाम् ॥
 नीति कर्मानंद-शान्तिं येन ध्यानांबु धारया ।
 पद्मांकं तापहरं नौमि पद्मप्रम प्रभुम् ॥
 मत्तस्मै मुनिरस्य यः सदा गुरुदायते ।
 स्वस्तिवांकं सप्तायुक्तं न सुपार्थं नपाम्यहम् ॥
 मन्त्राणिमात्रानां यद्दर्शनं नृपुत्रं सदा ।
 चंद्रांकं चंद्रगौरं तं सेवे चंद्रप्रभं जिनम् ॥
 यत्तत्त्वोपधि मन्त्रेण स्वरोगच्छिदो नराः ।
 मकरांकं सप्तायुक्तं शुष्पदंतं सभात्यहम् ॥
 संभारनलच्छेत्तारं जितकर्षरिपुं वाम् ।
 भद्रांकं गणाधीशं मायै शक्तिं जिनम् ॥
 अत्र रत्न त्रयं लब्ध्वा त्रिशोके श्रीयुनोऽभवत् ।
 गुरुवांकं समयुक्तं सोऽप्नु श्रेयन् हिताय मे ॥
 मनेजा मुक्तिं तरणी स्वोक्त्या येन धीमता ।
 महिषांकं समारन्नं वासुपुत्रं नपाम्यहम् ॥
 यज्ज्ञानमत्र माणिरयं विद्वत्कण्ठे प्रकाशते ।
 वाराहं किं जिताघोशं विमलं प्रणमामि तम् ॥
 सच्चरं मुदं याति यदाहं-विधु-दर्शने ।
 सैरिशांकं-सप्तायुक्तं अर्चं प्रणमामि तम् ॥
 नृमुपासु संपूज्यो धर्मतीर्थमवर्तकः ।
 वज्रांकं पूज्यादो यो धर्मं तं प्रार्थये जिनम् ॥

॥ श्रीवीररागाय नमः ॥



दिगंबर जैन



THE DIGAMBAR JAIN.

नाना कलामिविविधश्च वक्त्रैः सत्योपदेशैस्तुगवेषणामि ।

सद्योपयत्नमिदं प्रवृत्तं ताम्, दैगम्बर जैन समाज मानम् ॥

वर्ष १४ वॉ. ||

वीर सवत् २४४७. पोष. विमस सं० १९७७.

|| अंक ३ रा

भारतवर्षीय दिगंबर जैन महोत्सव

की

फर्रुखी कार्फिक बैठक-कानपुरमें

श्रीमान् साहू सलेखचंदजी जैन रईस नजीबाबादके
सभापतित्वमें

आगामी ता० १-२-३ अप्रैल १९२१ अर्थात् चैत्र (गुजराती फाल्गुन)

वदी ९-१०-१० को अतीव समारोहके साथ होगी ।

विशेषता—

इस बार विशेषता यह है कि इसके साथमें बड़ा भारी

“ प्राचीन जैन साहित्य प्रदर्शन ”

किया जायगा और सारे हिन्दूकी प्राचीन जैन साहित्य बताया जायगा ।

साधनमहिला परिषद् और विद्यत् परिषद् भी होगी ।

सब भाई अवश्य पधारें ।

पधारनेकी स्वीकारता स्वागत स० मंत्री बम्बू रूपचंदनी जैन, मूलगन, कानपुर^७ अथवा
हमें भेजें । पेश होने योग्य प्रस्ताव भी शीघ्र ही हमें भेजें । प्रतिनिधि फोर्म भी मंगा लेंगे ।

समान सेवक—लाला भगवानदास

महामंत्री, महासभा, बटनगर (मालवा)



जैसे सारे हिन्दकी बड़ी सभा इंडियन नेशनल कांग्रेस है इसी तरह कानपुरमें महा-सारे हिन्दके दिगंबर सभा। जैनोंकी एक बड़ी सभा

भारतवर्षीय दिगंबरजैन महासभा है जो पचीस वर्षसे कार्य कर रही है। इसने प्रथमके वर्षोंमें कुछ अच्छा कार्य किया था परन्तु बीचमें बहुत शिथिल हो गई थी परन्तु हर्ष है कि तीन वर्षसे महासभामें नवीन जोड़न आया है। गभसे इसके महामंत्री लाला मगवान दासजी और सहायक महामंत्री पं० अमोलख-चन्दजी हुए हैं इसकी कार्य प्रणालीमें बहुत कुछ सुधार हुआ है और ये महानुभाव महासभाकी सर्वव्यापी बनानेके लिये अतीव परिश्रम कर रहे हैं।

इस महासभाका गत वार्षिक अधिवेशन रा० वा० सेठ टोकमचन्दजीके समापतित्वमें सफलतासे हुआ था और इस वर्ष पचीसवां अधि-वेशन कानपुरमें आग मां ता. १-२-२ अग्रेष्ठ १९२१ अर्थात् मिति चैत्र वदी (गुन-राती फाल्गुन वदी) ९-१०-१०की होनेवाला है। इसके समापति नजीबचंद निवासी साहू सलेन्वचंदजी रहैस्त होंगे। आप श्रीमान्, विद्वान्, वयोवृद्ध, अनुभवी और पूज्य प्रतिष्ठित व्यक्ति हैं। आपके सुपौत्र साहू जगमन्दादासजी वर्षोंसे महासभाकी सेवा कर रहे हैं। आपके

समापतित्वमें यह अधिवेशन अपूर्व सफलता प्राप्त कर सकेगा इसमें संदेह नहीं है।

इसवारकी महासभामें बड़ी भारी विशेषता यह है कि कमी भी नहीं हुआ था ऐसा एक बड़ा भारी प्राचीन जैन साहित्य प्रदर्शन होगा जो कि ता० ११-२-२१ से ६-४-२१ तक खुला रहेगा। प्रदर्शनीके नियम हमने इस अंकके अंतमें प्रकट किये हैं जिससे पाठ-कोंको मालूम होगा कि इसमें मूर्ति विभाग, ग्रन्थ विभाग, उपकरण विभाग, शिल्प विभाग आदि कई विभाग होंगे और बड़ी खोजके साथ सारे हिन्दसे लाकर अनेक प्राचीन जैन साहित्य इसमें दिखाया जायगा। प्रदर्शनीके लिये खास कमरे बनी है जिसके मंत्री बैधरत्न पं० कन्दैयालालजी नई सड़क कानपुर हैं। प्रदर्शनीमें ऐसा प्रबन्ध किया गया है कि कोई भी सामान न चुराया जा सकेगा न चिगड़ेगा। इन लिये जहां २ प्राचीन जैन ग्रन्थ, चित्र, नक्शे, शीला लेख, ताम्रपत्र, प्राचीन उपकरण आदि हों वहांके भाई उनको इन प्रदर्शनीमें अवश्य ता० १५ मार्च तक भेज दें। इससे हमारा साहित्य बहुत प्रकाशमें आ जावेगा और कई अप्रकट ग्रन्थोंकी प्राप्ति हो जावेगी तथा दिगंबर जैन धर्मका प्राचीनत्व प्रकाशमें आजावेगा। दूसरा कार्य यह है कि महासभामें पेश होने योग्य प्रस्ताव लिखकर १५ दिनोंके भीतर महामंत्रीजीके पास बहनगर भेजने चाहिये और अपने यहां पंवायत कर्मके अपनी तरफसे प्रतिनिधि भेजना निश्चित करके उनके नाम भी महासभाके दफ्तरमें बहनगर भेजने चाहिये। और अंतिम कर्तव्य यह है कि

दिगंबर जैनियोंकी इस महासभामें हिन्दूके हर एक ग्राम और शहरके भाई बहिनोको सामिल होनेके लिये अभीसे तैयार हो जाना चाहिये । इसमें कोई सनेह नहीं है कि इस बारकी महासभा अपूर्व ही होगी ।

* * *

अष्टानिका पर्व वर्षमें तीनवार आता है उसमें दूसरा अष्टानिका पर्व अष्टानिका पर्व । कार्तिक सुदी ८से १५ तक समीप ही है । इस समय दूसरा हिंसापय मिथ्यावादी पर्व होली (हुताशनी) भी आता है जिसमें सिवाय अनेक प्रकारकी हिंसाके और कुछ नहीं होता है । हमारे कई जैनी भाई अब भी अष्टानिका जैसे महान् पर्वमें होलीको मानते हैं, उसमें श्रीकृष्ण चढ़ाते हैं, कृत्रिम चीजोंकी बलि करते हैं, आपसमें विपत्त व्यवहार करते हैं यहां तक कि अतीव रज्जाननक दृश्य कारके अहिंसा प्रतिपालक जैन नामको लगाने हैं । उनको उचित है कि अष्टानिका पर्वको या उपवास पूजन स्वाध्याय उपदेश आदिसे व्यतीत करे और होली पर्वमें लेश मात्र भी शामिल न होवे । इससे तो जैन नामको घट्टा लगता है और अन्यमती भाई कहते हैं कि देखो जैनी हमारे पर्व जैसे मानते हैं !

* * *

श्री शिखरजी, सोनागिरीजी, अंतरीक्षजी, मत्सीजी, तारंगजी आदि तीर्थोंके झण्डे । तीर्थोंमें दिगंबरी श्रेयांजरी जैनोंके परस्पर झण्डे व-
पोंसे चल रहे हैं और जिनमें हजारों तो क्या

लाखों रुपये जैनियोंके स्वाहा हो रहे हैं उनको आपसमें निपटानेके लिये कलकत्तेमें माघ सुदी ११-१२-१३को इकत्र कोर्टस होनेवाली थी परंतु अहमदाबादवालेने अपने नगरसेठकी अनुपस्थिति होनेसे उसको तार करके रुकवा दी है । कौन जाने कि अब वह क्या होगी ! जैन पत्रसे मालूम होता है कि सब तीर्थोंके झण्डे सरपंच होकर निवृत्त जावे ऐसी पक्की व्यवस्था होनेके लिये ही प्रीटिंग मुन्तबी की गई है । यदि ऐसा हो तो ठीक है । अभी 'अहिंसा' पत्रसे मालूम हुआ है कि ब्र० ज्ञानानन्दजी नगरसमें महात्मा गांधीजीको खुद मिले थे और आभसे बातचीत करने पर गांधीजीने अपने झण्डे निरटानेके लिये सरपंच होना स्वीकार किया है । यह बड़ी खुशीकी बात है । अब हमारे नेताओंको विद्यम्ब न करके जहां तक हो शीघ्र ही इन्फ्र कोर्त्सेस मुआकर दोनो पक्षकी कमेटी निश्च कर देनी चाहिये । हम समझते हैं कि दिगम्बरी अपनी ओरसे ऐसी कमेटी कानपुर महासभामें नियम कर सकते हैं और श्रेतांररी भाईयोको भी कोशिश कारके अपनी तरफसे एक कमेटी निश्च करदेनी चाहिये ।

* * *

प्रत्येक दस वर्षके बाद साकारकी ओरसे सारे हिंदूके मनुष्योंकी मनुष्य गणना । गणना एक ही दिन होती है । अंतिम गणना सन्

१९११में हुई थी और अब फिर दस वर्ष बाद इसी वर्ष (१९२१)में आगामी ता. २१ मार्च-को मनुष्य गणना होनेवाली है । इसके लिये



प्रथमसे सरकारी आदमी आ २ कर कार्य मर जाते हैं और अंतिम दिन फिर आकर उसको मिला जाते हैं। कई वर्षोंसे प्रयत्न करने पर अनियोंकी गणना ठीक २ नहीं होती इसमें हमारा ही दोष है क्योंकि हम ही बारबार लिखाते नहीं हैं। जैनियोंमें भी दिगंबरी धेतांबरी स्थानकवासी अलग २ नहीं मालूम पड़ते इसका कारण खास तो यही है कि बहुत करके सब जैन ही लिखा देते हैं। यदि हम जैनी ठीक २ लिखावे तो आसानीसे तीनों संप्रदायकी संख्या अलग २ मालूम हो जावे। ऐसे ही जाति लिखानेमें गड़बड़ होती है। अपनी जाति भी लोग बारबार नहीं लिखाते हैं इसलिये इसबार हम सभी दिगंबर जैन भाइयों और बहिनोसे आग्रहपूर्वक निवेदन करते हैं कि जब आपकी पास सेम्पस (मनुष्य गणना)के आदमी आपका नाम लिखनेके लिये आवे तब आपको जन्म धर्म पृष्ठे तो “दिगम्बर जैन” लिखावे और जाति पृष्ठे तो आप अपनी जाति अवबाल, खंडेलवाल, हुमड, नृसिंहग, मेघडा, परवार, जैसवाल, जो भी अपनी जाति हो ठीक २ लिखावे। खयाल रहे कि श्रावगी या सरावगी कोई जाति नहीं है। श्रावगी खंडेलवालको ही कहते हैं इसलिये अपनेको श्रावगी कहनेवाले खंडेलवाल ही लिखावे।

* * *
 वर्षभरमें अभी देहलीका जैन संघ पधार था तब उसमें महान् जैन सस्नी हिन्दी साहित्य प्रेमी अमृतसर-ग्रन्थमाला। निवासी लाला उम्मेदसिंह-मुमदीलालजी भी थे।

पाठकोंको याद होगा कि आपने ही प्रथम १००१) देकर ब्र० शीतलप्रसादजीको उत्साहित किये थे कि वे माणिकचंद्र संस्कृत ग्रंथमालाके लिये १००००) का फंड कर देवे इससे ब्रह्मचारीजीने कोशिश करके कणसे कम सौ २ रुपये मरवाकर ये १००००) बहुत अल्प समयमें इकट्ठे कर दिये थे जिससे माणिकचंद्र ग्रंथमालाका कार्य तो अब उत्तरोत्तर वृद्धिरूप चल रहा है पान्तु हिंदी भाषाके ग्रंथ भी रुस्ते मूल्यमें सबको मिल सके इसलिये लाखों मुसदी-लालजीका ब्रह्मचारीजीको कहना था कि एक लाख रुपयेका फंड करके एक सस्ती हिन्दी ग्रंथमाला स्थापन कर देना चाहिये और बंबईसे प्रकट करनेका प्रबंध कराना चाहिये, मैं इसमें भी ११०१) देना स्वीकार करता हूँ आदि। इन निवेदन परसे बंबईमें इस बातकी अभी कोशिश की गई और सेठ मुखानंदजी आदिकी सलाह हुई कि मुनि अनंतकीर्तिजीके नामकी ग्रन्थमाला ११००)से स्थापित हुई है उसीका एक लाखका फंड करके इसी नामसे हिंदी (दि० जैन) ग्रन्थमाला प्रकट की जावे। इससे उसी बहुत बंबईमें चंदा मरा गया तो ११०१) सेठ मुखानंदजीने और दिये तथा और भी कई एकमें मर कर करीब ६०००) मरे गये हैं। इसके समापति सेठ मुखानंदजी और मंत्री बाबू माणिकचंदजी बैठाटा और सेठ रामगठ बह-जात्या हुए हैं। अफिस हीराबागमें ही रखती गई है। यदि बंबईवाले कटिबद्ध होकर प्रयास करे तो एक लाख रुपयेका फंड होना फुटवही बात नहीं है। हृदयरे धेतांबरी भाइयोंमें देवबंध

लालमाईका ऐसा ही फंड है और वे अनेक सस्ते ग्रंथ प्रकट करते हैं उसी प्रकार इस ग्रंथ-माला द्वारा लागतके मूल्यसे हिंदी भाषाके ग्रंथ प्रकट होनेकी बड़ी भारी आवश्यकता है । यह भी निश्चित हुआ है कि जो माई इस फंडमें १००) देगे उनको प्रकट होनेवाले सब ग्रंथ बिना मूल्य मिलेंगे । हम हमारे पाठकोंको आग्रह करते हैं कि वे इस ग्रन्थपालामें कमसे कम सौ २ रुपये भेजकर अपना स्थायी नाम लिखा देंगे ।



इकत्र कोन्फरन्स नहीं हुई-दिगम्बरी तथा श्वेतांबरी माईयोंके श्री शिखरजी सोना-गिरीजी आदि तीर्थोंके स्रवहे आपसमें निवृत्तनेका विचार करनेके लिये पटनामें गत गौस सुदी ११को महाराष्ट्र महादुरसिंहजीके सुभाषित्वमें दोनों पक्षके मुखियाओंकी मीथिंग हुई थी जिसमें दिगम्बरी-छाला जम्बूसदाजी, लाला देवीसहा-यजी, बा० बलदेवदासजी, सेठ हरसुखदासजी, और बाबू हरनारायणजी, तथा श्वेतांबरी-महाराज बहादुरसिंहजी, राय कुमारसिंहजी, बाबू लक्ष्मी-चंदजी सिक्की, बा० मोतीचंदजी और बा० कुत्रासचंदजी कुठारी उपस्थित थे और उसमें इसी कार्यके लिये इकत्र कोन्फरन्स पात्र सुदी ११-१२-१३को बुलानेका निश्चिन हुआ था और वह होनेवाली भी थी, सब तैयारियां हो भी चुकी थीं पान्ठ अहमदाबाद वालोंने तार

भेजे कि हपारे नगरसेठ कस्तुरमाई इंग्लंडमें हैं और उनकी अनुपस्थितिमें हम राय नहीं दे सकते, वे आवे वहांतक यह कार्य स्थगित रखे आदि इससे यह काफ़ैस कलकत्तेवालेको बंद रखनी पड़ी अर्थात् गत माघ सुदी ११को कल-कत्तेमें यह इन्ध्र काफ़ैस नहीं हो सकी थी । क्या नाने खब कब मुहूर्त खाता है ?

गजपंधाजी-और श्री पावागढमें माघ सुदी १२ को वार्षिक मेला हो गया ।

दाहोद जैन पाठशाला-का दूसरा वार्षिक अधिवेशन मत ता० २को हुआ था जिसमें पं० दीपचंदजी पस्वार और वीर कालारामजी खास पवारे थे । पांच बालिकाओंने स्त्री शिक्षा पर एक संवाद ऐसा उत्तम सुनाया कि एक ब्रह्मग महाशयने उसी वक्त कहा कि मैं अपनी कन्याको कलसे इस पाठशालामें भेजूंगा । बाल-कोंको रुपाळ पुस्तकें मिठाई आदि वितरण किये गये थे । जैन अनेन संख्या १००० से भी अधिक थी उनका भी इलायची सुगारीसे सत्कार किया गया था तथा उस दिन नगरकी सैन्य भी हुआ था । पं० फूलचन्दजी पाठशालाका कार्य उत्तमतासे चला रहे हैं ।

विहार लड़ीसा-प्रा० दि० जैन खंडेलवाल समाजी प्रथम बैठक श्री समेदशिखरजीमें फाल्गुन सुदी १२-१४-१५ को (आष्टानिका पर्वमें) होगी । स्वागत मंत्री रामचंदजी सेठी सु० गिरीढी (हनारीबाग) हैं ।

कारंजा-महावीर ब्रह्मचर्याश्रमको सेठ तल-कचंद सावताराम जौहरी बम्बईने १५००) दान किये ।



रीवाँके जैन मित्र मंडलनं निम्न लिखित अनुकरणीय १४ प्रस्ताव पास किये हैं—विशयती दक्षा नौवाना, मधु (शहद) नहीं खाना, परस्त्री सेवन नहीं करना, वेश्या गपन नहीं करना, आतशबाजी नहीं चढ़वाना, बिना छना पत्ती नहीं पीना, बाजारकी पूटी आदि अन्नके पदार्थ न खाना, सोडाबोटर डिमलिट न पीना, तमोलीकी दूकानका पान न खाना, कसाईके हाथ लेन देन व्यापार न करना, जहां जिनमंदिर हो बिना दर्शन मोजन नहीं करना, जैन विधिसे विवाह करना तथा मांग तमाखू बोड़ी आदि मादक वस्तु सेवन नहीं करना ।

सूचना—महासभाके महामंत्री राजा भगवानदासजी बडनगर (मालवा) सूचित करते हैं कि कानपुरमें होनेवाले अधिवेशनमें पेश करनेके लिये प्रस्ताव हमें १९ मार्च तक भेजने चाहिये, मादको जो प्रस्ताव आवेंगे उन्हें यदि हम निषम नें. १९के अनुसार पेश न कर सकें तो प्रस्तावको किसी प्रकारकी शिकायतका स्थान नहीं मिलेगा ।

इन्दौर—में सेंट हुकमचंदजी महाविद्यालयमें पारितोषिक वितरणका उत्सव गत ता. ३० को होम विनिस्तर मि० यकाशके समापनत्वमें हुआ था जिसमें उत्तीर्ण छात्रोंको नगद रुपये इनाममें दिये गये थे । कागत और प्रीति मोजन भी हुआ था ।

माणिकचन्द्र—संस्कृत ग्रन्थमालामें जिन २ धनिकोंने सौ २ रुपये दिये हैं उनको भागतक प्रकाशित सभी १६ ग्रन्थ भेटमें भेजे गये हैं और अब भी जो माई सौ २ रुपये सहायता

करेंगे उनको ग्रंथमालाके सब ग्रन्थ भेटमें मिछेंगे । इस विषयमें मंत्री नाचूगम प्रेमी हीराबाग, बम्बईसे पत्रव्यवहार करें ।

चम्बरई दि० जैन प्रा० सभा—का अधिवेशन सोलापुरमें करनेका निषेजण भी मित्र था परन्तु सोलापुरवाले णय करते हैं कि इन साल दुष्प्राज्ञ आदिके कारण हप अधिवेशन नहीं करा सकते आदि । इससे सोलापुरमें तो अधिवेशन होनेकी उम्मेद नहीं है ।

बड़वानी—का मंज गत ता. १९ से २२ तक हो गया । बड़वानी पाठशाळाका जस्ता भी हुआ था । बड़नगर अनायासको ११००) सहायता मिली तथा बाबगनाजीके लिये एक आना सैकड़ा निवालेका प्रस्ताव हुआ था उसकी वसुली हुई थी ।

दक्षिण महाराष्ट्र जैन सभाकी वार्षिक बैठक रावनिधिमें शैर सुदी १९ को मि० चौगुलेके समापनत्वमें हो गई ।

माणिकचन्द्र ग्रन्थमालाके लिये निम्न हस्तलिखित ग्रन्थोंकी आवश्यकता है—रत्नकरण्ड श्रावकाचार प्रभावचन्द्रकी सं० टीका, नीतिवाक्यामृत, न्यायकुमुदचन्द्रोदय, न्यायविनिश्चयालंकार, प्राकृत व्याकरण शुभचन्द्रकृत, पंचसंग्रह अमितगतिकृत, वर्द्धमान नीति अभितगतिकृत और आदिपुराण शुष्मदंत कविकृत । पत्र व्यवहार पं० नाचूगमप्रेमी मंत्री, हीराबाग, बम्बई ।

कौंसिलमें जैनी—असहयोगके कारण नई कौंसिलका बहिष्कार हो रहा है तब नई कौंसिलमें निम्न लिखित दि० जैन भाई चुन गये हैं—मि० लहे वेल्गाव, और प्यारेलाळ वेरिस्टर मेत

वाइसरोयकी कौंसिलमें, वा० शिवचाणशाल इलाहाबाद मुक्तप्रांतकी कौंसिलमें और चौगुले वकील बम्बई प्रांतिक कौंसिलमें ।

उपाधियां—नये वर्षमें दि० जैनोमें वा० सखीचंदजी सुप्रि० पुलिस्तो कैपरे हिन्दका सुवर्णपदक, तथा दीवानचंद जैन गुरुदासपुर, ला० पारसदास खजान्ची दिहली, वा० हजारीलालजी दानापुर, बाबूरामजी ठेठेदार साइक्रोटको रायसाहयकी उपाधि मिली है ।

पड़नगरके जैन अनायालयकी दशा उत्तरोत्तर वृद्धिरूप है । अभी द३ अनाथ हैं । पान्ठ आमदनी कर्ष है इस लिये दारोंको मदद देनी चाहिये । सौ २ लपयेके (१०००) शेर धनिकोंको भर देने चाहिये ।

केशलोंच उत्सव—दुरली (बारदाड) में शिवरात्रिका मेला जिसमें कि बरीब दो लाख आदमी जमा होते हैं उस मौकेपर फाल्गुन वदी १४ को श्रीमान् त्यागी ऐलक पन्ना-लालजी महाराज केशलोंच करेंगे । वहां शिवचाणशाल भिगापत २५ गीजाके ५५ भक्त हुए हैं और अरने मठमें ही बड़ा पत्थरी उत्सव करके महाराजका आप केशलोंच कावेंगे ।

नकशा जीवदया—महात्मके जीवदया विभागके मंत्री मास्टर दीपचंदजी, जैन बोर्डिंग स्तलामने जीवदयाका एक बहुत उपयोगी नकशा बनाकर प्रगट किया है उसमें हिमके अनेक भेड़ोंका खुलासा है । यह बिना मूल्य मगाकर जीवदयाका प्रचार करना चाहिये ।

भारत जैन महामंडल—नागपुरकी

बैठकमें निश्चिन हुआ है कि जैन पब्लिक हाउस आराकी मददके लिये (१००००) का फंड एकत्र करना तथा दिगम्बर ग्रंथ च० शीलूचप्रसादनीको और श्वेतांबर ग्रंथ धर्मविनयसूत्रको दिखाकर प्रकाशित करना ।

प्राचीन तीर्थ खंडगीरी—यदि आप शिखानीकी यात्राको जावे तो वहांसे मुबनेश्वर स्टेशनकी टिकट लेकर श्री उदयगिरि खंडगिरि तीर्थको अवश्य २ जाव । यह तीर्थ मुबनेश्वरसे ४ मील ही है । इस क्षेत्रमें प्राचीन चौबीस भगवानके दर्शन करके चतुर्थ कालकी याद आप-को आवेगी । महाराज ज्ञानेश्वर एक जैनी राना हुए थे, उनका १६ गज लम्बा और ६ गज चौड़ा शिखालेख देखकर आद मुग्ध हो जावेंगे । हजारों मचान सोजी इन लेखको २१०० वर्षका बनाते हैं । नई धर्मशास्त्रा और नीर्णोद्धारका कार्य भी पूर्ण होने आया है । मुनीम नौकर आदिवा भी उत्तम प्रबंध है ।

तनमुखलाळ पांड्या ।

उड्डेसर—(मैनपुरी) में फिर जैन सम्मेलन आगामी चैत्र सुदी ११से १५ तक ला० मुन्नी लालजीकी ओरसे होनेवाला है इस अवसर पर पद्मावती परिपट्टका अधिवेशन बड़े समारोहक साथ होगा ।

पड़नगरके जैन अनायालयका सेठ आनंदी-लालन मंदसौरने निरीक्षण करके अतीव संतोष प्रकट करते हुए १५ दिन तक सब अनाथोंको अपनी तरफत भोजन कराना स्वीकार किया । तथा सेठ मदनमोहनलालनी उज्जैन बालकोंके लिये मुनिकोर्भे ट्रस्ट बनवा रहे हैं ।



वम्बईमें जैन स्वयं सेवक-सम्बन्धीकी दि० जैन वर्षवर्द्धिनी समाके उत्साही नव-युवोंने २१हीनेसे दि० जैन स्वयंसेवक मंडल स्थापित कर लिया है जिसमें ४० भेम्बर हैं । इसके मंत्री निरंजनलाल जैन (ठिकाना हरनापसिंह मंगतराय ३८७ कालकादेवी रम्बई) प्रकट करते हैं कि कोई संव तीर्थयात्रा आदिका रम्बई पवारे तो कपसे कम आठ दिन पहले हमको खबर कर देंगे तो ठहरने आदिके लिये सब प्रबन्ध करवा देंगे और यथाशक्ति संवकी सेवा करेंगे ।

युंदी-के सेठ दौलतराम कुन्दनमलजीका गत ता. १३को स्वर्गवास होगया । क्या आपके कुटुंबीगण सेठजीके स्मारकमें बड़ा मारी स्थायी विद्यादान नहीं करेंगे !

छात्रीभां त्रिलोडसार पूजन-छात्री (पंडितरा)- भा था. नरसीदास लक्ष्मीचंद तक्ष्मी सेठ नरेश-तमदासना पूज्यार्थे श्री त्रिलोडसारं बुद्धत पूजन भाद पद २ थी शगु सुद ३ सुभी मोटा हाड-भाड्यी यनार छे. शगु सुद १ स्वामीवत्सल, सुद २ लक्ष्मीनानी पदधोडे। तथा सुद ३ ने हिन भदिर पर ध्वनरोड्यु, पूजन पूज्यार्थत अने स्वामी वत्सल यशे. सर्वे भाधज्योने दर्शने पधा-रुं नेधज्ये. छात्री पंडितरानी पासे आगवा रेश-नथी नानी लाधनभा रेशन छे तेभज गोधरा लाधनभा छायापुरी रेशनथी नवाय छे.

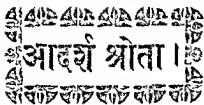
ब्रह्मचर्याश्रममें उचित प्रस्ताव-श्री ऋषभ ब्रह्मचर्याश्रमके ब्राह्मचारिणोंकी एक बार वृद्धिनी सभा है जिसकी एक मीटिंगमें प्रस्ताव पास हुए हैं कि (१) विदेशी कपड़ेका बहिष्कार करना अर्थात् आगेसे जो कपड़े पहनेंगे देशी हों पहनेंगे और उपमें भी खास गाढेका प्रयोग अधिक किया जायगा, (२) तारीखका बहिष्कार

करना अर्थात् लिखनेमें तिथियोंसे ही काम लेना, (३) मेन कुर्सी आदि अंगरेजी ढंगका बहिष्कार करना क्योंकि इसमें खर्च बहुत होता है ।

छिंदवाडा-में नागपुर प्रांतिय दि० जैन खंडेलवाल समाका पंचम अधिवेशन पाच सुदी १से ७ तक श्रीमान् रा. व. सेठ टीकमचंदजी सोनी अनमेरके सपापतित्वमें बड़े समारोहके साथ होगया । इसमें न्या० पं० मवलनलालजी शास्त्री, व० शीतलप्रसादजी, कुंवर दिग्विजय-सिंहजी, पं० तुलसीरामजी काव्यतीर्थ आदि विद्वान् भी पवारे थे । अर्धहयोग और जैनोंकी फर्नपर बहुत जोशीले व्याख्यान हुये थे । (८९१) में सेठ हनारीलालजी छिंदवाडाने कलशकी बोली ली थी । बदनगर भनायालयके छात्रके उपदेशी मनन और ह्याप्ते अच्छा आनन्द आता था । कुल २२ प्रस्ताव हुए जिसमें महत्त्वके ये हैं-मारवाडमें कुरीतियोंको रन्द करनेके लिये एक डेप्युटेशन भेजना, बानपुर महासभामें १५ प्रति-निधि भेजे जावें, आगामी अधिवेशन वर्षामें किया जाय, नागपुरमें एक विद्यालय और छात्रालय समकी ओरसे खोला जाय, जिसमें संस्कृत धार्मिक और औद्योगिक शिक्षा खास दी जाय आदि । औपवालय खोलनेके लिये ५०१ सेठ मोहनलालजी रायपुरने दिये ।

खण्डेलवाल जैन हिते -नामक पाक्षिक पत्र हाएक पंचपौनी पाच सुदी ५ से पुस्तकाकर प्रकटहोने लगा है । संपादक पं० पन्ना-लालजी सोनी हैं । वार्षिक मूल्य सिर्फ २) है । हीराबाग, बंबईसे मिठ सकती है ।





(ले० मास्टर दीपचन्द्रजी पवार, नरसिद्धपुर ।)

सन् १९१९ ई० मे बनारस नगरीमें श्री भागीरथीके तटपर जब हिन्दू विश्वविद्यालयका प्रारंभिक मद्दुर्त था, उस अवसरपर भारतहिंतेपी अनेकों राजा महाराजा और नेतागण पधारे थे उस समय दर्शकके रूप इन पंक्तियोंका लेखक भी गया था । और श्री स्याद्वाद महाविद्यालय में ही ठहरा था, उन दिनों उक्त विद्यालयके सुपरिन्टेन्डेन्टके पदपर पं० उमरावसिंहजी (ब्रह्मचारी ज्ञानानंदजी) प्रतिष्ठित थे, और आपहीके प्रयत्नसे एक दिन स्याद्वाद विद्यालय में मटारामा मोहनचंद, करमचंद गांधीका भी स्वागत किया गया था ।

जब गांधीजी पधारे और उनका स्वागत हुवा, तब उन्होंने संक्षिप्त रित्वा अपना पापण इस प्रकार किया था, कि भाईयों, मुझे लोम जैनी समझते हैं, परन्तु मैं जैन नहीं हूं, मैं ब्रह्म संप्रदायको माननेवाला वैष्णव हूं । परन्तु जैन धर्मको उत्तम मानता हूं क्योंकि जिस अवस्थाको मैं पहुंच सका हूं तथा जो कुछ भी टूटा फूटा कार्य अपने देश भाइयोंके लिये मैं कर सका हूं व कर रहा हूं, तथा उसमें जो सफलता प्राप्त हुई है और भविष्यमें भी होनेकी सम्भावना है इस सबका श्रेय जैनधर्म ही को है । क्योंकि जब मैं विलायत बेरिस्टरी पढ़नेके लिये जाने लगा, तो मेरी माता मेरेको

एक जैन गुरु (श्रीमद्भानुचंद्रजी) के पास लिवा ले गई और उनसे कहने लगीं कि महा-
-राज, यह बालक नहीं मानता और परदेश जाता है, आप इसको कुछ बोध दीजिये, इसपर उन विशालहृदय साधुजीने कहा कि तुम जात हो तो प्रसन्नतासे जावो परन्तु देखो, एक तो किसी भी प्राणीको मत सताना (अहिंसाश्र-
-वत पालना), दूसरे अमृत्य भाषण नहीं करना (सत्यपर दृढ रहना), तीसरे किसीका धन हरण नहीं करना, (न्याय पूर्वक आजीविका करना); चौथा स्वस्त्रीके सिवाय अन्य समस्त स्त्रियों मात्रकों माता बहिन तथा वेत्री-
-वत् समझना, पांचवें अतिशय लोभमें न पड़ना इस प्रकार सम्बोधन पाकर मैंने साधुजीको नमस्कार किया और उद्देशित कार्यमें लग गया । यद्यपि मैं विदेशोमें रहा तो भी गुरु शिक्षाका यथाशक्ति पालन करता रहा, और जब दक्षिण आफ्रिकामें अपने भाइयोंके साथ वहांकी सर्कारने अत्याचार करना प्रारंभ कर दिया, तब मुझको अहिंसापूर्वक सत्याग्रह करना पड़ा, और इसी सत्याग्रहके साग्हने वहांकी सर्कारको शिर झुकाना पड़ा । मैं दृढ़तापूर्वक कह सकता हूं कि सदैव सत्यकी ही जय होती है और जय प्राप्त करनेके लिये किसी स्थूल शस्त्रकी आवश्यकता नहीं है । इसके लिये केवल एक अहिंसा (Non- Injury) ही शस्त्र बम है । आत्मबल ही इन सबमें मुख्य है । इमन्त्रिये मनुष्य मात्रको स्वान्मबल पर स्थिर रहना चाहिये । इसीके आचार पर नडेमें बड़े अचोकिता कार्य भी सरल और सफल हो सके हैं ।



आप लोग जैनी हैं और आप लोगोंने मुझको मान दिया है, इसके लिये मैं आप लोगोंका आभारी हूं। मैं इसीके साथ एक बात और भी कह देना चाहता हूं कि आप लोग वैश्य बंधु हैं और वैश्योंका व्यवसाय वाणिज्य है, इसलिये देशका वाणिज्य बढ़ाना आपका मुख्य कार्य है। विशेष बात है कि शायद बहुतसे जैनी खेती करें तो बहुत कुछ जीवोंकी रक्षा हो सकती है क्योंकि जैनी लोग अहिंसा धर्मके जानकार होनेसे बहुत यत्नपूर्वक कार्य कर सकते हैं, जब कि अज्ञान मनुष्य यत्नाचार रहित जोतने बोने कांटने गाहने आदिके समय अधिक हिंसा करता है। अब मुझे अन्य कार्यकी चिन्ता है इस लिये जानेकी रजा लेता हूं।

मान्यवर बन्धुवो, आज ९ वर्षोंके पश्चात् यह बात आपके उपस्थित करके यह बताना चाहता हूं कि हमारे शास्त्रोंमें हंसमृतका बड़ा चालनी पापान गौ आदि अनेक जातिके श्रोता बताये हैं उनमेंसे गौ जातिके श्रोता यदि प्रत्यक्ष दृष्टिगत हुये तो इस समय वे एक महात्मा मो० क० गांधीजी हैं, कि जिन्होंने केवल एक बार ही एक साधु महात्माका प्रसाद (शिक्षा) प्राप्त करके उसे केवल आजन्म पालन ही नहीं किया, किंतु जगतका उपकार करते हुये अपने शिक्षकका महात्मा पद भी इह लोके प्राप्त किया। अहा! धन्य है ऐसे श्रोताको जो एकवार में ही उपदेशका श्रवण कर तदनुसार आचरण करने लगते हैं। वास्तवमें इसीका फल है कि वे श्रेय और मफ-

लता पाते हैं, जब कि हम लोगोंको नित्य प्रति जी महाराजकी आवाजें लगाते लगाते प्रायः जीवनका भी अंत आगया, तो भी अक्षरका न तो बोध ही हुवा, और न हमारी अतरङ्ग तथा बाह्य प्रवृत्ति (आचरण, चरित्र)में फेर पड़ा। सत्य ही कहा है—

जलमें पथरी घुग रहे, मिटे न तनकी आग ।

संगतमें छुपे नहीं, तिनके बड़े अभाग ॥

क्या हुआ जो अनेकों शास्त्र सुनें, नित्य देवदर्शन किये, समस्त तीर्थोंकी रज मस्तक चढ़ाई, तिलक छापा लगाये, पंथ और सम्प्रदायोंके फेरमें पड़ पड़ कर झगड़े उठाये, परन्तु इस सबसे क्या कमाया जो परभवमें साथ जायगा, और मोक्ष मार्गमें कौम आयगा। हाय ! आपका और तो क्या बाह्य मिथ्यात्व (मिथ्या देव, धर्म, गुरुकी प्रतीति) भी तो न छूटा, जो कि धर्मका मूल पाया है फिर व्यसनोंसे भी विरक्ति (अरुचि) न हुई, पाप (पंच) तो छूटना दर किनारे रहा। जब कि हमारी यह दशा है तो हम किस प्रकारसे अपने धर्मकी प्रतिमा लोगों पर डाल सकते हैं ? हमारी बुद्धि तो लड़ने झगड़नेमें ही इति हो गई, हमारे साम्प्रदायिक झगड़े, तीर्थोंके झगड़े, छापेके झगड़े, आज्ञायके झगड़े, देव-द्रव्यके झगड़े, मंदिरोंके झगड़े, कौटुम्बिक झगड़े, कहां तक कदें ? झगड़ोका अंत ही नहीं आता, फिर भी तुरी यह कि नित्य पाठ पढ़ते सुनते सुनाते हैं यह कि "आत्मके अहित विषय कपाय, इनमें मेरी परिणति न जाय"। कहां यह गांति स्तवन ? कहां यह परम गांति मुद्राकी दर्शनेवाली धी



परम दिगम्बर शांति मूर्ति ? कहा वह विषय कपायोसे विरक्ति उत्पन्न करानेवाला जिन शासनका उपदेश और सो भी नित्य प्रति दिनमें अनेकवार । और हाय ! कहा यह हठ, पक्षपात, तीव्र कपाय, कलह, वैर विरोध ? यह आश्रय नहीं तो क्या है ? वास्तवमें सत्य ही कहा है—

एक भवभा में सुना, जलमें लगी लय ।

जैन वमको पाय कर, सेने विषय कपाय ॥

सुज्ञ विज्ञ बन्धुबो, अन केवल जी महा राम, सार, बाह बाह धन्य है, क्या बात है, जी, इत्यादि आवाजें लगानेकी मिलकुल भी आवश्यकता नहीं है । इन पाषाण तुल्य, भैसे तुल्य, चालनी तुल्य और चिकने घड़ेके तुल्य श्रोताबोंसे न समानका, न धर्मका और न उन ही विचारोंका कुछ भी हित हो सक्ता है, किन्तु हमको चाहिये श्रोता श्रीयुक्त महात्मा गांधी जैसे कि थोडा भी सुने, एक बार भी सुने परंतु उस पर अमल करें, और संसारको अपने आचरणसे यह बता दें कि उपदेश सुनना इसे कहते हैं । यह अमुक महात्माका या अमुक शास्त्र वा धर्मका उपदेश है । गिरधर कविकी स्त्रीने कहा है—

वह गिरधर कविराय बात चतुर्लोक ताई ।

करतूती कह देत आप कहिये नहिं चार्द ॥

वास्तवमें कोई भी पुरुष कहनेसे बातें बनानेसे नडा नहीं होता है किन्तु बडा होता है अपने कर्तव्योंसे, क्योंकि—

बड़े उदाई न करें, बड़े न बोलें बोल ।

हीरा मुखसे ना कहें, बडो हमारो मोल ॥

यहां मैं यह भी जता देना आवश्यक समझता हू कि कहीं कोई यह न समझ लेवे कि नित्य प्रति सुनना, पूजा, दर्शन, जाप्य करना, इत्यादिसे कुछ लाभ नहीं है, ~~स~~ लिये इसे छोड देना चाहिये । नहीं, मेरे ऐसा आशय भी नहीं है और न ऐसा करना ही चाहिये, क्योंकि इस उक्तिके अनुसार कि 'रसरी आवत जाततें सिल पर परत निशान' न जाने किस समय किसको कुछ बोध लग जावे, इस लिये यह अभ्यास व नियम रूपसे जो होता है सो तो ठीक है, परंतु इससे सतोषित हो नाना उचित नहीं है किन्तु इसमें सुधार (धारणा)की आवश्यकता है उस ओर ही ध्यान आकर्षित किया है । आशा है कि कुछ भी आदर्श ग्रहण कीजियेगा ।

नवीन ग्रन्थ—

चौसठ ऋद्धि पूजा—

तैयार है ऐसी सुचना प्रकाश करने बड़े महिनोसे प्रसूत कर रखी थी । परंतु वह अब तैयार हुआ है । इसमें पति श्री स्वल्पचन्दनी विरचित चौसठ ऋद्धि पूजा—अर्थात् वृद्धन गुर्वान्छी पूजा, गणधर पूजा, बुद्धि ऋद्धि धारक मुनि पूजा, चारण ऋद्धि मुनि पूजा, विनिष्ठ ऋद्धि मुनि पूजा, तपोतिशय ऋद्धि धारक मुनि पूजा, बल ऋद्धि धारक मुनि पूजा, ओषध ऋद्धि धारक मुनि पूजा, आदि पूजाएँ 'हिन्दी पद्य' में हैं । बडे ठाईर, मसाला, रु० १२० और मूल्य बारह अन्नने ।

मगानेका पता—

मैनेजर—दि० जन पुस्तकालय—सूरत ।

एकता ।

Union is power.

एकता ! आस्तवमे देखा जाय तो तू ही सर्व शक्तिमान है । तू ही स्वतंत्रता-सुखका धर, का मूल कारण है । तेरे बिना स्वाधीनताका सुख स्वप्नमें भी नहीं मिलता है । तू ही तो सच्चे सुखकी जननी है । तू ही प्रशंसा और गौरवका स्थान है । तेरी महिमा अपरम्पार है । तेरा प्रताप अखंड-अक्षुण्ण और सर्वव्यापी है । तेरा महात्म्य समस्त सत्ताको विदित है । तू सत्ताके दुःखोंको दूर करनेके लिये मूल मंत्रके समान है । तू अन्याय और अत्याचारको दूर करनेके अर्थ एक अमोघ अस्त्रकी तरह है । तू सभ्यताकी जड़ है । जब निर्बल लोग अन्याय और दुःखोंसे पिष्ट जाते हैं तब वे तेरी ही सहायतासे सुखको प्राप्त करते हैं । दुःखियोंको हकोंकी रक्षा करनेवाली और ध्यापारियोंको ईच्छित सुख देनेवाली है । जिस देशने, जिस जातिने तुझे अपनाया वह आज उत्तम-शिखर पर बैठे हुए आनन्दसागरमें मोने लगा रहे है । जिस देशने-जिस जातिने तेरा अनादर किया, तेरी महिमाको नहि जाना, उनका सत्तामें कुछ भी आदर नहीं है-वे तेरे उपासकोंकी गुरुभगिरी करके जीवन बिना रहे हैं । वद्वत्सी जातियोंका तो तेरे कृपापात्र न बननेके कारण अस्तित्व ही भिट गया है । इसी लिए तो तू भयकर बढ़ला लेनेवाली भी

कहाती है । देख, जब तक भारतवर्षके मनुष्य तुझे अपने हृदयमें स्थान देते रहे तब तक वे समृद्धिशाली, बलवान और सुखी रहे परन्तु जबसे तुझसे नाता छोड़ा तबहीसे उनपर धन-घोर विपत्तियां आने लगी । वैचारिक धन लूटा, धर्म लूटा, स्वाधीनता लूटी, यहां तक कि सर्वस्व ही लूट गया । देख, आज इंग्लैन्डका मजदूर दल तेरे ही बलके सहारे गर्ज रहा है । जगतमें उत्पन्न हुए बड़े १ चीरोंके यज्ञस्वी और विजयी होनेका मूल कारण तू ही है । जब तक नेपोलियनकी सेनामें एन्ता रही तब तक वह अजेय रहा परन्तु नहा तू उसकी सेनासे विदा हुई कि वैचारे नेपोलियनका ही नहीं, सारे फ्रांस देशका सत्यानाश हो गया । देख, क्रौरव पांडवोंमें तेरे न रहनेसे कितना भीषण परिणाम हुआ । इसी कारण तो लोग कहा करते हैं कि “ फूटका हो सत्यानाश ” । तू ही उत्तमिनी जड़ है । तेरे बिना राजनैतिक, सामाजिक, किसी भी प्रकारकी उत्थिति न तो कभी हुई और न कभी होयेगी ॥

भारतवर्ष शताब्दियोंमें, तेरे महात्म्यको हृदयसे विस्तार देनेके कारण, अतृप्त दुःख भोग रहा था । उसे इस दुःखसे मुक्त होनेकी कोई आशा नहीं थी । परन्तु उमे, ईश्वरकी ईच्छा और शुभ भाग्योदयसे, इस अधतारमय जीवनमें एक प्रकाश दीख पड़ा-उपने तेरी महिमाको जान लिया, तुझे अपने हृदयमें फिर स्थान दे दिया । यह सन- इसीका फल है कि आज हिन्दू मुसलमान एक होकर उत्तमि शिखर की ओर शीघ्रतासे बढ़ जा रहे हैं ।



जैन धर्मानुसारे भी इधर कुछ दिनोंसे 'उन्नति' 'उन्नतिकी' मयुर स्वर सुनाई पड़ रहा है । परन्तु भला तेरे बिना उन्नति कहाँ ? यहाँ तो अभी तक तेरी बैरिणी फूटका साम्राज्य छाया हुआ है । जाति-पाँतिके झगड़े पड़े हुए हैं जिधर तिधर "ढाई चावलकी अलगर सिचड़ी पक रही है" । यही सब देखकर यह भय हो रहा है कि कहीं ऐसा न हो कि त जैन जातिसे कोई भयंकर बदला ले ले अर्थात् दसका अस्तित्व ही मिटा दे । परन्तु हम तो तुझसे बढ़ी प्रार्थना करते हैं कि त जैनियोंको उनकी नष्ट करनेके बदले निम्नलिखित उपदेश देकर उनकी भगा कर, उनकी रक्षा करनेका यश प्राप्त करे—'जैनियों ! यह समय सोनेका नहीं है । संसारकी वर्तमान अवस्था पर विचार करो और उसीके अनुसार अपनेको बनावे । यदि तुम्हें संसारकी उन्नतिशील जातियोंमें स्थान पानेकी ईच्छा हो, यदि तुम गुलामगिरि पर जीवन बितानेको पसंद नहीं करते हो तो आलस्यको छोड़ो—मुशिक्षा पर ध्यान दो—मेरा आदर करो, तीर्थोंके झगड़े मिटाओ, स्वार्थको भस्म कर दो—दृढयुक्ती संकुचितताको दूर कर दो, दिगम्बर—श्वेताम्बर दोनों सम्प्रदायोंके अनुयायी परस्पर गले लग कर कहो कि हम दोनोंका धर्म एकसा है—हम दोनों ही एक ही ईश्वरकी आराधना करते हैं, फिर हमारा तुम्हारा झगड़ा कैसा ? " आओ अपने दोनों स्वधर्मनिष्ठ होकर उन्नतिकी ओर अग्रसर हों और एक दफे फिर सारे संसारमें जैन धर्मकी दुदुभी बना दें । " वस्तु ।

जैन धर्म पर आघात

और

हमारी अनभिज्ञता ।

हमको 'सुधारक' आगरा तः १७ जनवरी १९२१ ई० में निम्नलिखित समाचार पढ़ कर अत्यंत खेद हुआ है, कि गत दिसम्बर मासकी ताः १४-१५-१६ और १७ को झाँसी जिलेकी महारानी तहसीलमें बड़ाके कमिश्नर चलेफ्टर साहबोंके दौरे हुये, उस समय मु० महारानी पडाव क्षेत्रपाल पर (जहा पर कोटेके बीचमें एक बड़ा जैन मंदिर और परमाला है) ०३२ फाटके मुकाम फिये इतना ही नहीं किंतु उन परम पवित्र देवस्थानको जहाँ अहिंसा परमो धर्मकी ध्वजा फहराती थी, इनके कर्मचारियों द्वारा काफी तादादमें बरू और मुर्गियोंकी बलि (हिंसा) करके लालित किया गया । जहाँ पर दशांग मुगंधित धूपादि पवित्र द्रव्योंसे हवन होता था, वहाँ पर इनकी हत्यारी डेगोंमेंमे खोलते हुये मांस और अंडोंकी बदबू गूँज रही थी । खेद है कि यह अत्याचार, यह घोर अन्याय, उस न्यायकी घोषणा करनेवाली, शांतिप्रिय करनेवाली ब्रिटिश सरकारके प्रधान कर्मचारियोंके द्वारा जैन धर्म पर किये जाते हैं, और सारी जैन समाज हीके नहीं किंतु भारतके सभी धर्म समानोंके दिल दुखाये जाने हैं । जिस महारानी विक्टोरियाने सन् ५७ की घोषणामें यह घोषित किया था कि किसी धर्म पर जोई आघात किसी प्रकार नहीं पहुँचवा चाहिये, इत्यादि । आज उसी महारानीकी आज्ञाको भंग

करनेवाले थे आफिसर लोग इस प्रकार धर्म पर आव्रमण करें, और वहाँके जेनी मारे डरके चुपकी लगाये बैठ रहें, यह दुःखकी बात है, यह कार्रवाई कर्मचारियोंने खास कर जेनियोंके दिल दुखाने हीने लिये की है। यदि ऐसा न होता तो बैशन बागमें जहाँ प्रायः पहिले साठव लोगोंके मुकाम हुआ करते थे और जो मुकाम खास करके इस समय भी साफ कराया गया था, वहाँकी सड़के बेगारी दीन चमारोंने सुध-राई थी, क्यों नहीं मुकाम कराये गये ? और यही देवस्थान ही क्यों पसंद किया गया ? क्या इछ कर्मचारी आफिसरोंके दो दिनोंके आराम व पसंदगीके लिये सारी जैन समाजके हृदयोंको दुखाना और उनके धर्म पर आघात पहुंचाना ही न्याय है ? इसके सिवाय रसद आदिमें भी वहाँके बैश्यों तथा अन्यान्य प्रजा वर्ग पर अत्याचारोंकी खबर है। हम अपने जेनी भाइयोंको सूचित कर निवेदन करते हैं कि वे सभाओं व पंचायतियों द्वारा, इस घृणित धर्मघातक कार्रवाईका घोर विरोध करें, और इसकी घोषणा सब ओर कर दें, कि इस प्रकारसे अब धर्मपर भी आघात होने लगे हैं। यह अन्याय जैनियो पर अभी हुआ तो कल हिन्दुओं और मुसलमानों पर भी चार होगा इससे सावधान रहना चाहिये। प. गान्धर्वर जैन पोलिटिकल कानफरेन्सका विरोध करने वाले सज्जनों, विचारों, वह क्या है ? क्या यह केवल धार्मिक राजनैतिक निर्वेकताका ही परिणाम नहीं है ? क्या अब भी आपलो-गोको चेत नहीं आयेगी ?

नोट—(१) यह समाचार समस्त जैन पंचोंको प्रगट कर देना और उक्त कार्रवाईका विरोध करना चाहिये।

(२) यह समाचार “सुधारक” आगस्त १७-१-२१ में दुःखित हृदय एक दर्शक प्रतापके नामसे छपा है। उसमें सम्पूर्ण लेख अवश्य ही पढ़ना चाहिये।

हिंसा और धर्मघातसे पीड़ित—

दीपचन्द परवार, मंत्री,
जीवदया विभाग भा० दि० जैन महासभा।



(ले०—कामताप्रसाद जैन, भलीगंज)

“हिजमें किसको बुलाऊँ, न बुलाऊँ किसको।
मौत अच्छी है इलाही ! कि क्यामत अच्छी ॥”
“हाय ! मैं ऐसा जानती तो सखियोंसे भी
क्यों कहती। पर मुझे क्या मालूम था कि
मेरी सायकी संगीन सहेलियां ही मेरी दुश्मन
न बन जायगी। मेरे अस्तीनमें ही काला सांप
निकल आयागा यह कौन देख आया था।
पर किसीसे क्या ? उन सबको मालूम हो गई
हो जाने दो। मैं तो ऐसा अन्याय कभी नहीं
सहनेकी।....भला क्यों सहूँ ? मानापको तो
बपनी नाक रखनेकी पड़ी है फिर उन्हें
क्या ?....उनके ज़िगरका टुकड़ा, इतने दिनोंके
फट सह यह बड़ा किया हुआ चांदसा गुसड़ा,

चाहे मेरे चाहे जीए, चाहे दुःखी रहे चाहे सुखी,
चाहे चूल्हेमें गिरे चाहे भाडमे !....हां जी !
उन्हें क्या ? स्वार्थके सामने किसीकी नहीं
चलती । और फिर भला जब बातपै बात अटकी
है तब मेरी ओर कौन देखनेवाला ! चाहे मैं
रो रो मरूं, चाहे खाऊँ या न खाऊँ यहां तो
नाक रखनी है । ...कहां मेरी उमर ! कहां उस
बालककी उमर ! मेरे सामने तो वह बालक ही
है । जैसे लछा जैसे वह है । मैंने अपनी मन्था
भी दर्शा दी । पर हाय ! उन पत्थरके कनेजों
पर क्या असर ! वे तो अपनीपै डटे हैं । और
यहां जीवन ही 'नष्ट' हुआ जाता है ।... वस
जब मैं नहीं सहनेकी । लोग बुरा कहेंगे कहने
दो । मेरे पढ़नेको बुरा बताएंगे, बताने दो !
पर मैं तो यह नहीं सहूंगी । हां ! उन्हें क्या ?
अपनी बातोंसे मतलब । चाहे न्याय हो चाहे
अन्याय । ..इसमें बुराई काहेकी ? सत्यमें डर
ही किसका ? फिर पहिले तो विवाहकी यही
प्रतिश्रुति थी ! पहिले तो स्वयंवर भी होते
थे ! जितनी सती साध्वी सीता द्रौपदी हुईं
उन सबने स्वयंवरमें ही तो अपना 'जीवनसखा'
ढूँढ निकाला था । हां ! स्वयं राजमतीने भी तो
अप्रभुके सिवा दूसरेसे पाणि ग्रहण न करनेका
व्रत धारण किया था जिसके आगे उनके
पिता उग्रसेनकी भी कुछ नहीं चली थी !
जी ! इसमें क्या ? मैं भी उस नन्हेंसे बाल
के साथ पाणि ग्रहण कभी नहीं करूंगी ।
या जानबूझ कर अपने पैरमें कुल्हाड़ी मारूंगी ।
ह ! फिर दरद भी मैं भुगतूंगी !....बाद जी
बाद ! यह सब, मैं तो नहीं दरनेकी । पर

हाय ! मैं अब कछुं क्या ? " कौन सुनता
है वहानी मेरी, और फिर भी जवानी मेरी । "
वह तो मेरे पढ़ने पर प्रीति रहे हैं । चाहेते हैं
सुपचाप वह अपनी गरदन का दे । ..गला
कटाना नहीं तो क्या है ? पर देखो तो चारो
ओरसे मेरी ओर आँख लग रही है । आँखोंसे
ओझल नहीं होने देते । सब मेरे पीछे पड़े हुए
हैं । सखियों और देखो पंचोंको भी कुछ तरस
नहीं, कुछ डर नहीं । अरे पगली ! डर और
तरस काहेका ? यहां तो उन्हें लड्डु और वा-
लसाई रानेको मिलेगी । फिर उनके नाते कुछ
भी हो । चाहे हिंसा हो चाहे पाप । वन्शोत्त
तो पेट भरता है । देखा जायगा । सनके दिन
कट जाते हैं । .अच्छा ! कुछ हर्न नहीं ।
मुझे बाहर नहीं निकल जाने देंगे, मत जाने दें ।
पर मैं विवाह नहीं करूंगी ! ..हाय । अब
मौत आनाय तो कैसी अच्छी हो । पर वह भी
बुलाएसे नहीं आती । वे बुलाए हजारों घर
ज्ञानकी फिरती हैं । न आवेगी मत आ ।
भला अब तो इस कोठडीमें ही अपनेको बन्ध
लिए लेती हूँ । वस अब चाहे कुछ हो जाय
कदापि न खोलेगी । भूखों मरना पड़े मर
जाऊंगी । पर यह अन्याय तो नहीं सहा जायगा ।
हरे राम. . .]

(२)

"जान दुम पर निसार करता हूं ।
नहीं जानना हुआ ध्या है॥
अशरते कैसा है दरबामें फँसा हो जाना ।
दरदका हृदसे गुमना है दवा हो जाना ॥"



हाय ! कहां तो मैं कैसा पका भरोसा किए बैठी थी कि जो कुछ मैंने कहा है उसीमें दृढ़ रहूंगी । एक-दुई पीछे न हटूंगी । कुछ भी हो जाय पर विवाह न करूंगी । पर न जाने अब वे सब बातें कहाँ चली गईं ? वह शोखी कहाँ हवा हो गई । वह दृढ़ता कहाँ भाग गई । मैं क्यों फिसली पड़ती हूँ । क्या मुझमें कुछ जान नहीं रही ? ... इसमें मेरी क्या भलाई है । मेरे लिए तो दुःख ही दुःख है । पर हाय ! उधर पिताजीका भी तो यह विलाप-यह आर्तनाद नहीं सुना जाता । कैसी चुमती हुई भित्तों हैं । मेरी बातोंको भी सब सच मानते जाते हैं । अपने किएको भी पछानते जाते हैं अब बाल-विवाहका परिणाम मान्द्रम हुआ । जब लड़के और लड़की दोनों सयाने हो जाया करेंगे तब लग्न और विवाह साध ही साध किया करेंगे । पर इन बातोंसे मेरा क्या मरता है । मेरा तो सिर फटा ही जाता है । मैं अपने दिन कैसे बिताऊंगी । साल डेढ़ सालमें लो पूरी युवती हो जाऊंगी । नी ! ऐसी हालतमें मैं विवाह करूँ ? अगर करूंगी तो मुझसी पगली और और दुनियामें कौन मिलनेकी । . जेजरम बन मैंने पिताजीसे सब बातें माफ साफ गठ्ठोंमें कह दीं । पर हाय, उन बातोंका कुछ भी ख्याल नहीं हुआ । मेरा बगमे चिछाना ही हुआ । अब वे मेरी ही बिगती कर रहे हैं ? हाय ! मैं क्या करूँ ? मैं तो अपने आपमें ही नहीं हूँ । अगर कहना माने लेती हूँ तो मेरे लिए जीवन पै चलना तयदारपे चलना हुआ जाता है । और न मानूँ तो उनका जीवन मुश्किल है । हाय ! उनकी लान मेरे हाथमें कैसे है ! हाँ ! उनका कहना भी ठीक है । दुनियामें इन्त भी

एक चीज है । मान भी कोई वस्तु है । और यहां इस बातकी बड़ी कट्टरता है । तो क्या मैं कहना मान लूं ? कहना मानना क्या होगा ? समाजमें ऐसी प्रतिष्ठा रखानेके लिए मेरा बलिदान होगा । पर उनकी बात रह जायगी । मैं समझूंगी यह ही वेद-वर्णित-यज्ञका जमाना है । मनुष्य समाजकी भी आँखें खुल जायेंगी कि निरीह अबलाएँ भी उनके कृत्योंसे कैसे रूकट सह उनके अत्याचार सहनेको सदैव तत्पर रहती हैं । फिर चाहे उनके प्राण ही क्यों न चले जाय । देखो ना भारत-नारी-मुख-उज्ज्वलकारिणी, वीर-अबला अहल्याबाईने अपने पिताकी बात रखनेको हलाहल विषका मरा प्याला गटागट पी लिया था । तो कोई क्या मैं अन्य हूँ जो अपने संबंधियोंके काम न आऊँ ? परवा नहीं यदि जीवन फटमय बनता है । सत्य भी कोई वस्तु है । संयमकी तलवार हाथमें ले मैं अब जीवन कठिनाइयोंका सामना करूंगी । पर यह अकर्मण्यताका टीका न लगाऊंगी । हजारों ही मुझसी अबलाएँ नित्य ही यातनाएँ सहती हैं और मैं भी उन्हींमेंसे एक हूँ । पर किसी दि-वस इन अबलाओंकी मुर्दा आवाजकी सुनवाई अवश्य होगी और उसी दिन समाजकी अधम दशाका अन्त होगा । ऐ समाज ! देख ले मैं तेरे ही लिए अपने सुखमय जीवनको जलाश्रि-ली दे रही हूँ, मेरे माय फूट रहे हैं, फटने दो पर तेरी आँखोंमें तो मैं बर्छी घुसेड़ रही हूँ । क्या अब भी कुछ ध्यान लायगा । । 'मिसे हम हार समझे थे गला अपने सजानेको । वही अब नाग धन घेरे हमारे काष्ठ रखनेको ।' इति शुभम् ।

મેવાડા કોમને સુધારવાના પ્રયત્નો.

શુભરાતમાં દિગંબર જૈન ધર્મ પાળતી કોમો મેવાડા, નરસિંહપુરા, હુમડ, રાયકવાળા આદિ છે, જેમાં મુખ્ય ભાગ લેતી કોમ મેવાડા (મંદેવરા) ની છે, જેઓ ઉદ્દેપુરના રાણાના વશનું સુધારણી કાનિયોથી લક્ષ્મીદેવીના પ્રસાદે કરી વેશ્યત્વને પામેલા છે. તેમની વસ્તી શુભરાતમાં ચરોતર અને કાનગ એ બે વિભાગોમાં વહેંચાયેલી છે. તેમનાં મુખ્ય રચાતો અંદ્રેશ્વર અને સોહજા કહેવાય છે, પણ વસ્તી તેા ગામડાઓમાં વહેંચાયેલી છે.

અહલથી રાનવંત ગણાતી મેવાડા કોમના ધર શુભરાતમાં ૮૦૦ ને આશરે છે, તેમાં પણ પહેલાના મિથ્યાભિમાનથી બે તડ અર્થાત બે સંભા પડેલા છે. અંદ્રેશ્વર અને સોહજા, તેમાં પણ કુળાભિમાનથી અને પાપી પિતાની પિરાણી વૃત્તિ વૃથા કરવાના આશયથી અર્થાત કન્યા વિક્રયથી જ્યે શેઠ પડેલા છે.

આ રથળે આપણે કહત સોહજા સંભા તરફ દ્રષ્ટિપાત કરવાનો છે; જેથી તેની વસ્તી ગણતરીનું કામ તે કોમના આગેવાનોને મોખી આપણે આપણા વિષય તરફ વળીશું.

વહાલા બધુઓ ???

આપણા પૂર્વજો ન્યારે સોહજામાં પ્રથમ પહેલા આન્યા હતા, ત્યારે આપણે અને અંદ્રેશ્વરના બંધુઓ એકત્ર હતા. વળી વધારામાં શરૂ અને ખંભાતના કેટલાક બંધુઓ હતા એમ શાસ્ત્રાધારથી મળી આવે છે (અત્યારે તેમના એક રથળે એક પણ ઘરની વસ્તી નથી.)

ત્યારે જે વખતે આપણે સર્વે એકત્ર હતા તે વખતે આપણે એકબેકથી કન્યા વ્યવહારની છુટ રાખતા હતા એટલે આપણામાં ૨૬ વગેરે યવા પામેતાંજ નહિ, એટલે ગણતિમાં વિધવાઓની કમીના રહેતી, અત્યારની હાલની આપણી કોમની નિરાધાર બાળ નિધવા તરફ દ્રષ્ટિપાત કરતાં હવા સિવાય રહેવાતું નથી કે—

પિરાય વૃત્તિના તેમના પિતાઓ નાશ પામે કે— જેમણે પોતાની પુત્રીઓને વૈધવ્યતામાં હડસેલી દીધી છે.

વહાલા બધુઓ,

કસ્તીસન ૧૭૮૨ ની સંવતમાં આપણી દલા—ચીડા મેવાડા દિગંબર ધર્મ પાળત.ની વસ્તી સોહજા, વસો, પાદરા, માવાવાડા, દેવો, ખેડા, ખંભાત, અંદ્રેશ્વર વિગેરે રથળે મળી ત્રણ હજાર ઘરની હતી, ખેડે છે ત્રણેયો પાંચીસ વર્ષમાં આપણે એક તૃતીયાંશ ભાગ જોડવા પણ રચ્યા નથી. ક્યા હાલના જુદા જુદા તડ ચક્રને થતાં આપણે ધર ને ક્યા એકજ બંધારણથી બંધાયેલાં ત્રણ હજાર ધર. બધુઓ ? આપણી વસ્તી ક્યા મન્યુત કારણથી ઘટવા લાગી છે તે આપણે તપાસવું જોઈએ અને ત્યાર બાદજ તેને સુધારવા કંઈક કરી રાકાય.

સોહજા સંભાના કન્યા વ્યવહારથી જોડાયેલાં પાંચસો ધર હાલમાં અન્યોન્યથી સમાઈતા સંબંધથી જોડાઈ ગયેલા છે, વળી તેમના કેટલાક અન્યોન્ય કટુંબી અને એકજ ગોત્રી છે, જેથી તેમને પોતાના સંતાનોના સંબંધ બાધનાં બહુજ સંકડાપણુ વેડતી પડે છે. એવી વખતે કેટલાક હિતાવગા અને નીચ જુદિના મનુષ્ય પોતાની પુત્રોને પીસ્તાગીરી કે તેથી વધુ ઉન્મરના વૃદ્ધ વનવર ! સાથે પરણાવવા તૈયાર થાય છે અને કેટલાક તેા વળી બાર વર્ષની બાળકીને ચ્યાક વર્ષના લાડકા સાથે લટકાવી કે છે ? કેવો ઉમદા સંબંધ !!! આ વ્યવહારે એક કવિનાં વચન યાદ આવે છે કે—

સાખી.

નવકી નારી આપીએ, નેવું વરસકે હાથ.

નવના ને વળી આપીએ, સોગ વર્ષની હાથ.

એના રથ જોડાં જોડાએ આ વર્તીમારે—

એને મદિમા મારી છોડે કદી ન રાકાય—

બંધુ આવેને મુજ ગણિ તણુ દુઃખ કાપવાર,

બંધુઓ,

આપણી એ સંકડામળને દૂર કરવા આપણે

નીચેની બાબતો પર ખાસ લક્ષ્ય દઈ તે પાળવા ધર્મ પૂર્વક બધાઈ પોતાનાં સંતાનનું ભાવિ સુધારણું જોઈએ.

ખાસ મનુષ્યભગવાને પણ કહ્યું છે કે—

यत्र नार्यस्तु विन्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः ।

અર્થાત્ જ્યાં સ્ત્રીઓનું સન્માન થાય છે તેના લાભાલાભને જોવાય છે, ત્યાંજ દેવતાઓના વાસ થઇ ધનધાન્યની વૃદ્ધિ થાય છે, માટે જો વહાલા બંધુઓ! તમે તમારી પુત્રીના બહાને ખાતર-તમારા પોતાના બહાને ખાતર-દુહિતાના આપથી બચવાને ખાતર-જન સમાજમાં ઉલટા ન પડવાને ખાતર-તમારી કોમને વધારવાને ખાતર નીચેની બાબતોના હાલજ અમલ કરો કેમકે—

ધ્યાન દેવા યોગ્ય બાબતો.

૦૫૫૫૫૫૫૫ ઉન્નતિ.

અ. વિવાહ સંબંધ જોડતી વખતે પડતી સંકુચિતા દૂર કરવા સંબાને વધારે ધરતો બનાવવો જોઈએ.

મારી સમજ મુજબ સોદરના અને અંદરેશ્વરના સંબાઓ એકત્ર કરવા-કે-જેથી કન્યાઓની આપ લે છટથી થઇ શકે ?

વ ગાહુ કાણે આપણા કેટલાક બંધુઓ 'લુખના માપાં કોદરા ખાપ' એ દહેશુ પ્રમાણે કન્યા નહિ મળવાથી દાડીયાવાડ-વાગડ-દક્ષિણ વિગેરે સ્થળેથી દ્રવ્ય ખરચી કન્યાઓ લાડી પર સંસાર ચલાવે છે, જેને આપણે છુટથી ગણિતમા સ્વીકાર કરીએ છીએ, તેમજ તેમના સંવાસને પણ કન્યા આપણે છોડે ને તેમની કન્યા પણ લઇએ છીએ, તો પછી મદાવીર સ્વામીના શ્રમાન

શ્રાવક માત્રને સરખાજ છે. ને તે સરખા હોવાથીયે ધર્મની શ્રેષ્ઠતા સંચવાઈ રહે છે. તે પ્રમાણે આપણે આપણને બાણે બપતી કોમમાંથી કન્યા લેવ છુટ કરવી જોઈએ, અર્થાત્ રાટીવ્યવહાર કરવં પ્રયત્ન કરવો જોઈએ. આ લેખક લુલ્લતો ન હો તો તેણે આપણી કોમમાં સાયકવાળ શ્રીમાળ પંચમ હુમડ વિગેરે કોમમાંથી કન્યા આણેય જોઈ છે ને તેને આપણે કોમે સ્વીકારેલી છે તે પછી રાટી વહેવાર ત્યા ખેટી વહેવાર કરવામ અડચણ નથી એ વાત નિઃસંશય છે.

ક લોકપ્રિય મહારાજ શ્રીમંત સયાશ્રામ ગાયકવાડે એમના વૃદ્ધ પ્રતિબંધક દાખલાને માન આપી કોમમાંથી વૃદ્ધ લગ્ન બંધ કરવાં જોઈએ બદ્દે ગણિતના દરેક જણે તેવાં લગ્ન કરવાં નહિ તેમજ તેમાં ભાગ લેવો નહિ, એવી દ્રઢ પ્રતિજ્ઞ લેવી જોઈએ, તે છતાં કોઈ પ્તિય મનુષ્ય તે તરફ ઝુકાય તો તેને સરકારને સ્વાધીન કરવા ગણિત પચે સુકવું નહિ. તેમજ તેનાથી દરેક જણે સંબંધમા આવતાં દૂર રહેવું-કેમકે વૃદ્ધ લગ્ન કરનાર અને કરાવનાર બંનેનું આનાજ અધમ ગુણવાળું ગણાય છે.

ક દરેક જણે એવી પ્રતિજ્ઞ લેવી જોઈએ કે-હું ચાળીશ વર્ષની ઉંમર પછી લગ્ન કરીશ નહિ તેમજ હું મારી કન્યાને તેટલી ઉંમરના સાથે પગલાંરીશ નહિ અને તેવા લગ્નમા ભાગ પણ લઈશ નહિ.

ગ અને ત્રણ સંતાન હયાત હશે તો હું ચાલીસથી પણ નાની ઉંમરે લગ્ન કરીશ નહિ તેમ તેવી જગ્યાએ મારી કન્યા દઇશ નહિ

જ ગાયકવાડ સરકારના બાળ લગ્ન પ્રતિબંધક દાખલાને માન આપવા દરેક જણે પ્રયત્ન કરવો જોઈએ. સામાજિક પ્રમાણે આપણી કોમમાં બાળ લગ્ન ચલાજ નથી-પણ કેટલાક લગ્નો એવાં બને છે કે-જેમા વર કરતાં કન્યાની ઉંમર બહુજ મોટી હોય છે. તેવાં લગ્ન બંધ કરવાં જોઈએ તેની સાથેજ સોળ વર્ષથી વધારે અંતર વાળાં લગ્ન દાખલ ચિરદ ગણી તેને બંધ કરવાં.



નેમ્મએ. સ્વામાવિક રીતે વર કન્યામાં પાચ વર્ષનો તથાવન રાખવો નેમ્મએ એટલે કે-વર કરતાં કન્યાની ઉમર ૫ વર્ષે નાની હોવી નેમ્મએ. મેં એવા એવા સંબંધ આગેવાનોને ત્યાં આધેશાં નેધા છે કે-જેમા સવા વર્ષની છોકરી ને તેર માસનો છોકરો. વળી ત્રણ માસનો છોકરો ને બે માસની છોકરી-એવા સંબંધ બાંધવા એ સમાજને પડતીમા લાની મુકવા જેવું છે.

બંધુઓ, આવી નાની ઉમરમા અંતર સિત્રાવના સંબંધ બાંધી દેરા તે મુખાંધ નહિ તે બીજું શું હોઈ શકે ?

આવા સંબંધો બાળ લગ્નના માથામા થુકે તેવા છે. તે તેનાથી ભવિષ્યમાં તે દંપતિ ભવિષ્યમાં તે ભાગ્યેજ સુખી નિવડવાના એ નક્કી સમજાવું કેમકે-એક કાલવતો ધડા લેવો હોય તો આપણે તેની ફેરવી ફેરવી પનીક્ષા કરીએ છીએ કે જે એક પૈસાની કીમતનો છે, પણ ફેરવો ફેરવી આપવા છતાં આ મનુષ્ય દેહ મળવાનો નથી. તેમાં પોતાની કન્યા જે પોતાનાજ શરીરથી ઉત્પન્ન થયેલી છે. તેને આખી છંદગીતા ખસાસીની પરીક્ષા કર્યાં સિત્રાવ લાકડે માલકું વળગાડવા જેવું કરી દેા છે. ધિક્કાર છે. તે કૃષાભિમાનને, શિક્ષક છે તે અકસને કે જે પોતાનાં સંતાનોનું સત્તાનાથ વાગવા તૈયાર થાય છે.

અપકવ ઉમરનાં જોડાંના સંસર્ગથી સંતતિની આસા રાખી શકાની નથી. વખતે સંતતિ થાય તો તે નમળા થઈ થોડા વખતમાંજ નાશ પામે છે એટલે આપણને નિર્વેશ કરનાર કુટુંબ બાળ લગ્નજ છે. નાની ઉમરમા સંબંધ જોડવા બંધ ચલાથી કાઢ લગ્ન યોગ્ય ઉમરના કેળવણવા પુરાવો ને સ્ત્રી ગયેલા છે તેમને કન્યા મળી શકશે. વળી તેમ યુવાથી કાઢીવાનાડ આદિ દેશમાંથી દ્રવ્ય ખરચો કન્યા લાવવાની જરૂર રહેશે નહિ. એટલે દર સાલ નાતને ફેરવા આળીસ ફગડનો દાખલો થતો જે દ્રવ્ય કન્યાના બદલે આશ્વિન્ય છે. વ્યવહારિક બાળતો સુધારી નીચે

પ્રમાણે ધાર્મિક ઉત્તતિ કરવા પ્રયત્ન કરવો નેમ્મએ કે નેથી દહેવાતા આવક મરી ખરા આવક બની શકાય અને પરણેકમાં સુખી યવાનો રસ્તો મેળવી શકાય.

ધાર્મિક ઉત્તતિ.

ગાંધિના પાટનગર સોજામાં નથી કોમ તરફથી એકે પાઠશાળા કે નથી કોમના વિદ્યાર્થીને રહેવાની બોર્ડિંગ ?

બોર્ડિંગને બોલવાની જગ્યા નથી તેા મછી બોર્ડિંગની આથા રાખી શકાયજ કેમ ?

એ વાત તો જગજહેર છે કે-મેવાડા કોમ દર ત્રણ વર્ષે લગ્ન કરવા સોજામા ભરાય છે, છતાં ત્યાં હજુ સુધી તેમના તરફથી એકે મકાન જમવા બેસવાની સગવડવાળું થયેલું જણાતું નથી. ખેદ છે કે-ગરીબમા મરીમે કોમ વાલક, મોચી, આદિ ત્રણ પોતાના ગાંધિભાગનની પંક્તિ બેસાડવા મકાન ધરાવે છે, પણ ધનિક ગણાતી મેવાડા કોમ તેથી રહિતજ છે.

બંધુઓ, -ધર આગળ આપણે નાહી ઘોઘ પવિત્ર થઈ રસોઇ જમીએ છીએ, જમવાની જગા ઉપર ચંદરવા બંધાવીએ છીએ, દરેકજ યુવો-રસોઇના વર્તન સાર કરીએ છીએ, પણ તમારી નાતિ જમણીની પંક્તિ જોતાંજ ઘૂણા ઉત્પન્ન થાય છે કે-કુતરાં, બિરડાંના સ્પર્શો-સ્પર્શ સહિત-નાના બાળકોના મળમૂત્રના ત્યાગ કરવાના સ્થળે-લંગી અને બીજી અસ્પર્શ્ય કોમની નજર આગળ જમવા કરતાં ન જમવું હજાર દરજ્જે સાફ છે. એવી અસ્પર્શ વસ્તુઓમાં જમવા બેસાડવા કરતાં જમણું કરનારે ન કરવું તે હજાર દરજ્જે સાફ છે.

બંધુઓ, ધર્મશાળા જેવું મકાન કંઈ જમવાના એકસાજ ઉપયોગમા આપણું બની, પણ તેને અગ્રે કોમ તરફથી અનેક ખાના બિાવવાના ત્રણ સમમા આવે છે, માટે આપણે આપણી ગાંધિના પ્રમાણમા ધર્મશાળા હાલ તર્વ જનારી જરૂરી છે. નસ વિચારના મનુષ્યોને તમારા



ચાતિ ભોજન તરફ પૂજા ઉત્પન્ન થવાનું કારણ કેટલું અવિવેકી અને અયોગ્ય રથે બનવા બેસવું એજ છે, માટે જો તેમણે તેમને ધર્મશાળા બનાવી મોક્ષાશ કરી નાખશે તો તેજ મનુષ્યો તમારા ચાતિ ભોજનને પૂરત કદે વખાણ્યા સિવાય રહી શકશે નહિ. કેમકે-ચાતિભોજનથી અન્યોન્ય વિષાણુ અને સાથે ભોજનથી કંઈક ઐક્યતા પ્રવેશ કરે છે, એમ એ સારી રીતે સમજે છે.

હવે કોઈ પ્રશ્ન કરશે કે-હાથે કેવા સ્વરૂપમાં ધર્મશાળા બાંધવી. અને તેની વ્યવસ્થા કેમ કરવી તો જણાવવાનું કે—

અ. સોહજામા શેઠનરોડ પર સો ગજ ચોરસ જમીન લઈ તે પર મકાન બાંધવું. આગળનો ભાગ બે માળનો બનાવવો કે જેથી દુકાનિયું બાહુ મેળવી શકાય. ।

બ. ધર્મશાળા બનાવવાના ખર્ચમાં ચાતિનું કુલ કુંડ નાખવા ઉપરાંત મંદિરના ઉજ્જ્વાલમણીના પૈસા નાખી દેવા. કેમકે-ધર્મશાળાને અંગે મંદિરની સ્થાપના કરવાની હોઈ, તેના ખર્ચ તેમાજ થવાનો છે.

ક. ધર્મશાળામાં એક સંસ્કૃત વિદ્યાલયની સ્થાપના કરવી. કે જેમાં સંસ્કૃત વિદ્યાની સાથે ધર્મશાસ્ત્રનો અભ્યાસ કરાવી શકાય.

બધુંએ! આપણા ગુજરાત પ્રાંતમાં એક પણ દિગંબર જૈન સંસ્કૃતનું ભણતર કરી શકે એવો ગુજરાતનો વતની મારા જ્ઞેવામાં કે સાંભળવામાં આવ્યો નથી. ખેદ છે કે-આપણને તેનાવી પાઠશાળા સિવાય જીંદગી ગુજારવી પડે છે. કદાચ કોઈ પાઠશાળા સ્થાપક કરે તો પંડિત હિંદુસ્થાનીજ લાવવો પડે છે, જેથી વિદ્યાર્થી આવતાં અચકાઈ તે પાઠશાળા મૂનપાઈ ચઈ નય છે.

આપણે સોહજામા સંસ્કૃત વિદ્યાલય બોલી ગુજરાતમા ગુજરાતના વતની દિગંબર જૈન પડિતો ઉત્પન્ન કરી તેમના દ્વારા ચાતિમા જાનનો ઉપદેશ કરાવવાનો છે અને ગણેશમા પાઠશાળા ખોલવાની છે.

વળી સર્વજનપ્રણીત ધર્મની આજ્ઞાદીને અર્થે તે વિદ્વાનોને છતર દેવોમાં મોકલી લ્યાં જૈન

શાસ્ત્રનો પ્રચાર કરી લોકોને તત્ત્વાત્મી બનાવી જૈનના અભ્યાસી બનાવવાના છે.

-ક. આપણી પાંચળ ગાદીનો બદાને પડ્યા પાથર્થ રહેનાર બગરા ગૃહસ્થાચાર્યોને તે વિદ્યાલયમાં ભણવાની ફરજ પાડવી.

ચ. બંદારોમાં સડ્યા કરતા થંચેતિ-કાદી તેનું વિદ્વાને પાસે ચાલુ ભાષામાં ભાષાંતર કરાવી તેનો જુજ કીમતે પ્રસાર કરવો જોઈએ.

જ. ચાતિમાંથી કોઈ બધું કોઈ ઉપયોગી પુસ્તક તૈયાર કરે તો તેને યોગ્ય પાનિતોષીક આપવું જોઈએ. વળી તેને છપાવવાની દરેક બધી મદદ કરવી. કે-જેથી અગજનને પુસ્તક પ્રચારવાનો મોહ થાય.

ઝ. બહારકોને પંચની દેખરેખ નીચે રાખી તેમને નિયમિત રીતે અગિઆર પ્રતિમામાંથી સાતમી પ્રતિમા મુખીની દિશા પળાવવા ફરજ પાડવી. કે-જેથી તે અયોગ્ય પદ્ધતિ રાખી ચોરી કરાવે નહિ યા સદા વેપારમાં ઉતરે નહિ.

મ. મંદિરનો હિસાબ બોખો બનાવી તેનાની જૈન ધર્મનો મહિમા વધે તેવા કાર્ય કરાવવાં જોઈએ. જેવા કે-જીર્ણોદ્ધારક-અનાયાસપદ્ધતિ પાઠશાળા-ઐયંધાશ્રમ-આદિ ખોલી શ્રાવકના રૂબનો સહયોગે વ્યય કરાવવા સુકું નહિ.

વ. સંભાના સાઠ ગામોના પંચને ફરજ પાડી દરેક ગામનો એકેક બધું સંસ્કૃત વિદ્યાલયમાં રાખી તેને પૂજન કરાવવાની વિધિ પૂર્ણ રીતે શીખવડવી. કે-જેથી આપણે પુનઃનાદિ દિશા અન્ય ધર્મી પાસે દરાવવી પડે નહિ.

ગત જેઠ માસના “દિગંબર જૈન”ના અંકમાં મારા વચ્ચરમાં આવ્યું હતું કે-કહેપુ (મેઘાડ) તરફ ભોજક પ્રતિષ્ઠા કરાવે છે, તેમજ ત્યામીના કેલ સોચ પણ કરાવે છે. ખેદ છે કે-આપણા બહારકો તો પોતાની ગાદીને સંવદી રહેલા છે.

મારાજ વતનમાં એક વખત ચાતિ વિદ્યાનની પૂજા કરાવવા અન્ય ધર્મને આજ્ઞવામાં આવ્યો હતો, પણ એક દિગંબર જૈન બધુ તે કાર્ય



કરાવવા હોમત ધરાવી શક્યો નહોતો. તેમ આચાર્યશ્રીએ પણ પોતાના પડિત સરખાને મોકલ્યો નહોતો. ખુંધુએ ! ખેદ છે કે-જે મંદિરો આપણા પૂર્વજોએ બંધાવેલાં છે, જેની પૂજન પરિપાટીથી આપણે કરતા આવ્યા છીએ, તેની પૂજન કરાવવા અન્ય ધર્મને આપણે પડે ? તે મંદિરો શું કામનાં કે-જેની પૂજની વિધિ આપણે જાણી શકતા નથી ?

તે દ્રવ્ય શું કામનું કે-જે વધવાધ્યયનનાં ખર્ચવાળું નથી ? તે મનુષ્ય શું કામનાં કે-જેને ધાર્મિક જ્ઞાન છેજ નહિ !

માટે હાલજ ધર્મશાળા ખનારી સંસ્કૃત વિદ્યાલય ખોલવા પ્રયત્ન કરના મારી દરેક જ્ઞાતિ ખંધુને નમ્ર સુચના છે. જ્યાં સુધી તમાગ જાળકા જૈન ઇશ્વરના ચારણ રહીને તારી રીતે સમજી શકશે નહિ, ત્યાં સુધી તમારી ધાર્મિક ઉન્નતિ થઈ શકવાની નથી.

૫. દરેક જાણે જૈન વિધિથી લગ્ન કરાવવા પ્રતિજ્ઞા કરવી કે-હું મારે ઘેર કોઈ પણ કિષા અન્યધર્મી વિધિથી કરાવીશ નહિ, લગ્નની હકીકત લખવાનો આ સમય નથી, નહિ તો તમારાં દરેક જાણે કોઈ શોકના નાતરાની માફકજ યાપ છે. ધિક્કાર છે તે ગાડરીયા રૂઢિને કે-જેના શુભામ થઈ તમે તમારાં સંતાનોનું સ્વાભાવિક દાદી નાણો છે.

૬. સોજના સંભાગ પાય છે એનુચેટ દામતિ ધગવે છે તો એક એનુચેટના હાથ નીચે 'મેલાડા મિત' નામક માસિક ૫૫ કાંડવાની બ્યવસ્થા થવી જોઈએ.

૭. ધી મેવાડા દિગંધર જૈન કોન્દરસ નામે એક સભા સ્થાપત્ કરી તેના સભાસદ દરેક જાણે શબ્દ જોઈએ અને તેના કાગળ દરેક કાગળ પાસ કરી તત્કાલે, પાંચ દરેક જાણે કાગળ રાખતો.

જ્યાં સુધી આજેના જાગજાગી છોડે દૂર કરી ધર્મ પૂરક મોગન લઈ ઉન્નતિ અર્થે ખંડાર પડશે નહિ ત્યાં સુધી તમારી ઉન્નતિ ન જૂનો ન બધિવતિ" માની લેવાની છે. કેમકે પહેલા આપણી કોખમાં એક સભા સ્થાપન થઈ હતી પણ તેના

આજેનાની પોયને લીધે તેને જ્ઞાતિ તરફથી આશ્રય નહિ મળવાથી તે પડી બાંગી. હવે મેવાડા સુવંક મંડળની સ્થાપના થઈ છે પણ તેણે આજ સુધી કોઈપણ કાર્ય કરેલું સંમતિથી નથી.

મારી રાજ પ્રમાણે ઉપરની જાણે સમાજોને દર ગણો મેવાડા કોન્દરસની સ્થાપના કરવી જોઈએ.

જ્યાં સુધી તમે કોન્દરસથી કાંપોનો અમલ કરી કોખને મુદાગશે નહિ ત્યાં સુધી તમે તમારી ધટતી જતી વસ્તીને વધારી શકવાના નથી એ વાત નિશ્ચય છે.

આવતા લગ્નગાળા પહેલાં જો મેવાડા કોન્દરસની સ્થાપના નહિ થાય તો હું એમજ માની લઉં કે-આજના મેવાડા ખંધુ યથાથમા વીર પુત્રોની જગ્યાને લાયકજ નથી તેમ તેઓ ઉચ્ચ ગતિમાં ચઢવાને યોગ્ય નથી એમ માની મારી કોખમાં કાંઈ જ્ઞાતિની લાગણી વળી છે નહિ એમ સમજી જ્ઞાતિ સંબંધી લખાણ લખવાં-ચર્ચાં કરવી આદિ બંધ કરીશ !

વડીલ વર્ગ તથા સુવાન વર્ગની એક કમેટી, નીમી મેવાડા કોન્દરસની સ્થાપના કરાવું કામ, જો નીચેના સભ્યો ઉપાડી લે, તો તેમનો ઉપકાર જ્ઞાતિ વીસરી જશે નહિ.

૧-જેસંગભાઈ ગુલાબચંદ મવીયાતજ

૨-રણછોડદાસ જગજીવનદાસ કરમસદ.

૫-કાશીદાસ જેસંગભાઈ ખોરસદ.

૩-મગજીવનદાસ જવેરદાસ મોહવા.

૪-લગુભાઈ હરજીવનદાસ કાણીતા.

ઉપરના ગૃહસ્થોના દરમિયાન સુખ લખવાનું કામ જાકરોમ નિવાસી ઉસાદી-સુવંક શ્રીપુત્ર જોતીલાલ ત્રીકમદાસ કરશે તો ઉપકાર થશે.

જે વાત નક્કી સમજાવે કે કોન્દરસ સ્થાપના સિવાય મેવાડા કોખનો ઉદય થવાનોજ નથી. તો હાલજ તે માટે જોઈવલું કરી તમારી કામના ઉચ્ચને અર્થે છંદગીનો ચોડો ડિરરસો આપવું કરે ?

પરમાત્મા આપસર્વેના હલવાના મોગ વિચરે કંસારી આપને હાલજ તે કાર્ય કરાવવા દરજ પાડે. એ છંદગ રાખનો લખનાર હું છું. આપ સર્વેનો સેવક-
એક હંખી હંધ.



આવળી પુત્રીઓ વિષે વિચાર.

(લેખક—શા. નાનચંદ પુનભાઈ-વડોદરા.)

સૌથી અગત્યનો વિષય ધર્મ અને નીતિ છે. નીતિ વગરનો ધર્મ હોય નહિં એટલે ધર્મભાજ નીતિ સમાયેલી છે, પણ નીતિના તત્ત્વો છૂટા પાડી શીખવાડી શકાય ધર્મનાં કેટલાંક તત્ત્વો સમજવા ઘણા કઠણ છે તે નાનપણમાં ન સમજી શકાય પણ મૂળ અને સદા તત્ત્વોનું જ્ઞાન સારી પેઢે આપી શકાય. છોડીઓને ધર્મના જ્ઞાનની જરૂર છે તોપણ મા બાપ તે જ્ઞાન આપવાની તરફી લેના નથી. ધર્મ શીખવાડવો તે તો શુરૂનું કામ છે. છોડી મોટી થશે ત્યારે ઘણો ધર્મ કરશે અને પાળશે, પણ સમજાવું જોઈએ કે પાકી કોડીએ-કાના ન ચડે. ઝાડ મોટું થયા પછી ન વળે. કેટલાંક શુરૂ પણ સ્ત્રીઓને ધર્મ શીખવાડતા નથી. મામમાં જ્યારે પધારે ત્યારે બાવના લે, સંપૂર્ણ લે, શાસ્ત્ર વાચે તો કયા પુરાણ વાચે કે નૃપતી સ્ત્રીઓની શ્રદ્ધા સારી ચોટે. પણ આદ્યાનિમિત્ત જ્ઞાનનો છોડો પણ કોઈ સમજાવતું નથી અને તેથીજ સ્ત્રીઓ ઘણી વડેમવાળી બાહુમ પડે છે. શરીર અને હૃદયે શો સંબંધ છે, પરમેશ્વર કેવા છે, પાપ પુણ્ય શું છે, કેશીરિતે બંધાય છે, મોક્ષ અને સ્વર્ગ એટલે શું, સ્ત્રી પર્યાય કેવી રીતે ટળે, જ્યાં સુધી સ્ત્રીઓને આ જ્ઞાનનોતું જ્ઞાન નથી આપ્યું ત્યાં સુધી તેમનું દમ્યાણ કેવી રીતે ચલાવું છે સ્ત્રીઓ ઘણી બેદરકારીમાં હોય છે, તેમના સંસ્કારના બાંધા માટે કંઈપણ ખાસ સંબાળ રાખવામાં આવતી નથી તેથી શરીર એકંદરે તો મજબૂત હોતું નથી, પણ અધુરામાં પૂરું પોતે જ્યારે સતત થાય છે જ્યારે ખાવામાં પોતે જઈ ગીચરૂંદ હરે છે, કાંઈ વખત એકલા ટેજરા ઉપર રહેશે, કાંઈ વખત એકલા બહામાં ખાશે પોતે પાછાથી જશે તો સ્નેહ ટાટી થઈ ગઈ હોય ને, શાક ખૂટી પડે છે, દૂધ તો હોવાજ શાબું ? આવી અધૂરી સ્નેહથી સંસ્કારને જોઈતી સુષ્ટિ મળતી નથી.

નિતિ દેવો.

આજ સીતા, રામજી, ચંદનમાલા, અંજના મુંદરી, ચેલના જેવી ધર્મપરાયણ અને સદા ચારિત્રી સ્ત્રીઓ દેખાતી નથી તેનું કારણ આપણે સ્ત્રીઓને ઘણી જાણતંમા વિસારી મુકી છે. નીતિનું શિક્ષણ નહિં મળવાથી તેઓ ડગલે ડગલે જૂઠું બોલે છે, ટાહું ખાવું, જૂઠું ખોલવું, અને નવત્રા નકાલું એ ત્રણ દેવો બેસાને સૌથી ખરાબ હોય છે. મોટાઓની લાજ ન કાઢવી, બહું ઝીણું કપડા પહેરવા કે મોઢક કપડા પહેરવા, મોટાઓની આગળ થઈને જવું, ગમે તેમ તાણાથી જવાજ આપવો તે મલાજથી વિરુદ્ધ છે. અજ્ઞાન સ્ત્રીઓ બહુ વેહેમી હોય છે ધરમાં છોકરૂં જો પાટશે ઉભો મૂકે કે તેને ખૂબ ખીજે અને મારે, સાવચેતી ઉભી મૂકી હોય તો પણ એનીજ દશા થાય.

હાલોદાય મીઠું, આપીએ તો વડવાડં થાય, સળગેલું લાકડું ખીજે છેડે સળગાવીએ તો સાપજી-તો અવતાર આવે, ઘણી પહેલાં જમે તો વાળો-ળતો અવતાર આવે, આવા નકામાં વેહેમ રાખવામાં દશા ફાયદો નથી. પાણી ગળાતી વખતે ઝાડુ કઠાય નહિં તે વાત ખરી કારણકે ધૂળ ઉડી પાણીમાં પડે પણ જોડેના ખંડમાં પણ પુનઃ કઠાય નહિં એ વેહેમ છે.

ઘણી પ્રત્યે વર્તાવ.

સ્ત્રીઓ ઘણી પહેલા ન ખાવું એ સારી પેઢે સમજે છે પણ ખાતી વખતે કંઈકાંની વાતો કાઢે, ઘણીનું મોઢી ઉઠાવે તો પછી ઉપરો ધર્મ પાળવાથી શો શયદો થવાનો છે ! આપણામાં પરમેશ્વર કેવા માન્યા છે, શરીર અને આત્માનો કેવો સંબંધ છે વીગેરે નહિં જાણનાર સ્ત્રી ઘણા અનાચાર કરે છે. કેઈ મૂર્ખ સ્ત્રી ઘણીને વથ કરવા જતાં માટે બનાની કે છે, તેથી વખતે મરી પણ જાય છે. સાસરે જ્યારે જોઈતી વસ્તુ ન મળે કે કામનો બોલો વધારે લાગે કે તરત રીસામણા બનામણાં ચર થાય. તે જ્યારે સસરા જોઈતી જૂની રહે ત્યારે રીમાવાતું ભૂટે. આમ ચલાવી મરીઆરા કુટુંબમાં જે લાજ છે તે



મળતો નથી. આમા વાક તદન વહુનો છે એમ તો કહેવાયજ નહિ. ધરમાં વહુ આવે છે કે સાસુ-ને રાગનૈભવ મળ્યો હોય તેમ ખાટવેથી ખાટવે અને ખાટવેથી ખાટવે કરશે. ધરનો તમામ બોલો નાની આગા ઉપર નાખી દેશે અને પોતાની દીકરી અને પાંદરાની દીકરીને એક આખે ભેટી નથી તેથી આ પરિણામ આવે છે.

સસરા જેઠ પ્રત્યે વર્તાવ.

પોતાના સસરા જેઠ આવે ત્યારે એક હાથ લાંબી ખેંચીને લાજ દાદરો પણ જગા વાધો પડ્યો કે તરતજ ધાટો પાડશે, માન નહીં રાખે, ડોળા દાદરો, આરી સ્ત્રીઓને લાજ દાદવાથી શો લાભ થતો હશે? સસરા કે જેઠ પ્રતે જે માન આદર ધરે તે સ્ત્રીએ કદી બૂલવું જોઈએ નહિ. પણ નાની સરખી બાળા કંઈ આરી દેવો પીએ-રથી સીખીને આવે છે? અલગત નહિ પણ જ્યારે સસરા જેઠ દયાથી ન જુએ, હેત ન રાખે, સમજાવી કામ ન લે તો આગળ જના બાર ભાગી જાય છે અને પછી વહુનો વાક દાટે છે. સસરા અને જેઠ પોતાના પિતા અને મોટા ભાઈની જગ્યાએ છે. એ પ્રમાણે અરસપરસ એક બીજાએ વર્તવું જોઈએ.

કેટલીક અવાન સ્ત્રીઓને સીંચત મેહું આવે કે પ્રભ ન થતી હોય તો કંઈ કુડ કપડ કપા કરે છે, બાધા આપી રાખે છે, પારકાના છોકરાના વાગ કાપે છે, બેરાના સાદના કાપે છે. ઘણું બીજા કુડ કરે છે.

દેવ પ્રત્યે વર્તાવ

આપણા દેવ પેમેા આપે છે, છોકરા આપે છે, છોકરાને વહુ આણી આપે છે, રોગ મટાડે છે, દરેક માતૃ સુખ આપે છે. જે સ્ત્રીને પગેશ્વર સખધી આવેો વિચાર હોય તે જૈન ધર્મ જાણી નથી એમ કહીએ તો ખોટું નહિ. પોતાના દેવથી કંઈ લાભ ન દેખે તો પીર તણુડને ચરણે ભાગ્ય તારી ખસી માતા મહાદેવ કરે તેમ કરતા-ય આપણે તો જે ચનાનુ દેાય છે તેજ થાય છે માટે પ્રજા સખધી શંકા હોય તો દુધીઆર ઈશ્વરની સવાહ ભેટી એજ સાર છે

ધર્મનું ખરું ફેરવણ જાણનાર સ્ત્રી અભિમાન કરતી નથી, જગતની મિથ્યા વસ્તુ ઉપર મોહ રાખતી નથી, દુખ આપે અસાતા દેવનીય કર્મનો ઉદય થયો છે તે પૂર સુખ મળ્યું એમ સમજે છે, પરમેશ્વરનો વાક માંડતી, નથી પોતાના આત્મા-નુ કલ્યાણ પોતાનાજ હાથમાં છે તેમ સમજી ધર્મપરાયણ રહે છે

નીતિ નહી સમજનાર સ્ત્રી પોતાના બચ્ચાને નીતિ સીખવી શક્તી નથી. છોકરું પોડાશીની વસ્તુ છાત્ર મનુ લાવે તો કહેશેકે જ જ આવે ધરમા સતાડો દે નહી તો લઈ જશે, એવું કહી ચોરી કરનારો પાયો નાખે છે, પણ આની અવાન માતાને ખમર પડતી નથી. બાળ ઉછેર-વાના નિધા કંઈ જ, પણ આપણા મેરાને તો એવો ખ્યાલ છે કે છોકરું ઉડે વું એટલે કે મોટું થતા સુધી માફ ન પડે એટલે કે એના શરીર રક્ત પૂરું થાનુ આપણુ, પણ છોકરાને શવ-ભાત, વિવેક કે દરવાક નાગ યુક્તો તેનામા દાળક કરવા તેનુ જાન નથી.

લગન.

બાર તેર વરસની ઉમરમા લગન લાવમા વાય છે લગનનુ મૂલત પરમતી ખાતર દેવાય છે. એવો પ્રસંગ ન આવે તેર માટે સાંચે એકલા મગી વિચાર કરવાની જરૂર છે કાંચ પોતાની પુત્રીનુ જાતુ મા કોઈ તાકે છે. જૈન વિધિથી લગન નહી થવુ હોવાથી મિથ્યાત્વી ધર્મના દેવોને નમસ્કાર કરવા પડે છે. લગન જેવા પવિત્ર અને આગવિક પ્રસંગે પોતાના કપડદેવ તીર્થંકર બ્રહ્માનંદ નામ પદ પેરાનું નથી એ શું જાણું ચરમાય જેતુ કે! માટે ન્યાનના મેઝને જૈન વિધિ માટે તથાગ મહેવને તામિ આપવી, નહીં તો કોઈ જાણુ શુદ્ધથી જૈન વિધિથી લગન કરાતી શકે છે, પણ ન્યાનના ભાષણોએ આ બાવનનો અંબીરપણે વિચાર કરવાની જરૂર છે. કાંચુકે આપણા સંયત્તમા ખામી લાગે છે.

લગન થયા પછી બાર તોર વરસની ઉમરમાં સાસરે દીનાળીએ કન્યાને વગાવે છે, પણ આ ઉમર બહુ નાની છે. તેર વરસની બાળા રીત ભાત વિવેક કદી સમજતી નથી. સાસરે મોકલતી વખતે સદ્ મૂર્તિ જેવાય છે પણ બિચારી બાળાની આખે ચોધારે આસું પડે છે. સાસરામાં નગરદેદ જેવું અદ્યસર રહેવું પડે છે. સસરા જેઠ જેવા પડીકો સાથે કેવો વિવેક બીજો જવાબ આપવો તે સમજતી નથી. ઘનું કામ બરેબર આપવું નથી તેથી કપકો મળે છે. બાળા અકળાઈ જઈ એકાંતમાં રહે છે. પહેલી વખત તો સાચો જવાબ ન આપે, પણ બીજી વખતે સાચો જ જવાબ આપે છે ત્યારે મોટાઓનું માન રહેવું નથી અને શરૂઆતથી જો કન્યા હલકી પડી જાય છે તો બહુ દુઃખી થાય છે અને સસરા જેઠના પણ જો બાર ભાગી જાય છે તો તેમને પણ સુખ પડતું નથી. છેકરતે પરણ્યાવખતે દ્વારો યોડા વખતમાં અકારો થઈ જાય છે. નાની ઉમરમાં ગર્ભ ધાગ્યું કઠવાથી શરીર ખરાબ થાય છે. પ્રભા નખળી પડે છે. ગર્ભ ઉપર જો સારી છાપ પડતી જોઈએ તે યોદ્ધા પંદર વરસની અમળુ અને અગાન બાળા શું પાડી શકે! અને પ્રભા ધમધિર ધર, શરીર અને જીદિગાળી કઠાઈ થાય! ઉપરાઉપરી સુવાસ કમવાસ આવવાથી આખરે સરીર થોળી પૂણી જેવું થઈ જાય છે અને આપણામાં ઘણી બુવાન સ્ત્રીઓ સુવાસમાં ગડતા છેકરતે મૂંઝી મરી જાય છે, ન્યાનની વરતી ધરતી જાય છે, માટે આપણે છેકરીઓને વળાવતા પહેલાં બહુ વિચાર કરવો પડે છે. આ બાબતમાં ઘેરા જાણે છે પણ રહીને તાણે થઈ પડવાને તાણે છતી નગરે દુઃખ જેવાનો વખત લાવે છે. દવે આગળ આપણે સુવાસકતા આપવાનો વિચાર કરીશું.

આ બાબતમાં કેટલું મુશ્કેલ પોતાના ધ્યાનમાંની નવી બાબત સખી મોહકને તો સ્ત્રી વર્ગ ઉપર ઉપકાર થયો.

(અગાળી)

સ્વં પં સુંદરલાલજી વૈનાડા ।

લિખતે દુઃખ હોતા હૈં કિ જ્ઞાલારાપાટનકે સુયોગ્ય વિદ્વાન પં સુંદરલાલજી વૈનાડાકા મિતી વૌષ કળ્પ ૧૨કો ૪૮ વર્ષકી અવસ્થામેં સ્વર્ગવાસ હો ગયા । હાલ હીમેં આપ ભારતવર્ષીય દિગંધર જૈન ચંદેલવાલ મહાસાકે અધિવેશનમેં સમાપતિ મહોદય શ્રીમાન્ સેઠ લાલચન્દનીકે સાથ કલકત્તે ગયે થે ઔર વહાંસે પુરી, ચંદગિરિ સમ્મેદશિસ્તરની હોતે હુયે, યહાં આવે યે । પુત્રીકી અસ્વસ્થતાકે સમાચાર એકાએક આપકો સમ્મેદશિસ્તરનીમેં મિલે તો આપ સવકો છોડકર બહુત જલ્દ ઘર પર આવે; માનો નિર્દયી મૌત હી આપકો એકદમ વહાં વસીટ લાઈ હો । બાનેકે સમય આપકા સ્વાસ્થ્ય બહુત અચ્છા થા, મગર ઘર આને પર આપકો બુલાર આ ગઈ । બહુત-ઇલાન કિયે, મગર ૧૦-૧૧ રોજમેં વહ ઉનકો છે હી ગઈ ।

આપકા જન્મ સમ્વત્ ૧૯૨૦ કે શ્રાવણ વદી ૬ કો ગ્રામ મેનપુર રિયાસત જૈપુરમેં મજા-લાલનીકે ઘર હુઆ થા । યહ ગરીમ ઘરાના થા । યતાં વૈનાડાનીકે લિખને પઢનેકા કોઈ માનુલ ઇંતજામ નહીં થા, તિસ પર મી પિતાકી યહ તાકીદ રહતી થી કિ પઢનેમેં સમય નષ્ટ ન કરો ઔર પરચૂનીકી દુકાન પર સૌંદા વેચકર કુલ કમાઓ । દુધર તો પિતાકા ઘર, ઉઘર વિચાધ્યયન કરનેકી લગાન ઔર તીસરે સાધનોંકી અમુવિધા! ઇતની કઠિનાઈયોં બાપની ઉત્ત અવસ્થાકે મામને



भी कि जब आप इन कठिनाइयोंसे तंग आकर मजे उड़ानेमें वक्त उड़ा सकते थे । मगर नहीं, आपको एक होनहार बनना था । संयोगवश उन्हीं दिनों आपको जैपुर आना पड़ा । वहां पिताकी इच्छाके विरुद्ध, पढ़ने-लिखनेका अच्छा साधन देख आप वहीं ठहर गये । वहां आपने सड़कोंकी रोशनीके सहारे और लिखने पढ़नेकी सामग्री मांग २ कर विधाध्ययन किया । परिश्रम करनेमें कमी नहीं की । परिश्रमी होनेके कारण उत्साहोंकी भी आप पर पूर्ण कृपा रहती थी और आपके पढ़ने लिखनेमें उत्साहोंने भी आपको हर तरहसे सहायता दी थी ।

बैनाड़ाजीने नाइविठ और मेट्रिकमें इम्तिहान दिया और पास हुए जो उस जमानेके छिये बड़ी बात थी । इस तरह पढ़ने लिखनेके बाद आप शाहजहादमें सोनजी तोडाडके यहां गोद आये । यहां दुर्भाग्यवश रोगमारमें बाटा लगा और घाकी पंची नष्ट करके आप स्वयं कर्नैदर बन गये जिसे आपने स्वतः के परिश्रमसे कमा कर चुकाया ।

कुछ दिनोंके बाद आपके परिश्रमका नतीजा यह निकला कि आप एक खासे विद्वान बन गये । जैन शास्त्रोंका खूब मनन किया, संस्कृत अच्छी सीख ली, उर्दू, खंगरेजी, गुजरातीमें भी अच्छा काम करने लगे । इसके बाद भी मरते दस तक लिखने पढ़ने और ज्ञान प्राप्त करनेका आपने बराबर सितसिंहा जारी रखा ।

आपको अपने जैन धर्ममें बड़ी श्रद्धा थी । हर कामकी श्री शक्तिनाथ स्वामीका स्मरण कर क्रिया करते थे और इस तरह उन्हें सफलता भी पूरी होती थी । आप सचरित्र, सदाचारी और सच्चे स्वामीभक्त थे । मिलनसार १

कर मरी हुई थी । दूसरेके दुःखोंमें-दुःखोंकी आपत्तियोंमें, जी जानसे लग जाते थे । सार्वजनिक कामोंमें, सार्वजनिक उत्सवोंमें, राजकीय जल्योंमें, चंदा संग्रह कानेकी समारोहोंमें सबसे प्रथम आप अग्रसर होते थे-खुब भाग लेते थे और सबके पढ़ते आप बड़ी खुशीसे चंदा देते थे । ऐसे अवसरों पर आपकी बड़ी खोज हरनी और प्रवावशाहीनो वक्तुणाँ होती थीं जिनमें अध्याप्यज्ञान कूट २ का मरा होता था, आपकी वक्तुणाओंकी यहांके महाराज राणा बहादुर भी तारीफ करते थे ।

संग्रह गुणकी कद्र करता है-मनुष्यकी नहीं । अतएव आपके ऐसे सद्गुणोंको देखकर लोग आपको बहुत चाहने लगे । आने भी धीरे २ अपना कार्यक्षेत्र बढ़ाया । कई काम अगले हाथमें छिये । शाहजहादके जैन शास्त्र जो बरसोंसे मंडारोंमें पड़े थे उनकी बड़े परिश्रमसे सूची तैयार करके उनको सुरक्षित रूपमें रखनेकी व्यवस्था की । रामजी मंदिराजीमें नियमित रूपसे जाकर दशकोंसे शास्त्र सुनाना उनका नित्यनेपा था । आपके शास्त्र पढ़ोंकी शौचो सरल, सद्गु और प्रभावशालिनी थी ।

आप बड़े शान्त स्वभाव और कवि थे । आप स्वधर्मके सच्चे प्रचारक थे । और कवि भी मामूली दर्जेके ऐसे थे जिनको 'शोभन कवि' कहना चाहिये । किमो भी विषयके देखें चौपाई आप फौरन ही बना देते थे । सैकड़ों उपदेश मरे-बचन आपको बचानी याद थे । अपने मालिक (सेठ विनोदीसमजी मालवन्दजी) के हरेक कामकी बड़ी ईमानदारी और वक्तादारीक साथ आप शेष समयका बड़ा



अच्छा सदुपयोग करते थे। इस समयमें आप अपने घरपर कई लड़के लड़कियोंको सुपुतमें पढ़ाया करते थे। शिक्षाका प्रचार आपका ध्येय था। धार्मिक शिक्षाके साथ आर सदाचार और नैतिकशिक्षा इसे ढंगसे देते थे कि थोड़े ही दिनोंमें शिक्षार्थी होशियार हो जाता था। इस तरह आपने कितने ही लड़के लड़कियोंको पढ़ा कर होशियार कर दिया। आपके पढ़ाये लड़के अभी बहुत अच्छी तरहसे अपना जीवन बिता रहे हैं और कई लड़कियाँ अपनी सुसराहमें 'गृहलक्ष्मी' का कार्य अच्छी योग्यतासे सम्पादन कर रही हैं। इतना ही नहीं, पहाँकी जैन पाठशाळाकी स्थापनामें भी आपका बहुत कुछ प्रयत्न हुआ है। कई दिनों तक तो पाठशाळामें अध्ययनका काम आपने ही चलाया और अब भी आप पाठशाळाके उपाध्यक्षी थे। इसके सिवा श्री शांतिनाथ दानशाळा, मंदिरके प्रबंधादि आदि बहुतसे काम आपकी सिद्धदर्शनीमें थे। सारे कामोंको आप बड़े उत्साहके साथ चलाते थे। यहाँके प्रतिपाशाळा कवि श्रीमान् पं० गिरधर शर्मा नवरत्नकी चुनी हुई कविताओंको आप सुन्दर २ अक्षरोंमें लिखकर बाँटते थे और विद्यार्थियोंको वंशव्यक्त करते थे। इनमेंसे कितनी ही कविताएँ आपको जरूरी आदर्यी और सपथ २ पर आप उन्हें कहा करते थे। अपनी पत्नीको पढ़ा लिखा कर सुयोग्य बनाना भी आपका प्रधान और प्रशस्तके योग्य काम है।

आपके अक्षर बड़े सुन्दर थे। बचपनमें कई दिनों तक स्वर्गीय सेठ माणिकचन्दजीके साथ रहकर तीर्थक्षेत्र क्रमेटीका कार्य आपने बड़ी यो-

ग्यतासे चलाया था जिसकी प्रशंसा स्वयम् सेठ साहबने कई दफे की थी। आप "दिगम्बर जैन" "जैनगण्ट" आदि जैन पत्रोंमें भी लिखा करते थे।

ऐसे समान सेवक और सद्गुणी व्यक्तिके एकाएक संसारसे उठ जानेसे वास्तवमें समानको बड़ा धका पहुँचा है। और झालावाड़के बहुतसे सामाजिक तथा धार्मिक कार्य लुप्त हो गये हैं। आपकी मृत्युसे हमें अत्यन्त दुःख है और ज्यादा दुःख है आपकी पत्नी और ३ वर्षकी बच्चीकी असहाय अवस्थाका जिन्हें आप शोकसागरमें छोड़ कर हमेशाके लिये चल बसे हैं। ईश्वरसे प्रार्थना है कि वे आपको आत्माको सहति प्रदान करते हुए कुटुंबियोंको धैर्य प्रदान करें।

कृष्णगोपाल माथुर।

दो मिर्चोंका कर्तारिलफ।

कात्थगुणा महीना शुरू हो गया है। तब वसंतकी हवा चर रही है। इसी समय एक पुष्पोद्यानमें जिनमें कि बहुत घने वृक्ष लगे हुए हैं स्थान स्थान पर सफेद, लाल, नीले, पीले, फूट वृत्तोंपर लगे हुए हैं जिनके ऊपर मधुप-निलयाँ पित्त मिल करके ईश्वर उबर उड़ रही हैं अर्थात् मधुप्य चारित्रिके सहश एक फूटको छोड़ कर दूसरे पर बैठ कर रस लेनी किती हैं। अनेक प्रकारके पक्षीगण फूलोंके गुच्छों पर फलकी मरश बँटे हुए फूलोंका रस-पान कर रहे हैं। प्रायः काठकी घीमी घीमी हवाके झोंकोंसे पृष्णोंसे लदी हुई शाखायें हिल रही हैं, कोदिल आपके वृत्तों परसे 'कुहू' 'कुहू' शब्द आपके सरके चित्तको प्रसन्न कर रही हैं ऐसे समीप



पुष्पोद्यानके बीचमें तलत पर बैठे हुए कुंन बाबू सनैरेके सूर्यकी पुनहरी धूपमें रंग बिरंगी उडती हुई तितिलियोंको देख रहे थे कि यकाइक किसीके पैरकी आवाज मालूम हुई । शिर घुमा कर देखा तो हाथमें छोटा डोर लिये हुए रुद्र बाबू आ रहे हैं । पास आने पर नमस्जि-
नेश हुई और रुद्र बाबू भी तलत पर बैठ गये । आपसे कुछ वार्तालाप होने लगा । चलिये पाठको हम और आप भी इनकी वार्तालाप पर ध्यान दें ।

रुद्र—बाबूजी, आज तो आप बहुत तडके ही स्नानादि क्रियाओंसे निवृत्त हो गये ।

कुंन—हां साहन, इसका कारण यह है कि मैं अब प्रतिदिनके नियमसे घंटे डेढ़ घंटे पहले निवृत्त होकर इस समयको धर्म-ध्यानमें विशेष लगाऊंगा । अब अष्टान्हिका पर्वके केवल ८ दिन ही शेष रह गये हैं ।

रुद्र—यह अष्टान्हिका पर्व कबसे शुरू होता है और इसको सब जैनी माई क्यों मनाते हैं ?

कुंन—फाल्गुण मास बड़ा ही रमणीक समय है, जन खेतोंमें चारों तरफ हरियाली छा जाती है, आकाश निर्मल हो कर फटि-
मणिके समान होता है तब वसंतकी सुगन्धित पवन चलती है, कोकिल अपना आनंदमई राग गाकर सब मनुष्योंके चित्तको प्रफुल्लित करती है उसी फाल्गुण मासके अंतमें अर्थात् फाल्गुण शुद्ध अष्टमीसे फाल्गुण शुद्ध पूर्णमासी तक इन आठ दिनोंमें अष्टान्हिका पर्व होता है इसी समय इन्द्रादिक देव आठवें महाद्वीप नंदीधरमें जा करके १२ अठ्ठमि महा मंदिरोंमें विराजित भिन भगवानके प्रतिविम्बोंकी बड़ी ही भाव म-
क्तिसे पूजन करने हैं प्रायः इसी प्रथातुमार.सर्व

जैन मंदिरोंमें नानारी तथा बालकगण मिश्रकर बड़ी भाव-मक्तिसे पूजन करते हैं । अष्ट द्रव्य चढ़ाते हैं, अनेक नन उपवापादि करते हैं ।

रुद्र—माई साहन, अष्टान्हिका पर्वके मनाने-
का कारण तो मुझे मालूम हो गया पर यह बतलाइये कि मनुष्यको किस नियमके अनुसार कार्य करना चाहिये ।

कुंन—इस अष्टान्हिका पर्वके मनानेका का-
रण तथा नियम भी विगत वर्षोंके जैनपित्रादि पत्रोंमें निकट चुका है तैर अगर आपको नहीं मालूम है तो सुनो—

इन दिनों प्रत्येक स्त्री पुरुषको चाहिये कि प्रातः काल ४ बजे उठकर हाथ मुंह धोकर प्रातः कालकी सामायक करे । सामायक भी ऐसी न करे कि—

भाडा तो करमें किर, जीम किर मुख मांदि ।

मनुभा किर बनारमें, यह तो सुमिरन नौहि ॥

सामायकके लिये जिन मंदिर या शून्य गृह, गुफा, वन, प्रगीवा, मनुष्य स्त्री पशु पाउक रहित स्थान होना चाहिये, उस समय पद्यामन या लज्जासनसे एकाग्र चित्त होकर णमोकारादि नाव जपे । बादको शौच आदि क्रियाओंसे निवृत्त्य होकर स्नान करके तत्त्व सम्बन्धी किसी शास्त्रका स्वाध्याय करे जिससे अत्माका हित हो । फिर दो एक पुस्तकोंका पाठ करके ८ या ९ बजे अष्ट द्रव्यको शुद्ध प्रसासे बत्तावर श्री जिनेन्द्रदेवका पूजन करे । पूजन करने तक जो कुछ पड़े उसको खून समझता जाने, बिना समझे पूजाका उतना फल नहीं होता है भित्तिवा मन्त्र कर पूजा करनेका होता है । बहुतेरे लोग रुढ़ीके अनुसार बहुवर्ती पूजा करते हैं और उनका भाव कुछ भी नहीं समझते हैं । उनको ऐसा नहीं



करना चाहिये । बहिर मक्ति श्रद्धापूर्वक पूजा करना चाहिये । पूजनके बाद उपवास न कर सके तो १ या २ वक्त जेसा मोहनका नियम रख सके उसके अनुसार दोहराको शुद्ध भोजन करे । भोजनके पीछे पुनः पूजन विधान करे, स्वाध्याय करे । अहिंसा सत्य अस्तेय शीलघन संतोष आदि व्रतोंका पालन करे, संयम व नियमसे रहे, स्वाध्याय तथा ज्ञानचर्चा अधिक करे । परिणामोंमें शांति रखे । आठो रोम हिंसा झूठ कुशील चोरी परिग्रह इन पंच पापोंसे तथा क्रोध मान माया लोभ इन चारों कषायोंसे दूर रहे सबसे मिष्ट वचन बोले, सायं हाल होने पर सामायक करे तथा शास्त्र श्रवण करे । इस प्रकार प्रातःकालसे सायंकाल तक उपरोक्त नियम पर चलकर ९३ या १० वने पर तख्त या चटाई पर आराम विनियम करता हुआ सो जावे । अगर दान करनेकी शक्ति हो तो यथायोग्य विद्यालय ब्रह्म-चर्याश्रम विश्वाश्रम, भनापाश्रम आदिमें दान देवे । आरांश यह है कि कषाय और विषयोंको मंद करे, अपने अमूल्य समयको धर्मप्रदानमें लगावे इसी लिये यह पूर्वके दिन विशेष धर्मध्यानके सम्पादन करनेके लिये नियत किये गये हैं ।

रुद्र—यह बातें तो आन आपने खूब बरलाइ, मैं भी प्रतिज्ञा करता हूं कि आपके साथ ही मैं भी पुनन तथा स्वाध्याय आदि करूंगा लेकिन मई साहब यह तो बतलाये कि यह होली—

कुंन—यह होली आजराज नीच तरहसे मनाई जाती है उसको बिछकुट न करना चाहिये, न होलीमें घुरे शब्द बरना चाहिये और न होलीको मजाना चाहिये, न उसे पूजना चाहिये, न कीचड़ आदि किसीके मारना चाहिये । हां,

अगर अपनी अहंतागिनी तथा मित्रोंके साथ प्रेम बढ़ाना हो तो प्राचीन प्रथाअनुसार जैवा राजा अपनी एनीसे, सेठवि अपनी धर्मपत्नियोंसे प्रेम बढ़ानेके लिये सुगंधित जल छिड़कते थे तथा अबीर गुलाल लगाते थे वैसा ही—नयेक मनुष्य कर सकता है इसी क्रीडाका नाम वास्तवमें होली है ।

रुद्र—तो यह होलीकी महा नीच क्रिया कैसे भारतवर्षमें प्रचलित हो गई ?

कुंन—माई, अब समय बहुत हो गया है । यह बात फिर बताऊंगा । अब जाता हूं । नय निनेश ।

रुद्र—भच्छा माई, नयनिनेश । कल मैं यहीं भिछूंगा । जयनिनेश । कुंन छोटा डोर और घोंटी लेकर अपने घरको चले गये और रुद्रबानू छोटेंमें पानी मारके शौच किशोक लिये चले गये और हम भी अब स्नानके लिये चले । जयनिनेश ।

रतनलाल जैन कुरावली [मैनपुरी]

एक भिचित्र स्वप्न ।

(ले० ताराचन्द्र जैन, झालीगाहन सिटी ।)

ग्रीष्म ऋतुका मध्याह्न काल है । सूर्य अपनी प्रचंड किरणोंके द्वारा मगतको तृप्त कर रहे हैं । वायु भी सूर्यके सहायतार्थ लूका रूप धारण कर “सामपेशानके मच ही सहायक है ” वाली उक्तिको चरितार्थ करनेके हेतु जीवोंके शरीरोंको जला रही हैं । सब जगह सज्जा छाया हुआ है । ऐसे ही समयमें एक नवयुवक जिसकी अवस्था १२ वर्षके लगभग पतन होती है एक मनोहर उद्यानमें बैठा हुआ कुछ सोच रहा है । उद्यानके समस्त वृक्ष कुमुदित और पलविन हो रहे हैं । गुलाब चमकी आदिकी सुगंधि चारों ओर



फँस रही हैं । मनुष्य पृथ्वी पर भ्रमण कर रहे हैं । वृक्षोंकी शाखाएं इतनी लम्बी छतनार हैं कि मानों गगनमंडलको नापनेको हाथ फेराये हो । मयूर अपने नृत्यसे और पक्षी अपने गानसे मनको लुभा रहे हैं । बागके एक ओर निर्मल मलसे मरा हुआ एक सुन्दर सरोवर पक्षियोंको आनंद दे रहा है । वृक्षों और तालाबके कारण बाग इतना शीतल है कि मानों शीतलता सूर्यके मथसे इसी स्थानमें छिप गई हो ।

परन्तु ये सर्व प्राकृतिक सुन्दरताएं उस उदास और चिन्तित नवयुवकको किंचित भी शान्ति नहीं प्रदान कर सकी । कोई मनुष्य नहीं, न उल्लासकता है कि वह किस विचारचक्रमें फँसा है । किन्तु एकाएक उसके मुखसे कुछ ऐसे शब्द बाहिर निकल पड़े जिनसे 'उसके विचारोंका आभास ज्ञात हो सकता है । वे शब्द ये हैं—

'हा भारत ! तेरी ऐसी अवस्था कैसे हो गई ? हा ! क्या कारण है कि तेरी गोदमें जो पूर्वमें परोपकारी और ज्ञानी मनुष्योंका कोट्टास्थान था आज स्वार्थी—मूर्ख और झगड़ाल मनुष्योंका राज्य है ! हा ! जिस देशमें पहले अपने साहस, धैर्य, वीरता और पराक्रमसे सप्त स्रृष्टिको कम्पा देनेवाले—देवताओं तकको भयभीत कर देनेवाले पुरुष उत्पन्न हुआ करते थे वही देश आज निरुपयोगी—चायर—निर्वृत्त और धैर्यशून्य मनुष्योंकी लोछामूमी बना हुआ है ! जहाँ कभी ब्रह्मचर्य और खी शिक्षाका स्तुत प्रचार था, ब्राह्मी और लीटावती जैसी अनेकानेक स्त्रियों जन्म लिया करती थीं, हा ! वहीं आज बालविवाह सौभाग्यका चिह्न माना जाता है—दूधज्याहूँ मरणाका द्वार माना है—द्वियोंको सुशिक्षा

न देना और उन्हें मोल ली हुई चांदीके समान गिनना धर्मका एक मुख्य अंग समझा जाता है । हा भारत ! आज तेरे बच्चोंको दुर्भिक्ष और मयंकर रोगोंने सता रखा है । जिवर देखो उधर ही फूटका साम्राज्य छाया हुआ है । यहाँ तक कि एक ही धर्मके अनुयायियोंमें भी एकता नहीं है । हा ! सर्वज्ञ ये जो ऐसे महात्माओंकी संतानोंकी शिक्षाका आज सुप्रबन्ध नहीं है । उसे मानसिक और शारिरिक शक्तिको नष्ट कर देनेवाली—जीवन तकको नष्ट कर देनेवाली कुशिक्षा दी जाती है । हा भारत ! आज तेरी संतान गुलाम है वह अन्यायोंके मारसे दबी हुई है और उसका सच कहीं देश विदेशमें, अग्रमान होता है । हा ! कहां तक तेरे दुःखोंको सुनाऊँ । तेरी दुर्दशाको देख कर मेरी छाती फटती है—कलेनाटक २ हुए जाता है । हा ! मुझे कोई उपाय नहीं सुझता है । हे ईश्वर ! मुझे शक्ति दे और उपाय बना ताकि मैं अपनी प्यारी माता-भारत माताका दुःख दूर कर सकूँ । इसके पश्चात् उसके शब्द—भ्रमर पुनः उसके मुख-पद्ममें बिछीन हो गये । तथापि चिन्तासे वह मुक्त न हो सका । कुछ समयके अनंतर निद्रादेवीने उन पर अपना प्रभाव जमाना आरंभ किया । युवकने इसका प्रतिहार किया परन्तु अन्तमें विकृत होकर उसने देवीकी अविनता स्वीकार कर ली । परन्तु लेखकी बात है कि निद्रा भी उसे पूर्ण शान्ति नहीं प्रदान कर सकी । यह एक स्वप्न देखने लगा । जो कुछ उसने देखा उसका संपूर्ण विवरण देनेमें यह श्रुद्ध लेखनी असमर्थ है इस वास्ते उसका संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है—

नवयुवक मयंकर जीवोंसे व्याप्त एक निर्जन वनमें खड़ा हुआ था कि उसे पूर्व दिशासे



आता हुआ एक ब्रजे या वादिव्रज मनोहर शब्द सुनाई पड़ा। वह आश्चर्यचकित हो कर उसी दिशा की ओर चला पड़ा। चलते चलते वह एक मनोहर वाटिका के निकट आया जिसके बाहिर शस्त्रों से सज्जित कुछ मनुष्य पहिरा दे रहे थे और जिसके भीतर एक बड़ा जटल हो रहा था। पहरेदारों से पूछने पर विदित हुआ कि यह जटल सेठ दुलीचंदजी के विवाह की खुशी में, जो कि अभी होनेवाला है, हो रहा है। इसके पश्चात् वह युवक वाटिका के अंदर गया। जो कुछ घटना वहां हो रही या घट रही थी उसे देख कर उसकी आंखों में आंसू आगये। उसने देखा कि एक ८० वर्ष का वृद्ध वरुणी पोशाक पहने हुए बैठा है और उसका व्याह अभी एक दशवर्षीया बाल से होनेवाला है। चारों ओर पंच लोग चुपचाप बैठे हुए तमाशा देख रहे हैं। इस मयानक दृश्य को देख कर और वन्या के भविष्य को विचार कर हगारे युवक का हृदय कांप उठा, शरीर धारधराने लग गया और उससे पसीने की धारें छूटने लगीं। वह अपने विचारों को नहीं रोक सका और पंचों की सम्मोहित कर बोला—

“पंचों ! आप दया-धर्म को पालनेवाले हो। आप अपने सामने एक कीड़ी की भी हत्या नहीं सह सकते हैं। परन्तु मुझे यह देख कर अत्यंत आश्चर्य हो रहा है कि आपके समस्त एक जीते जागते पंचेन्द्रिय मनुष्य की प्रत्यक्ष हत्या हो रही है और आप चुपचाप ही नहीं है परन्तु इस महान पातकीय कार्य में योग भी दे रहे हैं। इस ८० वर्षक विपद्यम्भट लजा हीन-मूर्ख-हायर और पापी मुझे देखो और इस दश वर्षीया

अनजान, मुकुंभारी बाला की ओर निहारो। यह मुझे मुड़ियों का व्याह है या मनुष्यों का व्याह है ! प्रत्यक्ष-मनुष्य हत्या हो रही है। बुढ़े बाबा से तो मुझे कुछ भी नहीं कहना है क्योंकि उनसे तो बुद्धि अग्र हो गई है परन्तु आप तो पंचलोग हो आपको कन्या के भविष्य का भी विचार है या नहीं ? हा ! क्या सब की बुद्धि पर पानी फिर गया—सब के सब वज्र हृदय हो गये—संसार से दया का छाप हो गया। अकसोस ! सद अकसोस ! इस पर एक मनुष्य बोला—अरे वह कौन है जो व्याहमें अमंगलीक शब्दों का व्यवहार करता है।

तब दूसरा मनुष्य बोला—हां वह तो वर और पंचों को साफ २ गाली दे रहा है। तब तीसरे मनुष्य ने युवक से वहां से चले जाने को कहा। युवक ने इस पर ऐतराज किया। तब सब मनुष्यों ने मिठ कर उसे मारने की ठानी। इतने में ही आकाश में सरसरकी ध्वनि सुनाई पड़ी। लोगों ने ऊपर सिर उठा कर देखा कि एक पुरुष जिसका तेज सूर्य के समान है बड़ी शीघ्रता से उनकी तरफ नीचे उतर रहा है। उसे देखते ही सिंघाय नवयुवक के और सब मनुष्य मयमोत होकर इधर उधर भाग गये। आकाश-बाला पुरुष जितना २ नीचे आता जाता था उतना ही उतना उसका प्रकाश बढ़ता जाता था। अन्त में युवक की आंखें चकाचौंध हो गईं। उसने अपना मुख नीचे कर लिया। इतने में उस मदा बटवान पुरुष ने युवक की बांह पकड़ कर सगरमें उसको एक अज्ञात अतपन्त सुन्दर और विशाल मंदिर में ले जाकर रत्न दिया और आप अर्घ्यार्पण हो गया।

आश्चर्यान्वित और मयमोत युवकने इधर उधर घूमकर देखा कि यह मंदिर पारिजातादि स्वर्गीय पुष्पोंके सौरभसे सुगंधित, रोदसीके पत्तियोंके गानसे गुंजित, वक्षतक अशोकादि वृक्षोंसे शोभित, सुधासे पुरित एक स्वर्ण-पत्रवाले सरोवरसे शोभित और संगमरमरकी भूमिवाले एक अनुपम उद्यानसे परिवेष्टित है। पाठकगण ! मैं, मंदिरकी अद्वितीय शोभाका, जो कि युवकने देखी, वर्णन करके आपके अमूल्य समयको विगाड़ना नहीं चाहता। बागकी सुन्दरता परसे आप स्वयं मंदिरकी शोभा और सुन्दरताका अनुमान कर सकते हैं। बस इतनाही कहना काफी होगा कि यह सारा मन्दिर रत्नोंकी भूमिवाला था।

इस मंदिरमें बहुतसे कमरे थे जिनमेंसे एक कमरेमें चारों ओर स्वर्ण-निर्मित सिंहासन बड़े हुए थे जिन पर इन्द्रादि सर्व देव बैठे हुए थे। इन सबके मध्यमें सबसे श्रेष्ठ और ऊँचे सिंहासन पर एक देवी जिसकी सुन्दरता और तेज कोटि चन्द्रमाओंकी नीतनेवाला था, विरागमान थी। यह देवी ऐसे ऐश्वर्यके होनेपर भी उदास प्रतीत होती थी। हमारे युवकने इसको देखते ही साष्टांग प्रणाम किया। तब देवीने युवकसे कहा—वत्स ! इधर आओ और [उंगलीसे दिखाकर] इस सिंहासन पर बैठ जाओ। डरो मत। मैं तुम्हारी माता—भारतमाता हूँ। नवयुवकने पुनः नमस्कार किया और तब देवीके बताये हुए सिंहासन पर [जो कि खाली पड़ा हुआ था] बैठ कर डरते डरते बोला—माता ! आप कुछ उदास सी दिखती हो, तो आपकी उदासीका क्या कारण है। साथ ही मैंने वं उपसर्ग भी बताया।

जिनसे कि आपका दुःख दूर हो सकता हो।

इसके उत्तरमें देवी बोली—देखो वत्स ! यह तो तुम मलीमांति मानते हो कि माता अपनी सन्तानको प्राणसे भी अधिक प्यार करती है। माता अपनी सन्तानके दुःखमें दुःखी और सुखमें सुखी हुवा काती है। अब देखो आनकल मेरी संतान बड़ी दुःखी है। हाय ! उसके तन पर कपड़ा नहीं—लानेको घरमें अन्न नहीं। राय ! वह शिखासे हीन है—भ्रष्टान है। वह अनेक रोगोंसे नरुड़ी हुई है—निर्वैक है। यह कहते हुए देवीके कपल नेत्रोंमें आंसु आगये। अब फिर तुम्हीं कहो कि अब मेरे प्रारम्भसे प्यारे बच्चे कष्टमें हैं तो क्या मैं दुःखी न होऊंगी ? बस मेरी उदासीका यही कारण है। तुम भी मेरी एक सन्तान हो। इसलिये यदि तुम मेरे दुःखको दूर कर अपना कर्तव्य पालन करना चाहते हो तो निम्नलिखित उपाय काममें लाओ जिससे तुम्हारे भाइयोंका दुःख दूर हो और मैं भी सुखी होऊँ।

सुन्दरारा सभसे पहला कर्तव्य यह है कि तुम मेरी संतानको शिक्षित बनाओ। इस कामके अर्थ तुम प्रत्येक ग्राम और नगरमें पाठशालायें स्थापित करो जिनमें विज्ञान—शिल्प—राननीति—वैद्यक—हृषि विद्यादि उपयोगी विषयोंको मातृपुत्रा द्वारा पढ़ायेका सुवचन हो। स्थान स्थान पर छात्राश्रम और आदिकाश्रम खोलो जिनमें धार्मिक शिक्षाका भी प्रबन्ध हो। ब्रह्मर्षियोंकी शिक्षा पर विशेष ध्यान दो। ब्रह्मर्षियोंकी प्रतिष्ठा करना और उन्हें शिक्षा देना करना परम कर्तव्य समझो। स्थान स्थान पर गुरुकुल खोलकर लोगोंमें ब्रह्मर्ष्यका प्रचार करो। संस्था-



ओंको अच्छी तरह चढ़ानेके अर्थ लोगोंसे चन्दे वसूल करो । न्याह और समान प्रणालीमें भी समयानुसार उचित सुधार करो । बाळ और वृद्ध व्याहको एकदम चन्द वर दो । मिलजुल कर रहना और काम करना सीखो । समान धर्मके अनुयायियोंमें रोटी-वेटीका व्यवहार होने दो । देशके व्यापारकी उन्नति करो । देशके बाहिर कच्चा माल बिल्कुल मत भेजो—उसे पका बनाने का यहीं प्रबन्ध करो । सदा स्वदेशी वस्तुयें व्यवहारमें लावो । अभी तो इतना ही कहना बहुत है । यदि तुम उन्नति करनेका दृढ संकल्प कर लो और इस काममें जुट जावो तो तुम्हें सहस्रों उपाय दृष्टिगोचर हो जायेंगे । तब युवक बोला—माता ! मैं, आपने जो उपाय बताये हैं उन्हींको परसक काममें लानेकी प्रतिज्ञा करता हूँ । मुझे आशिषाट दो कि मैं अपने कार्यमें सफल होऊँ । देशीने कशा—एवमस्तु ॥

इतने हीमें युवककी निद्रा भग हो गई । उसने उठकर कहा—अरे यह तो स्वप्न है !

॥ इति शुभम् ॥

भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा के २५वें आधिवेशनके साथ कानपुरमें झौनवाले प्रथम जैन साहित्य प्रदर्शनके नियम ।

१—इस प्रदर्शनका नाम जैनसाहित्य प्रदर्शन होगा ।

२—इसका मुख्य उद्देश्य जैनोको जैनसाहित्य तथा जैनधर्मका महत्व और प्राचीनत्व दिखाकर उसकी उन्नतिके लिये उत्साही और बटिवद्ध करना है, तथा अन्य बंधुओंमें जैनसाहित्य

विषयक श्रद्धा तथा उत्साह प्रभाव उत्पन्न करना है ।

३—यह प्रदर्शन ता० ३१-३-२१ मितो चैत्र कृष्ण ८ वीर सम्वत् २४४७ विक्रम सम्वत् १९७७ तक खुला रहेगा ।

४—इस प्रदर्शनमें निम्न लिखित विभाग होंगे ।

जैन-मूर्ति विभाग ।

क—भूगर्भ (जमीनके अंदर)से प्राप्त या अन्य दुर्गत्स्थानोंसे प्राप्त प्राचीन [खंडित] जैन मूर्तियों से—जैनमूर्तियोंके चित्र अर्थात् तीर्थस्थानों, प्राचीन गुफाओं, अनापव धरों, शिला लेखोंसे प्राप्त हस्त लिखित चित्र तथा उनके फोटो ।

ग—प्रसिद्ध १ तीर्थस्थानोंके चित्र, पर्वतकंठराओं और भारतवर्षके प्रत्येक प्रांतके प्रसिद्ध २ दर्शनीय मंदिरोंके हस्त लिखित चित्र तथा फोटो ।

घ—पोडश स्वप्न, लेश्या, आहार, उपसर्ग आदि भावोंके हस्तलिखित चित्र तथा फोटो ।
ङ—प्राचीन १ आचार्य, मुनि, साधु, गृह-त्पागी, तथा धर्मोपदेष्टाओंके चित्र तथा फोटो ।

च—प्राचीन तथा अर्वाचीन जैनरामाओंके चित्र फोटो, तथा चिन्ह, सिक्के, राज्यकाल, रामस्थान आदिके चित्र तथा फोटो ।

छ—प्राचीन दानपत्री, परोपकारी, धर्मात्मा, पंडित, उपदेशक, सेठ, साहूकार, कवि तथा मत्त मन्नोंके चित्र, और फोटो ।

ग्रन्थाविभाग ।

क—इतिहास, न्याय, व्याकरण, पुराण, काव्य, कोष, नाटक, धर्मशास्त्र, पृता, प्रतिष्ठा विधि, कथा आदि २ सप्त विषयोंके प्राचीन २ दुष्प्राप्य तथा मनोज्ञ ग्रन्थ, भोजपत्र, ताम्रपत्र, पत्र, वागम आदि पर लिखे हुए तथा प्राकृत, देशनागरी, वर्णाटिकी, द्राविड गुजराती आदि आर्य भाषाओंके ।



दिगंबर जैन.



THE DIGAMBAR JAIN.

नाना कलाभिर्यिविधश्च तत्त्वैः सत्योपदेशैस्तुगोपयामि ।

संशोधयत्सन्निभं प्रवर्तताम्, दैगम्बर जैन समाज मासम् ॥

वर्ष १४ वॉ.

वीर संवत् २४४७. माघ विक्रम सं० १९७७.

अंक ४ था



वारकलके उत्सवके बाद देहलीका संघ म०
शीतलप्रसादजी तथा पं०
मूढविद्विन् हम्मनलालजीके साथ
सिद्धान्त शास्त्र । मूढविद्वि १६वां था
जहां कि रत्नोंके विम्ब,
खड़ादि सिद्धान्त ग्रन्थ तथा अनेक माचीन
स्तुतियोंके १८ मंदिर हैं । जैनमित्रसे मालूम
है कि जैसी कोशिश सिद्धान्त शास्त्रकी
कल लेनेके लिये इस बार हुई है वैसी कभी
भी नहीं हुई थी । सबसे बड़ा श्रीचंद्रमसुहा
मन्दिर जिसको दो बोट और १००० स्तंभ हैं
तथा करोड़ोंकी लागतका बनलाने हैं उसीमें
श्री सिद्धान्त शास्त्र-बदल, जयघवल और महा
बदल ग्रन्थ ताडपत्र पर विराजमान हैं तथा
इसीमें ही २२ अनेक रंगोंके रत्नोंके विम्ब हैं ।
तथा ५५ स्फटिककी प्रतिमाएं हैं । इस पर
मूढविद्वि जैन पंचान और म० बाह्यकी-
पट्टाचार्यका जो कि विद्वान् और

बयोवृद्ध हैं । घबल और जयघवलकी मालवीय
लिपिमें एक २ नकल सेठ हीराचंद नेमचंद
दोशिके प्रयत्नसे हुई है । तथा महाघवलके १७
शृष्टकी नकल होकर इसकी लिपि होना बाकी
है । कई वर्षोंसे प्रयत्न हो रहा है कि इन
सिद्धान्त ग्रन्थोंकी एक २ नकल बड़े २ शहरोंमें
होनेके लिये ये लोग नकल करने दे परन्तु कुछ
भी सफलता नहीं हुई तब वारकलमें इसके लिये
डेप्युटेशन नियुक्त हुआ था उस डेप्युटेशनने वहां
बड़ी समझ की और पंचान तथा मट्टारकनीको
बुझा कर कारकलकी सभाका हाल सुनाया और
सिद्धान्त ग्रन्थोंकी नकल करने देनेके लिये
स्वीकारता मागी तब पंचों और मट्टारकनीसे
उत्तर मिठा कि नकल देनेमें हमें उत्तर नहीं है
परन्तु यहां पर दक्षिण कनडा प्रान्तके कुछ माई
उपस्थित नहीं है उनकी सम्मति बिना स्वीकार-
ता नहीं दी जा सकती । यह उत्तर ठीक नहीं
था क्योंकि कारकलमें प्रान्तके बहुतसे माई इकट्ठे
हुए थे । और उन्होंने ही प्रस्तावमें सम्मति दी
थी तब भी यह बहाना बनाया गया । बादमें
ब्रह्मचारीजीने पंच और मट्टारकनीको बहुत कुछ
समझाया तब यह कहा कि आगामी वर्षमें मूढ-
विद्विमें उत्सव होनेवाला है तब प्रान्तके सबमाई



मिठकर विचार करेंगे आदि । ब्रह्मचारीजीने कहा कि यह तो वहनेवाजी है । फिर आपने दो दिन विचार करनेके लिये दिये और आपने दो उपवास भी किये तब भी कुछ फल नहीं हुआ । अन्तमें फिर समा ला० हुक्मचन्दजी देहलीके समापतिरवमें की गई और उसमें प्रस्ताव किया गया कि—“दि० जैन समा जो आज मितौ फाल्गुण कृष्ण ६ रविवार वीर २४४७को श्री चन्द्रप्रभु जैन मंदिर मूढचिद्रीमें एकत्र हुई जिसमें स्थानीय भाषाओंके अतिरिक्त दिहली संघके व इन्दौर, जैपुर, सुनानगढ़, बम्बई, कलकत्ता, आसाम, आदि कई स्थानोंके साई एकत्र थे श्री घबल, जयघबल, महाबल ग्रंथ भिनमें जीव और कर्म बंधादिका विस्तार पूर्वक वर्णन बहुत उपयोगी है उनकी केवल एक एक ही प्रतिमात्र मूढचिद्रीहीमें देखकर ऐसा प्रस्ताव करती है कि इनकी रक्षा व इनका पठन पाठन विद्वानों द्वारा किया जाय इसलिये इनकी नकलें अन्य बड़े नगरोंकी पंचायतियोंमें भी बिरानमान की जाय तथा ग्रंथोंके रक्षकोंसे प्रार्थना करती है कि इ० प्रस्तावका प्रबंध आगामी वर्ष जो उत्सव मूढचिद्री में होनेका है उस समय तक कर लिया जाय । इसके बाद करीब १००० देहली संघने मंडारमें दिये तथा लाछा भोंदुमल कागजी देहलीन प्रकट किया कि घबलादि तीनों ग्रंथोंकी दो २ प्रतियोंकी नकल होनेमें मितना वागम, कलम स्याही केशर आदि दंगगा वह सब हम देंगे तथा १०० नकल होनेके लिये पंचानकी नकल दिये तथा लाछा चिरंजीटाळनी पानीपतने तीनोंकी एक २ प्रति करनेका कुछ खर्च देकर

प्रतिगां देनेका बचन दिया जो बात वहांकी मंडावहीमें लिख दी गई है ।

अब विचार यह करना है कि मूढचिद्रीके पंचान और मटारकजी नकल देनेको-इन्कार क्यों करते हैं ? वे समझते हैं कि यदि नकल चला गई तो फिर यहां कौन आवेंगे और मंडा-डारमें उपज वहांसे होगी और हमारा तथ मंदिरोंका खर्च कैसे चलेगा आदि परंतु उनके ये खयाल ठीक नहीं है । याजीलोन ताडपत्रकी असल काफी, रत्नबिम्ब तथा प्राचीनबड़े मंदिरोंके दर्शन करनेको नैसे आतं हैं वैसेही आवेंगे और उसमें कुछ भी कमी नहीं होगी । आशा है पंचान और मटारकजी अब तो अपना विचार बदलेंगे और शीघ्र ही नकल देनेके लिये स्वीकारता देंगे । महासमाकी गत वैश्वमें अन्तमें इसके लिये प्रस्ताव हुआ था और इसबार कानपुरमें भी श्रीमीकी सा-रवाईको जानकर फिर जोरदार प्रस्ताव होना चाहिये और महासमाकी ओरसे इसके लिये एक रेप्युटेशन नियत होना चाहिये ।

* * *

यह तो सारा जैन समान अच्छी तरहसे जान गया होगा कि भारत० दि० कानपुर प्रदर्शन जैन महासभाका २९ और पां अधिवेशन कानपुरमें तीन आक्षेप । आगामी चैत्र वरी ९-

१०-११ ता० १२-१ अप्रेलको होनेवाला है जिस अवसर पर ता० २१ मार्चसे ६ अप्रेल तक जैन साहित्य प्रदर्शन होनेवाला है जिसके नियम जो प्रदर्शन कमेटीकी ओरसे पकट हुए हैं । हम गतांमें प्रकट कर चुके हैं । चारों ओरसे खबरें आ रही



हैं कि प्रदर्शनके लिये बहुतसे लिखित मुद्रित ग्रन्थ चित्र, फोटो आदि भेजे जा रहे हैं और प्रदर्शनकी तैयारी हो रही है तब महासभाके उपसभापति ला० जम्भूप्रसादजी रईस सहारनपुरने एक नई चर्चा 'जैनगण्ट'में खड़ी कर दी है जिसका फल हम समझते हैं महासभाकी सर्वव्यापकतामें बड़ा ही बाधा रूप होगा । समाप्त कमेटीकी ओरसे प्रदर्शन कमेटी नियत हुई थी और उसीने प्रदर्शनके नियम बनाये थे । अब लाजानीने इसपर तीन आक्षेप किये हैं और तीनों प्रकारकी कार्रवाईको तुरन्त रोकनेके लिये सूचना निकाली है इसपर ही हमें कुछ निवेदन करना है ।

पहिला आक्षेप यह है कि प्राचीन खंडित मूर्ति रखी जायगी इससे अविनय होगी सो न रखनी चाहिये । इसका उत्तर यह है कि अनेक अजायबघराओंमें, प्राचीन खंडित मूर्तियाँ रखी हुई हैं ही और हम 'अंगोपांग खंडित मूर्तिकी प्रस्ताव पूजन न करके उसको पौरे-में या अलग रख छोड़ते हैं । तो वे अप्रन्य प्राचीन खंडित मूर्तिको इस प्रदर्शनमें रखनेसे कोई हानि नहीं है ।

दूसरा आक्षेप—चित्रों और फोटोके विषयमें है । हमारे तीर्थंकरोंके चित्र फोटो आदि लेनेसे अविनय होती है इसलिये ऐसे चित्र फोटो प्रदर्शनमें नहीं रखे जावे ऐसा लाजानी कहते हैं और आस्ट्रियासे बजनेमें जैन मूर्तिके चित्र आये थे उन वस्तुके प्रस्तावकी नक़्क भी प्रकट की है यह प्रस्ताव तो ठीक है परन्तु प्राचीन अर्वाचीन परिस्थितिकी भेदा

नके लिये तो जो २ चित्र फोटो प्रकट हुए हैं उनको प्रदर्शनमें बताने ही चाहिये और उसमेंसे कोई अनुचित लगे तो उस पर महासभामें विचार हो सकेगा । ऐसे चित्र फोटो प्रदर्शनमें लाने ही नहीं और एकत्रित स्तरनि ही नहीं यह ठीक नहीं है ।

अथ तीसरा आक्षेप—सारे जैन समाजमें बड़ी खलबली मचानेवाला है जिसको बाध कर हमें तो यह ही मालूम पड़ा कि महासभाके ये अगुए निंदोंसे इफ़दम जाग्रत हुए हैं । आतेर यह है कि प्रदर्शनमें मुद्रित ग्रन्थ विभाग भी रखा गया है और आपका कहना है कि "महासभाका दृढ नियम है कि मुद्रित ग्रन्थ न छापे जाय न छापे हुए खरीदे जाय तो फिर यह नियमविरुद्ध कार्रवाई क्यों ? आन महासभा मुद्रित ग्रन्थोंकी प्रदर्शनी खोल कर स्वयं उसके प्रचारमें सहायक बनती है यह कहाँ तक उचित है ? क्या महासभा अपने दृढ नियमोंका उल्लंघन करके अपने दृढ नियमोंकी मर्यादाको तोटना चाहती है इस विषयमें हम कार्तिक वदी ७ स० १९५३में पास हुए प्रस्ताव न० ८की नक़्क उद्धृत करते हैं—सम्मत १९५० की महासभामें जो प्रस्ताव स्वीकर हुआ था कि छापेकी पुस्तक धर्म सम्बन्धी व चार अनुयोग सम्बन्धी न छापी जावे और न छापी हुई खरीदी जावे और न पाठ शालाओंमें पढ़ाई जावे वह प्रस्ताव पृष्ठ किया गया और वह प्रस्ताव हमेशाके वास्ते दृढ नियम किया गया " अगे आप लिखते हैं कि " महासभाके कार्यकर्ता और प्रवक्ता कमेटीके



मेम्बर शीघ्र ध्यान दे और इन नियम विरुद्ध कार्रवाईको रोके । महामंत्री तथा स्वागत कमेटीको भी हम लिख चुके हैं आदि । ”

मान्यवर पाठकगण ! महासभाका यह २५ वर्षका पुराना प्रस्ताव हमें तो मालूम ही नहीं था और शायद आपमेंसे बहुत साईको और बहुतसे समासदोंको भी मालूम न होगा । हां इतना हमें मालूम है कि कई वर्षोंपर छापेकी चर्चा चली थी और ग्रंथ छापनेका विरोध करने वाले इनेगिने पुराने विचारवाले ही थे । कैसा भी हो परंतु हमें तो यहा यह विचार करना है कि महासभाने खुद ही इस दृढ़ नियमका पालन किया है या नहीं ? ' जैन गन्ठ ' में यद्यपि छपे ग्रंथोंका विज्ञापन नहीं छपता है तो भी जैन शास्त्रके अनेक श्लोक आदि, श्रेष्ठोंके प्रमाणोंमें छपते हैं कईवार ऐसे दशार्थोंके सूची पत्र भी भिष्टि गये थे जिनमें भी जैन ग्रंथोंका विज्ञापन था तथा महासभाके आधीन दूसरी पाठशालाओंकी बात जाने बीजिये खुद महासभाके मथुरा विद्यालयमें भी दो तीन वर्षसे छपी पुस्तकसे ही पढ़ाई

(हो रही है—यह क्या छालानीकी मालूम नहीं है ? आग तो घर २ में छापेका प्रचार हो रहा है । जैनोंका शायद एक घर भी ऐसा नहीं होगा कि जिसके यहां कोई छपी पुस्तक नहीं पहुंच गई हो ।

इस समझते हैं महासभाका यह हमेशका दृढ़ नियम कहा तक पाला गया है उसका हाल बतानेके लिये और भविष्यमें इस नियमको बदलनेकी महासभाको आवश्यकता है या नहीं उस

पर विचार करनेके लिये इस प्रदर्शनमें आज तकके मुद्रित सभी ग्रन्थ प्रदर्शनमें ला २ कर रखने चाहिये जिससे मालूम होसके कि कितने वर्षमें कितने ग्रंथ कितनी संख्यामें प्रकट हुए और इससे जैन समाजमें उन्नति हुई या भवनति ?

प्रदर्शन कमेटीने नियम प्रकट किये थे उससे मुद्रित ग्रन्थ आये ही होंगे और उनका पूर्ण कर्तव्य है कि उनको प्रदर्शनमें रखें । अन्यथा कमेटी और मेमनेवालोंका अपमान ही होगा । महासभा सभी प्रान्तिक समाजों, जातीय समाजों, संस्थाओं, तीर्थों, मंदिरों आदिको अपने आधीन रखनेका दावा करती है परन्तु बहुतसी समा और संस्था इसका आधिपत्य स्वीकार नहीं करती इसका कारण यही है कि महासभाका काम उनके नामके अनुसार नहीं है यद्यपि एक दो वर्षसे छाला भगवानदासजी इसके लिये प्रयत्न कर रहे हैं ।

इस चर्चासे इसवारकी महासभामें छापेकी चर्चा अवश्य होगी ही और ऐसा एक प्रस्ताव भी कलकत्ताकी दि० जैन युवक समितिने भेजा है कि “जैन समाजमें ज्ञानका अधिक प्रचार करनेके लिये एक शुद्ध उपाखाना द्वारा जैन धर्मके ग्रन्थोंका प्रचार किया जाय और उसके लिये दो लाख रुपयेकी लिमिटेड कम्पनी खोद कर शेयर बेच दिये जाय” सबनेष्ट कमेटीमें यह प्रस्ताव उपस्थित होगा ही । देखे इसका क्या निर्णय होता है । हमें जहा तक अनुमान है इस बारकी महासभामें छापेकी चर्चाका विषय प्राप्त उपस्थित होगा इसलिये सभी प्रान्तके मा-



मोको महासमामें शामिल हो कर अपने २ विचार प्रकट करने चाहिये।

हमारा अनुमान है कि इसवार इस वर्षसे फल यह होगा कि महासमाका संगठन दृढ़ होगा अथवा तो महासमाका बल छिन्नमित्र होनायगा परंतु पुराने विचारवालोंसे हमारा साम्रह निवेदन है कि समयकी परिस्थितिको देखिये और उसके अनुसार ही चलनेके लिये विचार कीजिये। आशा है इसवारके बयोवृद्ध अनुमवी और विचारशील समापति श्रीमान साहू सलेखचंदजी बहुत विचारपूर्वक ही महासमाका कार्य करेंगे।

कानपुरमें

रघोत्सव और महासमा।

अपूर्व प्रदर्शन।

कानपुरमें महासमाके लिये अब अनेक दिनों ही रह गये हैं। वहाँ रघोत्सव, महासमा, प्रदर्शन, महिला परिषद, शास्त्रीय परिषद आदिके लिये अनेक प्रकारकी तैयारियां हो रही हैं। महासमाके लिये अलग मंडप बन रहा है। जैन साहित्य प्रदर्शनके लिये बड़ा मारी मकान ले लिया गया है। ठहरनेके लिये सब प्रकारका इन्तजाम हो रहा है। प्रदर्शनको सफल बनानेके लिये इसके मंत्री पं० कन्हैयालालजी राजवैद्य इतना परिश्रम कर रहे हैं कि आप खुद प्रदर्शनके लिये सामान एकत्रित करनेके लिये ता० २४ फरवरीसे ता० १६ मार्च तक अमण करनेको निक्खे ये जिसमें आप अलीगढ़, हाथरस, आगरा, गयरा, देहली, जयपुर, जोधपुर, अहम-

दावाद, ईडर, बड़ौदा, सुरत, और अजमेर गये थे जहाँसे अनेक प्राचीन ग्रंथ, चित्र आदि आपको प्राप्त हुये हैं और कर्मसद (गुजरात)में जो 'यशोधर चरित्र' ग्रन्थ गुजहरी अक्षरोंसे लिखित, कथाके भावके रंगीन, गुजहरी चित्रोंसे सुशोभित तथा मोती नीलमसे जड़ित गत्तेवाला है उसको देनेके लिये कर्मसदकी पंचायतसे हमने स्वीकारता ले ली है और वह अपूर्व ग्रंथ भी वहाँसे लाकर इस प्रदर्शनीमें हम लेनाकर रखनेवाले हैं। जयपुरसे पंडितजीको दीवान अमरचंदजी का रंगीन चित्र, पं० मोलीलालजी तथा बाबा दुलीचंदजीका चित्र मिल गया है तथा राना महिपालका एक सिक्का मिला है। ऐसी कई अपूर्व प्राचीन वस्तुएँ तथा ताड़पत्रके अनेक ग्रन्थ प्रदर्शनके लिये आ चुके हैं। आराके जैन सिद्धांत मन्तका कुछ प्राचीन जैन साहित्य भी वहाँ प्रदर्शित करनेका प्रबंध हो चुका है। सारांश कि यह प्रदर्शन जैन समाजमें प्रथम और अपूर्व ही होगा।

उत्सवका प्रोग्राम इस प्रकार है

चैत्र वदी ७ ता० १० मार्च—	समापति श्रीमान साहू सलेखचंदजी का स्वागत।
" " ८ " ११ "	रघोत्सव तथा जैन साहित्य प्रदर्शनका उद्घाटन।
" " ९ " १ "	अप्रेल महासमाकी प्रथम बैठक, शास्त्रसमा
" " १० " २ "	महासमाकी दूसरी बैठक, शास्त्रसमा, महिला परिषद।

” ” ११ ” ३, महासभाकी तृतीय
बैठक, शास्त्रसभा
महिला परिषद

” ” १२ ” ४ ” रथोत्सवका मेला
प्रदर्शन ता० ६ अप्रैल तक खुला रहेगा ।

शास्त्रीय परिषदका प्रोग्राम अभी तक मालूम नहीं हुआ है न उसके समापति नियत हुए हैं परन्तु भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महिला परिषदके १० वे वार्षिक अधिवेशनके लिये श्रीमती मगबाई, बंछुबाई आदि बहुत परिश्रम कर रहे हैं । परिषदकी अध्यक्षता स्थान श्रीमती पंडिता चंदाबाईजी आरा निवासी ग्रहण करेंगे । यह पहला ही अवसर महिला परिषदके लिये है कि परिषदको इस बार बहुत विद्वान् और अतीव योग्य समापिका प्रार्थिता हो गई है । खिपोंके हाथकी कारीगिरिका प्रदर्शन भी होनेवाला है ।

महासभाका दफ्तर ता० १७ को कानपुर चला जावेगा तथा महामंत्री सहायक महामंत्री आदि कार्यकर्ता भी ता० २९ मार्च तक पहुँच जावेंगे ।

सब प्रकारके पत्र व्यवहारका पता—रूपचंद जैन मंत्री, स्वागत कमेटी ६५ मुलंगन—कानपुर है तथा तारका पता भी रजिस्टर्ड हो चुका है इस लिये तार भेजनेवाले सिर्फ ‘सभा’ कानपुर Sabha Cawnpore ही लिखे ।

सब मार्गों और बहिनोंको कानपुर पहुँचनेकी सुचना प्रथमसे पत्र या तार द्वारा गेवनी चाहिये । समय अल्प रहा गया है इसलिये हर एक प्रांतके भाई बहिन मानेंकी शीघ्र ही तैयारी करें ।



हुयली—में गत ता; ६को बड़ा भारी उत्सव और श्री० त्यागी ऐलक पन्नातालजीका केश-लौन हुआ था । हजारों आदमी एकत्रिा हुए थे । सोलापुरसे पं० वंशोधरजी शास्त्री तथा बम्बईसे मंगतरायजी आदि पहुँचे थे । पं० वंशोधरजीके अनेक प्रभावशाली व्याख्यान हुए थे । यहाँके दि० जैन बोर्डिंगका मकान बढाया जा रहा है तथा उसमें भैर्यालय भी बन रहा है ।

कम्पिलजी—क्षेत्रमें वार्षिक मेला चैत्र वदी ११ से ०)) ता० ४ से ८ अप्रैल तक होगा । तथा चैत्र सुदी १ से ३ तक धदेइयाल सभाका भी उत्सव होनावाला है । यह तीर्थ कायमगंज (फरुखाबाद) स्टेशनसे ५ मील पर है ।

सुनपत—(रोहतक) में भी चैत्र सुदी १३ को रयपात्राका मेला होगा ।

वृद्ध दान—आगमें बाबू हरप्रसादजीका स्वर्गवास हो गया । आर अपनी कई लक्षकी जपदादमेंसे पांच सात गांवकी उपज धर्म और देश सेवाके लिये स्थायी रूपसे निष्काट गये हैं । इससे लाखों रुपियेका दान होगा । प्रबंधके लिये १५ जैन अनेकोंकी कमेटी नियत की है । ६००००) तो आरा कार्डेनके लिये हैं ।

कुरहल—में रयपात्राका मेला चैत्र वदी ९ को होगा ।



बडासण—(गुजरात) ना दिगंबर जैन मदि-
रमां माह सुदी ४ त्रे दिने चोरी ४६ हती
अने ८ प्रतिमा, उपकरण, वासणो वगैरे चोराबुडे

मोरेना—विद्यालयकी गणितोत्सव सोना
गिरनी क्षेत्रपर मेलेके समयमें चैत्र वदी ३-४
ता० २६-२७ मार्चको होगा । साथ २ जैन
वाल जैन समाज उत्सव भी होनेवाला है ।

‘अहिंसा’—पत्र जो बाशीसे व० ज्ञानान-
दनी द्वारा प्रकट हो रहा है उसके लिये
‘अहिंसा’ नामक प्रेस खोला जा रहा है इस
लिये ‘अहिंसा’ पत्रका १९ वा अंक देरसे
प्रद होगा ।

ठवे० अगुओंका निवेदन—क० कतेव ले
थे० अगुए महाराज बहादुरसिंह, कुमा० सिंह और
मोतीचंद नखसने निवेदन पत्र प्रकट किया है
कि समय कम होनेके कारण ही तीर्थोंके जरूरे
निपटनेकी मीटिंग स्थगित की गई है । सभी
तीर्थों पर जहा २ पत्रडे हैं उन्को स्थयी रूपसे
निपटानेके लिये पत्रका प्रवण हो और सर्व सावा-
रणकी सम्मति तथा मतिनिधि आभर्के इसलिये
इकन का-फरेन्स बार मासक लिये स्थगित
रखती जय जिससे पूरी सफरता हो । हम यहां
बहते हैं कि समाजमें सद्ग और शान्तिकी
वृद्धि होकर तीर्थोंकी अशांतता मिटे आदि ।

घिरोर—(भैरपुरी)में चैत्र वदी ४-५
ता० २७-२८ मार्चको मेला होगा ।

अहिंसेन्द्र—पर भी चैत्र वदी ८से १२ तक
वार्षिक मेला है । यह क्षेत्र पूर्वकी तरफ ग्राम
स्टेशनसे और दक्षिण पश्चिमकी तरफसे चढ़ापी
स्टेशनसे जाया जाता है । स्टेशनस सि० २-२
कोस दूरी है ।

अंकलेश्वर—मा भाई मुरामाईना प्रयासपी
करीपी पाठशाग चालु पदं छे ।

देहली शान्तिार्थ—नामक पूरा क अभी
मिलती है । मूल्य चार आना । पता—इयामटाल
जैन कानगो पीपलव ली गली घरमपुरा देहली ।

शिकार नहीं खेलने देंगे—हस्तिनापु-
रमें मदिजीके पास अभी तीन अगरेज और
एक मेम शिकार खेलना चाहते थे । आश्रपके
विद्य गियों, मास्टर आदिने मना किया और कहा
कि बलेवरका यह हुजूम है कि यहा शिकार
न खेला जाय इस पर उन्होंने बंदूकोंका मुह
लडकोंकी तरफ करके डाला । वचनचारियोंने
कहा कि मानेसे हम नहीं डरते, धर्मके मामलेमें
मान देंगे । हमको मारे बिना शिकार नहीं
खेलने देंगे । इससे शिकार पार्टी सिर नीचा
काक मान गई ।

लाडनूँ—में निवास समा स्थापित हुई है
जिसका उद्देश मुशिसाका प्रचार करना लिखों
द्वारा देशको मूर्खता और कुरीतिको रोकना है ।

हरिलाल जैनहार्डस्कूल—देहलीमें अब
ध्यापारी शिक्षा, महाप्रता हुडो, पत्रो, साइंस,
इंग्लिश आदि का काम भी सिखाया जाता है ।
मेडिक क्लास भी खुल चुका है ।

गजपवाजी—में वार्षिक मेला होगा ।
इसबार सेठ इयामटालजी चादवड के समानि-
त्वमें समा हुई थी । जिसमें सेठ जीवराम
गौतमचंद गधोने व्याकरण देकर क्षेत्र में मुशारकी
आवश्यकता बताई जिससे नवीन प्रवर्धन इमेटी
स्थापित हुई । भवो जीवरामभाई नियुक्त हुए
हैं । अमनगिरिमें बहनेके लिये फोर्डडिया



बनानेका ७००) की मंजूरी दी गई तथा मंडार आदिमें ९६१॥) की आय हुई थी ।

अजमेर-में मुनि श्री चन्द्रसागरजीका केश-लौच चैत्र वदी १२ को होगा इस अवसरपर वदी ९ से १२ तक विमानोत्सव तथा जैन कुमार समाका अधिवेशन भी होगा ।

परीक्षालयकी परीक्षा होगी-दानवीर माणकचंद दि० जैन परिक्षालयकी तरफसे इस वर्षकी परीक्षा ता, १ मई १९२१ मिति वैशाख वदी ९ (गुजराती चैत्र वदी ९) को प्रारंभ होगी (सब पाठशालाओंको फोर्म भेजे गये हैं । जिन्हें न मिले हों वे हमसे मगालेंवें । प्रवेशिका विशारद, शास्त्री विषयोंके सभी विषयोंसे परीक्षा जुदी २ होगी । बालबोध परीक्षामें छ टाळा, बालबोध जैन धर्म ४ या भाग, माया रत्नकरंड और पूर्ण, थावक प्रतिक्रमण सार्थ इस विषयोंमें परीक्षा लेंगे । बालबोध जैन धर्म भाग १-२-३ की परीक्षा न हो सकेगी । रावजी सखारामदोशी भेंत्री, परिसाहय, सोडापुर ।

सिचनी-में परवार समाका अधिवेशन रा० न० श्रीमंत सेठ मोहनलालजी खुर्दके सभापतित्वमें होगा । तियि अभी तक निश्चित नहीं हुई है ।

सिद्धचक्रोत्सव-महमूदाबादमें फाल्गुण सुदी १५ से चैत्र वदी २ तक सिद्धचक्रोत्सव बहुत धूमधामसे होगा ।

सावधान-नीर्क्षेत्र कमेटीके महापंजी सूचित करते हैं कि सोनगिरिक्षेत्रके मठारजके शिष्य हरिधर बहाके मंदिरोंके जीर्णोद्धारके लिये बागड मेवाड और अन्य प्रांतोंसे रुपये वसूल करते किराने हैं, साथमें छडी, चरारास मुद-

खाली चिट्ठी और तीन आदमी हैं । वहां जीर्णोद्धारकी आवश्यकता तो है परन्तु ये लोक कुछ कार्य नहीं करते और खाली यों जुठ जीर्णोद्धारके नामसे चंदा उगाह कर समानको उगते हैं । इनको कोई भी माई चंदा न देवे । यदि किसीको तीर्थ या जीर्णोद्धारके लिये चंदा देना हो तो मारत० दि० जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी हीराबाग-चम्बईको भेजे ।

दाहौद-में पं० फूलचन्दजी, कन्हैयालालजी पानाचंदजी आदिने अमलोड ग्राम जाकर ५०० भौलोंको उपदेश दिया जिससे उन्होंने अपने प्रकारके सुधारके ७ प्रस्ताव किये । वहां तालाब पर एक प्राचीन जैन मंदिर मालूम पड़ा है ।

यम्बई-से एक माई लिखते हैं कि महास-माका अधिवेशन चैत्र वदीमें कानपुरमें है इस लिये अजमेरमें उत्सव चैत्र सुदीमें होना चाहिये । अजमेरके माईयोंको अवश्य इसपर खयाल करना चाहिये ।

कारकलमें मस्तकाभिषेक उत्सव-कारकल (दक्षिण कन्नडा)में श्री बाहुबलस्वामी (गोम्पटस्वामी)का मस्तकाभिषेक उत्सव माह सुदी ५ से फा० वदी १ तक सानंद पूर्ण हो गया । इस बार देवलीका संव व ब्र० शीतलप्रसादजीके पवारनसे बहुत सफुलता और धर्म प्रभावना हुई थी । उत्सवमें आताम, कलकत्ता, आरा, इन्दौर, सुनानगड, जेपुर, पंजाब, ललितपुर, चम्बई, सोडापुर, सुरत, म्हेसुर, कोरहापुर, मदरास आदिक १५००० जैनी तथा १६००० अजैनियोंने मग लिया (रोष टाइम्स टु० २ पृ०)



सत्त छोड़े फकि ज्जाय !

(छे० श्रीमान बाबू श्रमन्तलाल जैन, एम० ए०
सद्वानपुर)

पाठको ! किसी शैल साहसने एक वेश्यासे उनके दुष्कर्मके ऊपर लांछन लगाते हुए कहा कि सत्पथसे बिल्कुल विमुख हो गई है और बुराईमें पड़ गई है परन्तु वेश्याने उन्हें आड़े हाथो लिया । वेश्या बोली कि मैं जो यथार्थ में हूँ वही चाहते भी दीखती हूँ परन्तु क्या जान मी उसी तरह सर्व माक्ष दृश्योंमें विदित होते हैं ! सारांशतः इस संसारसे पुन्य और पाप, सत्य और असत्यके साम्राज्यका अभाव कभी भी देखनेमें नहीं आसक्ता, हां यह संभव है सत्पथके अनुपार कभी पुन्यका पलड़ा उंचा हो तो कभी पापका । वर्तमानमें तो पापकी ऐसी बाढ़ जमी हुई है कि हर ओर कपटका गरम बाजार है । उस कपट का झण्डा ही चारो ओर लहरा रहा है ! उनका मुख्य कारण भी है । प्राचीन कालसे कुछ काल पूर्व तक हमारा व्यवहार इस बाज्य पर निर्भर था कि ' धन दे तनको रखिए, तन दे रखिए लान, धनदे तनदे लान दे, एक धरमके काम अर्थात् धर्मकी मुख्यता थी । उसके उपरान्त लान एवं तन और जघन्य धन समझा जाता था । पर समयने पलटा लाया और अब उसके विस्तीर्णता ही नहीं जाने लगा बल्कि वर्तन भी होने लगा है । टके के सामने अब धरमकी कौड़ी नहीं उठती है । धरमको अब जघन्यताकी पदवी देदी गई है । [यहां धरपका अर्थ मुख्य कर्तव्य अथवा सत्य समझना चाहिए । अंग्रेजीमें character शब्द उसके लिए उपयुक्त है ।]

यदि हम उस विपरीतताको खुल्लखुल्ला मान लेते तो हमारे ऊपरसे कपटका टीका हट जाती । अवश्य ! उस कारण हम पथभ्रष्ट कहलाते परन्तु असत्यके पंजेसे छुटकारा पा जाते । हम पथहीन पथिकसे सादृश्यता रखते कि जाना चाहते हैं एक स्थानको, पर अज्ञानमें चल रहेहों उसके विपरीत ! और पथ प्रदर्शक मित्रने पर अपने सत्पथ पर आलुद हो अपने - निश्चिन स्थानपर पहुँच जाते । विश्वासके दीपदान प्रभावके सामने अज्ञानतम नष्ट होजाता । परन्तु हमारी आत्मा बाह्य धर्मके ढकोंसलोंसे इतनी पतित हो गई है कि हम अपने मन्तव्यको बदलनेका नाम तक नहीं ले सके हैं । सुतरां धरमकी डींग पहिलेसे भी अधिक मारते हैं और धर्म पर अपने प्रारखों से अधिक बात रखनेका दावा करते हैं । परन्तु किसका धर्म और किसकी लान, धन और तन है तो जिन्दगी है । वहां तो यह मन्तव्य कि जानो लाख, रहो साक, और वहां अब यह बात कि लाख तो लाख, एक पैसेके छिपे साखको लाकमें मिटा देनेको तत्पर हैं । वस ! यही कपटकी जड़ है कारण जब मनुष्यका मन्तव्य और होता है और मन्सा कुछ और तो व्यवहार भी कपटकी लिए होता है । हम वर्तमानमें उस पथिकके समान है जो जाना तो चाहता है एक मुख्य स्थानको, पर जाहिर नहीं करता बल्कि जब कोई उससे उसका नामका स्थान पूछता है तो अपने अगाड़ीके गांवका नाम बतला देता है । यही कपट है । ऐसे मनुष्यका सत्पथ पर लाना कठिनसाध्य है । फलतः हमारा जीवन आदिसे अन्त तक एक बहुरूपधारी



सदृश वीतता है । हम भेष पर भेष बदलते हैं । एक कपटके वास्ते दस झूठ और बोलते हैं । न्यायदिवाकर पं० पन्नालालजी अपने व्याख्यानमें एक दृष्टांत दिया करते हैं कि एक बहुरुपिया एक बादशाहके पास इनामके वास्ते गया । बादशाहने कहा हमें अपने बहु रूपसे धोका दो तो इनाम मिलेगा । बहुरुपियेने अनेक रूप धारण कर बादशाहको धोका देना चाहा पर बादशाहने उसे पहचान ल लिया । अन्ततः बादशाह यात्रा कर रहे थे कि एक पहाड़ी उनके मार्गमें पड़ी । बहुरुपिया उसी पहाड़ पर योगासन माड पूरे योगीका रूप धारण कर बैठ गया । बादशाहके राव उमराव वगैरह इनकी वंदना करने गए और इन्हें खूब बढ़ावा पर यह अपने छयानमें मग्न रहे । बादशाह भी को खबर पड़ी । वह भी भेंट ले पहुंचा और इनकी मन्त्रता पूर्वक विनती करने लगा पर इनने आज्ञा न खोली । बादशाह दूसरे पड़ावको चलता बना । वहां बहुरुपियेने जा अपना इनाम मांगा और सब वृत्तांत कहा । बादशाहने कहा कि वहां मैंने तुझे बड़ी मूल्यवान पारतोपिक अर्पण की पर वह स्वीकार न कर यहां अलग मूल्यके इनामके लिए मागता आया । बहुरुपियेने कहा यदि मैं उस योग स्वरूपमें भेंट स्वीकार करता तो उस स्वरूपको लांछन लगता । इस कारण वह अलग मूल्यका इनाम ही द्येष्ट है । परन्तु पाठको । जरा विचारिए कि वर्तमानमें ऐसे कौनसे मनुष्य हैं जो अपने भेषको नहीं छेनाते । बिस्ले ही ऐसे बहादुर मित्रों जो स्वार्थको छेत्त मार अपने भेष पर दृढ़ होंगे । तिस पर यह दृढ़ता जिनको

कि आजकल अनपढ़ वा गंवार कहा जाता है उनमें तो शायद पाई भी जाय पर जो पढ़े लिखे कहाए जाते हैं उनमें इसकी गतिका परिणाम ही नहीं है । हम अपने कपटमें इतने सने हुए हैं कि जो कार्य दूसरोंके बहकानेके लिया किया या उसीको सत्कार्य और यथार्थ समझ बैठे हैं । और उसीसे अपने कर्तव्यकी सिद्धिकी भी आशा लगाए हुए हैं । परन्तु झूठ झूठ ही है और सच सच । सत्कार्यका फल यथार्थ ही होगा । पर इस अयथार्थ कपटके मार्ग और दिखावेके कारणोंसे हमारे मन्तव्यकी सिद्धि नहीं हो सक्ती । हमारा विश्वास इसी बाह्य मार्ग पर था इस कारण अवनतिका सामना उठाना पड़ा । हम दुःख और क्लेश मानते हैं । अपने कर्मोंको दोष देते हैं, पर यह नहीं समझते कि यह तो हमारा ही कसूर है कि बनाउटी कार्योंसे यथार्थकी आशा रखते हैं । अब कुछ दृष्टांतोंसे दिखाया जायगा कि हमारे प्रत्येक कार्योंमें तन और धनकी मान्यताकी प्रवानता है । परन्तु दिखावेमें हम छान और धर्मकी आड़ लेकर काम करते हैं । इस कारण फल आधा तितर आधा वितर जाता है । वह हिसाब हो जाता है कि दुविधामें दोनों गए, माया मिती न राम ।

आजकल भारत वर्षमें राजन्यनैतिक विषयकी मरमार ज्यादा मच रही है इस कारण इसी विषय पर विचार किया जाता है । सबसे ब्रिटिश राज्य यहां स्थापित हुआ जो कि महान मन्त्रवान राज्य है एवं धनकी पूजाकी प्रवानता मिसमें है बल्कि मिनका ईमान, मिनका धर्म

रुपया है और जो रुपये खातिर हिन्दुस्तानमें आए और राज्य स्थापित किया है—उसने अपने छुट्टीपतावश एक बड़ा मैदान अपने लालच (हिंस) के घोड़े दौड़ानेका यहां पाया। वस ! दोनों तरफसे खेंचातानी प्रारम्भ होगई। इधरसे प्रारम्भमें विनय और प्रार्थनाएं की गईं और न्याय और सत्यका रूप सुझाया गया। परन्तु जब मनुष्यमें स्वार्थका अंध भूत घर कर जाता है तब न्याय और सत्यकी बात कुछ नहीं गलती। उस उधरसे उन चिकने चुपड़े कपटपूर्ण शब्दोंमें ढाढस बंधाया गया जिन्हें पालमी या डिप्लोमसीके नामसे प्रचारते हैं। विदित रहे कि ध्यानरुद्धकी सभ्य समाजमें आवश्यकतानुसार असत्यको सत्य ठहरानेके लिए उन नामोंका आविष्कार किया गया है। वहाँ सिरुन्दर और डाकूवाली कहानी है कि यदि कोई छोटा आदमी किसीके मशान पर चढ़कर उसे छद्म खसोट ले तो वह डाकू और छुटेरा—और यदि रामा किसीके मुक्त पर चढ़ाई करके उसको छद्म ले तो वह विनयी कहलाता है। इसी प्रकार साधारण मनुष्य झूठ बोले तो वह झूठ और जो बड़ा आदमी वे ईमान्ती करे तो वह बुद्धमानिता और हिकमत अमली कहलायगी। खैर वस्तुतः गवर्नमेंटकी तरफसे बाह्यमें तो विश्वासदायक चित्तको प्रमत्त करनेवाले वचन दिए गए, परन्तु यथार्थमें जो मनुष्य जरा सिर उठाए देखा गया उसे दो हरफ़ी खिटाव देकर ठण्ठा कर दिया गया या आन्देरी पदवी देकर दबा दिया। और इन लोगोंकी इतनी आवा-मगन हुई कि लोगोंमें खिताबोंकी मागकी चाह पैदा हो गई। और उन्हें पानेके लिए सरकारी

बोली बोलने लगे, उनके उनालीकें इशारे पै नाचने आदि लगे। फलतः सरकारी अफसरोंको भी यह सब भेद मालूम हो गया। फिर हमें कुछ होश आया तो विदित हुआ कि उन तिलोंमें तेल नहीं है। और जो कुछ करना हो अपनी हिम्मत पर करना चाहिए। और इस खिताबके जादूको तोड़ना चाहिए। इसी कारण कुछ काळसे देशमें असहयोगकी आवाज सुनाई पड़ने लगी है। इन नीतिकी चत्वा तो सबके मुंह पर है पर तद्रूप वर्तनको इनेगिने ही हैं। विचारिए कि जब हजीसे उद्देशः पूर्तिकी इच्छा है तो उस पर वर्तन भी तो होना चाहिए। इससे कुछ मतलब नहीं कि भयवा यह नीति हमारे लिए उभयुक्त है या नहीं? अब इसको व्यवहृत होने पर उसकी सफलता अवकउनका भी पता चला सक्ता है। मूलकी दवा रोटी है। पर यह कहते फिरनेसे ही मूल नहीं माग जायगी। परन्तु आजकल ऐसा ही हो रहा है। जरसोंको देखिए तो हजारों लोग एकत्रित होने हैं और शुरूसे ही असहयोगके विषयमें इतने गरम व एकैकी विचार बावके जाते हैं कि हिलाए न हिले। इन विचारको बदलना तो दसकिनार ! इसके विरुद्ध मतके मन्त-योंको भी सुनना नहीं चाहते ! और व्यवहारमें खाक भी भर नहीं ! देखिए कि कदा बकीलों आदिने पूर्णतया उसका अमल किया है। उस इस कारण जरसोंका जोश खोश केवल कपट कहा जावे तो क्या गलत है। इसी आती है कि बड़े बड़े जरसोंमें अलीगढ़ कालिन्के ट्रस्टियों आदिके विरुद्ध ना-

राजगीके विचार प्रगट किए जाते हैं पर विचारिए कि क्या यह नाराजगी यथार्थ हैं ! यदि ऐसा ही है तो लड़के तो इन्ही शोर करने वालों-के हैं वे ऐसी कालिजोंमें न पढ़ावें । टूट्टी आदि स्वतः ही असमर्पण होजाते । लड़कोंके विद्वान दिवसोंको थोड़े ही पढ़ाते । यह तो वह बात हुई कि लड़कोंको जबरदस्ती मियांजीके यहां भेजा जाता है और मियांजीसे कहा जाय तुमने हमारे लड़केको क्यों पढ़ाया । यदि उससे नहीं पढ़वाना चाहते तो उस मियांजीके पास अपने बच्चोंको न भेजिए । यदि आपको केवल उंगली कटा कर शहीदोंमें शामिल होना है तब तो आप जरूर वही करेंगे जो आजकल दिखाई दे रहा है। यथार्थ क्या है ! वही गुप्तता तो घनकी पूजा और सन-का घुपटाव स्वार्थको लिए हुए है और ब.ह.में देश सेवा ! यदि बकाउत छोड़े तो कमाईका गुप्ततान ! स्वदेशी वस्तु यत्ने तो मूल्य अधिक और फैशन कम ! खिताब और मेम्बरियां छोड़ें तो उनकी धौंसमें जो दस काम निकलते हैं वह कहाँसे निकले ! आदि यह तो हुई घनकी पूजा, अब छीजिए तनका मोह ! यदी कहीं कारागार जाना पड़े तो वहां चक्की कौन पीसेगा । मला ! कहीं इन बातोंमें स्वराज्य मिला करता है वषोंके रिवाजोंको महीनोंमें निरालना चाहते हैं । चालवाजीको चालवाजीसे काटनेकी कोपीश की जा रही है पर यह उनका हथियार है, हमारा हथियार तो प्रारम्भसे ही आत्मिक वृत्त है । यह मेरी विरुद्धता साधारणतया है किसी विशेष लक्ष्य लेकर नहीं है । वैसे तो आर भी अच्छे देश भक्त लोकमन्य विद्यमान हैं और पूर्णतया स्वय-

हयोगका पालन कर रहे हैं । अब जरा पठन पाठन-को लीजिए । क्या वजह है कि अबके शिक्षित नवयुवकोंमें वह पक्षों कीसी बुद्धिमानिता व प्रभाव नहीं है । शिक्षाका उद्देश्य यह है कि हृदय और मन दृढ़ हों—आत्मिक एवं नैतिक शक्ति बढ़े-जो गुप्तशक्ति मनुष्यमें विद्यमान हो वह प्रगट होकर उसकी और दूसरों की मलाई और बहतरीके लिये योग्य रूपमें व्यवहृत होसके । अब शिक्षाका यह उद्देश्य है न पढ़ानेवा-लोंमें और न पढ़नेवालोंमें । गवर्नमेन्टने खरकी सन्तान को तो खिताब और आनरेरी पदवीके जालमें फसाया और आंगामी सन्तानकी शिक्षा अपने हाथमें रखली और उस बातका ध्यान रखताकि उनमें कोई ऐसी शक्ति घर न कर आए जिससे कुछ यह हमसे विरुद्धता प्रदर्शित करे । और जो किसीमें प्राकृतिक यह शक्ति उदय भी हो तो वह दब जावे और प्रारम्भसे उनके दिलोंमें यह बैठाया कि सफेद चहडों वालों ने रंगीन चमड़े वालोंके उद्धारके लिए ही जन्म लिया है । सरकारी नौकरीकी यहां तक कदर बढ़ी की माताएं दुआएं देने लगीं कि भगवान तुझे डिप्टी बरे । जहां शिक्षाका उद्देश्य ही उल्टा हो तो आश्चर्य क्या कि खर भी उल्टा हो और शिक्षिकी मिट्टी खराब हो जैसी कि हो रही है अर्थात् घोरिके कुत्ते न घरके न घाटके ।

अदालतोंको न्यायका घर समझा जाता है । कहा जाता है यहां शेर और बकरी एक घाट-पानी पीते हैं और दूधका दूध, खौर पानीका पानी बना है । क्या वास्तवमें ऐसा होता है । तब तो समझना चाहिये कि यहां हिन्दुस्तानमें

अन्य आश्वर्य हैं उनमें यह भी एक है । हिन्दु-स्तानियोंको हिन्दुस्तानमें कलकत्ता सना फांसी है वैसी विधायतमें गोरोंके लिए । पर हिन्दुस्तानमें आज तक कभी नहीं हुआ तो यह नहीं हुआ कि किसी घृणितको किसी हिन्दुस्तानीके कलकत्ते जुर्ममें फांसी मिली हो । पर जब कभी भी ऐसा हो भी गया तो दो वनहसे या तो कालिके मस्तिष्कका दोष या मस्तूलका वसुर । यह है मिसाल न केवल अपनी तनके पुनाकी वलिक जातीय तन पुनाकी । व्यवहारका यह हाल है कि पहिले मजूर या कारीगर मजुरी लेता या तो यह भी स्वाभाविकताया कि जिसका मैं घन लेता हूं उसका कुछ काम भी तो करूं । मजुरी केर वस्तुओंकी महंगाईके कारण बढ़ गई परन्तु मना यह कि कामके नाम दृष्टी । भीगी बिल्ली बताकर टाल देनेमें ही कारीगरी समझी जाती है । वर्तमानमें वस्तुओंकी बाहरी दीपदाय तो ऐसी दिख लुभानेवाली कि स्वामिन्नाह आवश्यकताके विद्वान भी सरीदनेको दिख चल आता है और जो खरीद कर अन्दरसे चीज निकालो तो सड़ा जुता मिलता है । कहां तो यह उद्देश्य था कि व्यवहारमें ईमानदारी कामयाबी की कुंजी है और कहां अब यह उसूल कि रोटी खाए शक्करसे और दुनियां पाए मकरसे !

खैर यदि यह कष्टपन दुनिथां तक ही रहता तो इतना डर भी न था परन्तु खेद तो इस बातका है कि धर्म (मज्जहव) में भी कष्टपन चल पड़ा है । दुनियांके कामोंमें तो हम समझते हैं कि बुराई मज्जहकी यथार्थताको छोड़ कर दूसरोंकी मुंहकी तरफ देखना चाहिए कि

वह क्या कहते हैं । यदि उनसे प्रशंसा पाळी तो घुरा भी मज्ज है और जो नहीं करा सकते तो मज्ज भी घुरा है । इस कारण संसारिक कार्य तो लोक दिखावेको होते ही हैं । उस बातको नहीं सोचते कि जो काम अच्छा है वह दर हाल-तमें अच्छा है चाहे कोई देखे या न देखे । जो बुरा काम है वह बुरा ही है । धार्मिक कार्योंमें भी हम दूसरोंके मुंहतक हो गए हैं । जिसको लोग धर्मात्मा कहें वह धर्मात्मा जिसको न कहें वह अधर्मात्मा । इस लिए धर्म भी दूसरोंको दिखानेके लिए होने लगा है । ताकि स्वर्गमें जानेके लिए परमाना मिल जावे । यदि धर्म करने पर भी धर्मात्मा न कहलाए तो समझते हैं कि फाकराया गारत हुआ, महान्त अकारत गई । कुछ सज्जन आजकलके शिक्षितों (बाबुओं) को यह दृष्टि लगाते हैं कि वे लोग पुजापाठको मटियामेट करना चाहते हैं । परन्तु यदि मैं इन शिक्षितोंकी मन्शाको ठीक समझा हूं तो मैं कह सकता हूं कि उसका हरिगण यह मन्शा नहीं है । वह पुजा पाठका निषेध कदापि नहीं करते परन्तु पुजा पाठकी हर ऐसी हरकतका जिसको हम अपनी सहूलियतके लिए पुजा पाठ करने लग जांया किसी वस्तुमें केवल उसका नाम रख लेनेसे उस नामके गुण नहीं आजाया करते । जैसे किसी कंगालका नाम करोड़ीमल रख देनेसे वह करोड़पती नहीं हो जाता । पुजा पाठ तो असली पुजा पाठको ही कह सके हैं दिखावेकी और वह भी विराएकी कूदफांदको नहीं कह सके । पुजाके लिए यह आवश्यक है कि स्वतः की जावे—खास भावसे की जावे और



खास बुद्धिसे की जावे तब तो कुछ फट्ट है
बरना नहीं । आदमी अस्वस्थ होने पर वैद्यसे
मुल्ता लिखाता है और स्वयं पीता है तब कहीं
स्वस्थ होता है । यदि वह केवल मुल्तेको गाता
फिरे या बनाए अपने दूसरेको पिठावे अपना
स्वतः पाँवे पर परहेजसे उल्टा चले तो फलके
स्थानमें हानि उठावेगा इसमें संशय नहीं । मला
एक शारीरिक बीमारीको दूर करनेके लिए तो
इतनी बातोंकी आवश्यकता है और हम चाहते
हैं कि अनादिकालसे लगी हुई आत्मीक बीमा-
रियोंको बातों ही बातोंमें उड़ा दें यह कैसे
संभव है ? धर्मके प्रत्येक अंगमें विश्वासकी
मुख्यता है । अर्थात् हमारी शारीरिक क्रिया-
योंके साथ २ हमारा मन भी सम्मिलित होना
चाहिए । हम अपने दूसरे हिन्दू भाइयों पर
हंसा करते हैं कि यह कैसे मिथ्या मार्ग पर
चल रहे हैं कि शरीरकी गंगाजीमें घोनेसे ही
आत्माका मैल कटना मानते हैं । परन्तु हम
अपनी ओर नहीं देखते कि हम क्या करते हैं ।
हम भी तो भगवानकी मूर्तिके आगे अपने
शरीरको नीचे गिरा देनेसे ही आत्माका मैल
कटना मानते हैं । हाँ, यदि हृदयसे विश्वास पूर्वक
ऐसा किया जाय तो अवश्य आत्मा उच्चताको
प्राप्त होती है । परन्तु उस हालतमें भी गंगा-
जीकी विश्वास पूर्ण आत्माका मैल अवश्य गंगा
स्नानसे कट जाता है । मदरास प्रांतमें एक ऐसी
जाति है जो अपनी नवजात कन्याओंको मंदिरमें
बड़ा देनेको बड़ा पुण्य समझती है । कन्यायें
पियादासी अर्थात् ईश्वरकी दासी कहलाती हैं
और संभवतः ईश्वरकी सेवाके लिए मंदिरमें

चढ़ाई जाती हैं । यह बड़ी हो का विवाह नहीं
कर सकती । चरित्र यों ही पुनारी और यात्रि-
योंके काम आती हैं । और यही उनकी सेवा
समझी जाती है । पाठक ! मुझे माफ करेंगे
यदि मैं कहूँ कि इनमेंसे जो लड़की विषय
विचारोंको छोड़ कर अपनी जातिकी पक्की
श्रद्धाके कारण विषय भोग काती है वह हनार
दर्चा धर्मात्मा कहलानेके योग्य है व मुकाबले
उस मनुष्यके जो लोगोंके मुंहसे धर्मात्मा कह-
लानेकी स्वार्थ बुद्धिसे भगवानके सामने घंटों
नाचता है यद्यपि वह कन्या मिथ्या पथ पर है
और वह मनुष्य सत्य मार्ग पर परन्तु मेरे निकट
जो मनुष्य अज्ञानताके कारण खुलमखुला
दुष्कृत्य करता है वह उतने अधिक उच्च है जो
ज्ञान वृक्षपर उसी दुष्कृत्यको करता है परन्तु
दूसरोंसे छुगाता है । और छुपानेके लिए सैकड़ों
प्रकाशके रूप प्रकाश है । प्रथम मनुष्य हृदयसे
दुष्मार्ग गामी नहीं है दूसरा हृदयसे । जिस मनु-
ष्यके हृदयमें सच्चा विश्वास होता है उसके
संज्ञा अपने शरीरको हरकत देनेकी आव-
श्यकता नहीं है । वह नव अरुण इष्टदेव
सामने पहुँचता है तो स्वयः नाचने लगता है-
गाने लगता है । उसकी जिह्वासे गद्य भी पद्य
सदरा ही निकलती है । उसकी आवाजमें ए
स्वर पैदा हो जाता है जो समस्त पथ
वाली आत्माओंको गुंजा देता है । और
कोई उस गुंज तक पहुँच जाता है वह
गूँगूँ हुए विद्वान नहीं रहता । वह भी
आपको दुमरी दुनियाँमें पहुँचा समझता है
ऐसे मनुष्यकी क्रियायों पर जो हंसे वह ५८



है कारण कि ऐसा मनुष्य केवल पूजा ही नहीं करता बल्कि स्वतः पूजनीय होता है । यह है सच्ची पूजा । ऐसे कितने मनुष्य हैं इसका उत्तर मैं नहीं दे सकता । पाठक स्वयं अपने हृदयोंसे पृष्ठ लें और विचार लें । संभव है आप कहें कि इक्षाविद्वान् किया कैसी होती है ? मैं बतलाता हूँ । जब हम कहीं जा रहे होते हैं और हमारा साथी भवान् हमसे कहता है कि कलेक्टर साहब आ रहे हैं तो हम यथायात चौक पड़ते हैं और एकदम हमारे मुखसे निश्चल पड़ता है कि हैं । कहीं हैं ! और शीघ्र ही सड़क छोड़ पटरी पर हो छेते हैं । यह है इक्षाविद्वान् किया । सच पूछिए तो सच्ची पूजा और विनय आजकल हाथियोंकी होती है । बड़े दिन पर जब हाकिम लोग किसी दूर स्थानको चले जाते हैं तो रहीस लोग डाली लेकर वहां पहुंचते हैं । और मालूम करते हैं कि साहब बाहर और शिकारको गए हैं । तब पेड़ोंके नीचे बैठ उनकी याद जोहते हैं । साहबको दूरसे आता देखते हैं तो हाके दोनों ओर खड़े होजाते हैं और कर्शों सज्जम सुझाते हैं । साहब गुजर जाते हैं और देखते भी नहीं । तब आदलीकी खुशामद प्रारंभ होती है कि हमारी मुलाकात कादो । अन्ततः आदलीकी मुट्टी गरम करने पर उनकी डाढ़ी मंजूर होती है । रहीस लोग उसे गनीमत समझते हैं । और दिन भरके भूखे प्यासे घरको वापस आते हैं । महाशय ! यह कोई दृष्टान्त नहीं बल्कि यथार्थ हृदय है । कहिए यह काम हृदयसे किया गया है या कि पूजा पाठमें । वस, यदि बालू लोग (?) निषेध करते हैं तो इस पाण्डित्य !

उनका कहना है यदि सच्ची पूजा कर सकते हो तो यथार्थ है—योग्य है और यदि नहीं कर सकते तो वक्त्रोंका स्वांग मत बनाओ । अच्छा, तो पूजापाठमें मन क्यों नहीं लगाते ? वही घनका लालच ! और तनकी पूजा ! जितनी देर पूजा पाठ करेंगे उतनी देर पहुंचकर दुकान पर कुछ कमबेंगे । कोई रातको मर गया तो उसके लिए कफन बेचकर उस रकनसे कई गुनी अधिक हाथ आजावेगी जो पंडितकी तनवाहके चन्देमें देनी पड़ती है । और दूसरे जाड़ेके मोसममें एक कपड़ेमें दो टागों पर कौन खड़ा रहे ।

विशेष यह कि हम अपने प्रत्येक कार्यमें यथार्थका हो अथवा स्वार्थका—अर्जुन सनको खो बैठे हैं और उक्ति विख्यात है कि “ सत् छोड़े पति जाए ” । हृदयमें सत्य नहीं रहा तो पति भी जाती रही । मनुष्यमें पति भी एक वस्तु है । वह किर्का ना ‘ तागो ’ कहलाता है, मेरों ठेठोंमें उठाईंगीरीका काम किया करता है । परन्तु जब उनको कुछ देना ठराकर उन्हींकि जिम्मेवारी कर दी जाती है तो मचाउ नहीं कि कोई वस्तु इधरसे उधर होले । क्या कारण है कि कान्स्टिबल का विश्वास नहीं किया जाता जिसका कार्य ही यह है और जिसके पीठपर एक योग्य राज्यका बल है जिसके एक इशारे में अगणित सेना एकत्रित हो सकती है और तागोंका विश्वास किया जाता है जिसका काम चोरी है ! केवल यह कि उसमें पति नहीं इसमें है । हम सोचा करते हैं कि पहिले एक आदमी कपाता था तो दम खाते थे अब दत्तों कम ते हैं और पहिले से अधिक कपाते हैं फिर भी पेट नहीं भरता ।

पहिले मामूली तौर पर भी हाकिमसे कोई शिकायत की जाती थी तो उसकी सुनवाई होती थी। अब हाथ प्रकार फिर भी कोई नहीं सुनता। पहिले मामूली छिसे पढ़ें वह बुद्धि और चातुर्यता होती थी जो आजकलके बी०ए०एम० ए०में भी नहीं पाया जाता आदि। सारांश यह किसी कार्यमें भी वरक्त दृष्टि नहीं आती परन्तु हम इस बातपर ध्यान नहीं देते कि पहिले याव (नियत) क्या थे और अब क्या है। यह तो नियतकी वरक्त है। पश्चिमीय शिक्षा और सम्यतामें ऐसे सन गए हैं कि सांसारिक-पौद्रलिक वस्तुओंमें फसे गए हैं और अपनी असली घन आत्मिक तत्वको विस्मृत कर बैठे हैं फिर हमारी स्थिति चिण्डी और गिरी हुई न हो तो क्या हो ! जैन धर्म की नींव-जिसपर इतनी विशाल गृह निर्माण हैं-भस्त्रत्रय कहलाता है अर्थात् दर्शन-ज्ञान चारित्र्य। तीनों भिन्नकर मोक्षका मार्ग बनते हैं। किसी एककी कभीसे मोक्षकी प्राप्ति असंभव है। इसी प्रकार सांसारिक कार्यों में भी यही बात है। संसारमें भी विद्वत् प्रतिज्ञा और तद्रूप वर्तन की आवश्यकता है। परन्तु खेद कि झूठी स्वार्थ बुद्धिसे हम अपनी आत्माओंको खो बैठे हैं। जिस प्रकार जहराशि दुर्गंधित होनेसे जिनसे खोत उसमेंसे निकलते हैं वे भी दुर्गंध पूर्ण होते हैं इसी प्रकार जब आत्मा में कष्टका भैल आजाता है तो उसके सर्व कार्य कष्टके रंग में रंगे होते हैं। और जिस प्रकार बिजली के तार को खोलनेसे तबाम लम्प स्वतः ही दीवान होनाते हैं उसी प्रकार आत्मा में

सम्यक्त्वके उदय होते ही उसके प्रत्येक कार्य सत्यरूप होते हैं। बस यदि हम चाहते हैं कि फिर दुनियांके सिमौर बनें-जिस अंधेरे गढ़ेकी ओर दुनियां जा रही है उसे बचाएँ तो हमें चाहिए कि अपनी खोई हुई आत्मा को फिर प्राप्त करें। उस समय हम सच्चा सांसारिक एवं पारमार्थिक सुख प्राप्त करने के योग्य बन सकेंगे। और मनुष्य मात्र को बना सकेंगे। इति।

नोट-सत्य का सम्बन्ध आत्मा से है। आत्मा का स्वभाव ही सत्य है। दूसरे शब्दोंमें आत्माका धर्म ही सत्य है। जब तक आत्मामें सत्य है वह धर्मात्मा है। और जब आत्मा सत्यसे छाडी है तब अधर्मी है। जैसे कि शरीर पुद्गल है और उसके अन्दर आत्मा विद्यमान है जिससे वह संप्राण है-अर्थात् शरीरकी जान आत्मा है। आत्माके निकट जाने पर शरीर बेजान है। और नितान्त मिट्टी है। इस ही प्रकार सत्य आत्माका धर्म है। विद्वान् सत्यके आत्मा अपने आपसे भी गिरी हुई है। सत्य केवल आत्माका ही, कल्याण करनेवाला नहीं है बल्कि संसारमें जीवनको आनन्दपूर्वक रखनेवाला भी है। यद्यपि सत्यको रखते हुए बहुत कुछ कष्ट उठाने पड़ते हैं। परन्तु सत्यव्रती आत्मा इनकी कुछ भी परवाह नहीं करती। वह इन कष्टों-परीक्षाओंके उपरान्त उत्तीर्णता पा लेती है। सोना बहु मूल्य वस्तु है। और वह अपने सोनेपनको धारण किए हुए है परंतु जब आगमें तपाया जाता है तो परीक्षाकी कठिनातासे निकट अपने स्वभावमें ही उच्चता पाछे व



है उससे गिरना नहीं । बल्कि कुन्दन बन जाना है । और बड़तर दामोद्रे विक्ता है । सत्यकी परीक्षाको श्री रामचन्द्रजीने पास किया—श्री कृष्णजीने पास किया—श्री वीर मगवानने पास किया—महात्मा बुद्धने पास किया—अश्वमेध देने पास किया—धुन और प्रह्लादने पास किया और राना हरिश्चन्द्रने पास किया—यद्यपि परीक्षा देते हुए कष्टोंका सामना अवश्य करना पड़ा । परन्तु कुछ भी परवा नहीं की—और कामयाबी प्राप्त की अर्थात् 'विनयवृद्धि' के स्वामी बने ।

सत्यको घाण करनेवाली आत्मा वह होड़ी है कि निपुके खन्दर मड़ होता है, पराक्रम होता है और साहस होता है । निर्भय, कर्म-हीन, और दुःसाहसी आत्मामें सत्य कहाँ ! वह तो जरासे दुःखमें सत्यसे गिर जाती है । और इस अपने वर्षसे हाथ धो बैठती है । आप हनारों, दृश्य प्रति दिग्ग देखते हैं कि जरासे कष्टमें मनुष्य घबरा जाता है । और कुछसे कुछ कर बैठता है । एक आदमी अच्छी तरहसे नानना है कि रोगका निदान औषध है । परन्तु घबड़ा कर झांटे फूँके पर ईमान ले आता है । और सत्यसे गिर जाता है । वर्तमानकी अज्ञात-तोंके अन्दर मुझमेंशाले जिस तरह सत्यका खून करते हैं, और बकील लोग उस खूनको हूपानेके जैसे प्रयत्न करते हैं और अन्तमें हाकिम द्वारा कामयाबी प्राप्त करते हैं; यह किसीसे छुग हुआ नहीं है । बात क्या है ? केवल आत्मिक निर्भयता ! जो टक्के कारण उत्पन्न हुई है ।

आत्माको कपगोर बनाया है जोशने—और यह पैदा हुए है आत्माकी अज्ञानतासे—निपकी

यह खबर नहीं है कि " मैं कौन हूँ ? " " मेरा रूख क्या है ? " " मेरा घर कहाँ है ? " " मेरा कर्तव्य क्या है ? " और " मुझे क्या करना चाहिए ? " । वह सत्य जैसे उत्तम धर्मको जैसे निमा सक्ता है । और किस तरहसे सत्य जैसी अश्ल चट्टान पर खड़ा रह सक्ता है । वह तो गिरेगा । फलतः आवश्यकता है आत्माके बज्रगन बना-नेकी और वह बज्रगन हो सक्ती है आत्मिक विद्याध्ययनसे—और आत्माध्ययन कर सक्ता है ब्रह्मचारी पुरुष । अतः आवश्यकता है कि सत्यकी रक्षाके लिए ब्रह्मचर्यका पालन किया जाय अर्थात् वीर्यकी रक्षा की जाय ।

‘ जैन प्रदीप ’ से अनुवादित ।

चर्चि सांख्य ।

पट्टन प्राचीन काठसे मन्तव्यमें चीनीका आदर देखा जाता है । चीनी किने ही पदा-योंसे बनाई जाती है, पर प्रचलनसे इसके रसके ही द्वारा चीनी मस्तुन करनेकी प्रणाली देखीजाती है । किन्तु पहले किस रासायनिक वेत्त ने इमका आविष्कार किया इस बातको हम यहां बर्णन नहीं करसकते ।

इतिहासको पढ़नेसे मलुष होता है कि शूर-वीर मिन्द्र (एलेक्जेंडर) ने जिस समय भारत पर चढ़ाई की थी उन समय उसका "नियार्कस" नामक प्रधान सेनापति भारतवर्षसे श्रीक देशमें इसके पेड़ लेगवाया । उसी समयसे यूरोपके कृषिसेत्रमें मधुर रसका अवतार हुआ है ।



इस समय इसके अतिरिक्त जवूर, ताड़ और नारियल के वृक्षों के रस एवं चुन्दर आदि वृक्षों के द्वारा भी चीनी बनाई जाती है।

स्वास्थ्य का नाश एक जर्मनी वैज्ञानिक ने सन् १७४७ ई० में चुन्दर से पहले पहिले चीनी बनाई थी नेपोलियन के शासनकाल में फ्रांस में बिट चीनी का आदर बहुत बढ़ा हुआ था। इस समय विलायती चीनी का सब जगह प्रचार हो रहा है। पर विलायती चीनी देशी चीनी की अपेक्षा अत्यन्त हीन गुणों वाली होने के कारण यातनासी उसका आदर नहीं करते। विशेषकर औषधोपयोग में देशी चीनी का ही व्यवहार किया जाता है। पर इस समय शुद्ध इखकी बनी हुई चीनी को खोन निकालना सहन काम नहीं है।

पाश्चात्य डाक्टरों के मत से चीनी की उपयोगिता।

पाश्चात्य रसायनशास्त्रज्ञों ने विद्वानों ने परीक्षा करके निश्चय किया है कि चीनी-कार्बन, हाइड्रोजन और आक्सीजन—इन तीनों मौलिक पदार्थों के मिश्रण से तैयार होता है। चीनी खाते ही रक्त के साथ मिश्रित होती है, फिर मृदुरूप से दम होकर कार्बोनिफ एमिड अम्ल और जठर में परिणत हो जाती है। इसके दम होने के समय चीनी के द्वारा जो उष्णता (गरमी) उत्पन्न होती है—उन गरमी का कुछ अंश शारीरिक शक्ति में परिणत होता है। अतएव शर्करा से उत्पन्न हुई गरमी से हमारे देह की गरमी प्राप्त होती है। उस गरमी से उत्पन्न हुई शक्ति सहायता से ही हम सांसारिक संपन्न कार्य कर सकते हैं।

भक्षण की हुई चीनी पकस्थली में स्थित रहती है, उसका कुछ अंश पाकस्थली के रक्त के साथ मिश्रित श्रेण सुगर (Grape Sugar) के रूप में परिणत हो जाता है। फिर आंतों में उपस्थित होने से आंतों के रक्त के साथ मिश्रित श्रेण अंश भी श्रेण सुगर (Grape Sugar) में परिणत हो जाता है। यह श्रेण सुगर रक्त के साथ मिश्रित रक्तवाहिनी सिंहाओं की सहायता से यकृत में पहुँच कर ग्लाइकोजेन (Glycogen) का रूप धारण करके यकृत में ही स्थित हो जाता है। आवश्यकता होने पर यह ग्लाइकोजेन शारीरिक गरमी और शक्त की सहायता करता है। संक्षेप रूप से यह ही चीनी की उपयोगिता है।

चीनी के विशेष गुण।

१ इसका अत्यंत मृदुत्व से परिपाक होता है। २ शरीर में बहुत शीघ्र शोषित होती है। ३ गरमी और शक्त की वृद्धि करके शरीर का पोषण करती है। चीनी के अन्य गुण—

पहला—इस प्रतिदिन दाढ़, पात, रोटी, शाक आदि जो कुछ अन्नसामग्र्य पदार्थ खाते हैं, वे सब मुखरी छार और आंतों के पाचक रस की सहायता से चीनी के रूप में परिणत होकर शरीर में शोषित होते हैं। निरन्तर चीनी खाने पर वह एक क्षण में ही शरीर में शोषित हो जाती है। इसलिए शरीर के यंत्रों को अविनश्वर रखना नहीं पड़ता।

दूसरा हम दाढ़, मांस, रोटी, कट—तूलादि जो कुछ भक्षण करते हैं, उन सब पदार्थों के समस्त अंश हमें वहीं होते, उनका क्षरण



अंश मलमूत्रके साथ मिश्रकर शरीरसे बाहर निकल जाता है। चीनी खानेसे—चीनीके समस्त अंश हज्म होकर शरीरमें रह जाते हैं। इस लिए शारीरिक यन्त्रोंको विशेष परिश्रम नहीं करना पड़ता।

तीसरा—चीनीसे मेद (चर्बी—Fat) उत्पन्न होती है। मेद शरीरके भीतर संजिन होकर आवश्यकतानुसार गर्मी और शक्तिको उत्पन्न करती है। एक विद्वान पाश्चात्य वैज्ञानिकने चीनीके गुणोंकी परीक्षा करके निम्नलिखित मन प्रकाशित किया है:—

(क) चीनीके खानेसे मांसपेशियोंकी शक्ति बढ़ती है। (ख) शारीरिक यन्त्रोंका अनुचिन रीतिसे क्षय नहीं होता। (ग) मुखरोचक होनेसे इसका शीघ्र परिपाक होता है। (घ) चीनी बहुत दिनों तक खराब नहीं होती। (ङ) चीनी मिठे हुए खाद्य पक्कर नष्ट नहीं होते। चीनीके इन सब गुणोंका एक २ उदाहरण देते हैं।

(क) चीनीके खानेसे मांसपेशियोंकी शक्ति बढ़ती है। इसलिए चीनी खानेवाला खूब परिश्रम कर सकता है, कष्ट सहनकरता है और उद्योगी होता है। अरब देशके मनुष्य और वहाँके पशु ऊँट अधिकतर खजूर खाते हैं। खजूरमें सौमें ५८ भाग चीनी होती है। इस लिए अरब देशवासी लोग कष्टनहिष्णु और ऊँट अत्यंत परिश्रमी होते हैं। हाथी ईख अधिक भक्षण करता है इसलिए वह अत्यन्त कष्ट सहन कर सकता है। मल्लाह लोग यथेच्छ रूपसे ईखके रसको पान करते हैं, इसलिए नाव खेंते समय उनको कुछ कष्ट प्रतीत नहीं होता।

अंगरेज लोग बहुत चीनी खाते हैं, इसीसे वे उद्यमताके आदर्शरूप हैं।

(ख) अधिकतर परिश्रम करनेसे मांसपेशियोंमें दुर्बलता उत्पन्न होती है। चीनी खानेसे वह दुर्बलता तत्काल नष्ट हो जाती है। यूरपके प्रसिद्ध २ पथिक मिश्रीकी टेलीको मुँहमें रखकर चूमते चूमते लुरीय मार्गको तयनीय करते समय और बड़े २ ऊँचे पहाड़ोंको अतिक्रमण करते समय कुछ भी कष्ट नहीं मानते।

(ग) चालू मिठाई खानेसे प्रसन्न होते हैं। इसलिए चालूकी पाकस्थलीमें खाद्यादि पदार्थ शीघ्र ही पत्र जाते हैं और उनको बार बार भुख लगा करनी है।

(घ) मिश्री, बतासे, कन्द आदि पदार्थ, चीनीके ही रूपांतर है। ये वस्तुयें बहुत दिनों तक खराब नहीं होतीं।

(ङ) कुछ मिठाईयोंको छोड़ कर अन्य चीनी मिठे हुए पदार्थ खराब नहीं होते। बहुत सी मिठाईयाँ भी बहुत दिनों तक बिगड़ती नहीं हैं।

प्राचीन मतसे चीनीके गुण ।

पूर्वकांडके महर्षि लोग, चीनीके बहुतसे गुणोंको जानते थे। आयुर्वेद शास्त्रमें इसका यथेष्ट प्रमाण पाया जाता है।

चीनी—पुष्टिकारक है। अत्यन्त कुश व्यक्त भी चीनी खानेसे मोटा हो सकता है। इसलिए अनेक चक्राक पाकादि औषध वेणोंमें चीनीका अधिक प्रयोग देला जाता है।

चीनी—सन्निवारक है। राजयक्ष्मावाले रोगीको और जीर्णन्वराधे रोगीको चीनी सेवन

कराई जाती है। उससे शरीरका क्षय होना दूर होकर वजन बढ़ता है। इसलिए तालीशादि चूर्ण, सितोपलादि चूर्ण, समशर्करा चूर्ण, मार्गी-गुड, च्यवनप्राश, वासावलेह और स्वपङ्कटप्राण्ड आदि क्षयरोग विचारक औषधियोंके लिये चीनी प्रधानरूपसे ग्रहण की जाती है।

चीनी-रक्तशोधक है। शरीरके किसी भी अङ्गके फटजाने पर उसमें चीनीको मार देनेसे तत्काल रक्त बन्द हो जाता है। चीनीकी नस्य लेनेसे नासिकासे रक्तस्राव (नकसीर छूटना) होना दूर होता है। चीनीके शर्कराको मुखमें धारण करनेसे रक्तजनित रोग शांत होते हैं।

चीनी-रक्तकी हीनता और व्याधिनित दुर्बलतामें विशेष उपयोगी है। ऐसी अवस्थामें दाइरा लोग मल्टका व्यवहार करते हैं। मल्ट यह जौ की शर्करा है। मल्टका काम चीनीसे ही चल सकता है और मल्टकी अपेक्षा चीनी अधिक सस्ती होती है।

चीनी खानेसे दुषित वायु और पित्त शमन होता है।

चीनी-शरीरकी सातों घातुओंकी वृद्धि करती है। इसलिये बालकोंको यथेष्टरूपसे चीनी सेवन करना उपयोगी है। चीनीके खानेसे शारीरिक गरमी बढ़ती है। वृद्धावस्थामें शारीरिक उष्णता स्वभावसे ही कम हो जाती है, अतः वृद्ध मनुष्योंके लिए चीनी एक उत्तम खाद्य पदार्थ है। हिन्दु धर्मिक शास्त्रोंमें जो वृद्धावस्थामें वानप्रस्थ आश्रमकी व्यवस्था की है, हमारी रायसे ऐसी अवस्थामें वनमें रह कर मधुर बन्द, मृदादि खानेकी विशेष सुविधा हो सकती है। पके हुए

फलोंमें चीनीका अंश यथेष्ट परिणाममें होता है, इसलिए फल खानेसे चीनी खानेके समान ही कार्य होता है।

निराहार व्रत करनेवाले भगवान् बुद्धदेवको उनके एक शिष्यने गुप्तरूपसे चीनी भक्षण कराई थी। जैनमतके आदि अवतार भगवान् ऋषभ देवको छः महिने तक कठिन अनशन तप करनेके पश्चात् तत्कालका निम्नांश शुद्ध इक्षु रस पान कराया गया था।

शर्कराके दोष ।

अब हम "वैद्य"के पाठकोंके निरुद्ध चीनीके दो चार दोषोंको भी प्रगट करते हैं।

चीनी-ऊष्णवर्द्धक है। इसलिए नवीन सर्दी व कास (खांसी) रोगमें चीनी खाना उचित नहीं है। यदि चीनी खानेकी अत्यन्त आवश्यकता हो तो उसको गरम करके अपना किसी वृद्ध पदार्थके साथ मिला कर खाना चाहिए। मिथी और काली मिरच दोनोंको गरम जड़के साथ सिद्ध करके पान करनेसे सर्दी कम हो जाती है।

चीनी-मेद (चर्बी)को बढ़ाती है। इसलिए जो पुरुष अत्यन्त स्पृष्ट हैं, उनको चीनी नहीं खानी चाहिए। कुछ दिन तक चीनी अपना चीनीके बने हुए खाद्य पदार्थोंको त्याग देनेसे स्पृष्ट मनुष्यकी बहुत बढ़ी हुई पौष्टिकता कम हो जाती है। यदि स्पृष्ट मनुष्यके शरीरमें वात-रोग आदि आदिर्भाव हुआ हो तो वह चीनीको विपरीत समान त्याग देवे।

जो शारीरिक परिश्रम नहीं करते वे यदि चीनी खाते हैं तो उनके वह चीनी शर्करा रूपमें परिणत होकर पूर्ण रूपसे हन्म नहीं होती।



और मूत्रके साथ बाहर निकल जाती है । मूत्रके साथ जो चीनी निकलती है उसको मूत्र शर्करा अथवा ग्लाइकोसुरिया रोग कहते हैं । इस रोगमें चीनीका शीघ्र ही परित्याग न करनेसे रोग बहुत जल्द मधुमेह (Diabetis) में परिणत हो सकता है ।

मधुमेह (Diabetis) में चीनी और चीनीको बनाने वाले खाद्यद्रव्य (मधुर पदार्थ) प्राणनाशक विषके समान अहितकर हैं ।

जो चीनीको या चीनीके बने पदार्थोंको अधिकता से सेवन करते हैं और नियमावुसार अधिक परिश्रम करते हैं, उनसे चीनीकी उपयोगिता मालूम होसकती है ।

उपवासके अनन्तर प्रथम चीनीका शर्बत पीना अच्छा है । इससे पित्त प्रकृतिस्पर् होता है । मुखशोष, शारीरिक गठानि और विषाद दूर होता है । मन्दोष्ण दुधमें चीनी मिलाकर पान करनेसे हृदयमें मजकी वृद्धि होती है और शरीरके रक्तस्रोत अत्यन्त वेगवान् होते हैं । घृतके साथ चीनी भक्षण करनेसे वीर्यकी वृद्धि होती है । मज्जजनके साथ खानेसे नाभिज्वाला बल बढ़ता है और स्मरणशक्ति तीव्र होती है । दही के साथ चीनी खाने से कुछ भी लाभ नहीं होता, विशेषकर दहीका गुण भी नष्ट होजाता है । दहीके साथ चीनीका व्यवहार करनेसे अनिष्ट होता है । -

जिनके शरीरमें रक्तविहार (रक्तपित्त, खुजली, क्षत, कुष्ठादि) हो जिन्होंने जुल्लाव लिया हो, जिनकी आंतोंमें कृमि पड़गये हों और जो सर्वदा यकृतकी पीडासे आक्रान्त हों उनको चीनी नहीं खानी चाहिए । नवप्रसूता स्त्रीके लिए भी चीनी सेवन करना निषिद्ध है ।

“यैव”से उद्धृत ।

सुखकी प्रासक्तिक मार्ग ।

दुःख, शोक और अशांति जीवनके साथ लगे हुए हैं । संसारमें ऐसा कोई भी मनुष्य नहीं जिसके हृदयमें कभी सुखका कांटा न चुभा हो, जिसने कभी आपत्तिके गहरे समुद्रमें गोते न लगाये हो, तथा जिसने कभी असह्य दुःखके जलते हुए आंसू न बहाये हों । कोई ऐसा घर नहीं जिसमें रोग और मृत्युरूपी मयंकर शत्रुओंने प्रवेश न किया हो, संसारमें जिसने प्राणी हैं सभी किसी न किसी दुःखमें प्रसित हैं ।

इन दुःखोंसे छुटकारा पानेके लिये अथवा इनको किसी मांति कम करनेके लिये लोग न जाने कैसे २ उपाय करते हैं और सुखकी प्राप्तिके अर्थ किन २ मार्गोंका अवलंबन करते हैं । कुछ लोग विषयवासनामें सुख मानते हैं, कुछ निःशब्दके स्वादमें आनन्द मानते हैं, बहुतसे मनुष्य धन, संपदा और मान, मर्यादाओं ही दुनियांकी सब वस्तुओंमें उत्तम समझते हैं और रात दिन उनकी प्राप्तिके अर्थ उद्योग करते रहते हैं । कुछ लोग ऐसे भी हैं जो धार्मिक कार्योंके करनेमें सुख मानते हैं । भावार्थ-प्रत्येक मनुष्य अपने २ विचारानुसार भिन्न २ बातोंमें सुख मानते हैं और उन्हीं के द्वारा सांसारिक दुःखोंसे मुक्त होने और सांसारिक सुख प्राप्त करनेकी अभिप्राया रखते हैं ।

अब प्रश्न यह है कि दुःख शोकसे छुटकारा पाने के लिये कोई उपाय नहीं है तो उनका उपाय यह है कि पहले दुःख और आपत्तिका



ठीक २ ज्ञान प्राप्त किंवा नाथ और उनकी असंख्यताका पता लगाया जाय ।

जैसे मनुष्यके मानसिक विचार होते हैं उन्हींके अनुसार उसके जीवनकी घटनाएं होती हैं जो मनुष्यके जीवनको बिगाड़ती और बनाती हैं अतएव जैसे तुम्हारे विचार हैं यथार्थमें ऐसे ही तुम स्वयं हो । यदि कोई मनुष्य सुखी और प्रसन्न है तो उसका कारण यह है कि वह अच्छे प्रसन्नताके विचारोंमें मग्न रहता है और यदि कोई मनुष्य दुःखी है तो उसका कारण यह है कि वह दुःख निराशा और निर्वैयर्थताके विचारोंमें नम्र रहता है ।

यदि तुम यथार्थमें स्याई रूपसे सुखी होना चाहते हो तो पहले तुम्हें नेत्र और धर्मात्मा बनना चाहिये । इसके बिना सुखकी इच्छा करना, रात दिन उसकी चिन्ता करना और उसके लिये उत्सुक रहना मूर्खता है । चाहे तुम किनने हि निर्धन हो तो भी तुममें स्वार्थकी अहृति देनेकी शक्ति है । तुम अवश्य दूसरोंके लिये कुछ न कुछ अर्पण कर सके हो । जिस मनुष्यके हृदयमें परोपकार है, जो सच्चे हृदयसे दूसरोंका भला चाहता है, वह रुपये पैसेकी बात नहीं जोहता । वह रुच्योके स्थानमें अपने जीवनको अर्पण कर देता है । अपने मनसे स्वार्थ, द्वेष, कषा और वासनाको निराकर अपने और परायेका भेद भव निराकर, मित्र और शत्रु सबके साथ समान व्यवहार करता है सबका भला चाहता है और सबको लाभ पहुंचाता है वही सुखी कहा जासका है ।

कर्मका सिद्धांत अष्ट है । जैसा हमने पूर्व

जन्ममें किया अथवा इसी जन्ममें किया उसका फल हम भोग रहे हैं । जैसे हम अब करेंगे उसका फल आगे भोगेंगे । मानलो किसी मनुष्यका घन चोरी चल गया, अथवा किसीका पुत्र मर गया अथवा कोई आने पदसे गिर गया, तो समझना चाहिये कि मैंने पूर्वमें कुछ ऐसे बुरे कर्म किये होंगे जिसका बुरा फल मुझे मिला । मैं इस फलको उदासीनतासे भोग लूं और आगामीमें शुभ कर्मोंका बंध करूं जिससे उनका फल अच्छा मिले । यदि मैं इनको मोते हुए दुःखी होऊंगा तो यह मेरे लिये हानिका कारण होंगे । जो मनुष्य दुःखीको उदासीनतासे साथ सहन कर लेता है और अच्छे कर्मोंके लिये उद्योग करता है और सचाई और ईमानदारी पर जमा रहता है वह सदा सुखी और प्रसन्न रहता है ।

अपने हृदयको शुद्ध करलेनेसे ही जीवन स्वतः सुख नापगा । विषयवासना, रागद्वेष, क्रमक्रोध, लोभ, मोह, मद, माया, अहंकार, स्वार्थ और दुराग्रह ये सब निर्वृत्तता और निर्धनताके कारण हैं । इनके विपरीत प्रेम, पवित्रता, नम्रता, सम्मत्ता, शील, संतोष, दया, अनुकंपा, उदारता, निःस्वार्थता, इन्द्रिय निग्रह ये सब वन और बलके सुवक हैं । इनसे ही सुखकी प्राप्ति हो सकती है ।

मनुष्यको उचित है कि जैसी उसकी अवस्था है, जो कुछ उसके पास हैं उसीपर संतोष करे और कथनः उन्नति करे । यदि तुम छोटी गोप-हीमें रहते हो तो उसे ही स्वर्गका नमूना बनाकर दिखताओ । उसे ऐसा साक्षात्परा रखो कि



उपमें कोई घच्चा न रहे । तुम वहाँ तक होसके उसे सुंदर और रमणीय बनाओ । मोननश ला-
को स्वच्छ रखो, रोटी और चनेका साग तुम्हारे
छिपे हो उसे ही स्वादिष्ट बनाओ । यदि तुम्हारे
पास ओपड़ेमें बिछानेको काठीन या कर्श नहीं
है तो अपने कपरेमें हर्ष, आनन्द और स्वागत-
के कर्श बिछाओ और उन्हें प्रेम युक्त कीलोंसे
जड़कर संतोष और दृढ़ताके हथोड़ेसे ठोक
दो । परस्परमें प्रेम और प्रीतिका व्यवहार
करो । धैर्य और संतोष धरन करो । इसी से
सुखी हो सकते हैं ।

जो चीजें स्वयमेव नष्ट हो जानवाड़ी है क्या
यह सम्भव है कि उनमें मन लगाकर तुम वा-
स्तविक सुख प्राप्त कर सके हो । सच्चा सुख
तभी प्राप्त हो सका है जब कि तुम उन वस्तु-
ओंमें मन लगाओ जो कि नित्य और स्थाई हं
कभी नष्ट नहीं होंगी । अतएव तुम्हें चाहिये कि
हासिक और विनाशिक वस्तुओंसे अपने मनको दृष्टा
ओ और उनसे कभी भूल कर भी इच्छा न करो ।
जितना तुम स्वार्थको छोड़ते जाओगे उतना ही
तुममें प्रेम, पवित्रता, निःस्वार्थता, जीव प्रायक
प्रति मैत्री भाव पैदा होता जायगा । इसी प्रकार
उन्नति करते २ तुम सच्चे ज्ञानको प्राप्त हो कर
सच्चा सुख प्राप्त कर सकोगे जो कभी नष्ट
नहीं होगा ।

निरुद्ध हृदय प्रेम, पवित्रता, सत्य, उदार-
तासे रहित है उसे सुखका अनुभव नहीं हो
सकता । क्योंकि सुखका प्राप्त करना इसका
सम्बन्ध मन और हृदयसे है । छाड़नी मनुष्य
चाहे कोउपसी हो जावे किंतु सदा नीच, पवित्र

और घृणित ही रहेगा । जब तक दुनियामें
उससे घनाट्य मनुष्य रहेंगे देल कर अपनेको
निर्धन ही समझेगा, पर इसके विपरीत सच्चा
ईमानदार और दयालु मनुष्य रहे उसके पास
घन संपदा कुछ भी नहीं है तौ भी वह सुखी
कहा जा सका है । यदि मनुष्यको संतोष नहीं
है तो वह निर्धनसे भी निर्धन कहा जायगा ।

सच्चे सुखकी प्राप्ति का सरल मार्ग यही है
कि मनुष्य अपनी इन्द्रियोंको अपने वशमें रखे
और अपनी आत्माको पवित्र बनावे । जो मनु-
ष्य इन्द्रियोंके वशमें होता है वह सदैव निर्बल
और दुःखी रहता है । संसारको उससे कोई लाभ
नहीं पहुँच सका । यदि तुम संसारमें सुख और
ऐश्वर्य प्राप्त करना चाहते हो तो काम, क्रोध,
लोभ, मोह, राग, द्वेष, रति, अरति आदि मान-
सिक कषायोंको और वापनाओंको कम करो
इसीसे सुखी हो सकत हो । अंतमें पाठकोंसे
निवेदन है कि उल्लेख नियमोंको क्रमसे साधन
करते हुए सच्चे सुखको प्राप्त करें ।

मंगलप्रसाद मास्तर, पाटनः।

स्त्री शिक्षाकी जरूरत ।

शिक्षा—बहनों ! शिक्षा उसे कहना चाहिये
कि जो मत्स्यक कार्यता गुण औगुण सिखावे ।
पाँचों इंद्रियोंके विषयोंको योगना, उद्योग, हुनर
मिलना सिखाना, बोधना, चेडना इत्यदि कार्यों को
भले प्रकार करनेके लिये शिक्षाकी जरूरत है ।
शिक्षाही रहित मनुष्य मानको है क्योंकि
मनुष्यको मनुष्यत्वमें स्थिर रखनेवाली शिक्षा
ही है । देखो जिन मुष्कोंमें जब तक शिक्षा



नहीं दी गई थी तब तक वहाँके मनुष्य विटकुल जगड़ीवत् याने पशुवत् आचरण करने वाले थे; परंतु आज उन्हीं देशोंमें शिक्षा महारानीका शुभागमन होनेसे वहाँके नाना प्रकारकी उत्थिति रूप फूलोंको हम सब कोई छट रहे हैं। समस्त मनुष्योंको शिक्षा लेनी आवश्यक है। तथापि मनुष्योंमें जो स्त्री वर्ग है उनको लेना विशेष जरूरी है। कारण कि ये मनुष्य मात्रकी जननी याने रक्षिका हैं।

माताके समान शरीर पोषनेवाला दूसरा नहीं। चिन्ताके समान शरीर छुलानेवाला दूसरा नहीं है, स्त्रीके समान शरीरको साता देनेवाला दूसरा नहीं है, विद्याके समान शरीरका गहना दूसरा नहीं है।

हाथ अशिक्षा ! तू बड़ा अपराध करती है।

संबंधियोंमें फूट-यद् भी जो आपसमें फूट होजाती है सो अशिक्षाका कारण है। बहु-तसे देशोंमें विवाह आदि कार्योंको करते, लेन देन करना पड़ता है उसमें मेरी बहनें लड़ उठती है, द्वेष कर लेती है, परस्परका हेल्मेल मराती फूट होनेसे नष्ट होजाता है।

रोना पीटना और माण पीछे जीवन जो कोई मनुष्य अपनी पर्यायको छोड़ दूसरी पर्यायको धारण करता है उसके समे संबंधी स्त्रियों और विपोग दुख करके रोती है, आत्मदमन करके आर्त ध्यान बांध लेती है, और खन्य कोई शांति कराने आवे वह भी उसीके अनुसार रो पीटके पापश्र-यको बांधती है। शोक करने वालेको संसारकी अनित्यता समझाकर धर्ममें लगाना दूसरोंका कर्तव्य है।

प्रमाद—आज हमारी बहिनें प्रमादके वशीभूत होकर कोई प्रकारका साहस करनेको उत्थमवान नहीं बनती है। अन्य देशकी बहनें अपने पुरुषार्थके बलसे अनेक प्रकारकी विद्या, कला हुन्नर सीखकर औरोंको सिखाती हैं, अपना जीवन परोपकारसे विताती हैं तथा लाखों रुपये दान धर्मार्थ व्यय करती हैं। इस लिये हमको भी आलस्यको छोड़ पुरुषार्थी बनना आवश्यक है। जब तक कर्मोंको दोष देके आलसी बन रहे हैं, निरुद्यमी हो बैठे हैं, तब तक कुछ नहीं कर सके।

श्लोक

आलस्य कुतो विद्या, अविद्यस्य कुतो धनम् ।
अधनस्य कुतो मित्रः, अमित्रस्य कुतो वलम् ॥

अर्थ—आलसीको विद्या नहीं आती, अविद्यावान को धन नहीं, निर्धनको कोई मित्र नहीं; विना मित्रवालेको कोई जोर नहीं।

समयकी हानि मेरी बहिनें ! पराई निद्रामें अपने समय बिगाड़ती हैं। कितना समय रतीझमें कितना समय निद्रामें व अन्य स्त्रियोंसे किजुल बातोंमें अपने २४ घंटोंका व्यय कर देती हैं परंतु एक घड़ी भी धर्म कार्योंमें व परोपकारमें नहीं देती हैं, और कहने जाने तो कहे हमें फूसल नहीं, सो मेरी बहनोंको एक समयकी भी अमूल्य समझनेकी शिक्षा अवश्य लेनी चाहिये, जिससे समय व्यर्थ न जाने देवे। अशिक्षाके कारण समयकी कदर नहीं करती।

कुटुम्बमें कलेश—माता पिता, भाइबच, स्त्री, पुत्र, संबंधी जन, सबमें आज ऐश देख पड़ता है उन सबका कारण एक अशिक्षित वर्ग है जहाँ



प्रेम, भक्ति, विनय मर्यादाका नाम तक न हों वहां केश विना कोई भी नहीं रह सका । इस लिये ऐक्यता होनेमें योग्य शिक्षाकी अतिशय जरूरत है । जहां अशिक्षा है वहां फूटका ही राज्य रहता है ।

जो पुत्र अशिक्षित मातासे उत्पन्न हुआ है वह बालकपनमें सम्हाल न रखे जानेके कारण सप्त व्यसनोंमेंसे कई व्यसनोंको सेवनेवाला हो सका है ।

कपायकी तीव्रता—आत्माको कपन्ति कहिये घाते सो कपाय है । मेरी अज्ञान बहिनें विना ज्ञान रुपी अंकुश के तीन कपायके परिणामोंको नहीं रोक सकी । सपेरेसे शमतकमें काम क्रोध मान माया लोभ रूप भाव करती है और उसका स्वरूप न जानकर अपने आत्म भावोंका नाश करके कर्मोंको बांधती है । बहिनो—अच्छा घर बड़ी कहलावेगा कि जहां सुघड़ स्त्री हो । बिना सुघड़ स्त्रीके अच्छा घर नहीं रह सका, इस लिये अच्छा घर बनाने के लिये स्त्री शिक्षाकी ओर अधिक ध्यान देना चाहिये ।

हा देव ! नारी जातिकी कैसी दुर्दशा हो रही है ? पूर्वकाष्ठ में गृह देवियोंकैसी सुशिक्षित हो गई जिन्होंने के गुण-यश कीति आज तक गाये जाते हैं । वर्तमान में चित्रामकी मूर्तिके समान कुछ नारियां हों जिनको सिर से पांव तक सोना चांदी तथा वस्त्रभूषणों आदिसे लदी हुई अविद्या-मूर्तिके समान हैं, हा ? क्या करें वे हमारे स्वार्थी बंधु मूर्ख रहते हैं । पूर्वीय समयमें हर एक घरमें कुटुंबके लोग पति, पत्नी माइ-

बंध आदि कुशल पूर्वक समय व्यतीत करती थीं । जब अविद्यारूपी देवीने घर में पांव रखा है तबसे एक घरमें दो नारियां हो वहां वाग्मनाग बरसने लगते हैं ।

बहिनों ! अब गफ़लत की नींदको त्यागो और सचेत होके अपनी आत्मा को देखनेका उपाय सोचो । और अपनी संतानों को वीर बनाने की शिक्षा प्राप्त करो । बाल्यवस्था से ही उनके हृदयमें देश सेवा जाति सेवा कुटुंब सेवा आत्म सेवा का भाव कूट र के भर दो । रागद्वेष का भाव उनके सुकोमल हृदय में मत जमने दो ।

बहिनो ! तथा बंधुओं ! लेख बढ़नेके सबब इतना लिखके बंद करती हूं । फिर कभी समय मिलने पर लिखूंगी । इसमें अल्पशुद्धि से कम ज्यादा शब्द लिखा गया होवे तो क्षमा करेंगे ।

एक जैन महिला—प्रभाव ।

स्वाध्यायोपयोगी ग्रंथ ।

आदिपुराणजी टीका [सं० श्लोक सहित] १९)
उत्तरपुराण मापाटीका १०)
गोम्मटसारजी बड़ी टीका तीन खण्ड २९)
हरीचंद्रपुराण [जैन रामायण] ६)
पांडवपुराण [जैन महाभारत हिंदीभाषा] १॥)
चर्चा समाधान धार्मिक प्रश्नोत्तर २॥=)
जैनसिद्धांत संग्रह [१०१ ग्रंथका संग्रह] ९)
भगवती आराधना टीका ९)
आत्मख्याति समयसार टीका ९)
५) से व्यादेकी पुस्तक मंगानेसे की रु० एक आना बमीशन दिया जाता है ।
मैनेजर, दि० जैन पुस्तकालय सूरत ।



આપણી પુત્રીઓ વિષે વિચાર ।

(૬)

(હેલ્થ-સા. નાગચંદ પુંજાભાઈ, વી. એ. વડોદરા ।)

વિવાહ કરતી વખતે પુત્રીનું બહુ કેટલું જોવામાં આવે છે. ડોકરીઓને ઉઠેરવામાં અને કેળવવામાં આટલી બધી બેદરકારી બતાવવામાં આવે છે તે જાણે પુત્રી નથી તેમ કેટલીક ન્યાયોના કેટલાક સ્વાર્થી અને અજ્ઞાન માયાપ દીકરીના વિવાહ જે વધારે પૈસા આપે તેની સાથે કરે છે, ચાહે તો જમાઈ પરોડે. હુથા કે મુગો કે રોમો હોય પણ પૈસા તેમ જમાઈ થાય છે. આવી રીતે જ્યાં જમાઈના શુભ જોવાતા નથી ત્યાં કન્યાને સુખ પડતું નથી. કન્યાને બહુ વીતે છે ત્યારે એકાંતમાં રહે છે, નીકાસા નાખે છે અને માયાપને ગાળો દે છે. આવી રીતે કલ્યાણનાર માયાપ પેણેટકે ખાલી થઈ દુઃખી થાય છે. આમાં પૈસા આપી આ કામમાં ઉત્તેજન આપનાર પણ શુનેક-ગાર કરે છે.

જ્યાં સાદા તેમજાં થાય છે ત્યાં પણ કન્યાનું બહુ સંચવાતું નથી. જ્યાં ડોકરીઓના વિવાહ નાનપણમાં કરવાનો રિવાજ છે ત્યાં ડોકરીના દે ડોકરીના શુભોદય જોઈ શકતા નથી. મોટપણે કદાચ ડોકરી દુઃખરણવાળો નીપજે છે કે કદાવાને અશક્ત માણુમ પડે છે. કેટલીક વખત કન્યાના કે જમાઈના શરીરનો બાધો વિવાહ કરતી વખતે જોવાની જરૂર છે નહિતો બંનેના શરીરની ખરાબી થાય છે કે કંઈક અતીતિ થાય છે. કળેશાં કંઈ ઉભરનાજ હોય છે એમ નથી. ઉભરના કળેશ બહુજ ખરામ છે. સારા ધરવાળા ઘોડીઆમાંથી છે. કરો ઝડપાય તેમાં મોટાઈ માને છે પણ આ મોટાઈ હવે જોડી માનવી જોઈએ. સાડું ધર મને તો હ ખાર મડીને મુરતીએ નાનો હોય તેપણ ચકારી લેવામાં આવે છે.

વરનાની સ્વભાવ મળતો ન આવે તેપણ કળેશન થાય છે. વર બહુ બજેડો હોય અને કન્યા તદન અમજ હોય તેપણ કળેશ બને છે. કન્યા બજેડી અને ડાહી હોય અને વર અમજ અને મૂર્ખ હોય તો તો દેખીવુંજ કળેશ બને છે.

નવા પરણેલા જોડાને બે બોલ.

પ્રિય વાંચનાર! આ શીખામણનો વિષય ગંભીર છે. લખતાં લખત અટકી જાય છે. મર્યાદા અને વિવેક લખતાં અટકાવે છે. પણ હાલની સ્થિતિ જોતાં માણુમ પડે છે કે આ બાબતમાં પુરૂષ તેમજ સ્ત્રી બંને વર્ગને કંઈક જાણવાનું મળતે એમ ધારી નીચેની હકીકત આપવાની જરૂર સમજી છું. અંગ્રેજીમાં “What a young wife ought to know” નાની વહુએ શું જાણવું જોઈએ એ નામનું પુસ્તક છે. તે લખનાર એક અમેરિકન ડોક્ટર બાઈ મીસીઝ એમા કરીને છે. તેમાંના કેટલાક ફકરા ભાવાર્થ સાથે આપવાની જરૂર છે.

In the aggressive part of the human Family—aggressive in marital relations—There is great danger of allowing the lower nature to dominate the higher. Passion, when master, overrides all other considerations, and the selfishness, which is so dangerous, a part of the human nature, sees but one thing—The accomplishment of desire. No Thought of the possible results hinders him and while nothing is hazarded on his part, everything on hers—even this for the moment is forgotten, and afterward he may, well wonder how his better self was so lost to the tender sympathetic love and consideration in which he should always hold her.

Be guarded, O husband! It is woman's nature to forgive, and when she loves, this impatience of passion uncontrolled can be many times forgiven. Aye, even when too frequent maternity is thrust upon her, but there comes a time when love and forgiveness have reached their limit, and love struggles vainly to rise above disgust and loathing, but it can never again attain to anything but tolerance.



ભાવાર્થ:—હંચા વિચારોને બદલે બ્યારે કુટુમ્બમાં હલકા વિચાર—અધમ વાસનાઓ— વધે છે ત્યારે કુટુમ્બની પાથમાલી થાય છે. માણસની બ્યારે વિષયવાસના વધે છે ત્યારે બધા સારા વિચારો ભૂંથી જાય છે. અને સ્વાર્થને લીધે પોતાની ઇચ્છા પુરી કરવા સિવાય બીજું કંઈ સુઘડું નથી. કામાન્ધ શયેએ માણસ પરિણામ શું આવશે તેનો વિચાર કર્યો પણ કરી શકતો નથી. પોતાને કંઈ નુકશાન થશે નહીં પણ જોતે પાંચ વેડવું પડશે એવો ખ્યાલ માત્ર પણ આવતો નથી. દુષ્ટ પણ વીત્યા પછી તેને અવધો લાગે છે કે શું હું એટલો બધો આધળો થઈ ગયો હતો કે મારી સ્ત્રીનું મન હુશોરે કે એવું હેતુ ઓછું થશે એવો પણ વિચાર ન આવ્યો! વાચનાર માણે આપની-ગુન્દો ભૂમી જવો—એ જોતો સ્વભાવ છે. સ્ત્રી પતિ ઉપર એટલો બધો પ્રેમ રાખે છે કે ધણી વખત પ્રેમની મારી ધણીની વિષયવાસનાને તામે થઈ તેનો ગુન્દો માફ કરે છે. અરે! પણ બ્યારે એ અવિચારી પુરુષ તેની ઉપર ઉપરાઉપરી સુવાવડના પ્રસંગ આવ્યો છે, ત્યારે તેનો પ્રેમ ઓછો થાય છે, તેને તિરસ્કારની નજરથી જુવે છે અને તેનું કંઈપણ સાંખી શકતી નથી.

But the wife is not always, guiltless when this sad state of things has resulted, in what should have been a happy married life ! While the husband is the aggressive one, yet she may, by many little carelessnesses, and thoughtless acts invite attentions which she afterward repels. The womanly modesty which characterized her girlhood should always be preserved and observed, and this innate dignity, this strongly asserted individuality, will tide them gloriously over many hard places.

પણ સ્ત્રી કંઈ હમેશાં નિર્દોષ હોતી નથી. આખરે બ્યારે આવી સ્થિતિ આવે છે ત્યારે પરણ્યાનું સુખ કંઈ મળતું નથી. જો કે વાત છેડનાર ધણી હોમ છે તોપણ સ્ત્રી કેટલીક વખત જાણે અજાણે

પોતાના હાવભાવ અને ચેષ્ટાથી ધણીનું મન લોભાવે છે અને પછી જોતે કંટાળો આવે છે. સ્ત્રીએ કુમારિકા અવસ્થાનું સરમાળપણું અને મહાભો પણ માયતી રાખ્યો જોઈએ છે. આવી રીતનો સ્ત્રી જાતનો કુદરતી સ્વભાવ કાયમ રાખવાથી ધણી સુસીખતોમાથી બચી જાય છે.

ઘરમાં સારી મજેની આનંદ ઉપજાવે એવી વસ્તુઓથી માતાના ગર્ભમાં રહેલા બચ્ચા ઉપર કેવી અસર થાય છે તેનો એક દાખલો નીચે પ્રમાણે છે.

એક બાઈને બ્યારે પહેલો ગર્ભ રહેલો ત્યારથી તેના પતિએ તેને અલગ રહેવાની રજા ધણી ખુશીથી આપી. અલગ એટલે બીજા ઘરમાં નહિ પણ પોતાના જ ઘરમાં રહી પવિત્રપણે જીંદગી ગુમારે એવો બદોબસ કરી આપ્યો. આ જોઈ ધણી સંપ અને પ્રેમથી રહેતું. ઘરમાં સુંદર વસ્તુઓ ધણી હતી પણ એક સુંદર છત્રી ઉપર આ બાઈનું મન વારે ધડીએ જતું તેથી તેણે જે પુત્રીને જન્મ આપ્યો તેનો મ્હેરો તેની માકે બાવના મ્હેરો કરતાં છત્રીમાંના મ્હેરોને વધારે મળતો આવતો. આ છોડી જન્મી ત્યારથી જ ગુલાબની કળી જેવી ખુબસુરત હતી, રાત્રે કદીપણ રડતી નહીં, કદી ચીકાટી નહીં અને તેનો મ્હેરો હરતો અને મોડું આજો દરોડો મલક મલક થયાં કરતું, તેને લીધે ઘરમાં આનંદ આનંદ છવાઈ રહેતો. એ છોડીને ઉઠેરવામાં આ બાઈને જરાપણ કંટાળો કે મહેનત પડી નથી. આવું કારણ એજ હતું કે ગર્ભના દિવસથી આ બાઈ બહુ આનંદથી રહેતી અને સારા વિચાર કરતી.

યોડા વસ પછી આજ બાઈને ફરીથી ખખર પુછતાં તેણે કહ્યું કે મારા ધણીના મનમાં એવો ઓછો વિચાર પેડો કે ગર્ભ રહ્યા પછી મને તેટલા વખત સ્ત્રી સમાગમ થઈ શકે. સ્ત્રી જતી હું આથી લાચાર બની તેની દુષ્ટ ઇચ્છાને તાપે થતી હું ગભરાતી, દુઃખ પામતી, રડતી, આખરે મારા ધણીથી મને કંટાળો આવવા લાગ્યો અને તેનાથી બીવા લાગી, જેમ તેમ કરી આ દુઃખના બરેલા



નવ મહિના પુરા થયા એટલે જે પુત્રનો જન્મ થયો તે માંદલો, ચીલીઆ સ્વભાવવાળો અને મુડી હાડકાવાળો નીપજ્યો. ને આખરે દવા દારૂ અને ઉભગરા અને ચીંતા કરાવી પાંચમે વરસે કાચર થઈ તે મરી ગયો. આ ઉપરથી સમજવાનું કે ગર્ભ રહે ત્યારથી જ આનંદ અને ખુશ મીઠા-જમાં અને પવિત્રપણે દહાડા ગુભરવા જોઈએ.

તે બાબતે દહુ કે મારે એક મારાધી જરા નાતી બહેનપણી છે. તે એક વિદ્વાન અને આયુર્વેદ મારણસને પરણેલી છે. તેમને સાત છોકરાં થયાં, તે યોડા યોડા વખતને આંતરે જન્મ્યાં તેથી એ બિચારી બાઈનું શરીર એક લેવાઈ ગયું, તવઈ ગઈ. ધટતી રીતે થયું હોત તો આ ઉમરે તે એક જુવાન ચાલાક સો હોત તેને બદલે તે એક મજુરજી જેવો અવતાર ભોગવે છે.

The very fact that conception may result at any time, proves that the conjugal relation was not instituted primarily for the gratification of the lower nature but for procreation.

હાવાઈ:—ગર્ભ ગમે તે વખતે રહે છે તે ઉપરથી સમજાય છે કે માણસની અધમ વાસના તૃપ્ત કરવાજ સ્ત્રી સમાગમ કરવાનો નથી પણ સંતતિ ઉત્પન્ન કરવા માટેજ છે. પણ આ દુષ્ટ અને અધમ લાલચથી દૂર રહેવા માણસે કેટલાક નિયમો પાળવાની જરૂર છે. પ્રથમ સ્ત્રી અને પુરૂષે એક ઝોરડામા ન સ્નાં જુદા જુદા ઝોરડા માંજ સુવાની રેવ પાડવાની જરૂર છે.

આપણા યુવરાત્રીઓમા એક એવો દુષ્ટ રી વાજ પેટી ગયો છે કે છોકરા પરણે અને વહુ ઘેર આવે એટલે તે નહું જોઈ એકજ સંખ્યામાં મુવે એની ગોાવણ મુખ્ય સ્ત્રી કરે છે. અજુસમજ જોઈ સંસારની જુસરી ગણે પુણીથી મુકે છે પણ આગળ તે બારે ઘડ પડે છે અને નથીમતો વાક દાડે છે. છોકરા કે છોકરીની ઉમર તેર કે ત્રણ વર્ષની હોય તોપણ કોઈને વિચાર આવતો નથી કે આ ઉમર મંસારમાં પડવા લાયક નથી. છોકરાનું વીર્ષ ૧૬ થી ૨૫ વરસની ઉમર સુધીમા

પાકું થાય છે અને કન્યાને ૧૬ થી ૨૦ વરસ સુધીમાં સ્ત્રીપણું આવે છે એટલેકે દરેક અવયવ સંપૂર્ણ રીતે ખીલે છે. એટલે સમજવું કે ૨૦ વરસની ઉમર પહેલાં તો વીર્ષ કાયુંજ હોય અને આવા કાચા વીર્ષથી જે પ્રજા ઉત્પન્ન થાય તે શરીર નમળીજ થાય એ દેખીતું છે. નાનાં બાળકો વધારે મરે છે તેનું મુખ્ય કારણ આ છે. આપણે અહિંસા ધર્મ પાળનારા કહેવાઈએ પણ આ મોટી હિંસા (મનુષ્ય હિંસા) તરફ આપણું ધ્યાન કેમ જતું નથી ?

ખીજું એકજ શૈયામા શયન કરવાથી એક બીજાનો આસ દમમાં લેવો પડે છે તેથી બન્નેના શરીર બગડવા સંભવ છે.

કેટલાક કહે છે કે પંડિતો વિશેષ કામાતુર હોય છે. ખરું જોતા પંડિતો એકલા નહીં પણ વ્યાપારી, નોકરવર્ગ, વકીલ વર્ગ, વિદ્યાર્થી વર્ગ, વગેરે જેમનો બેડાબેડ ધંધો છે તે સર્વેને જલદી કામ વિહાર ઉત્પન્ન થાય છે. જે લોકો જપ, તપ, રત, ઉપવાસ કરે છે, હલકા ખોરાક ઉપર રહે છે, વૈરાગ્યની વાનો વિચારે છે તેમને કામ પજવી શકતો નથી. એટલાજ માટે વિધવાઓને તત અને કાચ કલેશ કરવાનું કહેવું છે. કાઠીઆવાડના કાઠી અને યુવરાત્રીના કોળી જેઓ દહાડે સખત મજુરી કરનારા હોય છે તેમને કામ વિહાર જલદી ઉત્પન્ન થતો નથી.

The sedentary life of many men renders them a prey to the gratification of their lower nature. To all such men exercise becomes a religious duty, and should be practised most persistently until their physical natures are well tired, and the sexual nature will not then dominate the finer and nobler instincts of their being.

જે લોકોનો બેડાબેડ ધંધો છે તેમને કામ વિહાર જલદી ઉત્પન્ન થાય છે, માટે કસરત કરવી તે તેમની ધાર્મિક શરજ થવી જોઈએ. ફિઝીરના દરેક ભાગને સારી પેઢે યાક લાગે ત્યાંસુધી શરીર દસવું જોઈએ. આથી વિચવાસના સારા અને પવિત્ર વિચારો પર રનાર થઈ દાખી રાકશે નહિ,



એકાંત ખનતા સુધી એવું નહિ. એકાંતમાં વિષય ઇચ્છા નશ્વત થવા સંભવ છે. એ સિવાય ખીલ કેટલાક નિયમો જેવા કે ખરાબ લોકની સોખત, નાટક જેવાં, સ્ત્રીનાં અંગ નિહાળવાં વગેરેનો ત્યાગ કરવો. એ દરેક જાણ્ય સમજે છે. ઓઝો લાજ દાંડે છે, ચોટદો હોળતી વખતે પુરપના આવવાથી માથું ઢાંકી દે છે પશ્ચિરેતો હેતુ પુરપને આ અધમ ઇચ્છામાંથી બચાવવાનો હોય છે. ત્યારે કેટલાક પુરપો સ્ત્રીનાં અંગ નિહાળવામાં આનંદ માને છે. તેમની આંખ ઠરી નય છે તેમા પોતાનેજ નુકસાન છે.

નાની ઉમરમાં સીમંત આવે છે ત્યારથી વર્ષ દોઢ વર્ષ સુવાવડો ચાલુ થાય છે. એ સુવાવડ વચ્ચે ઝોઝામા ઝોઝા ચાર વર્ષનો અંતર જ્યો જોઈએ એટલાજ માટે પહેલી સુવાવડ પછી આજુ મોડું વળાવવાનો કેટલાકમાં રિવાજ છે. પણ આનો અર્થ બધાએ જાણવાની જરૂર છે. કેટલાં ઓઝરાંડું આપણે સારી રીતે પોષણ કરી શકીયું એવો સવાલ હિંદુસ્થાનમા ધણા યોગાનેજ થતો હશે? આતું કારણ એજ છે. વિષય વાસના તૃપ્ત કરવા ખાતરજ શ્રી સમાગમ કરવામા આવે છે પણ ખાસ સંતતિ ઉત્પન્ન કરવાના હેતુથી નહિ. યોગ કે ગાય પાળવાની શક્તિ ન હોય તો આપણે તે રાખતા નથી પણ ઓઝરા ઉછેરવાની શક્તિ છે કે નહિ તેનો વિચાર જો ન કરીએ તો ઘેરનાં કરવાં પણ ઓઝરાની દીનત આપણે ઝોઝી આંકીએ છીએ એજ કહીએ તો ખોડું કહેવાય નહિ. ઓઝરાને માટે પીવા દુધ, જોડવા ગરમ વસ્ત્ર કે ખીજ જરૂરીઆતની વસ્તુઓ કે સારી કેળવણી ન આપી શકીએ તો આપણી શક્તિ નથી તેમ સમજવું જોઈએ. ઓઝરાના શરીરનો પાચેજ આપણે મજબુત કરવામાં કેટલા બધા બેરશર છીએ? ઓઝરાને ધોતીકે કે છુટ જોઈએ તો ચાર દુધને શરી બાર મહીના ચાલે તેવો લાવી આપીએ છીએ પણ તેનું શરીર કમતાકાતવાળું તેને આપતા આપણને કેમ વિચાર નથી આવતો!! કાચી ઉમરમા થયેલાં ઓઝરાની દશા આંત્રી દેલ છે.

કાચી ફરી તોડે તો તેનો રખવાળ તેને ખાસા હસો થશે પણ પોતે જે ઝુન્હો કરે છે તેને માટે શિક્ષા આપી છંદગી તેને મળે છે, પોતાનાં ઓઝરાને મળે છે અને દેશને મળે છે તેવો વિચાર યોગાજ કરે છે.

કામવાસનાની તૃપ્તિ કરવા જતા જો પ્રજા ઉત્પન્ન થાય છે તે તેનીજ વિષયવાસનાવાળી અને તામસી પ્રકૃતિવાળી થાય છે. પાકી ઉમર થવા પછી સાત્વિક વૃત્તિથી જો પ્રજા ઉત્પન્ન કરવામા આવે છે તે સાત્વિક વૃત્તિવાળી થાય છે, અને શરીર મજબુત હોય છે.

કેટલીક શાંતિઓમા કન્યા રજસ્વળા થાય ત્યાર પછીજ પતિ પામે મોઝલવામા આવે છે, પણ કન્યા રજસ્વળા થાય એટલે પાકી ઉમર થઈ એમ સમજવું નહિ પણ તેનામાં ઓપણના ચિન્હ સંપૂર્ણ દેખાવાં જોઈએ. નાતું જોડું પવિત્ર છંદગી કેટલાક વર્ષ સુધી ગાળે એવો બંદોબસ્ત કરવો એ માનાપનો ધર્મ છે, જૈરાને એજ એવો દુષ્ટ વહેમ છે કે છોડાને રૂતુ આવ્યા પછી પરણાવે તો કન્યાદાનનું રજા ન મળે. રૂતુ એ કુદરતી ધર્મ છે. છોડરાને ઉમર થયે સુધ કુટ્ટે છે અને છોડરીને રૂતુ આવે છે. જૈરા થયું આ સારી પેઠે સમજે છે પણ શક્ત રૂઢીને તામે થઈ છોડીનું કુખ નજરે જોવાનો વખત નજીકી પુત્રીને લાવે છે. એ કેટલી બધી ચરમની વાત છે!! આવાં જૈરા કન્યાદાનનું રજા લેવા જતા મનુષ્ય હિંસાનું પાપ માથે બેઠો લેકે તે સમજતા નથી માટે આવો વહેમ ન રાખતાં કન્યાને મોટી ઉમરેજ પરણાવરી જોઈએ અને મોટી ઉમરેજ સાસરે વળાવરી જોઈએ. (અપૂર્ણ)

જૈન સિદ્ધાંત સંગ્રહ

(૧૦૧ ગ્રન્થોંકા અપૂર્વ સંગ્રહ)

પૃ. ૪૨૨ મૂલ્ય કાચી ચિત્ર ૨) પક્ષી ૨૧)

મેનેજર, દિ. જૈન પુસ્તકાલય-સુરત ।



ગુજરાતના દિગંબર જૈનોની સાહિત્ય સેવા અને સમાજસેવા ।

વહાલા ધર્મબંધુઓ—

અનાદિ કાળથી ચાલતો આવેલો જૈન સમાજ ભારતવર્ષમાં દરેક સ્થળે ઓછાવત્તા પ્રમાણમાં નિવાસ કરે છે.

જે વખતે મહાવીર સ્વામી વિદ્યાર કરતા હતા એટલેકે આજથી ૨૪૪૫ વર્ષ પહેલાં જૈન સમાજ ભારતવર્ષમાં અન્યોઅન્ય ધાર્મિક અને વ્યવહારિક ક્રિયાઓમાં સંગઠન હશે એમ કહી શકાય. કેમકે ગાત્રમ ગણુધરની ભાષા સર્વે શ્રોતાઓ સારી રીતે સમજતા હતા.

આત્યારે આપણો સમાજ જો કે દરેક સ્થળે પૂર્વના પ્રમાણમાજ નિવાસ કરે છે, પણ ફેર માત્ર એટલોજ છે કે—આત્યારે તેઓનો સંબંધ એકમેકથી ઊભાભિત થઈ ગયેલો છે તે ઊભાભિતતા એટલે સુધી વધી પડી કે—ગુદા ગુદા દેશના સમાજો ગુદા પડવા ઉપરાંત ગુદી ગુદી જાતિયો ગુદી પડી. અને આત્યારે તે ગુદાઈ વધતી વધતી એકજ ગાતિમા બને ત્રણ ત્રણ તડ પડવા સુધી આવી ગઈ છે.

મહાવીર સ્વામીના નિર્વાણ ગયા પછી ૧૯૦ વર્ષને આશરે શ્રીભદ્રબાહુ સ્વામીના સમયમાં જૈન સમાજના બે ભેદ પડ્યા જે દિગંબર અને ચેતાબર બે નામથી ઓળખાવા લાગ્યા. ભદ્રબાહુના પદપર વિશ્વાધ્યાયાર્થ ગયા. તેમણે મુગ મતને કાયમ રાખી ઉપદેશ કરવા માંડ્યો. ૧૮૩ વર્ષમા ભદ્રબાહુના પદપર ૧૧ આચાર્ય ૧૧ અંગ તથા દશ પૂર્વના ધારક થઈ ગયા ત્યારપછી ૧૨૩ વર્ષ માં તે ગાદી ઉપર પાંચ આચાર્ય અગીયાર અંગ પાડી ચમૂ ગયા ત્યારનાદ પૂર્વ પાડી જાનનો લોપ થયો તેમજ અંગ જાન પણ કમી થવા લાગ્યું. ત્યારનાદ ૨૧૫ વર્ષમા ૯ આચાર્ય થઈ ગયા જે કમે કમે ૧ અંગના પાડી હતા તે જાન ધરે ધરે મંદ પડવા લાગ્યું. અને શેઠાંતી શ્રદ્ધા પછુ ધર્મ તરફથી ઉતરવા લાગી.

અન્ય દેશોનાં સમાજથી ધાર્મિક અને વ્યવહારિક બાબતોમાં ગુજરાતનો દિગંબર સમાજ બેકાબેકો હતો. તેણે ખરું ઉદારશ્રુ ગિરનાર પર્વતપર શંકરસમાધાનાર્થે ભરાયલા સંધ પરથી પુરું પડે છે.

ચેતાબર અને દિગંબરની ઉત્પત્તિ પ્રથમ પછી નક્કી કરવા નિમિત્તે ગિરનાર પર્વતપર ગુદાં ગુદાં દેશોનાથી જૈન સમાજ એકત્રિત થયો. ભેગા થયેલા સંધુ સંધપતિત્વ કુંદકુંદાચાર્યના તીર્થ રૂપ પિતા, કુંદ શેડને આપવામાં આવ્યું કે—જે માળવામાં જુદી નજીક આવેલા બારાપુર ગામના રહેવાસી હતા.

ભદ્રબાહુ સ્વામીના સમયમા પડેલા દુકાળથી થયેલા ચારિત્ર હીન (ચેતાબર) ની વસ્તી તે સમયે ગુજરાતમાં વિશેષ હતી. (આજે પણ દિગંબરોથી ચેતાબરો વિશેષજ છે) કેમકે—દુકાળમા ચારિત્ર હીન થયેલાં આચાર્યોને ગુજરાતના આવકાએ આશ્રય આપી પોતે તેમના મતમાં મળી તેમની વસ્તી વધારી દીધી હતી. વળી ગુજરાતમાં તે વખતે એકે મૂળ આચાર્યનું આગમન થઈ નહિ જેથી ગુજરાતનો આખો જૈન સમાજ ચેતાબરોથી થઈ ગયો હતો. (હાલના દિગંબરો પછીથી માળવા, મેવાડ, મારવાડ તરફથી આવેલા જણાય છે.)

પછા દિવસના વાદને અને એકે પક્ષની છત ચઈ નહિ ત્યારે એક દિવસે કુંદકુંદાચાર્ય સર્વ સંધ સહિત શ્રી નેમિનાથ તિર્થંકરના નિર્વાણ સ્થાનની વંદના કરી એણે બોલ્યા કે—જો દિગંબર અને ચેતાબરોની ઉત્પત્તિનો નિર્ણય થવાનો હોય તો અહીં કોઈક ચમત્કાર થાઓ, તરતજ એક ધડી પર્વત દિગંબર મત મૂળ ધર્મને અનુસરતો પ્રથમ બનો છે, એમ આકાશવાણી થઈ. જે સામગી ચેતાબરો સંધ માનગ્રંથ થઈ લાગી ગયો અને ગુજરાતમાં જઈ ખરી દહીકત ગુપ્તરાખી પોતાની છત જાહેર કરી.

ચેતાબરો પક્ષનું ખંડન થયું તેની વાદગીની નિમિત્તે દિગંબર બેતોએ ત્યાં મહાભિષેક કર્યો. મંધોદકની સુષમાગાની ઉગ્રામણીના વર્ણન



પરથી ત્યાં ભેગા યજ્ઞેલા આવશેનું વર્ણન, જ્યાંથી
આવે છે, જેથી તે અત્રે ઉતારવામાં આવે છે.

(બ્રહ્મચારિ જીવનદાસના પ્રાકૃત પાઠ ઉપરથી
ગુજરાતી ભાષાતર)

ગધોદકની માળની ઉછાસામાણી.

રાગ ચોપાદ.

જાણીપ દક્ષિણ દિશી સાર,
ભરત ક્ષેત્ર ભવિષ્ય મન ધાર.

સોરઠ દેશ તહાં સુવિચાર,
સિદ્ધ ક્ષેત્ર શોભે ગીરનાર.

ગોતર ક્ષેત્ર સાતસો સુનિરાય,
સુક્રિ ગયે શ્રી નેમકુમાર.

સંઘ મળ્યો આવકનો તદા,
સિદ્ધ ગયા નેમીધર જાહા.

અથા અરસ પરસ કરતાંય,
દિવ્ય ધ્વનિ પ્રગટી છે ત્યાંય.

દિગંધર, મુળ ધર્મજી ખરો,
તસ અગે ચેતોતર યયો.

એવો ધ્વનિમાં ઉપજ્યો અર્થ,
આવક જન પામ્યા ત્યાં દર્પ.

મહાપૂજન અભિષેક સાર,
આરંભ્ય મન ધરી સુવિચાર.

ગધોદક ઉપરની માળ,
ગુપ્તી સુગંધિત પુષ્પ વિશાળ.

મણિક મોતી રતન પ્રવાહ,
હેમ જડિત શોભે તે માળ.

ગોહાસુર જીન વિશાળ,
સદસ્ય એકે માળે જિનમાળ.

ઉદાર શાંતિ છે ચપેરવાલ,
સદસ્ય પામે માળે જિનમાળ.

હરજે શ્રાવક ત્યાં જૈનવાલ,
સદસ્ય આડે માળી જિનમાળ.

સિંહલપુર વસે છે શ્રીવાલ,
સદસ્ય દશે માળે જયમાળ.

વિનયગંત છે દુમડ કોમ,
સોળ સદસ્યની પાડે જમ.

કાંધર કેમ મધુરીય વાણ,
વીસ સદસ્યે માળે સુજાણ.

દેશ માહુરનાં મેહતવાલ,
સદસ્ય બાવીસે માળે શુભમાળ.

મંગલપુર વસે પુષ્કરવાલ,
સદસ્ય ચોવીસે માળે જિનમાળ.

સંકેતવાલ વણિક વિશાળ,
બીસ સદસ્યે માળે શુભમાળ.

અલ્પદેશ પાટણથી આવે અમ્બાલ,
સદસ્ય બારને માળે જિનમાળ.

બાગેલી શાંતિ ભોલવાલ વખાણ,
સદસ્ય ચોરાસી માળે શુભમાળ.

દહક શાંતિ ઉત્સાહજ કરી,
લક્ષ એક દે હેને ધરી.

વોરવાલ આખ્યા સુવિચાર,
માળે લાખ પામે મન ધાર.

છે શુભવંતી ચિત્રોડા કેમ,
સાત લક્ષે ભોમે ધરી જોમ.

જયજયકાર કરે પત્નીવાલ,
સોલ લક્ષે દર્ધ માળે માળ.

વિદુ શાંતિ આવે અતિ ગંગ,
લક્ષ અંકારે ભોમે મનરંગ.

નરસંપત વસે મડીપાર,
લક્ષ ચોવીસે માળે માળ.

જેવેનું શાંતિ છે જયવંત,
લાખ પચીસ ધન આવે નિસંક.

હરમેવે વસે હરવાલ,
લાખ ત્રીસ આવે સુવિચાર.

દિશાવાલ આવેસુ વિશાલ,
બીસ લાખે માળે માળ.

ગુર્જર શાંતિ ગુર્જર દેશ,
માળે માળે દેશ લાખ ચાલીસ.

માળવ દેશની ચોદિલાલ,
બાવનલાખે માળે માળ.

આવે ઉત્તમ ત્યાં રાયકવાલ,
છપ્પન લાખે માળે માળ.

ગુજરાતના દિગંબર જૈનોની સાહિત્ય સેવા અને સમાજસેવા ।

વહાલા ધર્મબંધુઓ:—

અનાદિ કાળથી ચાલતા આવેલા જૈન સમાજ ભારતવર્ષના દરેક સ્થળે ઓછાવતા પ્રમાણમાં નિવાસ કરે છે.

જે વખતે મહાવીર સ્વામી વિહાર કરતા હતા એટલેકે આજથી ૨૪૮૬ વર્ષ પહેલાં જૈન સમાજ ભારતવર્ષના અન્યોઅન્ય ધાર્મિક અને વ્યવહારિક ક્રિયાઓમાં સંગઠન હશે એમ કહી શકાય. કેમકે જાતન ગણધરની ભાષા સર્વે જ્ઞાતાઓ સારી રીતે સમજતા હતા.

આત્યારે આપણો સમાજ જો કે દરેક સ્થળે પૂર્વના પ્રમાણમાં નિવાસ કરે છે, પણ દેર માત્ર એટલોજ છે કે-આત્યારે તેઓના સંબંધ એકમેકથી છિન્નભિન્ન થઈ ગયેલા છે તે છિન્નભિન્નતા એટલે સુધી વધી પડી કે-જુદા જુદા દેશના સમાજો જુદા પડવા ઉપરાંત જુદી જુદી ભૂતિયો જુદી પડી. અને આત્યારે તે જુદાઈ વધતી વધતી એકજ માતિમાં બને ત્રણ ત્રણ તડ પડવા સુધી આવી ગઈ છે.

મહાવીર સ્વામીના નિર્વાણ ગયા પછી ૧૬૦ વર્ષને આશરે શ્રીમદ્રાહુ સ્વામીના સમયમાં જૈન સમાજના બે ભેદ પડ્યા જે દિગંબર અને શ્વેતાંબર બે નામથી ઓળખાવા લાગ્યા. ભદ્રબાહુના પટ્ટપર વિશાખાચાર્ય થયા. તેમણે મુળ મતને કાયમ રાખી ઉપદેશ કરવા માંડ્યો. ૧૮૩ વર્ષના ભદ્રબાહુના પટ્ટપર ૧૧ આચાર્ય ૧૧ અંગ તથા દશ પૂર્વના ધારક યથા ગયા ત્યારપછી ૧૨૩ વર્ષ માં તે ગાદી ઉપર પાંચ આચાર્ય અગ્રીધાર અંગ પાડી ચમુ ગયા ત્યારબાદ પૂર્વ પાડી જ્ઞાનના લોપ થયો તેમજ અંગ જ્ઞાન પણ કમી થવા લાગ્યું.

ત્યારબાદ ૨૧૫ વર્ષમાં ૯ આચાર્ય યથા ગયા જે ક્રમે ક્રમે ૧ અંગના પાડી હતા તે જ્ઞાન ધારે ધારે મંદ પડવા લાગ્યું. અને લોકોની શ્રદ્ધા પણ ધર્મ તરફથી ઉતરવા લાગી.

અન્ય દેશોનાં સમાજથી ધાર્મિક અને વ્યવહારિક બાબતોમાં ગુજરાતનો દિંબ જૈન સમાજ બેઠાબેઠો હતો તેનું ખરું ઉદાહરણ ગિરનાર પર્વતપર શંકાસંપ્રધાનાર્થે ભરાયલા સંધ પરથી પડે છે.

શ્વેતાંબર અને દિગંબરની ઉત્પત્તિ પ્રથમ પછી નક્કી કરવા નિમિત્તે ગિરનાર પર્વતપર જુદાં જુદાં દેશોમાંથી જૈન સમાજ એકત્રિત થયો. ભેગા થયેલા સંધનું સંધપતિત્વ કુંદકુંદાચાર્યના તીર્થે રૂપ પિતા, કુંદ શેઠને આપવામા આવ્યું કે-જે માળવામા જુદી નજીક આવેલા બારાપુર ગામના રહેવાસી હતા.

ભદ્રબાહુ સ્વામીના સમયમાં પડેલા દુકાળથી થયેલા ચારિત્ર હીન (શ્વેતાંબર) ની વસ્તી તે સમયે ગુજરાતમાં વિશેષ હતી. (આજે પણ દિગંબરોથી શ્વેતાંબરો વિશેષજ છે) ક્રમદે-દુકાળમા ચારિત્ર હીન થયેલા આચાર્યોને ગુજરાતના શ્રાવકોએ આશ્રય આપી પોતે તેમના મતમાં મળી તેમની વસ્તી વધારી દીધી હતી. વળી ગુજરાતમાં તે વખતે એકે મૂળ આચાર્યનું આગમન થતું નહિ જેથી ગુજરાતનો આજો જૈન સમાજ શ્વેતાંબરી થઈ ગયો હતો. (હાલના દિગંબરો પછીથી માળવા, મેવાડ, મારવાડ તરફથી આવેલા જણાય છે.)

પણા દિવસના વાદને અંતે એકે પક્ષની જીત થઈ નહિ ત્યારે એક દિવસે કુંદકુંદાચાર્ય સર્વ સંધ સંહિત શ્રી નેમિનાથ તિથેકરના નિર્વાણ સ્થાનની વંદનાં કરી એવું બોલ્યા કે-જો દિગંબર અને શ્વેતાંબરોની ઉત્પત્તિનો નિષ્પત્તિ થવાનો હોય તો અહીં કોઈક ચત્રાકાર થાઓ, તરતજ એક ધડી પર્યંત દિગંબર મત મૂળ ધર્મને અનુસરતો પ્રચરનો છે, એમ આકાશવાણી થઈ. જે સામગ્રી શ્વેતાંબરી સંધ માનવજીવન થઈ લાગી ગયો અને ગુજરાતમા જઈ ખરી હકીકત ગુપ્તરાખી પોતાની જીત ભરેર કરી.

શ્વેતાંબરી પક્ષનું ખંડન થયું તેની વાદગીરી નિમિત્તે દિગંબર જેનોએ ત્યાં મદામિતેક કર્યો. ગંધોદકની પુષ્પમાળાની ઉત્સામણીના વર્ણન



પરથી ત્યાં ભેગા યજ્ઞેના શ્રાવકોનું વર્ણન, જણાવ
આવે છે, જેથી તે અને ઉતારવામા આવે છે
(અલયારિ છવનદાસના પ્રાકૃત પાઠ ઉપરથી
ગુજરાતી ભાષાતર)

ગંધોદકની માખની ઉછાભણી.

રાગ ચોપાઇ.

જ શુદ્ધોપ દક્ષિણ દિશી સાર,
ભગત ક્ષેત્ર ભવિષ્ય મન ધાર.
સોરઠ દેશ તહા સુવિચાર,
સિદ્ધ ક્ષેત્ર શોભે ગીરનાર.
ખોતેર કરોડ સાતસો મુનિરાય,
મુક્તિ ગયે શ્રી નેમિકુમાર.
સદ્ધ મળ્યો શ્રાવકનો તહા,
સિદ્ધ ગયા નેમીશ્વર જહા.
ચર્ચા અરસ પરસ કરતાંય,
દિવ્ય ધ્વનિ પ્રગટી છે ત્યાંય.
દિગંધર મૂળ ધર્મજ ખરો,
ત્વં અગે ચેતાવર થયો.
એવો ધ્વનિમા ઉપલ્લો અર્થ,
આનંદ જન પામ્યા ત્યા હર્ષ.
મહાપૂજન અભિષેક સાંગ,
આરંભ્ય મન ધરી સુવિચાર
ગંધોદક ઉત્તરી માળ,
શુદ્ધી શુભધિત પુષ્પ વિશાળ
માલિક મોતી રતન પ્રવાળ,
હેમ જડિત શોભે તે માળ
ગોટાશૂર જૈન વિશાળ,
સદ્ધ અદ્ધે માગે જિનમાળ.
ઉદાર શાંતિ છે વધેરવાલ,
સદ્ધ પાએ માગે જિનમાળ.
હરખે શ્રાવક ત્યા જૈલવાલ,
સદ્ધ આડે માગી જિનમાળ.
સિંહવપુર વમે છે શ્રીમાલ,
સદ્ધ દશે માગે જયમાળ.
વિનયવંત છે હુમડ કોમ,
સોળ સદ્ધસની પાડે ખૂમ.

કાંપર કોમ મધુરીય વાણ,
વીસ સદ્ધે માગે શુભણ.
દેશ માહુરના મેદતવાલ,
સદ્ધ આવીસે માગે શુભમાળ.
મંગલપુર વમે પુષ્કરવાલ,
સદ્ધ ચોવીસે માગે જિનમાળ.
સહેલમાલ વણિક વિશાળ,
ખત્રીસ સદ્ધે માગે શુભમાળ.
અણુદીલ પાટણુદી આવે અયવાલ,
સદ્ધ ખારો માગે જિનમાળ.
ભાગેલી શાંતિ બોલવાલ વખાણ,
સદ્ધ ચોરાસી માગે શુભમાળ.
સદ્ધ શાંતિ ઉત્સાહજ કરી,
લક્ષ એક દે હેને ધરી.
ગોરવાલ આળ્યા સુવિચાર,
માગે લાખ પાએ મન ધાર.
છે શુભવતી ચિત્રોડા કોમ,
સાન લક્ષ ખોસે ધરી જોમ.
જગજગદાર કરે પાલોવાલ,
મોલ લક્ષ દઈ માગે માળ
દિંડુ શાંતિ આવે અતિ ચગ,
લક્ષ અંદાર ખોમે મનરંગ
નરઘરવા વમે મહીપાર,
લક્ષ ચોવીસે માગે માળ
લગેચુ શાંતિ છે જયવંત,
લાખ પચીસ ધન આપે નિસંક
હરખોએ વમે હરલાલ,
લાખ ત્રીસ આપે સુવિચાર
દિસાવાલ આવેશુ નિશાવ,
ખત્રીસ લાખે માગે માળ
ગુર્જર શાંતિ ગુર્જર દેશ,
માગે માળ દઈ લાખ આવીસ.
માગવ દેદ્રમી સોહિલવાલ,
બાવનવાખે માગે માળ,
આવે ઉત્તમ ત્યા રાયકવાલ,
છપ્પન લાખે માગે માળ

ગંગેહાં ગાતિ આવે સહુ સાથ,
 માંગે માળ નવદે ધન હાથ.
 વાપડા ગાતિ વસે ગુજરાત,
 આપે ધન માણેક ભલી બાત.
 વમેરા ગાતિ જે સે કર્મોડ,
 માલ લઇ આપીશું કોડ.
 ગાંગદા ગાતિ આવે સુનળુ,
 માંગે માળ સંધને દઈ માન
 વન્ધોરા ગાતિ આવે સુવિચાર,
 માળ લઈ ધન આપે સાર.
 નાગર-વાઠડ-રોહીણીવાલં,
 લક્ષ અડાવને માંગે માળ.
 રેવાતટના નારાયણુ શેઠ,
 માળ લઇ ધન આપે કોડ.
 મેવાડ વસે મેદરા કોમ,
 લાખ છપ્પન આપે ધરી જોમ
 સોરાઠ દેશે ચોટવાલ,
 ચોરાસી લાખે માંગે માળ.
 લાઠ કોમ વળી ગાતિ કળોલ,
 માળ લઇ આપે બહુ મુલ્ય.
 રોહાદતા-મામુવ ગોહિલવાલ,
 ધન પુષ્કળ દઈ માંગે માળ.
 સુણીને જાવુવ-સોહલવાલ,
 પંચ કોડ દઈ માંગે માળ.
 સમેસરા ટેકવંત વિચાર,
 કોડી દશ દઈ માંગે માળ.
 જાલોરા વસે છે ગોડીલવાડ,
 અદાર કરોડે માંગે માળ.
 જેસલ ને રણસોરા અભંગ,
 માંગે માળ કરી બહુ રંગ.
 દીલીપ ગામ વસે મહલવાલ,
 ચોવીસ કરોડે માંગે માળ.
 પાટણુ વસે ચોવીસો સંધ,
 બીસ કરોડ આવે ધરી રંગ.
 બીલ્લ-ગયમેરા ગુણવાન,
 માળ લઈ દે કોડી બાવન.
 રાજોરા રહે છે ગોડીલવાડ,
 કરોડ ચોવીસો માંગે માળ.

હેત ધરી આવે પરવાર,
 કનક રતન દઈ માંગે માળ.
 ચેમવાલ આવે ગુણમાળ,
 માણેક મોતીથી માંગે માળ.
 વિવેકમાં પૂરા જાતવાલ,
 વિનય સહિત માંગે જિન માળ.
 ક્ષત્રિય વિપ્ર-વણિક ગુણુવંત,
 માળ માંગે જિનવર જયવંત.
 આવક સંધ ઉલ્લાસી થયો,
 પૂજન કરી નિજ મંદિર ગયો.
 માળ ઘડી ફલ પામે જીવ,
 સ્વર્ગ-કુખ પામે તામેવ.

ઉપર પ્રમાણે ૫૦ જાતના આવકો એકત્ર
 થયા હતા. ધર્મ પુધી થવા જેવું છે કે તે વખતે
 આપણી આર્થિક સ્થિતિ અત્યારથી કંઈક ઓછી
 હતી.

સમય, સમયનો રંગ બદલે જાય છે તે
 પ્રમાણે આપણા સમાજમાં ફેરફાર થવા લાગ્યો.
 ઉપદેશની અભાવતાએ કેટલીક કોમોએ એતાંગર
 પંથનો સ્વીકાર કર્યો. વળી કેટલીક કોમોએ એથી
 પણ આગળ વધી જૈન ધર્મનો પણ ત્યાગ કર્યો.

આપણું જ્ઞાન સાહિત્ય મુજબ બાપામાંજી રહ્યું.
 જેથી તેનો ચાલુ બાપામાં ઉપદેશ થઈ શકતો
 નહિ. બદારકો આવકોના ધન લેવા ઉપરાંત કંઈ
 કરતા નહિ જેથી આપણા સમાજની સ્થિતિ દિન
 પ્રતિદિન ઉતરતી ચાલી તે ત્યાં મુધી આવી ગઈ
 કે- ગુજરાતમાં દિગંબર જૈન ધર્મ ઓછ નહિ
 એમ કેટલીક હુદ્દા પુદ્ધિના માનવા લાગ્યા તેમજ
 નહિ પણ કેટલાક સમર્થ લેખકો કે જે અન્ય
 ધર્મી હતા, તે પણ દિગંબર જૈન પંથને બીલકુલ
 વિસરી જવા બાપા ઇતિહાસકારોએ પંથ જૈન
 સાહિત્યની તપાસ કર્યા સિવાયન ઇતિહાસ બાધી
 દીધા. અને આખરે ઇતિહાસમાંથી દિગંબર માત્ર
 અલોપ થઈ ગયો હોય એવી સ્થિતિ આવી પડી
 તે સમયે જો કે દિગંબરોની યાદગીરી હોય તો
 તે આપણા પ્રાચીન અને બળ્ય મંદિરોના દર્શન



दिगंबर जैन



THE DIGAMBAR JAIN.

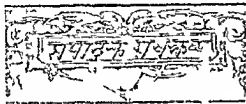
नाना कलाभिर्विविधश्च तस्यै सत्यापदेशैस्तुगवेषणाम् ।

सद्योपयत्नमिदं प्रवर्त्तताम्, दिगम्बर जैन समाज मानम् ॥

वर्ष १४ वॉ

वीर सबत् २४८७ फल्गुण, चैत्र विक्रम सं० १९७७

अंक ५-६ डा



कई महिनोसे कानपुरमें महासभा, जैन सा-
हित्य प्रदर्शन, महिला
कानपुरकी परिषद्, शास्त्रि परिषद्
महासभा । होनेके आन्दोलनकी धूप
मची हुई थी वह सब

गत मासमें अर्धवै उत्साहके साथ होगया । कान
पुरके भइयोने अनीन उत्साह और परिश्रमसे
स्वागतका उत्तम पत्रा विधा था । कोई चार
पान हजार जनसमुह एकत्रित हुआ था । प्रद
र्शनका छाम तो कानपुरकी सारी जनताने छिपा
था क्योंकि प्रदर्शन जैनोका प्राचीन साहित्य
चलानेवाला अर्धवै था । प्रदर्शनमें चडे २ हस्त
लिखित चित्र, सुनहरी अक्षरोंके तथा सचित्र रंग-
चेरगी अनेक शान्ति चित्रकमान विधे गये थे
जिसमें वरमल्ल (गुनरत)का सुनहरी रचित्र
यशोधर चरित्र (पोती नीलम मडे हुए गले
सहित) तथा आराके जैन सिद्धांत मयनका
सचित्र रामायण सबको आकर्षित करते थे ।

प्रदर्शनके लिये ५० कनैयागलजी रामचंद्रका
परिश्रम सफुट हुआ था । मंगलमामे अनेक
श्रीमान्, विद्वान्, गणनी, व्यवहारियों आदिका
ऐसा समूह एकत्रित हुआ था कि शब्द ही
ऐसी उपस्थिति कमी हुई हो । परंतु महासभा-
म कार्य-सकलता जैसी आशा थी वैसी नहीं
हुई । हम तो कहे हैं कि यदि समापत्तिनीके
सुगौर साहू जुगमदरदासनीने वैयतासे काम न
लिया होता तो महासभाका अधिवेशन निर्विघ्न
पूर्ण होनेकी भी आशा न थी । प्रथम बैठकके
अन्तमें सन्नेष्ट कमेटीका चुनाव हुआ था उसमें
करीब १०० नाम सुगम गये नाद बहुत लोग
उठने लगे थे और गडबड होने लगी थी तब
किपीने उसमें दो बहिनें—श्रीमती मंगलबाई और
५० चदानाईका नाम लिखा दिया (नो हमारे
सुन्नेमें भी नहीं आया था, यद्यपि हम प्लेट-
फार्म पर ही थे) जो महासभाके नियम विरुद्ध
था इससे रात्रिसे सन्नेष्ट कमेटीमें कार्य प्रारंभ
होते ही इसी बातकी निगरानी चली थी और
मायला यहां तक गडा कि रात्रिसे कमेटीमें
दो वक्ता हो गये परन्तु अन्तमें सन्नेष्ट कमेटी नई
चुननेका निश्चय हुआ था तब दुसरे दिन दुसरा
बैठान नई सन्नेष्ट कमेटी चुननेका बाद ही कार्यरत

हुआ था। समय अतीव कम होनेके कारण आये हुए सभी प्रस्ताव कमेटीमें उपस्थित भी नहीं हो सके थे और बहुत कप और एक दो को छोड़कर मामूली ही प्रस्ताव पास हुए थे। (प्रस्तावोंकी सूची आगे दर्ज है) महत्त्वका एक तथा १०वां प्रस्ताव हुआ है जो अमली कार्रवाईका हुआ है इससे अब महासभाका कोई भी समासद बाल लगन, कन्या विक्रय, पुद्गलविवाह, वैदपानृत्य और आतशबाजी नहीं कर सकेगा, जो करेगा वह महासभाकी समासदीसे पृथक् किया जायगा। सिद्धांत ग्रन्थकी नकल लेनेके लिये जो कमेटी नियत हुई है वह यदि ठीक २ कार्य करेगी तो अवश्य सफरता होगी। बजट तो २४८००) का किया गया है परन्तु आम इन्ती इतनी नहीं है। अंतिम बैठकमें चेदा भी विशेष नहीं हुआ। सिर्फ समापतिजीने १००१) दिये और ५००)-७००) और आये होंगे इसका कारण यह हुआ कि आगामी अधिवेशनके लिये आगरा और लखनऊके कामेंशन पर बहुत बहस होगई थी और अंतमें लखनऊका स्वीकार हुआ था तौ भी समय अधिक हो न नके कारण तथा सारी सभामें एकदिश न होनेके कारण प्लेटफोर्मपर बैठे हुए रायबहादुर रायसाहबोंने भी एक पईका भी चेदा नहीं लिखा था। सांगांश कि उत्तम मौका होने पर भी महासभा इसबार कुछ विशेष कार्य न सकी। महाविद्यालय, गमट, परीक्षालय आदिकें सुधारका भी कुछ प्रबंध नहीं हुआ। सिर्फ महाविद्यालयके लिये फ़ा प्रबंध कमेटी बनी है। देखे, वह भी कुछ बरती है या नहीं ?

महिला परिषद्में तो श्रीमती मगनबाई, श्री पं० कंछुबाई, पं० रामदेवी बाई (सभापति) के अगुए परिश्रमसे बहुत सफरता हुई थी और शास्त्रि परिषद्का कार्य भी उत्तम रीतिसे हुआ था। इन परिषद्में जो पांच प्रस्ताव पास किये हैं वे महत्त्वके हैं। यदि यह परिषद् अपने प्रस्तावानुसार अमली कार्रवाई भी करती रहेगी तो दि० जैन समानका बहुत कुछ कल्याण का सभेगी। महासभाके समय महत्त्वका कार्य यह तो हो गया है कि संयुक्त प्रांतिक समाकी स्थापना हो गई और प्रथम अधिवेशन हस्तिनापुरमें वार्तिकी मेलेपर करकेका साहू सलेखचंदजीने अपनी ओरसे आमंत्रण भी दे दिया है। महासभाके सभापति साहू सलेखचंदजीका व्याख्यान और चित्र, स्थापना सभापति ला० रामस्वरूपजीका व्याख्यान, शास्त्रि परिषद्के सभापति पं० लालारामजी शास्त्रीका व्याख्यान तथा महिला परिषद्के सभापति पंडिता चंदाबाईका व्याख्यान इसी अंक्रमे क्रमशः दिया गया है तथा तीनोंमें पास हुए प्रस्ताव भी आगे दर्ज हैं। हम हाएक पाठकसे आग्रह करते हैं कि वे ये तीनों व्याख्यान और सभी प्रस्ताव खास अवकाश निकाल का अवश्य २ पढ़ें, उस पर मनन करें और इन सभारतियोंकी सूचना पर तथा प्रस्तावोंपर हटनासे विचार करके उनकी अमली कार्रवाईके लिये कटिबद्ध होंगे।

* * *

जैन समानमें कार्यकर्ताओंकी तो अतिशय
 बुद्धि है और जो है
 महा शोक !! उनमेंसे दो अगुओंका

वियोग होनाना अतीव दुःखदायक है। आज हमें ऐसे दो व्यक्तियों का वियोग हो गया है कि जिसकी पूर्ति होना असंभव है। प्रथमका नाम देते ही कट्टम कंपनी है और हरय धूमता है। यह वियोग है आरा निवासी कुमार देवेन्द्रप्रसादजी का। आप अचानक सिर्फ २० वर्षकी आयुमें (१४ वर्षकी विवाहको छोड़कर) इस सत्सारे चत्र बसे। आप अंग्रेजी भाषामें जैन साहित्यका अनुवाद करते या करते प्रकट कर तथा उमका विद्यायत् तर्कमें प्रचार करनेका भी कार्य कर गये हैं वह अपूर्व है। बहुतसा कार्य आप अपूर्ण छोड़ गये हैं। हिन्दी साहित्यमें आदर्शक ग्रन्थोंका प्रकाशन भी आरका उत्तम था। आपकी हरएक पुस्तक ऐसी मनमोहक प्रकट होतीथी कि हरएक सुशी २ से पढ़ता था। आपका पठाया हुआ कार्य बाबू अनितप्रसादजी लखनऊ तथा बाबू निर्मलकुमारजी आराको हस्तगत करना चाहिये। आपका स्मारक भी होनेकी अत्यंत आवश्यकता है। क्या ही अच्छा हो यदि एक 'देवेन्द्र ग्ण्यमाळा', आपके नामसे स्थापित हो जावे। आपके आत्माको हम शान्ति चाहते हैं।

दूसरा वियोग ब्र० गेंदनलालजीका है। आपको कौन नहीं जानता ? ! आपने अच्छी नौकरी तथा खी पुत्रादिको छोड़कर ब्रह्मचर्यावस्था ग्रहण की थी और आपमें समाज सेवाका इतना प्रेम था कि आपने अतीव परिश्रम करके जैन समाजमें एक ऐसी संस्था स्थापित कर दी है जो जैन समाजमें प्रथम और दूसरोंको अनुकरणीय हुई है। यह है-हस्तिनापुरका श्री

'ऋषभ ब्रह्मचर्याश्रम'। आप ही इसके सब कुतरे। चालकोंपर आपका प्रेम अपार था। अमी थोड़े दिन हुए ही आश्रमसे अपना संबंध हटा लिया था। आपका एक पुत्र दीपचंदजी बकीर हैं और दूसरा बड़ौदा कलामवनमें पढ़ता है। आरका परिणाम सरल और स्वभाव प्रेमाळु था। आपका वियोग भी अतीव दुःखदायक हुआ है। आरभी आत्माको हम शान्ति चाहते हैं। आश्रममें आपके वियोग पर शोक समा हुई थी तथा कुभारजीके वियोगपर भी अनेक स्थानोंपर शोक समा हो रही हैं।



संयुक्त प्रां० दि० जैन सभा-की स्थापना कानपुरमें महासभाके समय हो चुकी थी। और उसका कार्य चैत्र सुदी १३ से प्रारंभ हो गया है। समासदी फीस सिर्फ २) वार्षिक रखे हैं। संयुक्त प्रान्तके आईयोंओ अवश्य २ समासद होना चाहिये। समासदी फीस मंगानेका पना-स्वरूपचंद जैन स० महामंत्री संयुक्त प्रा० दि० जैन सभा, नई सडक-कानपुर।

महासभा-के महामंत्री ला० मगवानदा-सजीने उदरकी सभामें महामंत्री पदका स्वीकार भेजा है। देखे क्या होता है।

सेठीजी गिरफ्तार-पं० अर्जुनलाल सेठीजीको अगले प्रातमें ग्वालपान न देनेकी

आज्ञा हुई थी। बादमें आप सिक्खोंके मन्त्रि-
स्टेजके बारम्बार गत स्नानमें अनेकानेक कौपेस
ऑफिसमें गिरफ्तार किये गये हैं। और आपपर
न० १२४ और १५३ की कलम (साम्प्रदायिक और
जातिद्वेष) लगाई गई है। आपको हाथकड़ी
हालकर अनेकानेक जेल सिक्खों ले जानेवाले थे
तब अनेकानेक स्टेजपर हमारों लोग रेलके
सड़कपर सो गये और किन्तु कने तो
कोलसेके येवका समूह ऐजिनके पास जना
का किया था। इसकी असर डूबकर भी
हुई। उन्होंने गाड़ी चल ना रोक दिया। बादमें
हाथकड़ा निकली गई, स्टेजों पर बहार आये और
पौधा मोवादीन और सेठोंकी खास आमदसे
तब लोग दूर हो गये तब ५-६ घंटे बाद देर
घूट सकी थी। मामला बरा बरेशा। अनेकानेक
एक दिन इतना रहती थी।

पटना-में पंचरूपणक प्रतिष्ठा और मेला
पैशाख सुदी १२ से वद १ तक बड़े समारोहके
साथ होगा। कासगम और सिद्धाराऊ स्टेज
नसे जाया जाता है।

काशी-में ता. २० से २४ मई तक
भारत दया कौशिन डाऊन हालमें होगी।

आविष्कार-मुम्बईकी वार्षिक परीक्षामें
३४ में से ३३ अंकि पास हुई है। आश्रममें
१ मईसे १६ जून तक गर्माकी जुड़ी होगी।

गोहाना-में रणयात्रा वै० सुदी ६ से
११ तक होगी।

प्रतिमाएं निकली-लेकडा (मेठ) से
दो कोस बड़ाशवमें एक प्राचीन अतिशय क्षेत्र
प्राचीनके नामसे मशहूर है। यहां मरामन

अनंतकीर्तिनी पवार और आपने फरमाया कि
यहां प्रतिमा भी है। आपके कहनेसे फाल्गुन
सुदी ७ से खुदाई प्रारम्भ हुई और अनेकानेक पैशाख
वदी ८ को एक मोरके पीछे करीब ८ हाथकी
गहराई पर तीन प्रतिमाएं निकली हैं। जिनमें एक
पार्श्वनाथकी प्रमाणन कृष्णवर्णकी, दूसरी घातकी
खट्वासन और तीसरी एक खडेट प्रतिमा है।
जिनका मस्तक व एक और जेठामा टुकड़ा है।
जिसको स्कटिस्मणीकी बत्तांत है। एत
सब कुछ नहीं है। हमारों लोग दर्शन करनेको
आते हैं। अनेकानेक भी जैन धर्मपर बढ़ा
बढ़ा हो रही है। और भी प्रतिमाएं निकलनेकी
उम्मेद है। इस क्षेत्रका मुख्यधर्म
आवश्यकता है।

बद्रीप्रसाद जैन-लेकडा (मेठ)

आरा-के जैन सि० भवनमें अब
लिखवा देनेकी व्यवस्था हुई है।

लाडनू-में सद्धिप्राम जैन समाज
वै० सु० ११ से १४ तक होगा।

काम्पिलाजी-का मेला हो गया। उसमें
बुद्धवाच जैन समाज उत्सव होकर स्वदेशी
वस्तु प्रचार, कुटीति निषेध आदि
होकर काम्पिलाजी प्रवक्ता कमिटी भी
हो गई।

देहलीमें-हीराळा जैन
वार्षिकोत्सव बाबू रूपदास वकीलके सभा
हो गया। यह स्फूर्त बहुत ही उत्तम
चलाही है। धर्माचारक ५० लक्षारामकी
है। स्थायी फट (१०००) का मित्र

। और सहायता मिलनेकी भी आशा है । (अविष्टा)के प्रयत्नसे बम्बईमें ६४४ आहार-
पाद आगे यह कालेनके रूपमें हो जावे । रदान तथा ८६०) एक मुश्न सहायता, गत

उद्देशर (मैनपुरी)में-मेडा और महास मासमें मिठी थी ।
॥ का नैमित्तिक अधिवेशन वै० सुदी २ तक
ये गथा ।

महावीर जयंती-उत्सव चैत्र सुदी
१३ के दिन सुत, बम्बई, बनरगढ़, कारंजा,
फेरोजाबाद, सेदफा, सोलापुर, कुंभगिरी,
तामपुर, अजलतरा, सिवनी, होसुर, बडौदा
आदि स्थानोंपर हुआ था ।

नसीराबाद-में मेडा और राजपूताना
दे० जैन प्रा० समाजा अधिवेशन वै० सुदी
२ तक हो गया ।

अजमेर-में मेडा और मुनि चंद्रपागरजीका
शालोंच चैत्र वदी ११ को हो गया । २०-
१, हजार गतता एकत्रित हुई थी । बड़ी प्रमा-
ना हुई थी । जैनकुमार समाजा उत्सव भी
हुआ था । परस्पर वैमनस्यके कारण इतनी
जनता होनेपर भी कुछ चंदा नहीं हुआ था ।
ब्र० शीतलप्रसादजीके अनेक धार्मिक व्याख्यान
हुए थे ।

कलकत्तेमें-पंचायती न्यायालयकी स्था-
पना हो गई ।

हस्तिनापुर-ब्र० आश्रमके राजचरियोंनि
प्रण किया है कि सिवाय गाँवके और कोई
कपडा काममें न लायेंगे, मेग जुर्मा काममें न
लायेंगे और नित्य व्यवहारमें हिन्दी तारीख
लिखा करेंगे ।

कुंभलगिरि-के कुलभूषण देशभूषण
दि० जैन विद्यालयकी ब्र० पारसामाजी

अंतरीक्षजी-में दि० श्रे० के झगडेकी
तारीख जमी थी । परन्तु केम न निकट कर
आगामी ता; १ अगस्त नियत हुई है ।

मदरास-में देहली संघ और ब्र० शीतल-
प्रसादजीके उद्देशसे मंदिर और धर्मशालाके
लिये ६०००) का चंदा हुआ है ।

सोलापुर-में होलीके दिनमें गौ० ने०
व्यायामशालाकी ओरसे पाठशाळा और बोडि-
गके विद्यार्थियोंके मर्दानी खेठ हुए थे ।
जंजीर तोड़नेवाले तथा दूर तक दौड़नेवालेको
इनाम दिया गया था ।

आरा-के बा० हारदादजी मृन्मृके समग्र
दृष्ट काले लालों रुपयेका स्थायी दान कर गये
हैं इसमें ६००००) कालेनके लिये भी हैं ।

श्रीशिवरजी-में विहार उड़ीसा प्रा०
दि० जैन खंडेलवाल समाजा प्रथम अधिवेशन
गत मासमें सेठ चैनमुखनो छावड़ा सिवनीके सभा-
पतित्वमें हुआ था । जिसमें २४ प्रस्ताव पास
हुए थे । जिसमें खास ये हैं-लडकी ११ और
लडका १५ से कम उमरमें तथा पुरुष ४९ के
ऊपर विवाह न करे तथा लडका लडकीसे ४
वर्ष बड़ा होना चाहिये ।

माणिकचन्द्र-संस्कृत ग्रन्थमालाका १७
वां ग्रन्थ 'पट्टाभूतादि संग्रह' छपकर प्रकट हो
गया । ग्रन्थमालाको १००) सहायता देनेवाले-
को मुफ्त दिया जाता है । विद्वानों और हरएक
मंदिरके प्रबंधकोंको इस ग्रन्थमालाके सभी ग्रन्थ
मंगा कर संग्रह करने चाहिये ।



બહારક બાપણની ભૂગોળ ! !

આજ કાલ ભગ કરવાણુમ્ ભૂરેવના જેવી સ્થિતિએ પ્રાપ્ત થયેલા બહારક બાપણના નામથી કોણ અજાણ્યું હશે ? એમના વ્યવસાય, ચારિત્ર અને ઉપયોગીતાનું માટે ધણું લખાયું બોવાયું છે છતાં આપણે શું જિંદગી દોએ ? ઘેટાના ટોળા મારક ગાડરીઆ પ્રવાહમાં તણાતા ભણેલા ગણેલા, ધર્મનો દાવો કરનાર, સમાજનું સુધારનાર અને તેમાં પણ આજે સ્વતંત્રતા લેતા બહાર પડેલા વર્ગ, શુદ્ધરાતમાં ફરવા નિકળેલા નસિંહપરાતા બહારક (યજ્ઞકીર્તિ) બાપણ કે જે હમણા હોમકીર્તિની ગાદી પર બિરાજમાન થયેલા કહેવાય છે, તેમને બધા બાવના થતી હોય ત્યાં સંપૂર્ણમાં ઓછા પેસા પડે તો “લો બાપણ લો” “બાપણ બહુ ધણું” વિગેરે વિશેષણો વાપરી આ આધુનિક નિર્માણ બહાયાર્થને સાતમે આગ્રમાને મહારી ધર્મને નામે ધર્મીગ જેવા દીંગાણામાં સામેલ થાય છે ?

આજે શુદ્ધરાતના નસિંગપગ બાહ્યો દયદમાં અથાક ગયા છે, બાહ્યો કોઈ ગામ બહાર હશે, ક્યોલ ચોરાના તડમાં એક ધરતી ધ ધાતી તકરાર ખાતર બે તડ આજે કેટલોક વખત થયા પડ્યા છે. આ બહારકજીએ ત્યાં ચાલુમાસ ક્યોં હતો છતાં તેમણે શું પ્રયત્ન કર્યો ? કહે છે કે કેટલાક બાહ્યો આ બહારકને ચાલુમાસ કરાવવા નિરુદ્ધ હતા છતાં તેમના તેજમાં અંતર્ગત જઈને સંપૂર્ણ બાવના ફરી અને હૃદયની બાવનાને ટોક મારી ! આગ્રહ ગયા ત્યાં તો ગેર લગ્નની પક્ષ છનાગ શ્રોમત ગેરની બાવના લે તો સુરત ચોરાની બંધી રેમાનગીરીપર પાણી ફરે એ ઉદેશથી પ્રથમ વ્યારા, બુદારી, મહુવા અને સુબાઈ થઈ સુરતમાં મીઠાણાનીઓ ઉડાવી રહ્યા છે ! ! જોવાનું છે કે એક ચોરનાં કિશાયતી યાત્રિ બહાર થયેલા આગ્રહના બાહ્યોની બાવના આ રેમાન લે છે કે નહીં કે પછી સુરતવાસીની આખમાં ફગ નાખે છે. કહ્યું છે કે, “તુમ તુમારે વરા ફરો આગ્રહમારો હોજગ તો બરો બરો” કહે છે કે બ્યારે

આ નામધારી બહારક એક ગરીબમાં ગરીબ વિ-ધવાને ત્યાં પ્રથમ સંપૂર્ણ નહીં કરી અડ લીની હતી અને અંતે મનમાં આ રૂના લઈને બાવના કરી હતી. બુદારીમાં તો બહુ માન મળ્યું કહેવાય છે. પણ નજીક કારણ સર મમતાના મોમના જેવા ન્યાયે એ બાહ્યોમાં જે દાયકો થયા એક માતાના બે સતાનો જુના જન્મે છે તે તો તેમનું તેમજ મળું ! ! એ માન શું કામનું કે જેણે બાહ્યોમાં આ પણ મંપ ન કરાવ્યો ! ! મહુવામાં તો બે કાકા થયા પણ એક ટેકી તરીકે સંધપગના કાકા રાખનારા ગેઈ ઈન્દારામ પણ હાયા. સુબાઈમાં તો કહે છે કે ખૂન તડકો પડ્યો. હવે સુરતમાં કાગે ચાલુ થયો છે. જોઈએ છીએ ગેવ જેવી ધાર્મિક બાવનામાં ન્યાત બહાર મુકાયેલ બાહ્ય ખીમયદ સવાધ્યંતે માટે આ ધર્મના સવાધમાં ઉડા મુડી ભણેલા (નાના જતર મંતર કરી આપવામાં તે બધા હોશિયાર) આ કહેવાતા નવજગન ધર્મ શરૂ ફેલીસમજાવટ કરી આપે છે તેમજ હજારોની પુછ હોવા છતાં છણોંદાર કે ખીમ ધર્મ કાર્યોમાં મદદ માગવા જતા, હમારો તો હવે કાકા વેળ છે ? હમારે હવે કોઈ દીકરા રગનાર છે ? હમાન તો ગળાગ ગયા, લો પાગ ફીધા ! ! હમારી તે કંઈ પુછ ? પાસેર દુધ ખાતા પચુ કંઈ આવે, વળી ધર્મીયને નામે ઓગળાના જોઈએ છીએ, આગ્રહ બાહ્યો આ નામધારી બહારકાચાલી કેરી બગ-દાવ કરે છે તે જોવાનું છે. એ સવાધથી બાહ્યો તો બાવના કરવા કે સંપૂર્ણ આપવા પડીને ના ફરી છે. લી. એક લિતેમ્ણ

ભગ મુરેન્દ્ર કીર્તિ—ખાનદેશ તરફ ભગ ફરે છે ને સંપૂર્ણ બાવનાઓ મનમ ની લેતે છતાં વળી આપવા જવાનું રેલ બાક પણ, ચારી પાંચે જોગ જુવમથી ફાગે છે એ બાજન અમને ખાનદેશ તરફથી એક પગ મ પો છે.

છંદર—ના પેશા ભગ નિગ્ધાગીતિ (નેલા ના કંડી કદોગવાળા) છંદરમાંથી લેડા ચકર નદમ્ વગેરે સમેગી કંઈ પવાયન થઈ ગયાં છે ને હવે છંદર આવે એમ આપા નધી અરે ગુજ-રાન તારી આ દશ મ્યારે સુપરો ?



श्रीमान् साह सलेखचन्दजी साहय रईस-नजीबाबाद
सभापति,

श्री भा० दि० महासभा २९वा अधिवेशन-कानपुर ।

मिती चैत्र वरी ९-१०-११ वीर, स० २४४०

ता० १-२-१ अप्रेल १९२१.



जैन तावज्ञ संस्कृत विद्वानोंका तयार होना, श्रमिक, नागरिक और जातिय समाजोंका उद्धार, जैन समाचार पत्रोंका प्रचार, उपदेशकों द्वारा प्रचार, कुरीति निवारण, तीर्थोंका सुप्रबन्ध आदि जो कुछ भी सामाजिक और सामाजिक जागृति आज दीख रही है वह सब महासमाजका ही फल है। कुछ सज्जन ऐसा कहते हुए सुने जाते हैं कि महासमाजके विशेष कार्य नहीं किया है, मैं उनके इस आक्षेपको अपने विचारसे उचित नहीं समझता, जिन्हें महासमाजके स्थापन कालके पहले सम्पत्ति अनुभव है वे महासमाज गेरे उक्त विचारसे सहमत होंगे। महासमाजकी स्थापनाके पहले जैनसमाजकी कुछ और ही दशा थी। आज कुछ और ही दीख रही है। यद्यपि ऐसी सफलता होनी चाहिये वैसी नहीं हुई है, उसका कारण मैं यह समझता हूँ कि जैसी सहायता और योग देकर उसके कार्योंमें भाग लेना चाहिये वैसा भाग हमारे पास नहीं ले रहे हैं, फिर भी महासमाजके कार्योंसे बहुत कुछ सन्तोष होता है।

१-वर्तमान परिस्थितिको देखते हुए यह बात मुझे अवश्य बहनी पड़ती है कि महासमाजके नामके अनुसार उसकी व्यापकता नहीं है। उसके "महा" शब्दकी सार्थकता तभी हो सकती है, जब कि स्थानीय अर्थात् और जातीय संपूर्ण समाजोंका सम्बन्ध महासमाजसे रहे। अब तक जिन समाजोंका सम्बन्ध महासमाजसे नहीं है उन्हें उससे सम्बन्ध बनाना चाहिये, और अभी तक जो प्रांत प्रांतीय समाजोंसे खली हैं उन्हें उनकी पूर्ति करनी चाहिये। जिस प्रांतमें आज महासमाज यह पक्षोत्तरा अविवेशन हो रहा है वही प्रांत

प्रांतीय समाजसे शून्य है। इस दृष्टिको दूर करनेके लिये युक्त प्राप्तकी जनता और प्रतिनिधियोंसे मैं आशा रखता हूँ कि वे इस सुअवसर पर अपने प्रांतकी समाज स्थापन करेंगे।

७-कुछ समयसे दि० जैन खण्डेलवाल, पद्मावती पुरवाल, जैसवाल, परवार आदि कुछ जातिय समाजोंने जन्म लिया है मैं उनका स्वागत करता हूँ और उन्हें परामर्श देता हूँ कि वे समाजोंका रूप और दम्बा चौड़ा ढाँचा धारण न करके प्राचीन प्रथाके अनुसार पंचायतोंका रूप धारण करें। नाम भी अपना खण्डेलवाल पंचायत, पद्मावतीपुरवाल पंचायत, परवार पंचायत, इस रूपसे रखें। इन पंचायतोंका मुख्य कार्य यह होना चाहिये कि अपने पंचायती बलसे महासमाजके प्रस्तावोंकी अपनी जातिमें कार्य रूप परिणत करें। जातीय कुरीतियोंकी एक सूची बनायें। और उन्हें दूर करनेका यत्न करें। तथा जातीय झगड़े निवर्तयें। जन्म, मृत्यु और विवाहादि अवसरों पर जो अधिकतर लोग जातीय मान बढ़ाईकी इच्छासे व्यर्थ व्यय कर रहे हैं, इन किजुल खर्चियोंको रोकनेके लिये हुए एक जातीय पंचायतको अपनी जातिके रीति रस्मोंके अनुसार खर्चकी एक निपटारणी बनानी चाहिये और जातीय बलसे लोगोंको बाध्य करना चाहिये कि कोई भी उससे अधिक खर्च न कर सके। इन सब जातीय पंचायतोंको भी अपना सम्बन्ध महासमाजसे रखना चाहिये।

८-प्रिय पण्डितों! समस्त उन्नतियोंका मूल शिक्षा है। उसके निमित्त हमारी समानता जो कुछ आयोजन चर रहा है उसके सुधार सम्बन्धमें मैं अपने विचार आपके समक्ष रखता हूँ-वर्तमानमें



विद्यप्रचारार्थ जितनी संस्थाएं चली रही हैं उन सबोंकी उत्पत्ति महासभाको इष्ट है, परन्तु दि० जैन महाविद्यालयके साथ इसका विशेष सम्बन्ध है। उसकी अवन्तिका उत्तरदायित्व महासभा पर निर्भर है। जिस उत्साह और स्कीमको लेकर यह महाविद्यालय स्थापित किया गया था आज २०-२२ वर्षोंके बाद भी सामान्य जैन पाठशालाकी भांति इसका कार्य देख कर नितान्त खेद होता है। महासभाके अनेक अंगोंमें यह प्रधान अंग है। ऐसे समयमें जब कि शिक्षा प्रचारकी आवश्यकता बहुत बड़ी हुई है महाविद्यालयका कार्य-विस्तृतक्षेत्र, उत्तम स्टाफ, बहु संरूपक छात्र संस्था, विशाल छात्रावास प्रभृति कारण बलाशेषों द्वारा समुच्च अवस्थामें होना चाहिये। मुझे बतलाया गया है कि महाविद्यालयके प्रबन्धके लिये जो कमेटी बनाई गई थी उसने स्तीफा दे दिया है। यदि ऐसी निराशाका स्पष्ट हो गया है तो महाविद्यालयको किसी दूसरी संस्थाके साथ मिला देना ही उचित होगा। काशी स्याद्वाद महाविद्यालय और इसकी शिक्षा शैली एक है। इन दोनोंको मिलाया जा सकता है जैसा कि पूर्वमें भी हो चुका है। ऐसी अवस्थामें यह विचार होगा कि हमारा पुराना कार्यक्षेत्र और अंतिम-केवली श्री जम्बूध्वामीकी पवित्र निर्वाण भूमि शिक्षालयसे छाड़ी हो जायगी, तो उसके लिये मैं यह उपाय बतलाऊंगा कि ऋषभ ब्रह्मचर्याश्रम-हस्तिनापुरको-जो कि बहाकी जत्र वायुवे ठीक न होनेके कारण स्थान परिवर्तन चाह रहा है, और समानको जिनकी बिल्डिंगके लिये बहुतसा द्रव्य लगाना पड़ेगा उक्त चौरासीकी भूमि पर पहुँचाया जा सकता है।

९-आजकल जैन समागमें ३-४ परीक्षाएँ काम कर रहे हैं, जिनमें कम्बई परीक्षालयके का सुचारु रूपसे चलना कहा जा सकता है, परन्तु परीक्षालयकी अब भी बड़ी आवश्यकता है जिससे सम्बन्ध भारतकी समस्त दि० जैन संस्थाओंसे रहे। इसलिये महासभा द्वारा एक भारतवर्षीय दि० जैन परीक्षालय खोला जाय। वही परीक्षालय एक ऐसा पठनक्रम तैयार करें जो समस्त संस्थाओंके लिये उपयोगी पड़े। समस्त संस्थाएं उसी परीक्षालयके प्रमाण पत्र (पर्टीफिकेट)से अपने छात्रोंको प्रमाण-पत्र बनावें। उसीसे छात्रोंको उपाधियाँ दी जाय, और उसीकी योजनासे अध्यापक, उपदेशक, सांसारिक, सम्पादक तैयार किये जाय। इस कार्यको सम्पादन करनेके लिये मेरी सम्मतिसे उस्ताही एवं विवाशील पुरुषोंकी एक कमेटी बनायी जानेकी आवश्यकता है।

१०-अब मैं उपदेशक विभागकी ओर आपका ध्यान आकर्षित करूँगा। मुझे अधिकांश गाँवोंकी दशा देख घुन कर दुःख होता है, जहाँके जैनी माई जैन धर्मकी मोटी मोटी बातोंको भी नहीं जानते, यही कारण है कि कुछ दूसरोंके मन्तव्योंके अनुयायी बनते जा रहे हैं। कुछ जैन तत्त्वोंकी जानकारीके बिना धर्मकी उपेक्षा करते हुए समयकी गतिकी ओर खिंच रहे हैं। उन सबोंको जैन धर्मके मन्तव्य समझानेकी बड़ी जरूरत है। यह कार्य विद्वान् उपदेशकोंसे ही हो सकता है। इस लिये महासभाको इस विभागका ध्यान भी सुचारु रूपमें लाना चाहिये। इसके लिये परीक्षालय द्वारा एक पठनक्रम उपदेशकी विभागका निर्धारित होना चाहिये। और विद्यालयमें उसकी कक्षा खुलनी



हिये । इस आयोग-से अच्छी संस्था में योग्य प्रवेशकों की प्राप्ति हो सकेगी ।

११-प्रमाण में एक ऐसे कण्डकी भी आवश्यकता है जिसमें शिल्प, विज्ञान, कृषि, वैद्यक, कलाकौशल विषयों के सार्वजनिक शिक्षालयों में पढ़नेवाले असमर्थ जैन छात्रों को छात्रवृत्तियां दी जाय । क्योंकि हमारी समाज भिन्न २ विषयों की अपनी २ तन्त्र संस्थाएँ नहीं खोल सकती । छात्रवृत्तियां तीन रूपसे दी जानी चाहिये (१) बिना किसी अपेक्षा के सहयता रूप में यों ही दी जाय । (२) अग्रणी रूप में दी जाय, पछे आजीविन में लग जाने पर उनसे बिना अनाज के वह द्रव्य वसूल कर लिया जाय । (३) जिस छात्र को छात्रवृत्ति दी जाय उससे बढ़ा की पंचयत की माफन एक ऐसा प्रतिज्ञापत्र लिखा लिखा जाय कि वह भी समर्थ होने पर कमसे कम उतनी ही एक छात्रवृत्ति किसी जैन छात्र को आशय देय ।

१२-आजकल समान में महा तहां नवीन २ संस्थाओं का उद्घाटन होता जाता है । जिसके जीमें आता है वह अपनी दार्ढ्य चालकी सिचड़ी अलग ही पकता है । प्रायः सभी संस्थाएँ अपने लक्ष्य के लिये समानसे अपील करती हैं । इनको पृष्ठ क्रमसे पहले मैं आपको सलाह दूंगा कि आप उनके संघर्षों की प्रमाणता और उनके उद्देश्यों की जांच कर लिया करें । ऐसा न होनेसे मैं देख रहा हूँ कतिपय स्थानों पर भेजे समान के वृद्ध से पैसे का दुर्लभयोग हो रहा है । इससे एक हानि यह भी होती है कि जो संस्थाएँ वास्तव में लाभ पहुंचा रही हैं, उनपरसे भी लोगों का विश्वास उठ जाता है, और उन्हें पूरी सहायता नहीं मिल

पाती । प्रत्येक व्यक्ति के लिये यह भी कठिना होगा कि पृथक् पृथक् ऐसी संस्थाओं की जांच करे । इसकी सुलभ रांति यह होगी कि हर एक संस्था एक अपनी संस्था की प्रमाणता के लिये महा सम से एक प्रमाणपत्र प्राप्त करे ।

१३-जैन साहित्य प्रकाश और उसका प्रचार भी जैन धर्म की उन्नति में पाप सहायक है । इस लिये उसकी रक्षा और वृद्धि करना हमारे लिये अत्यावश्यक है । यहां पर मुझे जैन साहित्य ग्रन्थों का महत्व बतलाना अवकाश नहीं है । जिन विद्वानों ने जैन साहित्य ग्रन्थों का अन्वेषण किया है वे आज उनका गुण गान कर रहे हैं । भारत के प्रसिद्ध एवं प्रखर दार्शनिक विद्वान् महामहोपाध्याय राममिश्र शास्त्री, अम्बादास शास्त्री, डा० सतीशचन्द्र विद्याभूषण पी० एच० डी०, डा० आनंद भुव एम० ए० प्रभृति विद्वानों के सिवा पाश्चात्य देशों में भी जो जैन धर्म का प्रहल्ल फेला हुआ है वह सब जैन साहित्य का ही प्रमाण है । डा० हर्बर्ट मैक्रीजी, मि० हर्बर्ट चारन आदि प्रसिद्ध विद्वानों के सिवा अभी हाल में डा० थामस जैन धर्म के विषय में बड़े महत्व के विचार प्रगट किये हैं । डाक्टर साहब शामी कुंदकुंदाचार्य विरचित प्रवचनसाका इंगलिश अनुवाद करके भारत में आने साथ लाये हैं । वे चाहते हैं कि छपने से पहले उनका जैन विद्वानों से संशोधन करा लिया जाय । जैन साहित्य के विशेष ग्रन्थ और जैन विद्वानों से विशेष तत्वों के जानने की उनकी उत्कट अभिप्राय है । मैं यह बात बड़े गौरव के साथ बहंगा कि निम्नलिखित सत्य जैन धर्म से ही आत्मा का सदा हित समझते हैं । कर्म सिद्धांत, जीव सिद्धांत, माव विवे-



चना, वक्षा क्रमसे, चारित्र्य निरूपणा आदि जैन धर्मके सभी अंगोंका यदि प्रसार किया जाय तो जैन धर्मसे जगतकी बहु भाग जनताका हित हो सका है । परन्तु कितना साहित्य आज हमारे सामने उपलब्ध है वह अभी अपर्याप्त है । पाम पूज्य जेनाचार्योंकी अभी बहुतसी कृति यत्र तत्र मण्डारोंमें छिपी हुई हैं । ईडार, नागौर आदि स्थानोंमें अनेक उत्तम ग्रन्थोंका मण्डार है । उन सब ग्रन्थोंको प्रकाशमें लानेकी चेष्टा जरूरत है । यदि ये ग्रन्थ प्रकाशमें न आये तो बड़े दुःखका विषय होगा कि बहुतसे अमूल्य तत्त्व रत्न यों ही नष्ट भ्रष्ट हो जायेंगे । फिर तो आचार्योंकी कृतिके जोसे हमारा विनय भाव कहा तक बढ़ा हुआ एक प्रशंसनीय संपन्ना जायगा इसे आप लोग ही सोचें । (यहा आपने आशानिवासी कुपार वैषेधप्रपादकी दृष्टपद्मावक आत्मिक मृत्युके लिये अपना हार्दिक शोक प्रगट करके आपकी साहित्य सेवा की अतीव प्रशंसा की थी ।)

इसी साहित्यके प्रसारसम्बन्धमें आज महासभाके प्लेटफार्म पर मुझे यह बात कहते हुए संकोच नहीं होता कि ग्रन्थोंका मुद्रण भी साहित्य प्रसारमें बहुत कुछ सहायक बना है । जो महानुभाव आपसे विरोधी रहे हैं उनका विरोध करना विनय दृष्टिसे अनुचित नहीं कहा जा सका । परन्तु उसके द्वारा बहुत बड़ा लाभ होता हुआ देखकर अब उनका विरोध नहीं रहा है मिनके अब भी कुछ शेष हैं उन्हें मैं उसे दूर करनेकी सलाह देता हूँ । विरोध करनेवाले सज्जन साहित्य प्रसार और अन्तरंग विनय भावोंका यदि अपने विरोधके साथ तुलनात्मक पद्धतिसे विचार करेंगे तो उनके विरो-

धसे पलड़ा न गन्ध होगा । यहा पर मुझ मांके उस प्रस्तावका उल्लेख कर देना जरूरत नो छापे हुए जैन ग्रन्थोंके निषेधसे सम्बन्ध रहे है । यह प्रस्ताव सम्भव १९५३ में पास हुआ था । उस समय जैन ग्रन्थोंका प्रकाशना प्रारम्भ ही हुआ था, और शायद यह सोचा गया था कि वह इस प्रकारकी कार्रवाहियों द्वारा रुक जायगा, परन्तु ऐसा नहीं हो सका, और प्रस्ताव पूर्ण रूपसे अक्षय्य रहा ।

अब जब कि छपे हुए ग्रन्थोंका आप तौरसे खुला प्रचार हो गया है । सर्वापेक्षिदि, सनवा-विन, इकोवार्तिक, अष्टसहस्री, प्रमेयकमन्त्रमार्तण्ड, पञ्चान्यायी, सप्तपसार, प्रवचनसार, पञ्चस्तिनाय, गोम्मतमारादि जैसे बड़े बड़े और महान् ग्रंथ भी छप चुके हैं । अच्छे अच्छे विद्वान् पंडित लोग ग्रंथोंके छपानेका कार्य कर रहे हैं । कुछ सेठ लोग भी ग्रंथोंके उद्धारमें लगे हुए हैं । माणिकचन्द ग्रंथमाला, अनन्तकीर्ति ग्रन्थमाला, जैन ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय-बम्बई, जैन सिद्धांत प्रकाशिनी सस्था बलकृता, दी सेंट्रल जैन एन्सिलोपिडिया हाउस आरा आदि कितनी ही संस्थाएँ ग्रन्थोंको छपा कर उनका उद्धार कर रही हैं, मदिरों तकमें उपे ग्रन्थ विराजमान किये जाते हैं, लोग प्रेमसे उन्हें पढ़ते, खरीदते तथा वितरण करते हैं । और इस समय महासभाके साहित्य प्रदर्शनमें भी उनका एक अलग विभाग रखा गया है । तब ग्रन्थोंके छपाने और उपे ग्रन्थोंको पढ़ने तथा खरीदनेके निषेध सम्बन्धी उक्तप्रस्तावको रिपार रखनेका कुछ भी अर्थ नहीं रहता । उल्टा मुन्नेवालोंके लिये यह एक हास्यका विषय बन



जाता है। और उससे महासभाके गौरवको बचा
पहुँचता है। इसलिये मेरी सम्मतिमें वह प्रस्ताव
अब अनावश्यक और अव्यवहारीय समझा जाकर
रद्द किया जाना चाहिये।

१४—जैन इतिहास भी जैन धर्मके गौरवका
प्रधान चिन्ह है। जैनधर्म और जैनियोंके महत्त्वका
परिचय जैन पुरातत्वोंके अनुसंधानसे बहुत कुछ
मिल सकता है। अभी तक जैनियोंका पुरातत्व
इतना पड़ा हुआ है। प्राचीन पर्वत, गुफाएँ,
प्राचीन मंदिर, ताम्रपात्र, शिलालेख, प्राचीन
किले आदि यत्नोंके अनुसंधानसे जैनियोंका कितना
साम्राज्य कहाँ रहा है, जैन धर्मका कितना प्रचार
तथा प्रभाव था, इन सब बातोंका परिचय अच्छा
मिल सकता है। कौन आचार्य कब हुए, उन्होंने
किन २ ग्रन्थोंकी कब रचना की, ये बातें भी
उसी विभागसे सम्बन्ध रखती हैं। इसलिये ऐसी
खोजके लिये एक पुरातत्व विभाग भी आवश्यक
है। यह विषय कितने महत्वका है इसका कुछ
दिग्दर्शन यहाँकी प्रदर्शनीके उस विभागके
देखनेसे हो सकता है।

१५—तीर्थक्षेत्र वमेटीकी स्थापनासे रक्षित कुछ
तीर्थोंकी सुव्यवस्था हुई है। परन्तु अधिकांश
स्थलोंमें मंदिरोंके हिसाबकी जो गोलमाल हो रही
है उसकी अभी तक कोई व्यवस्था नहीं हुई है।
यह लिखते हुए हृदय क्षुब्ध हो उठा है कि
कतिपय स्थानोंके भाई मंदिरोंका द्रव्य हड़पनेमें
संकोच नहीं करते। ऐसे लोगोंने मंदिरों और
तीर्थोंको अपनी जामीन बना रखा है। ऐसे
लोगोंके साथ समाजको सत्त व्यर्थकर करना
चाहिये। इस विषयमें आपको तीन बातें ध्यान-

लेना—हर मंदिर व तीर्थका हिसाब प्रतिवर्ष ता
क्षेत्र वमेटीको भेजा जाय। स्थानीय मंदिर
प्रभुवर्त्ता कई कई प्रस्तोतक वे ही न रहें।
प्रति तीसरे वर्ष बदलते रहने चाहिये।
स्थानीय झगड़े भी इन्हीं मंदिरोंके हिसाबकी
लत होते हैं। और पवित्र पर्व अनन्त चतुर्दशी
कलह चतुर्दशी बनाई जाती है। तीर्थक्षेत्र
कुछ आडीटर (हिसाब निरीक्षक) नियत क
चाहिये, जो कि भ्रमण कर मंदिरों व ती
हिसाबकी जांच करते रहें।

आमकल मंदिरोंका रक्षया पूजन, उपकरण और
इमारतके काममें ही लगता है। जिन मंदिरों
अधिक रक्षया हो उन्हें अपना कार्यक्षेत्र बढाना
चाहिये। उस द्रव्यको जीर्ण ग्रन्थोंकी प्रतिलिपि
कराने, जहाँ जो ग्रन्थ नहीं हैं वहाँ उन्हें भेजा
स्थानीय सरस्वती भवनकी पृष्ठि कराने, तथा अन्य
स्थानोंके मंदिरोंके जीर्णोद्धार करनेमें नहाँ आक
श्यकता हो लगा देना चाहिये। एक मंदिरका रक्षया
दूसरे मंदिर कार्यमें लगाना शास्त्र विरुद्ध नहीं है।
जिन स्थानोंमें जैनियोंका निवास है परन्तु
भाइयोंकी असमर्थते के कारण मंदिर नहीं बन सक
है, वहाँ अधिकांश रक्षयेवाले मंदिरोंको वहाँ मंदिर
बनवा देना चाहिये।

मुझे अवसर पाकर यह भी कहना पड़ेगा नि
समय यह तीर्थक्षेत्र वमेटी बनाई गई थी वह उप
समयको सामने रखते हुए बनाई गई थी। अब
उसका पूनः संशोधन करनेकी आवश्यकता हो गई
है। कार्यकी सुविधाके लिये यह भी उचित मत
पड़ता है कि तीर्थक्षेत्र वमेटीके अन्तर्गत ७ उत्साही
सज्जनोंकी एक कार्यकारिणी वमेटी बना दी जाय।



११-तीर्थ सम्मन्धी झगड़ोंको भी में नहीं
सक्ता । उस विषयमें भी मुझे कुछ कहना
। हम लोग परस्परकी लड़ाईसे अनैक्य, घनहानि,
ममयका दुरुपयोग और अशांति आदि बहुत कुछ
उठा चुके हैं । अब जैसा कि दोनों सभ
को प्रधान पुरुषोंने तीर्थ सम्मन्धी झगड़ोंका
परस्पर निवटारा करनेका सफल कर लिया है,
जितना जल्दी हो सके पूरा करना चाहिये ।
हमका विषय होता कि यदि आन मुझे इस सभ
में यह कहनेका सुअवसर प्राप्त होता कि हमारे
दोनों माइयोंने बड़ा शान्तिके साथ तीर्थ सम्मन्धी
झगड़ोंका अंत कर दिया, और परस्पर गले मिला
लिये । खेद है कि श्रेयावर माइयोंकी पिछला
अपमान हम लोगोंको निराश सा कर दिया है ।
इस समय पर एक निश्चित विचारके बदलनेमें
उनका क्या रहस्य है ? इन सफल विकल्पोंको भूला
कर आप लोग कुछ काठ और प्रतीक्षा करें । हमारे
भेदावर माइयोंने फिर वचन दिया है कि चार
मास पीछे पूरी सफलताकी चेष्टा की जायगी ।
उक्त सभाके प्रमुख श्रीमान् महाराज नराहुसिं
हजी, रायकुमारसिंहजी, और मोतीचंदजी नखतवी
ओरसे गत माघ सुदी ९ बीजे यह विसृति
समाचारपत्रोंमें प्रगट हो चुकी है कि कठजत्तमें
नेवाली कानफोंकी ४ मासक लिये स्थगित
करनेके पीछे स्थायी शांति, और सम्पूर्ण सभकी
बुद्धिके लिये सब स्थानोंके सब तीर्थोंके टंटोंको
परस्पर मिग टालनेकी शुभ योजना की जायगी ।
भेदावर सज्जनोंकी उक्त विसृतिसे मुझे आशा
होती है कि अब झगड़ोंका अंत और पारस्परिक
शान्ति होनेमें कुछ विलंब नहीं है । मुझे अपने

दिगम्बर माइयोंसे भी आपस पूर्वक कहना है वि
बे भी अब पिछली सब बातोंको भूलाकर झगड़ोंको
परस्पर मिटाने और मेड़ मिटाप मडानेके लिये
सबे हृदयसे तयार रहें । मेरी यह भी सम्मति है
कि महासभा ग्यारह महाशयोंकी एक कमेटी
नियत करे, जिसको तीर्थ सम्मन्धी फैसलेका पूर्ण
अधिकार दिया जाय ।

१७-प्रतिनिधिगण ! महासभाको स्थापित हुए
पचास वर्षका समय होता है । परन्तु अभी तक
इसके द्वारा जैसी कुछ उन्नति और सफलता होनी
चाहिये था वह नहीं हुई । इसका मुख्य कारण
यही है, सभाके प्रस्ताव प्रायः कागजोंमें ही रुकने
रहते हैं, और उन्हें अमली गाना बहुत कम पह-
नाया जाता है । प्रस्तावोंको अमली सूरत देनेका
सबसे पहला वर्तमान सभाके सभासदों और
कार्यकर्त्ताओंका होता है । यदि ये ही
लोग अमल नहीं करते तो साधारण मनतासे
उन पर अमलकी कोई आशा नहीं की
जायसकी । जहां तक मुझे मालूम है उन
लोगोंके द्वारा महासभाके प्रस्तावों पर बहुत कम
अमल हुआ है । और यही वास्तवमें उन्नतिके न
होने अथवा असफलताका रहस्य है । कुरीतियोंको
दूर करनेके लिये ही उपयोगी प्रस्ताव सभीसे
हर साल पाप होते रहे हैं, यदि उन पर अमल
होता तो आज सभा उन सम्पूर्ण कुरीतियोंसे
बहुत कुछ मुक्त हो जाता जिन्होंने उनके शरीरको
बहुत कुछ नर्जित बना रखा है । इसके लिये
महासभामें एक ऐसे खास नियमके होनेकी बहुत
बड़ी जरूरत है, जिसके अनुसार वे ही लोग महा-
सभाके कार्यकर्त्ता और सभासद रह सके जो उनके



प्रस्तावों पर पूरी तौरसे अमल करते हों, चाहें वे प्रस्ताव उनकी इच्छा और विचारके अनुकूल हों या प्रतिकूल । जब तक ऐसा नियम बनाकर हड़ताके साथ उसका पालन नहीं कराया जायगा तब तक बालविवाह, वृद्धविवाह, कन्याविक्रय जैसी समाजमें घरी और भयानक हानियां पहुंचानेवाली कुरीतियां दूर नहीं हो सकतीं । इन कुरीतियोंसे जो कुछ बहुत फल पैदा हो रहे हैं उनका समाज स्वयं आस्वादन कर रहा है । मैं उनका कथन काके आप लोगोंका समय नहीं देना चाहता । विवाहके समय कन्याकी कमसे कम १३ वर्ष और दरकी कमसे कम १७ वर्ष अवस्था होनी चाहिये । विवाहके एक वर्ष अपरा तीन वर्ष पीछे जो गोना (द्विरागमन)की पद्धति चली आ रही है उसे उठा देना चाहिये । दूसरी बात यह है कि ४० वर्षसे ऊपर कोई पुरुष अपना विवाह न कर सके । जो लोग कन्या विक्रय करते हैं उन्हें इस घृणित पृथासे रोकनेके लिये पूरी शक्तिसे काम लेना चाहिये । मुझे आशा रखनी चाहिये कि, इस वर्ष इस प्रस्ताव पर पूरा अमल किया जायगा, और 'आगामी अविदेशनके समापतिको इस विषयमें समाजको बचाई देनेका मुभ्रसर प्राप्त होगा ।

१८—मेरी बहनों ! दो बातें, विशेष रूपसे मैं आपसे कहना चाहता हूँ—यह बात निर्विवाद है कि गृह देवियोंका सद्व्यवहार ही गृहस्थ जीवनको समृद्ध और समुन्नत बना सक्ता है । जिन घरोंमें सुशील एवं विवेक रखनेवाली स्त्रियां हैं उन्हींमें पात्र दान, उत्तम आचार विचार, मर्यादित शुद्ध भोजन, वैद्याभ्यास, मितव्ययिता, कुछ परादा

आदि जाते पाई जाती हैं । जहां स्त्रियोंमें नहीं है वहां उन्नत सभी बातोंमें हीनता पायी जाती है । इन लिये स्त्रियोंको सुशिक्षित करनेकी बड़ी जरूरत है । सुशिक्षित मातृएं ही सन्तानको सुशिक्षित एवं होनहार आदर्श बना सकती हैं । मुझे भरोसा है कि यदि स्त्री समाज, समाजमें फैली हुई कुरीतियोंको दूर करनेका पूरा प्रयत्न करे, तो उनका नामशेष भी न रहे । बालविवाह, कन्याविक्रय, ये दो बातें ऐसी हैं जिनका संबंध स्त्रियोंसे अधिक है । यदि वे इन भयानक कुरीतियोंको न होने देनेका हट फट लें तो समाजसे ये कुरीतियां जल्दी दूर हो सकती हैं ।

स्त्री समाजमें जो अभी तक मिथ्यात्व वर्षक अनेक कुरीतियां फैली हुई हैं, महिमा परिपद द्वारा उन सबकी एक सुची बनवा कर उन्हें दूर करनेका यत्न करें ।

बहनों ! एक बात मैं आपसे और भी कह देना हूँ—कुछ दिनोंसे हमारी समाजमें कुछ लोगोंने विवाह विवाहका प्रश्न उठा दिया है । मैं यह अच्छी तरह जानता हूँ कि हमारी बहनें इस विषयको घृणाकी दृष्टिसे देखती हैं, पातिव्रत्य समझे पश्यको पूर्ण ग्रीणिमे जानती हैं । आपों पर पूर्ण विश्वास रखती हूँ । आप पवित्र कर्तव्योंको पहचानती हैं । कुछ मर्शानों रह कर अपना मत्सरक उत्तम रखनेका अभिमान रखती हैं । और अपने पवित्र जीवनको पुनर्विचारके पापसे कलंकित कर स्वप्नमें भी घृणित बनाना नहीं चाहतीं । इन सब बातोंको मानते हुए मैं आपसे आशा करता हूँ कि आप यहां होनेका

रखता जावे। यह सब रुपया भी सुरक्षित रहेगा और इसके द्वारा जैन व्यापारियोंको व्यापार वृद्धिमें बड़ी सहायता मिलेगी।

२१-मैं अपने नवयुवकोंको-उनके हितकी एक बात और सिखाऊंगा, मुझे उन्से शिक्षाएन है कि वे आजकल मिल २ आन्दोलनोंमें पड़कर अपने सच्चे धर्मकी श्रद्धा और धार्मिक मर््यादाको ढीला कर रहे हैं। जैन जनता-जिसे आज मैं इस वृहत अधिवेशनमें देख रहा हूं भारतकी अग्रवाल, पारवार, पद्मावती पुराण, हूमड़, चतुर्थ, पञ्चम आदि अनेक जातियोंका समुदाय है।

इन सब जातियोंका पारस्परिक व्यवहार जुड़ा है। इस प्रकार व्यवहार भेद होनेपर भी सबका एक प्लेट फार्म पर एकत्रित होना किसी असाधारण विशेषताका सूचक है। इन सब जातियोंमें वह असाधारण विशेषता क्या है? वह है जैनधर्म, जो सब जातियोंमें व्यापक है और जिसने इन सब जातियोंको एक सूत्रमें बांध रखा है। उसी जैन धर्मकी श्रद्धा और चरित्रको टीका

करके आप अपने समाजके ज्ञानको दीग कर रहे हैं। जो हमारे जैनिरोंके मोटे चिन्ह हैं, जैसे-देव दर्शन, रात्रिमोक्षण त्याग, छना ज्वरान इन्हें पाश्चिमात्य शिक्षासे प्रभावित होकर कुछ लोग किंचित समझने लगे हैं। एक ओर हम पाश्चिमात्य शिक्षाके औगुण देखते हैं, दूसरी ओर उसके प्रभावमें वह रहे हैं। यह एक दुस्तरा बात है। मैं अपने नव युवकोंको अपने अनुभवमें साह देता हूं कि वे अपने प्रणीत जैन धर्म पर प्रदुर्लभ दृष्ट रखें, निरपति जिन मंदिर जायें, जिन पवन शुद्ध रखें, नया

शुद्धि पर ध्यान रखें, संगमो बनें, अपने व्यावहारिकमें सचाई रखें, इन बातोंमें बड़ा है, और जैनियोंका गौरव है। इनको किंचित समझें। इस छोटेसे भाषणमें इस सम्भवमें विशेष बतलानेमें लिये मुझे अवसर नहीं है।

२२-धर्मवत्सल बन्धुओ! ऊपरसे सम्भव रखता हुआ मैं एक और विषय आपके रखना चाहता हूं-कुछ समयसे समाजमें यह आन्दोलन मच रहा है कि सत्योदय और जाति प्रबोधक नामके दो पत्रोंका बहिष्कार कर दिया जावे, ये दोनों पत्र जैन धर्मको केवल रूपान्तर ही करना नहीं चाहते, किन्तु उसे जड़मूलसे उखाड़ना चाहते हैं। मैं चाहता था कि ये दोनों पत्र अपनी नीति बदल दें और इस महासभाके मंचपर मुझे उनके विरुद्ध कुछ कहना न पड़े, परन्तु मामला आशातीत हो गया है। इनकी सहायता करना और अपने धर्मकी निंदा सुनना हमें अब सहन नहीं हो सका। हमें अब इन पत्रोंको न खरीदने और न पढ़नेकी दृढ़ प्रतिज्ञा करनी चाहिये। एण्टिके अभिप्रायसे भी न लेना चाहिये। यदि आप पूरा बहिष्कार करेंगे तो परिणाम यह होगा कि ये दोनों पत्र शीघ्र बंद हो जावेंगे। हमारी दिगम्बर जैन मन्थनमें समाचार पत्रोंकी कमी नहीं है। समय लगभग १५ पत्र और निकल रहे हैं जिनमें लाभ उठाना चाहिये।

२३-अपने स्थान पर बैठनेसे पहले मैं इस बातको भूझ नहीं हूं-

“न हि द्रुतमुपकारं प्राप्यो विम्वरान्ति”

स्वायत्तदारीणी कमेजने महासभाको निमन्त्रित

करके हार्दिक अनुराग पूर्वक जैन बांधवोंको आह्वान किया है, विशेष आयोजनके साथ इन अधिवेशनको सफल बनानेके लिये परिश्रम उठाया है। अधिवेशनकी सफलता बांधवोंकी सफलता पर निर्भर है। यहाँका यह अधिवेशन कैसा हुआ, इनका ज्ञान आगे चर कर उसकी समाप्ति पर होगा, परन्तु स्वागत कारिणी कमेट्रीने अधिवेशनको प्रभावशाली बनानेमें तथा आगतोंके स्वागत करनेमें कोई बात उठा नहीं रखती है। इसके उपलक्ष्यमें मैं अपने शुद्धान्तःकरणसे स्वागतकारिणी समितिसे समापति महोदय अन्य कार्याध्यक्ष और समस्त वमेटीका आभार मानना हूँ, और उन्हें धन्यवाद देना अपना परम कर्तव्य समझता हूँ।

जैन साहित्यका महत्व प्रदर्शन करनेके अभिप्रायसे जो यहाँ जैन साहित्य प्रदर्शनी खोली गई है, उसके सम्बन्धमें वैद्यरान वन्देयालालजी विशेष धन्यवादके पात्र हैं, जिन्होंने प्रदर्शनीको सर्वांगसुन्दर बनानेके लिये अनेक नगरोंमें भ्रमण कर श्रम उठाया है।

महात्माबो ! आज आपका बहुत सा अमूल्य समय मैंने लिया है इसके लिये मैं आपसे क्षमा प्रार्थी हूँ। मैं अपना परिश्रम सफल समझूँगा यदि आप मेरे विचारोंसे लाभ उठावेंगे।

व्याख्यान

ला० रामस्वरूप जी सभापति, स्वागत
कमेटी २५वां अधिवेशन, भा० दि०

जैन महासभा, कानपुर,

श्रीमान् महोदय साहू सखेलचन्दनी तथा प्रतिनिधि गण, बहनों और भाईयो !

कानपुरके जैन समाजकी औरसे और विशेष कर स्वागत कारिणी समितिजी ओरसे, मैं आप माननीयोंका बड़े प्रेम तथा उत्साहके साथ हार्दिक स्वागत करता हूँ, तथा श्री मरत वर्षीय दिगम्बर जैन महासभा और आप महात्माबोंके प्रति हम व उनके लिये कृतज्ञता प्रगट करता हूँ, कि आप सज्जनोंने इतनी उदारताके साथ अनेक अनुविधाओंको अधिक न गिनते हुए इस उत्सवके निष्पन्न दाताके नम्र निवेदनको स्वीकार किया और श्री महासभाके इस अधिवेशनमें सम्मिलित होकर हमको कृतार्थ किया।

महाशय गग, इसमें तनिक भी सन्देह नहीं, कि आप लोगोंके विश्वास तथा अन्य बातोंके लिये योग्य प्रयास करनेमें अनेक नुदियाँ रह गई हैं और आप लोगोंके लिये जैसा चाहिये वैसा प्रयत्न भी हमसे न होसका। इन नुदियोंके लिए मैं आप सज्जनोंसे क्षमा मांगनेका साहम करता हूँ।

कानपुर शहरमें जैसी माइयोली सड़का भी कुछ अचिन नहीं, फिर ये छोटा सवुदाय क़मेर मगानका कुछ विशेष कुछ पात्र भी नहीं, तिम पर भी मे आप महात्माबोंको विश्वास दिलाता हू कि उनके हृदयमें प्रेयकी कमी नहीं

जैन सिद्धांत संग्रह

(१०१ ग्रन्थोंका अपूर्व संग्रह)

पृ० ४३२ मूल्य कच्ची जिरद २) पकी २।)

मेनेनर, दि० जैन पुस्तकालय-सुरत ।



है । मुझे आशा है कि इन्हीं बातोंको ध्यानमें लाकर आप महातुम व हमें इन त्रुटियोंके निमित्त समा प्रज्ञान करेंगे ।

जब मैं इस बातको ध्यानमें लाता हूँ, कि अपने प्राचीन पवित्र धर्म तथा अपने जातिके हार्दिक प्रेमसे ही प्रेरित होकर आप सर्व महाशय यहाँ उपस्थित हुये हैं, तब मुझको विश्वास होता है कि आप हमारी त्रुटियोंकी ओर ध्यान न देंगे । किंतु निम कचके हेतु आज सर्व सज्जन एकत्रि। हुये हैं उसके पूर्ण बरनेमें सहायक होंगे ।

मित्र प्रतिनिधि गण ! मैं अपने लिये एक बड़े सौभाग्यकी बात समझता हूँ, और इस बातको बड़े गर्वका कारण मानता हूँ, कि आप महाशुभाशंका सागत व मेरा सम्मान उसको प्राप्त हुआ ।

जैन समाजके लिये बड़े दुःखकी बात है कि हमारे समाजके एक होनहार युवाकी अभी हालहीमें मृत्यु हो गई । देशमें कोई भी ऐसा हिन्दी-भाषाभाषी न होगा जिसने आराके सुप्रसिद्ध रहस्य और उत्साही साहित्यसेवी कुमार श्री देवेन्द्रप्रसाद जैनका नाम न सुना हो । शोक है कि आज वे संसारमें नहीं हैं । हम लोग उनके कुटुम्बके प्रति समवेदना तथा उनकी अत्माकी शान्तिके लिये प्रार्थना करनेके विचार और कर ही क्या सकते हैं !

जैन समाज और सार्वजनिक जीवन ।

सन्तानों । महाशुभाकी स्थिति हुये २६ वर्ष हो गये । इन २६ वर्षोंमें संसार तथा देशमें

अनेक परिवर्तन हुये, नये दिवारों तथा नये आदर्शोंने संसारको सेती हुई अवस्थासे जगा दिया । हमारे देशके आतीय जीवनमें एक गहरा परिवर्तन हुआ । जैन समाज इन परिवर्तनोंसे अपनेको किंचित् मात्र भी बिलग नहीं रख सका । यह अत्यन्त आवश्यक है कि हम लोग भी अपने इन पचीस वर्षके इतिहासको उठटें और देखें, कि कहाँ तक हम लोग अपने निश्चित उद्देश्योंमें पूर्णतया सफल हुये हैं, और कहाँ तक अपने देशके सार्वजनिक जीवनके प्रति अपने स्वामित्वक कर्तव्यको पूर्ण कर सके हैं । हम लोगोंका दावा है कि हम इस पवित्र भारतवर्षके प्राचीन निवासी हैं, हमारा धर्म लोक प्रचलित सभी धर्मोंसे प्राचीन तथा अनादि कालसे चला आनेवाला धर्म है, साथ ही हमारे सभी पूर्वजों की धर्म और ऋषि मुनियों इसी धर्म पर

जन्म लिया था । क्या इन महत्वपूर्ण अमिट बातोंको ध्यानमें रखते हुये हमारा धर्म कर्तव्य भी नहीं है कि हम अपनेको उन पूर्वजों और उन पवित्र धर्मके योग्य बनावें ? और भारतीय राष्ट्रके अन्तर्गत अपने उच्च स्थानको प्राप्त करें ? पूर्वज और पाश्चात्य सभी देशोंके तरफ् दर्शा आत्मार्थी अनुभव है कि सत्यता और वर्तमान संसारके सभी रोज मूल मार्य ही है । मर्याद हीके वशीभूत होकर समाजका एक अंश दूसरे अंश पर, संसारका एक देश दूसरे देश पर, और एक जातिके दूसरी जातिके लोग पर आधाचार करनेको हो जाते हैं । क्या “अहिंसा परमो धर्म”



सरीखे पवित्र महावाक्यके अनुयायी जैन समाजका यह कर्तव्य नहीं, कि अपने धर्मकी पवित्र प्रभाके प्रकाशसे, संसारसे इस दुष्ट स्वार्थ धारणाको दूर करनेकी चेष्टा करे-

सज्जनों ! अब केवल धर्म मीरता, देशप्रेम, राजभक्तिकी मौखिक दुहाई देनेका समय नहीं रहा-बल्कि अब इस बातकी आवश्यकता है कि कार्य-रूपसे जैन समाज अपने धर्म प्रेम, देश-भक्ति, राज भक्ति परिचय दे। इस देशके प्राचीन निवासी और संसारके सबसे प्राचीन धर्मके अनुयायी होनेके नाते यह हमारा कर्तव्य और अधिकार भी है, कि हम भारत-वर्षको संसारके अन्य राष्ट्रोंके साथ २ ऊँचे आसनों पर बिठानेके हेतु सहायक बनें। और इस भाँति भारतवर्षकी अत्यात्मिकताके द्वारा संसारके अनेक कष्टोंको दूर करनेमें सफल हों। राजनीति, समाजनीति, शिष्टाानीति कोई भी ऐसा क्षेत्र नहीं, जिसके संस्कार और पुनरुद्धारमें जैन धर्म, जैन साहित्य और जैन सभ्यता सहायक न हो सके। और यदि यह सहायता हम न दे सके, तो हम स्वयं अपनी आत्माके सम्मुख अपराधी सिद्ध होंगे और अपने कर्तव्य पथसे गिरे हुये समझे जायेंगे।

देशका व्यापार।

कोई देश और कोई जाति बिना व्यापारके सुखी और समृद्धशाओ नहीं रह सकती। हमारी जातिके विषयमें भी यह बात ठीक लागू है। हमारा व्यापार सच पृथिवी तो सर्वथा गैरोंके धर्म है। हमारे देशके व्यापारी तो वास्तवमें दलाल

सरीखे हैं। यहाँसे कच्चा माल विदेशको भिजाना और वहाँका बना माल मँगाकर बेचना-केवल इतनेहीमें हमारा व्यापार परिमित है। मैं यह नहीं कहता कि मालका हेर फेर होही नहीं सक्ता परन्तु तौमी निम्न देशके वैश्य अपनी सारी शक्तियाँ केवल दलालीमें नष्ट करते हैं, वह जाति आर्थिक उन्नति-कदापि नहीं कर सकती। जैन समाज भी अविभांश व्यापारी है। और लक्ष्मीदेवीकी इस समानमें कुछ कृपा भी है। इसलिये देशके व्यापारीकी अडली उन्नति करनेमें जैन समाज बहुत कुछ प्रयत्न कर सकता है।

बया मैं आशा करूँ कि महात्मा जैन समाजको देशमें सार्वजनिक जीवनमें अधिक उपयोगी बनाने तथा देशके व्यापारके उन्नतिके धर्म सचे साधन इकट्ठा करनेकी ओर आप लोगोंका ध्यान आकर्षित करेगी।

जैन साहित्य और शिक्षा।

यह कम सौभाग्यकी बात नहीं है, कि लगभग १० वर्षके अन्दर २ अनेक श्रद्धालु जैन विद्वानों तथा धनियोका ध्यान जैन साहित्यके पुनरुद्धारकी ओर गया है। इन सज्जनोंके उद्योगसे जैन शास्त्रोंका प्रकाशन तथा प्रचार भी हो रहा है परन्तु तौमी अभी इस ओर सर्वथा सन्तोष जनक कार्य नहीं हुवा। यदि ये काम तनिक और श्रद्धालुवत् होता और मित प्रकाशक गये एक दूसरेसे सहयोग रखते हुये किसी पंडित परिषदकी अनुमति लेकर प्रकाशनका कार्य करते, तो यह कार्य अधिक फलदायक

वाल विवाहकी दुःखप्रद कहानी।

१

(लेखक-कवि शंकरलाल व्यास, - कसरावद)

प्रथम परिच्छेद ।

रामछाल वृन्दावन वासी करते थे एक दिन आराम ।
बैठी थी गृहिणी सधीप ही छोड़ छाड़ घरका सब काम ॥
कहने लगी मधुर वाणीसे विनय सुनो मोरी पति-राम ।
कन्या अपनी आठ सालकी बवारी है सो आती छान ॥

२

व्याह योग्य होगई है कन्या अब कुछ उसका शोच करो ।
प्राण पिथारी पुत्रि अर्थ तुम शिघ्र हि बरकी खोज करो ॥
क्या उसका वृद्धापकालमें लग्न करोगे तुम स्वामी ।
उसे व्याहनेकी बुद्धि क्यों देता नहि अन्तर्यामी ॥

३

प्यारे वचन प्रियाके सुनकर बेला वह पुलकित हो गत ।
समय उपस्थित होने पर ही की जावेगी उसकी मात ॥
बिना समयके नहि फलते हैं कदली जामुन बेर अनार ।
लगे सुहावनि सब सुननोंको व्याह समयमें बैसी गार ॥

४

दंत दूषके नहीं गिरे हैं बालि उमर हैं सुकूमारी ।
कहो मठा क्या समझे कन्या ठगही हूं मैं या बवारी ॥
इसीलिये धीरम रखियो तुम चर्चा कूट मैंने की है ।
नाई पुरोहित युगल जनोंको पहिले ही सूचना दी है ॥

५

वे अब वयस ही अलग समयमें सन्देश करके आवेंगे ।
पुत्रि यशोदाका तब प्यारी शिघ्र ही व्याह रचावेंगे ॥
इसी विषयकी चर्चा करते बैठे थे दम्पति घरमें ।
आये तहां पुरोहिताजी निन पोषी पत्र लिखे घरमें ॥



६

प्रसूदित होकर उठे सेठनी प्रणाम कर बैठाये पास ।
गरज पड़े पर घनी पुरख भी निर्धनका हो जाता दास ॥
लगे पड़ने शिघ्र सेठनी कहो पुरोहित जी कुछ हाठ ।
कन्यादान करें ऐसा वर बता दीजिये अब तत्काल ॥

७

शहर बनारसमें रोकड़मल एक सेठनी रहते थे ।
चीन और जापान आदि देशोंमें वाणिज्य करते हैं ॥
पुत्र रमेशचंद्र है उनका सुन्दरतामें चन्द्र समान ।
उसको दीजै सुता तुम्हारी जो हैं सखती गुणवान ॥

८

कहो पुरोहितजी लड़केकी वय होगी कितनी अनुमान ।
बहुत बड़ा है या कन्यासे वह छोटा बिचकुल नादान ॥
मान लीजिये एक साल वह कन्यासे छोटा होगा ।
पर वह चंद दिनोंमें बढ़कर इससे भी मोटा होगा ॥

९

गुण वर्णन कर गये पुरोहित अबगुण उसके निगल गये ।
चिकनी चुपड़ी बातोंमें फप रामलाज भी पिघल गये ॥
कहने लगे पुरोहितजीसे देख लीजिये पत्रा खोल ।
कन्या वरके गगन वर्गोंको मिला लीजिये कटि तोल ॥

१०

पंडितजी झट लगे खोजने ज्योतिषके पुस्तकको खोठ ।
उलट पलट कर लिये सफे कुछ करनी थी यों टालपटोल ॥
हैं अनिष्ट कन्याको मंगल इससे हैं उसका तुलसान ।
जाप जपा लीजे उसका तो निकल जाय दिलका अमान ॥

११

लगे रूपये जितने इसमें ले लो मुझपे आप अभी ।
जबो जाप मंगलके निहिं सो आवे नहिं संकष्ट कभी ॥
पुनि टीका लेकर तुम पहुंचो रोकड़मलजी व्याही पास ।
समा लीजिये महारान मारगमें जितने होवे त्रास ॥

११

हमने मुनकर बचन सेठके लगे पुरोहितभी कहने ।
 देखे नहीं विश्वमें तुमसे उदार दिलके नर हमने ॥
 शिघ्र वरुणा कार्य आपका दिलमें अपने घर लिया ।
 ७ लो बैठो अब जाता हूं मैं यों कह करके कुंव किया ॥

* * *

दूसरा परिच्छेद ।

१२

गादी तक्रियें लगे हुए हैं एक बड़े गृहके अन्दर ।
 टहल रहे कोई लिखते हैं बैठे हैं नौकर चाकर ॥
 मध्य सभाके तोंद पसारे बैठे हैं गण राज समान ।
 सेठ हमारे कोटिज्वम हैं रोकड़मलजी यह मविमान ॥

१४

हमनेमें टीका लेकरके वही पुरोहित पहुँचे द्वार ।
 रोकड़मलजीने भी इका खुर किया अंदर सत्कार ॥
 कहो पुरोहित आज सुना इस वीकर पर कैसी भी है ।
 य.मो वामन रूप बनाकर जिमि प्रलिते पृथ्वी की है ॥

१५

पृन्दावनसे चउकर माई पास तुम्हारे आया हू ।
 रामराजनी कर कुत नीनी एक संदेश मैं लाया हू ॥
 एकुटती बन्या है उनकी चन्द्र तेन हरने बाड़ी ।
 नयन काप शर बीणा बचनी चमक रही मुंहपर लाठी ॥

१६

उसे व्याहनेका प्रण करके द्वार आपके आया हू ।
 पडा लिखा होगा यदि छेडका तो टीका भी लाया हू ॥
 रमेश मंग बडा चतुर है बड़ाई उनकी नहि करता ।
 द्वितीय श्रेणीमें पडता है वह पछे पग नही धरता ॥

१७

रमेश भी आ पहुँचा वहाँ पर जहाँ पुरोहित रहे बिराज ।
 तुतताती बोलीसे बोले ऐसे आये दम, महाराम ॥



पास बुलाकर लगे पुरोहित उसे पूंउनेको यह बात ।
पढ़ी वहाँ लो विद्या तुमने और सीखने हो क्या बात ॥

१८

ओनामा सिद्ध पढ़ कर अब सीदा पाटी पढ़ना हूँ ।
इसके आगे बीड़ी पीना और पितासे लड़ना हूँ ॥
हसने लगे पुरोहितजी उस बालककी सुन बानीको ।
पिता रामने कैसी इसकी दांकी थी सैतानीको ॥

१९

ऐसे बरसे क्या फल होगा जो कन्यासे है नादान ।
कभी कपून किसीको मत दे चाहे करदे नि सन्तान ॥
काला अक्षर भेग बाबर झूठ बोलते हैं दिनरात ।
समय पड़े पर जानी बनकर करे सम्भ्यताकी जो बात ॥

२०

अपना विस्तर बाध पुरोहित लगे वहाँसे चलनेको ।
हम नहीं करते व्याह इस तरह दाशानलमें गलनेको ॥
जान लिया रोकड़मलजीने पंडितजी सो रूठ गये ।
द्वय कैसे समझावें इनको साधन भी सब छूट गये ॥

२१

रही नहीं है कुछ भी युक्ती अब इनको समझानेकी ।
एक मात्र पैसेकी लालच बाकी है बतलानेकी ॥
खड़े हुए फासी परसे भी पैसा ही लौटाता है ।
पड़ी हुई फासी पर भी हा ! पैसा ही लटफाता है ॥

२२

साधु महात्माओंका दर्शन पैसा ही करवाता है ।
बीच हवेलीकी बीबीको पैसा ही पकड़ाना है ॥
बूढ़े बरको छोटी कन्या पैसा ही दिखाना है ।
नच्चेमे युवती कन्याका पैसा घाट मड़ाना है ॥

२३

घोर पाप है कन्याविक्रय वह पैसा करवाता है ।
रिश्तन चौरी जारी करना पैसा ही सिखलाता है ।
साम समूर साहूकी संख्या पैसा ही बढ़वाना है ।
गुण चुपकी भाँते साड़ीसे पैसा ही करना है ॥

२४

पैसेसे ललचा जाते हैं पंडित हो चाहे घनवान ।
उठे सेठजी यों विचार कर अपने दिलमें कर अभिमान ॥
कहो पुरोहितजी क्यों हम पर इतने द्रुम नाराज हुए ।
बालककी बातें सुनकरके गुस्से क्यों महाराज हुए ॥

२५

मिरचीको मर जीरेको जर और सेठको सठ लिख ले ।
पड़ा लिखा माना जाता है जो हममें इतना सिख ले ॥
मछा एक म्यानमें छुरियां दो दो क्या रह सकती है ।
घन विद्या दोनोंका बोझा क्या आत्मा सह सकती है ॥

२६

है हममें नितनी विद्या नस उसमें ही संतोष करे ।
पड़े जरूरत विद्याकी तो शिघ्र ही व्यय घन कोष करे ॥
दो सहस्र मुद्रा लेकरके गुप्त बात रहने दीजे ।
टीका रख नाओ रमेशका पगड़ी औ सेछा लीजे ॥

२७

टपकी- छार पुरोहितजीकी मुद्राका सुनकरके नाम ।
विचार करने लगे मनहि मम उत्तुने अब कबले दाम ॥
दो सहस्र मुद्रा झट दे दो कहना नहीं किसीसे बात ।
यदि खुल जावे पोल हमारी तो वृत्ती पर लगे मात ॥

२८

जो भूदेव गिने जाते थे दुनियांमें सबके सिरताज ।
राना तक चरणोंमें गिरकर कहते थे तुम हो महागज ॥
आम उन्हींकी दशा देख लो दर २ः गारे फिस्ते हैं ।
सबे झूठे झगड़े करके अपना ऊदर भाते हैं ॥

२९

शेछा पगड़ी और रुखे पाकर खुशी हुए महागज ।
बछे वहांसे आशिष देकर किये बरो ऐसे शुभ काज ॥
फूलो फलो बढ़ो तुम दिन दिन जैसे बढ़ता है दिनमान ।
ऐसे गुप्त दान कर काके किया करो हमरा सन्मान ॥



तीसरा परिच्छेद ।

१०

० हरिगितिका ।

बैठे हुए थे दम्पति आनंदसे निज गेहमें ।
आये पुरोहित पाग सैला टाटकर निज देहमें ॥
आदर सहित बेठाग उनको पूंजते हैं प्रेमसे ।
अब वह कथा कह दीजिये टीका हुआ क्या क्षेपसे ।

३१

सानन्द टीका दे साया हूं आपके दायादको ।
तब पूर्ण करके ज्ञाति रीती रस्मकी मर्यादको ॥
पुत्री यशोदाके लिये घर चन्द्रमा सा मिल गया ।
बम प्रशंसा मैं बरूंगा माग्य उसका खिल गया ॥

३२

उसकी मड़ाई एक मुंडसे कर नहीं सक्ता कभी ।
ऐश्वर्य उसका कुछ समयमें दृष्टी आवेगा अभी ॥
बस रामछाछ सहर्ष होकर घन्यवाद ही कह उठा ।
पर विदित किसको या कि जोडा ऊं वर्षमत्ता गठा ॥

३३

नव हम दफंगे विप्रकी वस्तुन दृष्टी आयगी ।
तब अश्रुचारा गुगल नेत्रोंसे बहाई जायगी ॥
इन नारियोंके प्रेम रूपी मद्यमें वह चुर हो ।
अष्ट रुग्ण तियि निश्चय करो कहने लगा अतूर हो ॥

३४

छोमी गुरु हो टाटची चेला फहावत सिद्ध है ।
तब लोभमें तो विप्र जी अत्यंत पूर्ण प्रसिद्ध हैं ॥
है शुभ तियि वैशाख शुद्धा अष्टमी पुष्यवारकी ।
इसमें हुआ जो व्याह तो है कुशलता परित्यागकी ॥

३५

कर स्नाह दोनों ओरसे इस व्याहमें बहु द्रव्यको ।
धनका पुर्मा यों कर दिया पाछा न निज कर्तव्यको ॥
यों कर दिया अब मेछ जोडा उन चतुर मां बापने ।
बिन पुत्र छाखोंको किये हा ? देशमें इस पापने ॥

चौथा परिच्छेद ।

३६

हम जोली सखियोंके संगका खेळ कूद वह छूट गया ।
 यहां आने पर स्वतंत्रता देवीसे नाता टूट गया ॥
 (मुझे लगी अब साठ सोलवी पर मेरे पति है नादान ।
 आज रात है सुहागकी पर रुदन वरुं या भंगल गान ॥

३७

सज घन कर यों विचार मनमें सुवती करती जाती थी ।
 आवेंगे पति आवेंगे यह माटा रटती जाती थी ॥
 इतनेमें स्वामीको आते बिलोक मनमें मुल्ल दार्ई ।
 पर छोटीसी उम्र देखकर बज्जासे अति सकुचाई ॥

३८

आदर स्वागत किया खूब पर पति मुहसे कुछ नहि बोले ।
 रुगे निरखने खडे खड़े ही इधर उधर टुक नहि बोले ॥
 अहो प्राण घन इस आसन पर बैठ जरा विश्राम करो ।
 प्रेम प्रीतिकी बातें करके निशिदिन यहां आराम करो ॥

३९

हाथ पकड़ कर निन स्वामीको बिठा लिवा अपने ही पास ।
 बोले नहीं शरमसे बे कुछ मगर हुआ दिलमें बहु त्रास ॥
 इधर उधरकी बातें करके फिर छोड़ी मैंने यह बात ।
 क्या तुमने अन्धास दिया और अब क्या करते हो दिनरात ।

४०

हिन्दीके अतिरिक्त अन्य भाषासे भी क्या परिचित हो ।
 निन गृहिणीसे कह देना सब बातें जो जो समुचित हो ॥
 जपसे गवना करके छाये तुझे यहां पर है प्यारी ।
 छोड़ दिया है पढ़ना मैंने और बना हूं सप्तारी ॥

४१

पढ़ करके मुनिसक नहीं बनना हमें कहींको ना करके ।
 कुरा लक्ष्मीजीकी है बहुत शीत सुफाते आ करके ॥
 सुनकर वचन पतीके बिलकुल मूरखतासे मोरे हुए ।
 बोली नम्र भावसे गृहिणी प्रेम वचन अनुरे हुए ॥

४२-

विद्या पाम देवतस ऐमा लिख। हुआ हम पाते हैं ।
 विद्या देवीका गुण गरिमा नोतिकार नित गाते हैं ॥
 विद्या द्वारा हो जाता है आदि देवका सचा ज्ञान ।
 विद्या बनसे मित्रता है सच्चा जीवनका वह दान ॥

४३

ऐसी मोक्ष दायिनी विद्या है उसको क्यों छोड़ दिया ।
 अभी रहा है समय आपका फिर क्यों नाता तोड़ दिया ॥
 कोबागुनी बस मडक उठी निन गृहिणी मो सुनकर यह बात ।
 ज्ञान सिखाती है गुरु बनकर तू रक्षा मुझको आय वमनात ॥

४४

शयन भवनसे गुस्से हो कर आया निन जननीके पाप ।
 प्याह किया अच्छी स्त्रीसे जो नित देती मुझको भास ॥
 माता कहने लगी पुत्रसे इतने क्यों नाराज हुए ।
 पया दुख हुआ कामिनीसे जो इतने रंजित आज हुए ॥

४५

कहना मेरा इतना ही है और न में कुछ कहना है ।
 जेगोपाल आज हीसे बस मैं अब उसको बरता है ॥
 यों कह निन जूनी स्त्रीसे रमेशने वम गमन किया ।
 उसी रीनसे आनी स्त्री से भी नाना तोड़ दिया ॥

* * * *

पांचवा परिच्छेद ।

४६

सब ऐश्वर्य निपत रहते पति सुखमे व्यंचित जो रहती ।
 वह अबला सुख होने पर भी दावानलमें निम जलती ॥
 हितकी बात कही थी निपसे स्वापीने मुंड मोड़ लिया ।
 गुस्से से पगलसे हो कर मेरा बहु अपमान किया ॥

४७

हाथ प्रभु इन विरहानलमें ऐसे रोक स्फूर्त तनमें ।
 पति विधोग सम दुःख नहीं दृमा रहते शर्म रगे मनमें ॥

यों विचार मनहि मन करती ज्यों सिङ्करीके पास गई ।
नजर पड़ी इक नवजवान पर जिसे देखकर थकित रही ॥

४८

नाम बिहारी उस प्रेमीका जो दुःखान पर बैठा था ।
जिसने अपनी चतुर्गाईसे सर मुनीम पद पाया था ॥
वय किशोर सुन्दर स्वरूप तन जिसको देख लुमाती थी ।
लगी विछोकरन इकटक उसको मनहि मन मुसक्याती थी ॥

४९

ज्योहि अचानक मुनीमकी सिङ्करीके ऊपर नजर पड़ी ।
तो उसने एक परम सुन्दरी युवनी देखी वहाँ झड़ो ॥
एक एककी ओर निहारे प्रेम मग्न हो कर दोनो ।
जैसे सागरमें आई हो सरिता मिलनेको मानो ॥

५०

मांति मांतिकी चीजें लाकर मुनीम जी दे आते थे ।
किसी प्रकार गुप्त गू बातें करनेको छलचाते थे ॥
इधर पूर्ण रूपसे युवती मोहित इन पर विचलित थी ।
पति वियोगकी दावानीमें यह निशिगामा जलती थी ॥

५१

मनमें इच्छा उन दोनोंकी मिटनेकी बढ रही थी ।
किन्तु निराशा गुगल मुर्तिको सहसा रुदन कराती थी ॥
एक दिवस जन शून्य गेहमें बैठ अचानक ही हो गई ।
प्रेम मग्न हो मिले परस्पर दुःख व्यथा सब ही मिट गई ॥

५२

बोला उत्कण्ठित होकर वह अहो प्रीति करने वाली ।
मेरी प्राणधार सुन्दरी निन मन बमने वाली ॥
धन्यवाद ईश्वरको दे कर बार बार मैं बलि जाऊँ ।
प्यारे तुझको गले लगाकर निन जीवनका मुल पाऊँ ॥

५३

बार बार यो मिटे परस्पर खूब प्रेम रस पान किया ।
औ स्वयं होकर भगवाना बढ भी मनमें ठान लिया ॥



प्रेम नसेमें मस्त युगल हो द्रव्य बहुत लेकर भागे ।
उनके दूर निकलने पर ही इधर सेठजी भी जागे ।

९४

खेद हुआ घन जानेका पर प्यारी बहु भी चली गई ।
आश्चर्यित हो लगे सोचने हाथ विधाता मंत्री पड़े ॥
या ऐश्वर्य पूर्ण उमको फिर भग जानेको क्यों मुझी ।
काळा मुह का दिया हमारा नाक कड़ी तो वह दुझी ॥

९५

यों शोकाकुल देख पितृको रमेशने यों बचन बहे ।
जा घर नार कुलउन है बच ता परके नर दुःख सहे ॥
बाल विवद कियेका हमको पूर्ण नतीवा आन मिठा ।
बिना विचारि बिना आपने दिश मुझे हा ? नहर पिठा ॥

९६

करनेसे अब शोच फिर वह बापित लोट नहीं सकनी ।
छोटे तो भी इस गृहमें नहीं छायां उसको गिरसकती ॥
अब कीजे वह उपाय जिसमें पकड़े शीघ्र विहारीको ।
घनके सहित बुला कारागृह भेजे निमक हरामीको ॥

९७

जोड़ी युगल प्रेम मुरति वह वह चन्द्र तेन हरने वाली ।
पहुंची बम्बई शहर अनुपम महामोद काने वाली ।
एक मकान बड़ा ही विस्तृत लिया बड़ी फेशन वाला ।
रहने लगे उसीमें दोनों प्रेम भावकी जयमाला ॥

९८

दाम साइकल मोटर तांगे खूब ही वे दौड़ाते थे ।
कभी मुद्देधर चौपाटीमें कभी कहींको जते थे ॥
हवा बिलाव नित नूतन ही उस रमणीको जाकरके ।
किये व्यतीत कई दिन ऐसे प्रेम नसेमें आर के ॥

९९

॥ चन दोन्नाय प्रेम बना खूब मशहरी करते थे ।
॥ हि भी दुनियाकी वे इसको स्वर्ग समझते थे ॥

किया रंगमें भंग एकदम पोलिसने उनके घरमें ।
दुई अचानक वहां बिहारीका झारंट लिये करमें ॥

१०

होश हवास उडे उनके ओं सुख गये मुँह क्षण भरमें ।
टूट गया अब प्रेम हमारा यही समझें निज मनमें ॥
गिरफ्तार कर लिया हथकड़ी डाल शीघ्र चालान किया ।
रही अकेली यशोदा लज्जासे मुँह ढाँक लिया ॥

६१

हरे मुरारे मुकुन्द वेश्य कहां अकेली अब जाऊँ ।
मेरा जीवन मूल बिहारी प्रेम पियाया कहां पाऊँ ॥
फिर दृढ़ भाशा धर निज मनमें बली वहाँमे बह रमणी ।
गोर अन्धेरे में नहि छिपती कोई छिमाई रूपा मणी ॥

६२

शहर छोड़कर कुछ दूरी पर एक मदारी मिला उसे ।
माल बिछाकर पकड़ी उसकी बिड़िया सट्टा युक्तिसे ॥
उसे साथ ले घाम घाम वह फिरता था मंगता खाता ।
मई जावे तहँ उस युवतीको अपने संगमें ले जाता ॥

६३

अत्र नम्र निज खेल दिखाता और घूमता फिरते थे ।
दौर योगसे सरायमें दोनो ही नकर टहरे थे ॥
उसी स्थान पर एक मुनाफिर आराम करता बैठा था ।
मानो किसी गुमे व्यक्तिकी खोज लगाना चाहता था ॥

६४

इतनेमें उस युवतीने शत्रु कहा आप कहँ रहते हैं ।
विचार मनमें करके साहब वोन शहरको जाते हैं ॥
पृथ्वा रहता हूँ युवती रामचाल है नाम अटो ।
क्यों आगृह जाती हो इतना तुम अना कुछ भेर बूँहो ॥

६५

छिपटी गले सनल नेत्रोंसे रद्गद वाणी उचारी
बड़े लाटसे पाली थी वह मुता तुम्हारी हूँ प्यारी



मेरो राम कहानी मुझको कहनेवा। अवकाश नहीं ।
क्या बूढ़को थोकर कोई पामक्का है आम कही ॥

६६

लिखा हुआ या यही माग्यमें पिता दोष अब किमको दूं ।
अब विचार दृढ मनमें है कि यहीं आत्म हत्या कर लूं ॥
तेरी भगवानेकी चिंता सदा तीर सम लगती थी ।
फिर भी मिथनेको दृढ आशा मनम धीर बचाती थी ॥

६८

क्रिया इयाम मुह लेने मेरा दुसह दुःख जग सहता हू ।
पर देता नहि तूरो दोष में आना कर्म सञ्ज्ञता हू ॥
विनय एक यह करता हू अब मुझे मुद मन दिखलाना ।
तेरी इस नदन बाणोसे हमें कभी मत छुड़वाना ॥

६९

इतना कह कर रामलाल निज सुता बिदलतीको समकर ।
जले बरांसे घेगवान हो गणेशजीको ही भजकर ॥
हाय ! प्रभू मैं निजकुर्मसे इतनी दुष्टा आन हुई ।
जो मेरा मुंह अलोकनसे अहा ! पिताको लाम हुई ॥

७०

पहुं जलाशयमें जाकर अब सिन्धाय उसके मुक्ति रह्यो ।
मरनेके भतिरिक्त अन्य जीनेकी मेरी मुक्ति नहीं ।
वहा कूबके समीप जाकर बाद्य व्याह करने वालों ।
निज बुद्धिसे विचार करके मेरी ओर दृष्टि डलो ॥

७०

बह्मदेव कंजे अब रक्षा शायण तुम्हारी आती हूं ।
राम रम श्रीराम तुम्हारा नाम अन्तमें गाती हूं ॥
यों कह कर वह गिरी कुएमें समझ सोचलो वाचक वृन्द ।
प्रणाम करता 'व्यास' सज्जनोंके चरणोंमें यह सानन्द ॥

ગુજરાતના દિ૦ જૈનોની સાહિત્ય- સેવા અને સમાજસેવા ।

(ગદ્ય અંકથી ચાલુ)

“ વર નહિ મળવાથી બાળ લગ્ન-દૃઢ લગ્ન, કળેઝાં કરીએ ઈંદ્રો એ કુચાલ આપણામાં એ-ટલો સન્નરડ પેસી ગયો છે કે-આપણામાનાં કેટલાક નિર્ધન કુળવાન તેનાથી અવિવાહીતજ રહી ગય છે. તેણે કરી આપણામાં કન્યા વિક્રય અરે અસ્થિ રૂધિરનો વિક્રય કરવાની રૂઢી દાખલ થઇ છે. આપણે અહિં સા પરમેશ્વરના ઉપાસક જૈન તે આપણાજ શરીરથી ઉત્પન્ન થએલી માથ જેની નિર્મળ કન્યાને દ્રવ્યને માટે કસાઇવારે આપીએ, એ કેટલું દિવ્યગીર થવા જેવું છે.

કન્યા વિક્રયના પ્રતાપે કરીનેજ આપણામાં જાત્ય અને નિત્ય એમ બે કુળો પડી ગયા. તે લોકોમાં કુળનું અભિમાન ધુસી ગયું. આપણે એટલે સુધી આગળ વધ્યા કે ધર્મનો કે શક્તિનો ડર રાખ્યા સિવાય કન્યાનું લીલામ રવેચ્છા પ્રમાણે કરવા લાગ્યા.

કન્યા વિક્રયના પ્રતાપે કરી દ્રવ્યવાન પુરુષો ભારતની ભવાઈઓ કરવા લાગ્યા, અર્થાત એક છતાં બીજી-ત્રીજી લાવવા લાગ્યા. જેણે કરી ધર્મનો અંતર રહ્યો નહિ. જેથી સાઠ વર્ષના ડોસા પણ સુવાન, પ્રહુ લાવવા ખુદે હાથ પેસા ખરચવા લાગ્યા. અને અઠગક દ્રવ્ય આપી ધરે બાર વર્ષની બાળાના મુખાવિંદનું દર્શન કરવા લાગ્યા. અને કન્યાના પિતાની છુદિમાં ધુળ નાખવા લાગ્યા. તેની સાથેજ શક્તિની પડતી કરવાનો પ્રયાસ કરવા લાગ્યા કેમકે તેમની શક્તિ દશીજ થઇ ગએલી હોવાથી તેઓ સંતાન પ્રાપ્તિ કરી શકતા નહિ. પણ મુખાવિંદના દર્શન-અલ્લીગનથી સંતોષ માનતા. છતાં કન્યા તેમને પિતા સમાનજ લેખતી. ને અન્યથી મદનજ્વર શાંત કરતી પોતાના દૃઢ પંતિને વચ્ચાતનામાં મોટલી દેતી. અને પોતે ગર્ભ ધારણ થવા દેતી

નહિ. એવી રીતે એક બાળુ વંશદિ એવી રી. અટકવા લાગી, ત્યારે બીજી બાળુ કેટલાક કુળવાનો ખોટો ડોળ બતાવનારાઓ પોતાની કન્યા મોટપણે યોગ્ય વર નહિ મળે એ, બીકથી બાળુ લગ્ન કરવા લાગ્યા, જેથી પણ વંશ દૃઢ અટકવા લાગી. ત્યારે ત્રીજી બાળુ દ્રવ્ય હીન બહુ એ દ્રવ્ય સિવાય કન્યા નહિ, મળવાથી નિર્વંશ થતા ગયા. એમ ચારે બાળુથી આપણી વસ્તી ભાગતી ચાલી. આવી રીતે આ તે આ સ્થિતી બે દશ વર્ષ દાયમ રહેશે તો આપી પણ હીન દશા આવ્યા સિવાય રહેજો નહિ.

મારી દરેક આગેવાન બહુએને વિનંતી છે કે તેમણે પોતાની શક્તિને સુધારી અન્ય બાણે ખપતી શક્તિથી કન્યા વહેવારમાં જોડવા પ્રયત્ન કરો; અને કન્યાઓની આશીય મેળવી તમારા સમાજમાં દૃઢ કરો !

ગુજરાતની છિન્ન ભિન્ન જૈન ભતીઓ અંધતાનો મહાભંન શીખી સામ સામી સેટી-મેટી વહેવાર દાખલ કરે તો જૈન સમાજની ઉન્નતિ થતાં વાર લાગે નહિ. તેની સાથેજ કેટલાંક કન્યા સિવાય પડી ભાગતા ધર અટકી પડે નહિ. વળી યોગ્ય દંપતિના સંગઠનથી લાયક સંતાન ઉત્પન્ન કરી શકાય તો ભવિષ્યમાં તેઓ કંઈક મુડા ચળદારી થકે. સરકારી અંકુશ સિવાય આપણે એકે કુધારા દૂર કર્યા નથી એ આપણી નિર્ભાવ્યતાજ છે.

સમગ્ર ગુજરાતના દિગંધર જૈન સમાજમાં દૃષ્ટિપાત કરતાં તેમની વસ્તીના પ્રમાણના મેંકે એક જણ સમાજ સેવામાં ગાગ લેનાર બાગેજ જણાઈ આવે છે. કદાચ સુધારકની ગણતરીમાં ઉચ્ચ શિક્ષણ (રાજકીય) લેતા અને લીધેલા યુવાનેને દાખલ કરીએ તો તે સંખ્યા મેંકે બે જોડલી થવા જાન-પણ તે કામ લીગલની રાજગારી રંગીથી નામ આપી વાદામાઈ સાથે પરણતી આનંદ માનવા જેવું છે. કેમકે રાજકીય કૌલરંધ્રી લેતા પેકો મેંકે નેવું જણાવું શ્રદ્ધાળુ જૈન સમાજ. દૈન શાસ્ત્ર તરફ હોવાનું નથી એટલે તેમને જરાપણ સુધારના પ્રયાનથી સ્વયં સેવક માની શકાય નહિ.



આહુ વાતાવરણમાં એક ધરમાં બેઠી વાતો કરનારા તડાક્ષીયા એવકો ઘણા જરૂર આપે છે. પણ બહાર તીકળી બને રીવક ઘની પોતે સુધરી અન્યને સુધારનાર કોઈ વિરજાજ નીકળી આવે છે.

બંધુઓ ! આપ એમ ન ધારશો કે-અન્ય ભતિઓ સાથેના સંગતથી આપણી મોટાઇ નાળ પામશે ? તમારી મોટાઇ તમારામાં મેળવતા હશે તો પછી પણ સારી રીતે જળવાઈ રહેશે. વધારામાં તમે અનેક નરનારીના આશીર્વાદ મેળવી મુખને ચિખરે રચાવ પામશો.

હવે હું હિં જૈનને જો સમાજ સેવા તથા સાહિત્ય સેવા કરી છે તેમને ધન્યવાદ સહ અભિનંદન આપી તેમના નામ ચિરસ્મરણીય જનાવવા અમે પ્રસિદ્ધ કરી આ લખાણને બધ કરીશું. ગુજરાતના સમાજ-સાહિત્ય સેવા કરનાર

ઉત્સાહી નરરતનો.

હરજીવન રાયચંદ શાહ આમિદ નિવાસી-બકતાબર રોજ, કલ્યાણ મંદિર રોજ, જૈન ધર્મની માહિતીના પ્રકાશક અને ગુજરાતમાં હિં જૈન ધર્મો પ્રચાર પ્રકાશિત કરનાર, અને અન્ય ધાર્મિક સામાજિક લેખ લખનાર.

સ્વ. શંકર માણેકચંદ ડોશચંદ ગવેરી-મુંબઈ અને કેરળીયન.

જૈન મત ગુજરાતી કથા સંગ્રહ, જૈન નીચમ પોર્સા-રેતકરક જાવકાચાર આદિ પુસ્તક પ્રકાશક અને ગુજરાતમાં રામકીય અને ધાર્મિક કેળવણી દિગંધર જૈનને અપાનવા અમદાવાદમાં બોર્ડિંગ સ્થાપનાર અને અન્ય ધાર્મિક સામાજિક-કાર્યોમાં આમ લેનાર.

દિગંધર જૈન પત્રના સ્થાપક દિગંધર જૈન નરજીવ ગુણચંદ કસનદાસ કાપડીયા સુવેત અને કેરળીયન.

દિગંધર જૈનના સંપાદકનું કાર્ય નિઃકાર્ય-પણે કરનાર, જુદા જુદા ધાર્મિક-સામાજિક-ગુજરાતી ભાષામાં પૃથીસથી ત્રીસ પુસ્તકના પ્રકાશક અને ઉત્સાહી સુવક બધ.

શંકર માણેકચંદ શાહ નાર.

ધર્મ પ્રજોષિની, આશ્રમનાપાદ, નિત્ય નિર્ધમ પૂજના પ્રકાશક અને દિગંધર જૈનમાં લેખ લખનાર.

મેતીલાસ ત્રીકમદાસ માળવી બાકરાજ.

દિગંધર જૈન સત્તવાવળી, અનિત્ય મંચાસાત, છનાસવ-ચમન, અક્ષતક રોજ, સુતક નિર્ણય, આદિ શ્રેષ્ઠ પ્રકાશક, દિગંધર જૈનના મુખ્ય લેખક, સમાજમાંથી કુધારા દુર કરવાની પ્રયામ કરનાર.

ચીમનવાવ શુભાશાહ શાહ-કરમસંદ

સ્વીનાર જન કથા, વિદ્યાલક્ષ્મી સંવાદ-એ જે નાનકડા પુસ્તકો દ્વારા ગુજરાતી પંચે દમ દિગંધર જૈનને રસીવાર જન તરફ પ્રીતી ઉપજ કરનાર.

૨૪૦ ધર્મચંદ-અંકેશ્વર.

બાળમોષ જૈન ધર્મ, મોલીસાશા, આશ્રમના સ્વરૂપના પ્રકાશક, જૈન સાહિત્યમાં પ્રવેશ કરનારને મોલીસાશા (ધર્મ ચર્ચા) થી માર્ગ સરળ કરી આપનાર, પાંચીતાશા તીર્થને તન, મન, ધન, અર્પણ કરનાર ઉત્સાહી ધર્મ બધ.

શ્રી ભદ્રારક સુરેદ્રકીર્તિ-સોજના

સર્વેશ્વર પૂજન વિધાન, પ્રાપ્તિતના પ્રકાશક-ગુજરાતના એક મુદ્દયાચાર્ય.

મોહનલાલ મથુગામ શાહ કાણીસા.

જૈન સંસ્કાર વિધાન અને લગ્ન વીધીના પ્રકાશક, ગુજરાતના હિં જૈનને વિવાદ સંસ્કાર જૈન વીધીથી અપાવવા જૈન લગ્ન વિધીના સંગોષ્ઠ અને સરજાત કરનાર, દિગંધર જૈનના મુખ્ય લેખક, ને જ્યોતિષવૈતની પ્રચાર દરના કિમંગ રાજનાર ઉત્સાહી યવક.

તાંતીચંદ માણેકચંદ શાહ-ચૈનસિધુ.

દિગંધર જૈનના મેવા બાંધે લેખો લખનાર, કલ્યાણ સખન પ્રકાશ કરી મુદ્દાઓ સ્થાપન કરવા પ્રયત્ન કરનાર.

સ્વ. લલિતમા પ્રેમાનંદાસ ગોરસદ.

ગુજરાતના દિગંધર જૈનના આગેવાન-સામાજિક ઉર્જાત કરતા ધાર્મિક ઉત્તમતા વધારે પ્રીતિવાદ મેવાના કોમનાં પ્રથમ મુધારક.

ઉદાહરણ લેવામાં શાહ અંકેશ્વર.



લઘુ અભિષેકનાં પ્રકાશક, દિગંબર જૈનના લેખક, જૈન લગ્ન વિધિના હીમાયતી.

જેસંગભાઈ ગુલાબચંદ મલીખાતંત્ર.

મેવાડા કોમળા વાંસા મેવાડા હિત પર્ષક સમાના સ્થાપક અને મેવાડાની ઉન્નતિમાં તન, મન, અને ધન સ્વર્પણ કરનાર વૈદ્ય મહાશય.

એવી રીતે જે જે સજ્જનોએ સામાજિક અને સાહિત્ય મેવાળા માગ લીધા છે તે દરેકને ધન્ય વાદ થશે છે.

ગુજરાતના દિગંબર જૈનમાં આરી જુગ સંખ્યાજ સાહિત્યક્ષેત્રમાં પ્રવેશ કરે છે. ત્યારે મેવાળર જૈનમાં હબરોની સંખ્યામાં વિદ્વાન ટ્યાતિ ધરાવે છે એ એ પામવા જેવું છે કે-આપણે સમજી હોઈ આ બાબત કંઈ કરી સક્યા નથી.

બંધુઓ ! હોરો ! તૈયાર થાઓ ! ને સમાજમાના કુધારા ફર કરી જુદા જુદા જૈન સમાજોને એક સમાજમાં મેળવી એક ગુજરાત દિગંબર જૈન સમાજ એ નામથી સ્થાપન કરો. અન્યોન્ય રોટી બેટી વહેવાર દાખલ કરી અન્યોન્ય એકજ શાંતિના જોડાણની માફક જોડાણવર્ષ પ્રતિષ્ઠા પૂર્વક વ્યવહારિક ક્રિયામાં દૃઢ થાઓ. અને તે એકજ બળથી તમાની ગએલી શ્રેષ્ઠતા પાઝી લાવો. ને તમારી પાને સમાજનો મુખ્ય કશ્ચ સર્વનો વિમાન સધી અગ્રણી, એમ મારી તે પરમાત્મા પ્રત્યે પ્રાર્થના છે.

ૐ શુભમ ૐ તત્સત્ ૐ શાંતિ
લી૦ સમાજ સેઠ,
જેઠ દુઝી હદય.

તૃતીય શાસ્ત્રિ પરિપદ

સમાપત્તિકા વ્યાખ્યાન ઓર પ્રસ્તાવ ।

કાનપુર મહાસમાકે દિનોમે દિ૦ જૈન શાસ્ત્રિ પરિપદકા તૃતીય અર્થવેશન સમારોહકે સાથ હુવા યા તિસમેં મુયોગ વિદ્વાન સમાપતિ પંલાલારામજી શાસ્ત્રિકા વ્યાખ્યાન હસ પ્રકાર હુઆ યા ।

બદનોય ત્વાગે વ્રતનારિયો, મહાસમા ઓર દ્વાગતેકે રિગી સમાકે આનનીય સમાપતિ મરોદય, શાસ્ત્રિયો, સમ્પ્રદાય ઓર માતાએં વ મગનિયો !

૧-જવ કિ છોટો વડો સમાજોકે લિયે મુયોગ, દુરદર્શી, વિદ્વાન સમાપતિકે નિર્વાચનકી ગહરી ગવેવળા કી જાતી હૈ, તો મુઝેં યહ વગડાનેકી કોઈ આવશ્યકતા ટોપ નહીં રહ જાતી કિ હા શાસ્ત્રિય પરિપદકેકે લિયે કિતને યોગ્ય ઓર દુરદર્શી વિદ્વાનકા નિર્વાચન કરના અવશ્યક હૈ । શાસ્ત્રિ પરિપદકા લામ શાસ્ત્રી હી હો સત્તા હૈ, હસ નાતે મહે હી મૈ હમ પદકા અધિકારી એવં ઉમ્મઝ યોગ્ય સમજા નહં પાનુ જારો અદુબોલોકી જૈસો મુલતર વિદ્વત્તા હમકે લિયે અપેક્ષણીય હૈ, ઉમ્મઝ અંશાંશ મી મૈં અપનેમેં નહીં પાના । એવી વિષમ સમ્પ્રદાયેં હન પરિપદકે વિચારશીલ શાસ્ત્રિ યોને મુઝેં હસ પદકા મહાનુ ગુરુતર માર ત્વો સોના ? હસકા અન્તસ્તત્ત્વ વે હો જાને । યદિ હમ વિષયમેં મૈં ઉમ્મઝે શાસ્ત્રાર્થ કરતા હું, તો મો મુઝેં અશા નહીં કિ મૈં હસ વિશાલ શાસ્ત્રિ મળહલકે સમક્ષ પ્રહા વિષયમેં વિનય વામઝ । અત્રુવ અવ હસી નિશ્ચય પર કિ તિસ પ્રકાર ઉન્હોને મુઝેં યદ ગુગ્ગર કાર્યમાર સોના હૈ,

નર્દ ફસલકી સ્વદેશી—

પવિત્ર કાશ્મરિ કેશર

મુલ્ય ૧(=) તોલા ।

પતા—મૈનેજર દિ. જૈન પુસ્તકાલય—મુરતો.



उसी प्रकार वे मुझे कार्यमार्ग बतानेमें भी सत्परामर्श एवं सहायता प्रदान करेंगे। मैं उनके दिये हुये सम्मानका परम ध्यापारी एवं कृतज्ञ बनता हुआ इस पदको पादर स्वीकार करता हूँ।

२-सम्यक् बांधवो ! जगत्में गहरी खोज करने पर भी केवल दो पद्योंकी उपलब्धि होती है (१ला) जड (२रा) चेतन। इन दोको छोड़ कर तीसरा कोई पदार्थ किसी युक्ति और प्रमाणसे सिद्ध नहीं होता। जो कुछ अनन्त पदार्थोंकी सृष्टि आपके समक्ष उपलब्ध है, जिसमें कि आप स्वयं वस्तुओंका बोध करते हैं वह सब उन्हीं दो तत्वोंका विचार है। इन दोनोंमें जड तत्व पाँच भूगणोंमें नष्ट हुआ है। जिस जडसे चेतनका सम्बन्ध है, वह पृष्ठ तत्वके नामसे प्रख्यात है। आन जो कुछ भौतिक उन्नति पाश्चात्य देशोंने की है, वह इसी पृष्ठ तत्वकी अचिन्त्य एवं मह शक्तिपौका परिणाम है। दोनों ही तत्व, विज्ञाशशील हैं। अंतर इतना है, कि पृष्ठ त्व स्वयं विगशी है, चेतन प्रयत्नसाध्य है, दोनोंके विज्ञाश भेदसे ही विद्वानोंको ध्येयका परिज्ञान हो जाता है। विज्ञाशभेद और ध्येयका परिज्ञान ये दोनों बातें अभी सूत्र रूप फही गई हैं। इनका संक्षिप्त खुलासा इस प्रकार है:-यद्यपि पृष्ठ त्वका अनेक रूपोंमें आविष्कार किया जाता है, उसका विकास भी प्रयत्नसाध्य ही प्रवृत्त होता है तथापि सुख विचारसे यह बात अच्छी तरह समझमें आ जाती है कि पृष्ठ त्वी भिन्न भिन्न शक्तियोंका अनुसर एवं अनुकूल समुदाय

मानकी ही आविष्कारों द्वारा सिद्धि की जाती है। न कि शक्तियोंकी वृत्ति की। यदि शक्तियोंकी व्यक्ति पृष्ठ त्वमें प्रयोग साध्य ही हो तो स्वयं किसी स्वरूप एवं परिमाणमें उभ आतीकी व्यक्ति जैसी कि विद्वान् वास्तविक प्रयोगमें स्मर्याति की जाती है, स्वयं नहीं होनी चाहिये। परन्तु आन सभी देख रहे हैं, कि वाष्पका प्रयोग आन बड़े २ यंत्रोंको चला रहा है, वह उन्हीं स्वयं उत्पन्न अग्निके संचार और नटके सम्बन्धसे बन २ वर व्यर्थ जा रहा है। निम्न विद्युच्चक्रिये आन टेलेफोन, टैलीग्राफ, आदि अनेक आविष्कार किये जा रहे हैं वह विद्युत् एक महान् शक्तिको किये हुये भयंकर रूपमें स्वयं उत्पन्न होती है। और वादलोंमें विघीन हो जाती है। जो शब्द विचारके तार द्वारा सहस्रों कोश दूर चला जाता है, वही शब्द परस्पर जड त्वकोसे स्वयं पैदा होकर महान् विस्तृत गगनका मेदान कगता हुआ सहस्रों कोश चला जाता है। मधुमृदादिके शब्दोंके सिवाय वादलोंकी गण्डाष्ट एवं विनलीकी टटतड़हाट इसके ज्वलन्त उदाहरण हैं। इस कथनसे तात्पर्य यह निराकरना चाहिये, कि पृष्ठ त्वकी शक्तियाँ अचिन्त्य हैं, और वे स्वयं विकसित हैं। भिन्न भिन्न माकेतिकरूपमें उनका समुदाय एवं समुपयोग करना मात्र प्रयत्नसाध्य है। चेतनमें यह बात नहीं है, उसका विज्ञाश विना प्रयत्नके हो नहीं सकता। उसकी शक्तियाँ वहिलेसे व्यक्त नहीं हैं। किन्तु अनादिनाइसे निगोवारिपर्यायोंने रत्नके कारण सर्वथा छुपपट्ट बनो रहना हैं। पीछे उपदेश -



दिग्दण, घटविधान, मुनिचर्या आदि कारण कलशों द्वारा बड़ी कठिनाईसे उनका आवरण दूर किया जाता है। आत्मीयविशेष प्रत्यक्ष साध्य है। इसलिये उसकी चरमोन्नति होनेपर आत्मा फिर कभी अशुद्ध एवं अविकाश नहीं बन सकता। परन्तु प्रदलका जो कुछ विकाश है वह स्वयं होता है, इस लिये कभी शुद्ध कभी अशुद्धरूपमें आया करता है। सर्वथा शुद्ध होने पर भी वह फिर अशुद्ध हो जाता है। इसी लिये प्रदलकी उन्नति नहीं कही जा सकती। उन्नति शब्दका वाच्य सुचार है। विचार करने पर भौतिकवादमें कभी कोई सुचार नहीं होता है वह सदा एक रूपसे दूसरे रूपमें आता रहता है। भौतिक दृष्टिसे जिसे सुचार कहा जाता है, वह भी वास्तवमें, कुछ सुचार नहीं किन्तु रूपान्तर मात्र है, इसी लिये आत्मीय सुचार ही सुचार कहा जा सकता है। जिनने अंशमें आत्मीय विश्वास है, उतने ही अंशमें आत्मोन्नति कहना चाहिये, इस लिये उन्नति आत्मा ही की हो सकती है, प्रदलकी नहीं। जो लोग भौतिक उन्नतिमें ही अपनी एवं अपने देशकी उन्नति समझते हैं वे भूल काते हैं। भौतिक उन्नति वास्तवमें कोई उन्नति नहीं है। किन्तु व्यवहारिक-निर्वाहका साधन मात्र है। विद्वानोंका ध्येय आत्मोन्नति होना चाहिये और उसीके उपायोंकी खोज करना चाहिये।

आत्मोन्नतिमें मूलपावन केवल आत्मोपयोगी तत्वोंका चिन्तन, ध्यान, सत्य आदि है। परन्तु बिना पदार्थोंकी यथार्थ परिस्थिति एवं आत्मीयतत्त्वका पुरा रहस्य समझे अन्तर्मुखी

असम्भव है। इसलिये सबसे प्रथम पदार्थोंकी यथार्थ प्रतीति वांछनीय है। उसके बिना बहुत कुछ ज्ञानका विकाश होने पर भी मदिरापायीके समान जीव यथार्थज्ञानी नहीं बन सकता, खास कर आत्मोपयोगी तत्वों तक उसको पहुँच नहीं हो पाती। क्यों नहीं हो पाती? इसके उत्तरमें मदिराके समान कर्षक अवरोधके और कुछ नहीं कहा जा सकता। जो लोग आत्मीय विचार शुन्य केवल भौतिक आविष्कारोंमें लगे हुए हैं वे खोजी विद्वान् अवश्य समझे जायेंगे। परन्तु उनका वह ज्ञान कुपति विकाश है। यथार्थ प्रतीति और ज्ञानके होनेपर भी बिना आत्मसम्बंधित पदार्थोंका त्याग किये आत्मीय उन्नति कभी नहीं हो सकती। इस लिये आगमोक्त विधिके अनुसार हमें पदस्थानुसार क्रम २ से आत्मेतर पदार्थोंका संबन्ध छोड़ना चाहिये। जिनने अंशमें दृष्टा बाह्य पदार्थोंसे उपेक्षित होंगे उतने ही अंशमें हमें आत्मीय आह्लाद एवं निर्मलता प्राप्त होगी।

१-जैनधर्म द्वारा कही गई तत्त्वव्यवस्थापर दृष्टि डालने, एवं उसका मनन करनेसे, युक्ति और प्रमाणपरिचयका हृदय, यह स्वीकार विये बिना नहीं रह सका, कि जैन धर्म सर्वज्ञानीन है अथवा जैनधर्म ही सर्वज्ञप्रणीत है। क्योंकि जैनधर्म द्वारा उतायी गई पदार्थ व्यवस्था, युक्ति प्रमाण और आगमसे अलङ्घित है, अविरोध है, अनुपपन्न गम्य है। ऐमे सन्मार्ग प्रदर्शक सर्व जीव हितकारी जैन धर्मका जगत्में प्रचार करना शंकाकारोंकी शंकाओंको दूर करना, शैथिल्य न काने देना, जैन तत्त्वज्ञ

सृष्टि बनी रहै इसके लिये संन्याओंको सुव्यवस्थित और सुदृढ़ करना इत्यादि बातोंको सिद्धिके लिये ही इस शास्त्रपरिषद्की योजना है ।

उपर्युक्त कार्योंकी सिद्धिके सिवाय शास्त्रपरिषद्की मन्त्रसे बड़ी जिम्मेदारी यह है कि सामाजिक और धार्मिक व्यवस्था आपसीसुल्लसदा ढङ्ग बनाये रखना । वर्तमानके सामाजिक प्रवाहने कुछ लोगोंके हृदयमें यह विचार तरंग पैदा करा दी है कि सामाजिक बातोंमें धर्मकी कोई आवश्यकता नहीं । समानसुधार सदा सपर्यायसार हो सक्ता है, इसे केवल विचार स्वतंत्र करा जा सकता है । किसी सुक्ति और प्रमाणकी भित्तिपर इस कथनकी रचना नहीं है । यदि सामाजिक सुधार धर्मकी कोई परवा नहीं करता तो फिर समान व्यवस्था क्या वस्तु है ? लोकनीतिकी मर्यादा क्या है ? अनेक तर्काओंके उठाने पर परिणाम यही निकलेगा कि धर्ममूलक समान व्यवस्था ही हितकारी एवं उपादेय हो सकती है । अन्यथा नहीं ! दूसरी बात यह है कि धर्ममूलक समान व्यवस्था माननेपर ही धार्मिक व्यवस्था स्थिर रह सकती है, धार्मिक समाज ही धार्मिक उन्नति कर सकता है । क्या धर्म विहीन किशाचारी समाज कभी धर्मपरायण बन सकता है ? आज विषवाविवाह और वर्णव्यवस्था जैसी धर्मविरुद्ध बातें सुनी जाती हैं जिनमें कि समानका अवश्यम्भावी पतन सुनिश्चित है । इन्हीं उत्सुतमाषिवोंके विचारोंका दुष्परिणाम है इसलिये सामाजिक व्यवस्थाको आगमनसुल्लसदा रखना, इसी प्रकार जैन

सिद्धान्त अथवा कृपि वाक्योंकी रक्षा शास्त्रीय बोध शुन्य लोगों द्वारा फैलाये जानेवाले मिथ्या विचार एवं सिद्धान्त विपरीतवालोंका समुक्तिक निराकरण कर जनताको सुपार्श्व पर रखना, यह सब जिम्मेदारी इस परिषद्के शास्त्रियोंकी है । “ कुछ शंका समाधान करलेना, अथवा किसी विषय पर शास्त्रार्थ कर लेना, यही इसके अधिवेशनका सद्व्ययोग है । ” ऐसा जिन सज्जनोंका कहना है, उन्हें अमीतक इसके दायित्वपूर्ण कर्तव्यक्षेत्रका ध्यान नहीं है ऐसा मालूम होता है । आगमोक्त मार्ग बजाकर सामाजिक और धार्मिक व्यवस्थाकी रक्षा और वृद्धि ये दो कार्य इस शास्त्रय परिषद्क द्वारा ही सिद्ध हो सकते हैं । इनका सुव्यवस्थापन ही जैन समाज और भैरव धर्मका सच्चा उत्पति है इस लिये शास्त्रपरिषद्का उपयोगिता और कार्यगौरव कितना आवश्यक और महत्वका है । यह बात सबके ध्यानमें आचुकी होगी ।

४ अमीतक परिषद्ने अपने दायित्वोंको यद्यपि पूरा नहीं किया है, फिर भी इसके कार्योंसे बहुत कुछ सन्तोष होता है । धर्मविरुद्ध लेखनी उठानवालोंको समुक्तिक और सप्रमाण लेखों द्वारा निरुत्तर बनाना, पत्र-पत्र सात्वक व्याख्यानों द्वारा धर्म प्रमत्त करना, जैन सिद्धान्त द्वारा दार्शनिक तथा सामाजिक सिद्धान्तोंके अन्तर्गतोंका समीचीन रहस्य बतलाना, ये सब इसीके कार्य हैं । यह तीसरा अधिवेशन है । तीन वर्षके कार्योंसे इसकी भावी समुन्नतिमें कुछे किसी अंशमें निराशा नहीं होती । विस्तारो ।



जैन धर्मकी उन्नतिके लिये किन २ व तीनों समानकी आवश्यकता है इस विषयमें मेरे निम्नस्थ विचार हैं:—हर एक समानकी उन्नति विद्वानों द्वारा हुई है। हमारी समाजमें इस समय ऐसे विद्वान् तैयार करनेकी बड़ी आवश्यकता है जो एक २ विषयके पूर्ण निष्णात हों।

शारीय सिद्धान्तोंके जानकार बने, इसका सरल उपाय शस्त्रमायें हैं। आजकलके देशोंकी सम्प्रदायसे मैं कुछ हानि नहीं समझता हूं। इतना अवश्य हुआ है कि इस प्रतिद्वन्द्वतामें शास्त्र समाजोंका प्रचार कम होता चला जाता है।

शास्त्रीय वक्षामें छात्रके पहुंचने पर सिद्धान्तके साथ गणित ज्योतिष, विज्ञान, भूगोल, वैद्यक, न्याय—उपाकरण, साहित्य आदिमें कोई एक विषय प्रधान रूपसे पढ़ना चाहिये। किसी विषयके समस्त विद्वान् इसी व्यवस्थासे बन सकते हैं, इसके लिये पितृ २ पित्र्योंके विषय ही शास्त्रीय वक्षोंके छात्रोंके लिये निर्वाह योग्य अच्छी वृत्तिया देनी चाहिये। इसके सिवाय धर्माभ्यवहार, महाभयलालि, सिद्धांत ग्रंथ उपलब्ध होते दृष्टे भी जो अभी तक पठनपाठनमें नहीं आ रहे हैं उन्हें पढ़ानेकी आवश्यकता है। यहां पर मुझे जैनधर्मभूषण ब्रह्मचारी शीतलप्रसाद के उपवास और कर्माटके पर्वोंकी जायदादकी बात भी याद आती है। क्या सिद्धांत ग्रंथ उनकी निजी सम्पत्ति है या इसीकी सच्ची विनय कहते हैं? आचार्योंकी एक महती कृतिकें हम रहस्यसे धर्मप्रचारमें पूरी बाधकता समझना चाहिये। मैं इस विषयमें खेद पगट करके ही संतुष्ट नहीं हूँ। मैंने चाहता कि मेरी सम्पत्ति है कि इस विषय पर यहां परामर्श करके उक्त ग्रंथोंको बड़े २ नगरोंमें भिन्नशैलीकी योजना शीघ्र करनी चाहिये।

१—मायाव्य रीतिसे हर एक जैन बान्धव

वह कम न हो, ऐसा प्रयत्न करना आवश्यक है। हर एक श्री जिनमंदिरमें शास्त्र समायें अवश्य हों। नहां २ पर विद्वान् रहते हैं, उन्हें सोत्साह इस कार्यमें माग लेना चाहिये। मुझे याद है कि पंडितप्रवर भगवंदजीके समय तक तत्त्वचर्चाका अच्छा आनंद रहता था। परम पृथ्वी सिद्धक्षेत्र सोनागिरजी पर एक शिला “ज्ञानगुदड़ी” के नामसे प्रख्यात है। मेझों आदिमें १-२ घंटा तत्त्वविचार अवश्य होने चाहिये। आजकल गेष्ट उत्सवोंमें विद्वानोंका समागम होने पर भी जनता शास्त्रीय धर्माका आनंद नहीं लेती, यह एक बड़ी चुट्टि है। इसे दूर करना चाहिये।

७—मेरी यह भी सम्पत्ति है, कि साल भरमें एक बार एक तत्त्वविचार सभा हुआ करे। इसका कार्य यह होगा कि विशादकोटिमें आये हुये, या नहीं आये छात्र २ विषयों पर कुछ निविद्वान मापण करें। ऐसे विद्वानोंकी नियत समयसे चार घास पहिले परिपक्व बनें द्वारा की जाय। विषय और स्थानकी सूचना भी एक घास पहले प्रगट की जाय। दिनमें तत्त्वचर्चा और रात्रिमें मापण रस्ता जाय। इस कार्य क्रमसे तत्त्वविचार समाजकी उपयोगिता मनताके लिये अत्यन्त हितकर होगा।



८-इसी तत्त्वविचार प्रसंगमें मैं कुछ नेतृत्वकी लाजसा रखनेवाले व्यक्तियोंके विचारों एवं कुछ पत्रोंके विषयमें भी दो बातें कहना आवश्यक समझता हूँ। अब यह बात तो हर एक धार्मिक पुष्टोंको ध्यानमें रख लेनी चाहिये कि जो लोग जैन धर्मसे मतिरूढ़ लेखनी चला रहे हैं, वे कुछ उसमें मतभेद रखते हीं ऐसा नहीं है, किंतु वे जैन धर्मका सर्वथा लोप करना चाहते हैं, उदाहरण कोई निजी मत भी नहीं है। किंतु सभी लोग भेद-भावको मिटा कर नरक, स्वर्ग, मोक्ष, आदि बातोंके जगहोंको छोड़ कर केवल आर्थिक एवं भौतिक उन्नति द्वारा संसारमें सुखी रहें, यही उनका मत है, ऐसे व्यक्तियोंमें कुछ तो प्रगट हो चुके हैं, और कुछ अभी अस्पष्ट हैं। मैं ऐसे विचारों पर खेद करता हुआ, जैन समाजको सम्मति दूंगा कि वह जैन धर्मको गद्गदपूछसे ऊँचाइ देनेवाले पत्रोंको सर्वथा न खरीदें और न पढ़ें। जैनहितैषी, सत्योदय और जातिप्रबोधक ये तीन पत्र जैन धर्मसे प्रतिकूल चला रहे हैं, सत्योदय और जातिप्रबोधकके लेखोंसे तो एकदम परिणामोंमें आकुलता होने लगती है। इसलिये उन्हें तो हुना भी हानिवर है। अभी कुछ दिन पहिले स्वर्गीय ले.कमान्य तिलकके विषयमें एंग्लो इंडियन पत्र "स्टेडमैन" ने कुछ अपमानजनक शब्द लिखे थे। उसके प्रतिक्रियामें तिलकमक देशने उस पत्रके पोर बहिष्कारके सिवाय उसके खरीदनेवालों तकका बहिष्कार किया था जहां तक दैशिक नेताके विपरीत इतना ध्यान है, तो क्या धर्मको प्राणोंसे प्यारा समझनेवाला जैन समाज अपने

परममूर्ख आचार्योंको और उनकी कृतिको सदा ठहरानेवाले पत्रोंका बहिष्कार करनेक क्रिये तैयार न होगा ! धर्मनिष्ठ समानसे गुस्से बैसी सम्भावना नहीं है।

९-धर्मकी सत्ता ह्मिसर कानूनेके लिये एवं विवादग्रस्त विषयमें निश्चित परामर्श देनेके लिये मुनियोंमें आचार्य और गुरुओंमें गुरुस्थाचार्य रहा करते थे। उन्हींकी आज्ञानुसार धार्मिक प्रवृत्तियोंका पालन होता था। वर्तमान समयमें वह व्यवस्था नहीं है। परन्तु धार्मिक शासनके विना धार्मिक शिथिलता एवं जनताकी अनर्गल उच्छ्वस प्रवृत्ति रुक नहीं सकती। अतएव आगमोक्त मार्गपर धारुढ़ रहनेवाले जैनसमाजके लिये आवश्यक है कि वह विवादग्रस्त विषयोंमें शास्त्रिय परिषदकी सम्मतिको प्रमाणमूल समझे। शास्त्रिपरिषदकी सम्मति कोई स्वतंत्र सम्मति नहीं होगी किन्तु प्रमाण होगी।

१०-धार्मिक ज्ञानकी कमी होनेसे बहु संख्यक ग्रामोंमें धर्मक्रियायें रुक सदा हो गई हैं। नगरोंमें भी शिथिलता देखनेमें आती है। इसके लिये सद्गुणदेष्टा विद्वान् उपदेशकोंकी बड़ी आवश्यकता है। इसकी पूर्ति का सुगम उपाय यह होगा कि विशारद और शास्त्रिय वक्ताओंमें उमका पाठ्यक्रम रक्ता जाय, भाषणकालके लिये उपयुक्त समय रक्ता जाय। यदि उपदेशक विभागाका उचित संगठन हो गया तो उससे अनेक आत्माओंके हित होनेकी पूर्ण सम्भावना है। यद्यपि महासमाजे एक उपदेशक विभाग खोज रहा है। परन्तु योग्य उपदेशकोंकी सृष्टिका अभी तक कोई उपाय नहीं हुआ है।

बिना संस्थाओंको लास विषय और कुछ छात्र उन्हें संस्कार शुद्धिपर पूर्ण दृश्य देना चाहिये निश्चित किये यह कार्य नहीं हो सकता । १२-मुझे एक बात श्रावक श्रेष्ठ सम्मान्य ब्रह्मचारी महोदयोंसे भी कहना धर्म बन्धुओं !

११-मैं एक आवश्यक विषयकी ओर आपका ध्यान आकर्षित करना हूँ । वह है “संस्कार” । बहुत दिनोंसे हमारे यहांसे संस्कारोंके उठ जानेसे हम संस्कारोंकी आवश्यकता और उनसे होनेवाले लाभोंको एतदप मूढ़से गये हैं, संस्कारोंके बिना हमारा कुलाचार मन्द पड़ गया है । बुद्धियोंमें सन्निकश की बमी आ गई है । यदि आज हमारे यहां विद्यारम्भ आदिक संस्कार प्रचलित होने तो अनपढ़ पुरुषोंकी संख्या थोड़ी भी देखनेमें नहीं आती । अनिवार्य शिक्षाके बिना तो हमने दुसरोसे बहुत दिनों तक पास फाये, परन्तु विद्यारम्भ संस्कार द्वारा प्राप्त समिचीन अनिवार्य शिक्षा की ओर जो कि हमारा आवश्यक स्वतंत्र कर्तव्य या ध्यान ही नहीं दिया, अब आवश्यकता है कि हम धीरे २ सभी संस्कारोंका प्रचार करें । कमसे कम यज्ञोपवीत संस्कार जो कि हमारे ध्येय रत्न त्रयका ब्रह्म स्मारकचिन्ह विरोध है, जो हर एक जैन गृहस्थको अवश्य करना चाहिये सभी संस्थाओंके छात्र इस संस्कारसे शून्य न रहें । ऐसा प्रबंध उन संस्थाओंके संचालकोंको करना उचित है । इसी प्रकार इस विषयमें मैं अपनी माताओं और भगिनियोंका भी ध्यान आकर्षित करूंगा कि वे भी अपनी परिपक्व द्वारा बाटनोंके संस्कारोंका प्रचार करायें । सन्तानकी धर्म निष्ठके लिये संस्कार मूलकारण हैं । बाल्यजीवन माताओंसे घनिष्ठ सम्बन्ध रखता है । इस लिये

सम्मान्य ब्रह्मचारी महोदयोंसे भी कहना कि जो ११वीं प्रतिमावारी शुद्धक अथवा ऐलक हैं । उन्हें रेलगाड़ीसे सफर नहीं करना चाहिये । ग्याहर्वी प्रतिमावाले उद्दिष्ट त्यागी हैं । अतएव उनका रेलसे सफर करना शस्त्र निषिद्ध होनेके सिवाय ईर्ष्याभयशुद्धिको भी नहीं खले देता । ऐसे संयमी ग्रामोंमें घूमते भ्रमण करें तो ग्रामवासियोंको स्तुतदेशकी प्राप्ति, पात्रदान, वैद्य-घृत, मोहनशुद्धि, आदि बहुतसी बातोंका लाभ हो सकता है । तथा व्रतियोंकी क्रियायें भी निराकुल पड़ सकेंगी । व्रतियोंको चरणावुयोग शास्त्रोंका पूरा मनन करना चाहिये । मेरी यह भी सम्मति है, कि हर एक गृहस्थको सबसे प्रथम श्रावकाचारका स्वाध्याय करना, नितान्त आवश्यक है । इसके बिना हमलोग प्राथमिक क्रियाओंको भी भूढ़ते जाते हैं ।

११-आजकल जो दिगम्बर और श्वेताम्बरोंमें तीर्थोंका झगड़ा चल पड़ा है, उस सम्बन्धमें मुझे इतना ही कहना है, कि मुझे जहांतक इस परिस्पातिक सम्बन्धका इतिहास मालूम है, दिगम्बरोंकी ओरसे आज तक कोई झगड़ा नहीं उठाया गया है । हां, आने धार्मिक हक्योंकी रक्षाके लिये उन्हें सामना करनेके लिये बाध्य होना पड़ा है । यह कोई उनका दोष नहीं कहा जासकता । इन समय भी जब कि शांति-विधानकी बात निर्णीत हो चुकी थी, फिर भी हमारे श्वेताम्बर भार्योंने नहीं मालूम क्यों दाख कर दी । जिसका हमें खेद है । परंतु साथ



ही हर्ष है कि वे फिर शांतिविधान का बचन दे रहे हैं । हमारे दिगम्बर भाई इस अवसर को भी देखें । अच्छा है यदि परस्पर ही शांति और समझौता हो जाय ।

१४-मुझे अभी एक अत्यावश्यक विषय और भी आपके मामले उपस्थित करना शेष है । मैं इन समय महाविद्यालयकी दशा साधारण रूपमें ही देख रहा हूँ । इसका दिग्दर्शन करनेमें मैं आपका समय नहीं लूँगा । किन्तु उसके सुधारका उपाय यह बतलाऊँगा, कि उसमें प्रवेशिकाकी वक्षायें न रखी जाय । किन्तु उसके नामके अनुसार विशारद और शास्त्रीय वक्षायें रखी जाय । स्थान उपका किसी बड़े शहरमें रखा जाय । बड़े शहरमें चड़े मानेमें बड़े २ छात्रोंको बह्य नागरिक व्यवहारोंका बहुत कुछ अनुभव बिना शिक्षाके स्वयं हो जाता है । जिसकी कि उनके लिये बड़ी आवश्यकता है । छात्राओंकी योजना अच्छे रूपमें की जाय । एक उत्साही विद्वान्को मंत्री नियत कर देना चाहिये ।

१५-जितनी शिकायत मुझे महा विद्यालय सेवकों है उतनी ही परिशालयके विषयमें है । अब तक एक व्यापक परीक्षालय नहीं होगा । जब तक छात्रोंकी पढ़ाईका सित्रसिठा किसी निश्चित रूपमें नहीं आसक्तगा । बम्बई परिशालय का कार्य इस समय श्रीयुक्त मेठ राजनी सखा राम दोशीद्वारा उत्तम चला रहा है । या तो उन्हें ही मारनवर्षीय दिगम्बर जैन परिशालयक मंत्री नियत किया जाय, या किसी दूसरे योग्य विद्वान को । इस कार्यको शांति परिपद अच्छी

तरह कर सकती है । उसीके आधिपत्यसे बरना अच्छा होगा । वर्तमान समयमें जो सरकारी परीक्षाओंकी बाढ़ चल पड़ी है, वह सम्बन्धित विद्याकी समुन्नतिका चिन्ह आवश्यक है । परन्तु इन परीक्षाओंसे छात्रोंकी मित्रताकी योग्यतामें बहुत कुछ कमी रह जाती है । और वेसी अवस्थामें हमारे लक्ष्यकी सिद्धिमें बाधा आती है । इसलिये एक व्यापक परिशालय खोलकर उसकी उपाधियोंसे छात्रोंको विमुक्ति किया जाय, और वे ही उपविश्व प्रमाणरूप समझी जाय । वर्तमान दैशिक अभ्युत्थान भी हमारी समतिता समर्थन करता है । इस परिशालय द्वारा, उन बृद्ध अनुभवी विद्वानोंकी सम्मानित किया जाय जो समानमें तात्त्विक योग्यतासे प्रसिद्ध हैं ।

परीक्षाओंके कन्द्र नियत किये जाय । और शास्त्रीय परिशालय मौलिक भी हो जाय । जिनसे शास्त्राय यथ्यताका परिज्ञान होनाय । तथा शास्त्रीय उपाधि किसी कन्द्रमें छात्रोंको सुगम दी जाय ।

१६-जैन समाजोंके छिये पाठ्य पुस्तकोंके नवीन निर्मागती भी पूर्ण आवश्यकता है । यह विषय पहिले परिपदमें कहा जा चुका है, ऐसा मुझे स्मरण है । परन्तु अभी तक उसका कोई परिणाम दृष्टिगोचर नहीं हुआ है । हिन्दीकी प्रचलित पुस्तकोंमें अनेक खल्लोंके सूफकार ईश्वर बल्लू-३ आदिसे दृष्टिगत होनाते हैं । इस दोषको दूर ना एक छात्रोंमें न तत्त्वोंका सुगमतामें ज्ञान का-के छिये छात्रोंकी भी पुस्तकोंके निर्मागती पूरी आवश्यकता है । शास्त्री-परि



यदका एक यह भी आवश्यक कार्य है कि समानमें जो पुस्तकें या द्रव्य निकलें उनकी जांच की जाय कि वे धर्मानुकूल हैं या प्रतिकूल ?

१७-हमें धार्मिक और आर्थिक दृष्टिसे स्वदेशी वस्तुओंका उपयोग करना परमावश्यक है। शुद्ध स्वदेशी औषधी, वस्त्र, उपकरणआदि सभी पदार्थ स्वदेशी वर्तना उचित है। जैन संस्थाओंके छात्रोंको स्वदेशी वस्तुओंका धारण करना अत्यावश्यक है। यहां पर मैं यह कहना भी उचित समझता हूं कि स्वराज्यके हम भी पक्षपाती हैं। पशुधर्म तो ताकमें रखकर जो स्वराज्य चाहते हैं, व देशके हिंसेपी नहीं किन्तु देशको हानिकर है। धर्मकी रक्षा करते हुए स्वराज्य प्राप्तिमें हमें पूरा योग देना चाहिये। अहिंसा प्रचारमें देश इस समय हमारा साथ दे रहा है इसलिये उसकी ओर जैनियोंको विशेष प्रयत्नशील होना चाहिये।

१८-अन्तमें मैं दो बातें और कह कर अपने भाषणको समाप्त करूंगा। एक तो मटारकोंके विषयमें कुछ कह देना समयोचित समझता हूं। पहले समयमें मटारक महोदयोंसे बहुत कुछ धर्म प्रभावना और सामाजिक मर्यादा रह चुकी है, इतिहास इसका साक्षी है। अनेक महत्त्वशाली संस्कृत ग्रन्थोंके उपलब्ध होनेसे प्राचीन मटारकोंके प्रचुर पांडित्यका परिचय भी महन हो जाता है। इई स्थलों पर शौर्यार्थमें विनय पाकर धर्मका महत्त्व मटारकोंने ही दिखाया है। परन्तु आजकलके बहुत भाग मटारकोंकी प्रवृत्ति शिथिल हो रही है। उनमें ज्ञानकी

मात्रा मात्रा ग्रन्थोंके समझने तककी भी शेष नहीं दीखती, चारित्र्यांश भी जो कुछ शेष है वह केवल प्रतिष्ठाके लिये दिखाने मात्रका है। धर्मार्थ संचित संपत्ति विद्यासिन्हाकी ओर उन्हीं खींच रही है ये ही सब कारण ऐसे हैं जो मटारकोंकी वर्तमान परिस्थितिको दूषित एवं निंद्य बना रहे हैं। मैं उन मटारक महोदयोंको सलाह देता हूं कि वे वर्तमान समयको अपनी आवश्यकताका समय समझ कर अपने सदुपकारों द्वारा जनताको आकर्षित करें। जैनियोंमें चारित्र्यकी मात्रा शिथिल हो रही है, आधुनिक पाव उठते जा रहे हैं। सामाजिक बंधन तोड़नेके लिये कुछ आवाजें उठ रही हैं। ऐसी अवस्थामें आपका कर्तव्य है कि गृहस्थाचार्योंके समान उन्हें धार्मिक दृढ़ता पर स्थित रखें। सबसे प्रथम आपका कर्तव्य यह है कि आप अपने पदस्थानुसार संगमी बनें। आपकी क्रियाएं, आदर्श हों, इन्द्रियों विनयी और संयमी नन-नेसे ही आप जनताको मार्ग बनानेमें समर्थ हो सकते हैं अन्यथा कभी नहीं। दूसरा कर्तव्य आपका यह होना चाहिए कि संस्कृत ग्रंथोंका अच्छी तरह अवलंबन करें। चारों अनुयायियोंका कपसे कम सामान्य ज्ञान आपको अवश्य होना चाहिए। तीसरा कर्तव्य आपका यह होगा कि अविच्छिन्न सम्पत्तिसे सुशिक्षा, धर्मापतनोंकी रक्षा, शास्त्रोद्धार, उदासीन श्रावक समुच्चय आदिक कार्य करें। उद्युक्त तीन कर्तव्योंसे मटारक संगणक जैनियोंके लिये हितकारी और परमावश्यक बन जायगा।

१९-शत्रु परिपक्वा संगठन उत्तम और



व्यापक बने इसके लिये निम्नलिखित कार्य विधानके लिये मेरी सम्मति है। मैं देखता हूँ कि प्रायः सभी प्रांतोंमें शास्त्रियोंका नियम एवं प्रवास है। हरएक प्रांत अथवा कतिपय नगरोंके कार्योंका उत्तरदायित्व उस प्रांतके शास्त्री महाशयको सौंपा जाय। परिषद्के उद्देश्य तथा प्रस्तावोंका प्रचार, वर्ष विरुद्ध बातोंका निराकरण, सामानिक कार्योंमें धर्मानुकूलता, संस्थाओंकी उचित समायोचना आदि सभी कार्योंके लिये प्रांतीय शास्त्रियोंको मंत्री नियत किया जाय। वे स्वयं सुधार कर। और परिषद्के मंत्रीको वहांकी व्यवस्थाकी रिपोर्ट भेजने रहें। समानको परिस्थितिका ज्ञान कराते रहें। इस प्रकार मिन २ प्रांतके शास्त्रियोंने यदि अपना २ मंत्रित्व पूरा किया तो समस्त समानका अभ्युदय हो सक्ता है। शास्त्रियोंका कर्तव्य है कि वे सोत्साहलक कार्योंमें भाग लेवे। उनको शक्तिके सङ्गयोगका यत्न अच्छा अवसर है।

२०-अब मैं अगल मापणको समाप्त करनेके पहिले अपना प्रवास कर्तव्य समझता हूँ कि उन महोदयोंका कृतज्ञ बनूँ जिनकी कि कृपासे यह शास्त्रि परिषद् अपना अधिवेशन यहां कर रही है। स्वागतकारिणी समितिके समाध्यस्त डा० रामस्वरूपजी, उसके मंत्री बाबू रूपचंदजी, शास्त्रि परिषद्के कार्य सचिव पं० दुर्गाप्रसादजी-के कार्योंका आभारी बनता हुआ उन्हें धन्यवाद देता हूँ। मेलेकी शोभा बढानेवाली और प्राचीन शास्त्रोंके दर्शन करानेवाली प्रदर्शनीके श्रमशील उद्योगी मंत्री पं० बन्धैयालालजी वैद्यरामजी भी मैं भूरि धन्यवाद देता हूँ। इसके सिवाय वानप्रस्थके सभी माई खास कर बाबू नरेशकिशोरजी

बकील विशेष धन्यवादके पात्र हैं। जिन्होंने कि इस सम्मेलनमें पूरा २ मास लिया है और समान सुधारका विचार दिया है।

२१-अब मैं परंतु प्रवास धन्यवाद मैं मंगल-सभाके समापति महोदय और महाप्रभोजीको दूगा मिनकी कृपासे महानभा सम्म घा कार्योंके रहते हुए भी इस परिषद्के लिये समय मिला है तथा जिन्होंने परिषद्क कार्योंमें पूरा योग दिया है।

श्री जिनेंद्रदेव उपस्थित महात्म्योंको मुद्विचरके लिये सुसुद्धि प्रदान करें ऐमा भावना करता हुआ अब मैं अपने स्थानको प्रण करता हूँ।

पास हुए प्रस्ताव।

प्रस्ताव १-माणिकचन्द्र दि० जैन ग्रन्थमालामें जो ग्रन्थ प्रकाशित होतेहैं उनके साथमें उनके मंत्रीकी ताकसे ऐसी मूद्रिकाएं होती हुई देली गयी हैं जो कि धर्मविरुद्ध और विवादप्रस्त हैं अतएव यह परिषद् प्रस्ताव करती है कि वर्तमान मंत्री महोदयकी ओरसे कोई भी ऐसी मूद्रिका न लिखा जाय और इस प्रस्तावकी नकल उक्त ग्रन्थमाला क दफ्तारमें भेज दी जाय। प्र० पं० मन्मथलालजी शास्त्री, स० बाबुदेव शास्त्री प्रस्ताव नं० २-यह परिषद् प्रस्ताव करता है कि समस्त दिगंबर जैनियोंमें तथा खासकर त्यागी और छात्रोंमें दिगम्बर जैन ऋषिप्रणिग आगमालसार संस्कारोंका प्रचार किया जाय। प्र० पं० दुर्गाप्रसादजी स० पं० धनलालजी प्रस्ताव नं० ३-सागारचारित्रके विषयमें ११ प्रतिमाओंके स्वरूपको लोग प्रायः अच्छी तरहसे नहीं जानते और उम्के अनुशास प्रायः आचरण करनेवालोंके आचरणमें विभेद रहता है अतः



एव यह परिषद् प्रस्ताव करती है कि कुछ विद्वानोंसे ११ प्रतिमाओंके आचरणको किस प्रकार पाठा जाय इस विषयके आर्थ वचनानुसार निबन्ध लिखवाये जाय और वे निबन्ध निम्न-लिखित विद्वानोंकी रमेशीमें पेश हों.—

पं० पन्नालाल बाकलीवाल, पं० नरसिंहदासजी, पं० दुर्गाप्रसादजी, पं० गणेशप्रसादजी, प्र० शी तल्लप्रसादजी ।

इस तरहकी पुस्तक निम्नलिखित विद्वानोंने लिखना स्वीकार किया और वे निबन्ध ६ महिनाके भीतर परिषद्के दफ्तरमें भेज दिये जायगे ।

पं० वंशीधरजी सोलापुर, पं० जवाहरलालजी, पं० देवकीनन्दनजी ।

प्र०—शास्त्री सत्ताराम दोशी ।

स० पं० वंशीधरजी मोरेना, प्र० पायसागर उगारकर ।

प्रस्ताव नं० ४—प्राय जैन विद्वानोंके खानपान आदिकी शुद्धिमें शिथिलता देखकर यह परिषद् प्रस्ताव करती है कि अपने खानपान आदिकी शुद्धताके उपर विशेष ध्यान दें । प्र० पं० देवकीनन्दनजी स० पं० खूबचन्दजी शास्त्री ।

प्रस्ताव नं० ५—यह परिषद् प्रस्ताव करती है कि मूढ़विद्वितीमें श्री घवल, न्यववल, मह घवल जो ग्रन्थ हैं उनका अभिभाव रहनेके लिये उनकी दश पात्र प्रति होकर बड़े बड़े शहरोंमें तथा संस्थाओंमें रहनी चाहिये इसके लिये महासभा ने जो नमेटो उन ग्रन्थोंको लानेके लिये नियत की है उसका समर्पण किया जाय और इसको नष्ट वहाके पंच व पट्टाचार्यके पास तथा महासभाके पास भेजी जाय ।

महिला परिषद्के प्रस्ताव ।

भारत दि० जैन महिला परिषद्की १०वीं बैठक कानपुरमें ता० २-३ अप्रेलको श्री० पंडिता चंद्राव ईके समभाषित्वमें हुई थी जिसमें पाप हुए प्रस्ताव—

प्रस्ताव नं० १—यह परिषद् आर्थिकाओं और कन्याओंको योग्य धार्मिक और लौकिक ज्ञानमें व्युत्पन्न करनेके लिये एक भारतवर्षीय दि० जैन कन्या महाविद्यालयके स्थापनकी बहुत आवश्यकता समझती है । तथा इसके लिये शोध करनेसे कम एक लाखका फंड इसके कार्य संचालनके प्रबंधार्थ महासभाका दक्ष्यदान चाहती है । यद्यपि महासभाके दयालु पाद्योंने स्त्री शिक्षा सम्बन्धी कितने ही प्रस्ताव समय २५ पर पास दिये हैं । परन्तु अब समय अमली कार्यवाईका है अतएव एक स्त्री शिक्षा विभाग सुचारु रूपसे चञ्चल चाहिये और उसके लिये स्त्री पुरुषोंकी सम्मिलित बनेटी बनाकर कन्या महाविद्यालय खोलना चाहिये । आशा है कि महासभा इन प्रस्तावोंको अपने यहां की अवस्था स्थापन देगे और पास करेगी । प्र० श्री कंकु-चार्दनी सोलापुर । अ० श्री ब्रजवाला देवी-चन्द्रावन ।

प्रस्ताव नं० ३—वर्तमानमें बालविवाह एवं वृद्धविवाहने तो जैन समाजको अप्रद का ही रखा था कि तृतीय उद्भव विधवाविवाहने प्राप्त किया है । यह घृणित्र प्रथा केवल जैनोंको ही नहीं बरन समस्त उच्च जातीय महिलाओंके आत्मवर्द्धको नष्ट करनेवाली है । अतएव परिषद् इस अनुचित कायका घोर विरोध करती है । प्र० समभाषित ।

प्रस्ताव नं० ३-योंकि निम्न समानमे वस्त्रा-
भूषण पहिनेका अधिक चाव रहता है इससे
यह महिला परिपद उचित समझती है कि अपने
देशका घन परदेश न जाकर इसी देशमें रहे और
यह देश निर्धनतासे बचे, इस हेतुसे हमारी
महिने आने देशके बने ही वस्त्राभूषण
पहिनें और अपनी संतानोंको पहि-
नावे तथा मोन शौकमें पढ़ कर देश व
समानका अकल्याण न करें । प्र०-यशोदाबाई
मुंबई आश्रम, अ० कान्पुरबाई बडव हा ।

प्रस्ताव नं० ४-तैत्तिरीय सप्ताथमें कन्याओंके लिये योग्य पाठ्य पुस्तकें नहीं है इसको सम्पादन कराकर प्रकाशित करनेके लिये चर्चा-बाई एवं अन्वयान्य विद्वन्महोदयों और विद्वान्माहोदयोंसे प्रार्थना कर्ता है ।

प्र० सुशीलदेवी-अंबाला श० श्रीराधदेवीई
प्रस्ताव नं० ६-दयोंकि जैन स्त्री समाजमें
शिक्षा प्रदायक संस्थाओंकी अत्यंत कमी है इन
लिए यह परिपत्र प्रस्ताव करती है कि स्त्रियोंके
हर्ष एवं मृत्यु समय जो धर्मादा रकम
निकाही जाय, वह जैन स्त्री समाजमें शिक्षा
प्रचारार्थ खर्च की जाय। तथा निकाहते
समय भी उसी प्रकार उल्लेख कके ही वहीमें
जमा करनी चाहिये। प्र० कुंकुनई।
'अ० कौशलपावाई।

नवीन ग्रंथ तैयार है।

क्षत्रचूडामणी अर्थात्
जीवंधर स्वामी चरित्र ।

अन्वयार्थ सहित अभी ही छाफर तैयार हुआ है। पाठशालाओंके लिये तो अतीव उपयोगी है।
 पृ० ३०० मूल्य कच्चीगिरद १॥॥ पक्की २॥
 पता —

मैनेजर, दि० जैन पुस्तकालय सूरत ।

आपणी पुत्रीओ विषे
विचार ।

(ବିଷୟ:—ଶିଳ୍ପ ନୀତିର ବିଜ୍ଞାନମାନଙ୍କର ଉପାଦାନ)
(ଶିଳ୍ପର ଉପାଦାନ)

સુવાવડો આરડા

દિંદુ સમાજમાં સુવાવડના ધોરણ માટે કામ
પણ બતાવું ખાસ લક્ષ્ય હવું અપવૃત્ત નથી.
પ્રભુતિ માટે પરસાગ કે અદરનો ધોરણ કે ન્યા
બારી કે બળબે પણ હોય નહિ અને હોય તો
હુઆ ધાતી પુરી નાખે છે, એવો ધોરણ પદ
કરનામાં આવે છે. સુવાવડ કરનારા ધાવણની પ-
સદગી કરવામાં પુરો કષ્ટપણ બાગ દેના નથી.
ધોરણ જે ધાવણ કરી લે છે. બાળને સુવા માટે
એક જુનો કાથીનો ખાટો જે ખાસ સધરી
રાખવામાં આવેલો હોય છે, તે કાટનામાં આવે
છે. તેની ધોરણો લખાતી હોય છે, હુમતું તો
પૂછતું નહિ પાધરના માટે એક ચીંધરાની
ધાગડી બાળને પોતે તપ્પાર કરેલી હોય છે
તે પાધરનામાં આવે છે. ઉપર જુનો કાટો
સાથો પાધર છે. ઉઠીકાને બદલે હુઆની બરેલી
કાચળી માથા તળે મૂકે છે અને તેથી ૮૬ પડે
તોપણ ચીંધરાની ધાગડી સિવાય એકનાતું કંઈ
અવાય નહિ. સુવાવડ જેના પ્રસંગ ઉપર કાથીતું
બરેતું ગાંધુ અને ઉઠીકું બરાલી તૈયાર રાખવું
જોઈએ. જોડવા માટે બનુમ કામળી આપરી
જોઈએ. પ્રસંગ થયા પછી માતાને આરામની
બહુ જરૂર છે તેને ખુબ ઉધવાની જરૂર
છે, પણ આવા નમુનેદાર ખાટલમાં સુવાતું
હોવાથી બરામર ઉપ આવતી નથી. પાસાં તપી
ન્યા છે. વળી ધોરણમાં ચોખ્ખી દન ની આરામ
છૂટથી થતી નહોં હોવાથી બાળના શરીરમાં લોહી
તદન ચોખ્ખું બનતું નથી. તેને શક્તી જરૂર
હોવાથી સધરી ધીકતી રાખવામાં આવે છે તેમાં
વળી લમણ સુવા જળવામાં આવે છે એટલે તે
દવા કેરી બનતી દશે તે વાંચનાર પોતે સમજ
લેશે બાળને જવારે આ વખતે ગમ્મદામણ થાય



તો બીજા બેમાં કહેશે કે ગર્ભરામણ તો જલ્દીને
આ વખતે થાય પણ શાથી થાય છે તેનું કારણ
સમજતા નથી. વળી મર્ખ અને અજ્ઞાન બેમાં
પુરુષને તો જન્મજ કહેશે કે તમે આ જન્મતમાં
શું કર્યો, દેવતામાંથી અંગાર વાસુ નીકળે છે
તે માણસને ગુંગળાવી નાખે એવો હોય છે. માટે
તેને બહાર નીકળી જવા બારી કે જાળીઆ
ઉઘાડાં રાખવા જોઈએ. સુવાવડી સ્ત્રીના નજા
શરીરને પ્રાણવાસુ એટલે ચોખ્ખી દવાની ખાસ જરૂર
છે. સારી દવા ન મળે તો લોહી ચોખ્ખું લાલ-
મેળ ન બને એવું આરોગ શસ્ત્ર કહે છે.
સુવાવડીના આરોગમાં ચોક્કસ પણ હોતી નથી
તેથી બિચારીને ધરતી બહાર રહેજ કારણ માટે
જલ્દી પડે છે ને તેના શરીરને બહુજ તુકરાન
પહેંમે છે. પરમા નાનાં છોકરા ધમ્માચક્રી
કરે, તોફાન કરે, રડે, એવી કલજલમાં
ગિચારીને આવા નમુનેદાર ખાટલામાં ક્યાંથી જીવ
આવે !! વળી સુવાવડી ખાંધની ચાકરી કરનાર
ને ખાંધ હોય તે હોંશીઆર, ચાલાક, દવાણુ
અને આ કામમાં માહિતી ધરાવનાર હોવી જોઈએ.
હા. કેમકાર દાહ્યાનજીની છુપા સંસારીક
દુખ દરહોની મોપડીમાં દાખલને ઉપયોગી ધણી
ખાખતો આપી છે, તેમાંથી કેટલીક અહીં
આવવાની જરૂર લાગે છે.

મર્ખ દાખલ સુવાવડી પેટ બહુ અખાડો
હોય તેમ પેટ ઉપર નેર કરે છે એવા વિચારથી
કે બાળકને જલદીથી કમલમાં નીચે ઉતરી
ચકાય. આ અથવા આવી કોઇ પણ બીજી રીતે
નકામું જોર કાઢવાની જરૂર નથી. પોતાની
મજેજ આ કામ થવા કરે છે. દાખલ પોતાના
ગદા દામેજોલું તેજ લગાડી છુપા બાગમાં
દાખલ કરે છે કે તે બાગો પોતાને મોટા થાય.
પણ આ ભુલ છે. મેલાં આગળાં દાખલ કરવાથી
બાળની છદ્મી જોખમમાં આવી પડે છે.

બાળકના જન્મ પછી આગું અન્તર પડ
ગર્ભસ્થાનમાંથી આખું ને આખું નીકળે છે કે
નહિ તે કિસ્સાન દાખલો તપાસ કરતો નથી. જે
આખું ન નીકળે તે નાના મોટા કટા ગર્ભસ્થા-
નમાં મોડી રહે તો માને ધણી વેદના પાછળથી
ખમતી પડે છે. કટા રહેવાથી અતીશય લોહીનું

વહેવું ઘણા મહિના સુધી ચાલે છે અથવા
આવે છે. માટે જોરતુ અંતરપડ ગર્ભસ્થાન
આખું ને આખું છુટું પડી યોની માર્ગમાંથી
બહાર આરતે આરતે કાઢવું જોઈએ. પછી તેણીના
છુપા બાગોપર તદન ચોખ્ખો દવાલ બાંધી ઉપર
એક સખેત પટોળો પાટો બાંધવો જોઈએ. અં-
ગાન દાખલ આવે પાટો બાંધવાનું કામ બાળતી
નથી.

પછી દાખલે કલાકે સુધી ગર્ભસ્થાન સંકો-
ચાઇ રહ્યું છે કે નહિ તે જોવા થોડે થોડે વખતે
ઉપર હાથ સુકો તપાસ્યાં કરવું. જે ન સંકોચાય
તો થોડા વખતમાં લોહી વહે, બરામ અને ગંદા-
વાથી પાણું ધુએ છે. અને માતાની છદ્મી જે-
ખમમાં આવી પડે છે. લોહી અટકાવવા ખાતર
અરગટ નાની દવાતુ મંદસ્થર માને દર તણ
કલાકે પીવડાવવામાં આવે છે. પછી આગમ
ખાતર માતાને સુષ રહેવા દેવી જોઈએ.

જન્મ થયા પછી કલાકાવ આંકે દિવસ
સુધી આંક રહે છે. છઠ્ઠા દિવસથી લોહી નીક-
ળતું નથી પણ ફેકત રસી નીકળે છે. લોહી
ખરામ ગેંધાય તો સમજવું કે અંદરના બાગોમાં
કેર લિપ્ત થયું છે.

જન્મ આપણ પછી કલાકમાં ખામને ઝાડો
પેશાબ થવો જોઈએ. ચાર દિવસ સુધી તો
ખાટલામાંજ સુતાં સુતાં પેશાબ કરવો જોઈએ.
પેશાબ ન થાય તો ગરમ પાણીના શેક પેદા પર
ક વો. ઝડો સાફ ન થાય તો બીજા દિવસે સાંજે
દિવસ આપવું. જ્યાં સુધી લોહી વહેવું હોય એટલે
કે સાંજે દિવસ સુધી તો ખાટલામાંજ મડી રહેવું
જોઈએ. ઝડા પેશાબ માટે પણ ચાર દિવસ સુધી
તો ઉઠવું જોઈએ નહિ. પણ આપણમાં તો
બાળકને તરતજ ખામને સોંપવામાં આવે છે. તેને
છાતું રાખવા કે અન્નમાં ઘોવા કે બાળોતક ઘોવા
પણ ઉઠવું પડે છે પણ આ કામ તેની પાસે
નહીં કરાવતાં ચાકરી કરનાર ખામજેજ કરવું
જોઈએ છે, જે ઉઠે ખેસ વધારે થાય છે તો
ગર્ભસ્થાન ચોખ્ખું સંકોચાય કે પાછળ વળી નામ છે
અને અનેક બિમારીઓ થાય છે.

દાખલ દમેલાં મેલી બાંગળા છુપા બાગોમાં
દાખલ કરે છે તેથી ઝેરીનુંદુષ્કો દાખલ થાય



છે અને ઝેરી તાવ લાગુ પડે છે જો સ્વરસાગ આપણે કહીએ છીએ.

ખોરાકમાં આપણે જેમ સમજીએ છીએ કે જેમ થી વધારે આપાય તેમ સારું એટલા માટે ઝીરે અવડાવવામાં આવે છે. આ ભુલ છે. રા. બળ-રીઆએ વધુને શીખાગણ એ પુસ્તકમાં જુવાન બોલોને માટે ઘણી સારી શીખામણ આપેલી છે. તેમાં ખોરાક વિશે લખે છે કે પહેલાં બે દિવસ તદ્દન હલકા ખોરાક આપવો જોઈએ, કૃષ્ણ, માત્ર, કાંચ, ઝોસામણ, રાખડી અને વખતે પુરી આપી શકાય. પણ ધોમા બોલેલી રોટલી કે શીરો કદી પણ ન આપાય. પછીથી રોજનો ખોરાક આપવો જોઈએ.

રાખણ આ ખાખતમાં પોતાની ફરજ બરોજર બજાવે, કેટલાક બેઝમ કદી નાંખવામાં આવે, એવાને વધારે સગવડ કરી આપવામાં આવે, બાકીને પુરતો આરામ આપવામાં આવે તેજ અંચાવડમાં થતાં મોત બને. પુરુષોએ આ વિષય જરા વધારે ગંભીરતાથી વાંચવાની જરૂર છે, આ તરફ વધારે કાળજી રાખવાની જરૂર છે. નશીબને ખોટો વાંક કાંડી જરૂર નથી.

"Sitting down when tired or overheated or excited to nurse your little one, do not wonder if you have a cross, fretful, and many times feverish child as the result. When under a fit of anger, the mother's milk has many times produced in the child very alarming symptoms or sometimes even caused death."

જ્યારે બાપ ઘણી યાંત્રી હોય, કે ખાસ તાપમાં ફેરાં તળાવ કરી જહારથી આવી હોય તે વખતે જો બાળકને ધરવાવે તો તે ગુસ્સાવાળુ, ચીડીડ ચાલે છે, અને તાવ લાગુ પડે તો કંઈ નવાઈ પામવા જેવું નથી. આ જ્યારે ગુસ્સામાં હોય ત્યારે જો ધરવાવે તો ઘણી વખત જન્મમાં અપકર પરિણમ આવે છે અને વખતે મરી પણ બપ છે. તોડું બાળક જરા રડે કે તેની મા ધરવાવરી. રક્તા બાળકને ખુબ કરવાના બીજા કાંઈ ઉપાય નહિં આપડતા હોવાથી મા તેને બોળામાં ધાલી

ધરવાવના મંડી બપ છે. વારે વારે ધરવાવવાથી હોઝાં મંદુ પડે છે. માતું શરીર ખરાબ ચાલે છે. એક બે મહિના સુધી તો બપને કલાકને આંતરે ધરવાવવું જોઈએ. બે કલાકની વચમાં રડે તો ક્રોધપણ કારણે ધરવાવવાની જરૂર નથી. પણ સાથી રડે છે તેવું કારણ તપાસવું. રાત્રે નર દશ વાગે ધરવાવવું હોય તો સવારમાં જ ધરવાવવું જોઈએ. રાતમાં રડે તો જરા બીલું કોઈ કરવાથી અથવા પાનું બદલવાથી બચવું છાતું રહે છે.

"A well trained baby will have to wring feeding." એ પાડી હોય તો બચવું રાત્રે ધાવવા માગશે નહિં.

ખીજ બાખત એ છે કે આપણાં ઘોડીવાનાં બોળાં ઝેણાં જેવાં હોય છે તેવી ઝેણાં ન જોઈએ. તેનાથી બચવાની પાસળાંએ અને પેટના બીજાં અવયવો બેડ બાજુએથી દખાવે છે. ખરડાની કરોડ વાંછી વળે છે, અને ફેફસાં કખાય છે. આવી રીતે તેના શરીરને ગુસ્સાન પહેંચે છે. માટે ઝેણાં ન રાખનાં માંચી કે કોમકી રાખવી ને સારી છે. માંચી ક ઉપર મજબૂતાની પણ નાંખી શકાય છે. વડોદરામાં ઉગણાં તંદુર-સ્તીના પ્રદર્શનમાં આવી માંચી મુકી હતી. બાળ-કડું શરીર નિરોગી હોય તો રડવું જ નથી, પાનું પણ દરખાજ કરે છે. "It is better for the little one not to be rocked to sleep." ઉંઘાડવાની ખાતર બચાવે હીચીગવાની જરૂર નથી. આરે પણ ઘોડીવામાં મુનાડવાનીયે કદી જરૂર નથી. બચાવે બ્યારે ઉંઘ આવે ત્યારે માંચી ઉપર સુવાણું કે તરતજ ઉધી બપ એવી ટેવ પાડવી જોઈએ. ધરના કામની મોકલણે, બચાવે મા ઘોડીવામાં નાંખી હીચકાની ટેવ પાડે છે. પછી બચવું બ્યારે હીચકા ન મળે ત્યારે રડે જેમા નવાઈ નહિં.

નાનાં હોઝરા પાસે હીચકા નખાવવાથી મમે તેવી નાંખી હોઝરતે હેરાન કરે છે. મોટાં માણ-ઓને હીચકા નાંખવાની ફરસદ ન હોવાથી ધરમાં વડરર ચાલે છે. આ અખતરો સમજીએ કરવા જેવો છે. પછી જુઓ ધરમાં કેવો આનંદ વર્તે છે. બાળ હહેરવાની વધુ માંદિતી માટે ધાત્રી સિદ્ધા, સારી સંતવિ રીગેરે પુસ્તકો દરેકે વાંચવો.

અઘટિત ઘટના ।

વંશુઓ, ઘણીન વિચારના જોગ ઘટનાઓ આનકોલ કેટલીક જાતિઓમાં થવા લાગી છે, કે જે ઘટનાઓનો વિચર કરતા હૃદય ધ્રુજે છે, વાલ્મીકીના દુઃસ્વે હૃદય વપે છે, તે અઘટિત ઘટનાઓના નામ સામલજ્ઞાની સથે આજ્ઞા શરીરના રોમાચ ડાબે છે, અને તેને દરેક જાતિ ધિક્કારે છે, એવી તે ઘટના વાલ્મીકી, વૃદ્ધવિવાહ અને કન્યાવિક્રય છે

અરે ! વિચાર કરો કે મનુષ્ય પર્યાવરણના પુત્ર પુત્રીની ઉત્પત્તિ થાય છે માતા પિતા તેઓને પાછીપોષી મોટા કરે છે, તેઓનું સંરક્ષણ કરતી દાસીને અનેક કષ્ટ તેના માં વાપન મોગવશ પડે છે. અને તેઓ દાસીના કોને સુખ થાય પણ વિચારો કરતા રહે છે. વાલ્મીકીનું હિત રૂચ્યું, તેઓનું રક્ષણ કરવું, તેઓને વિદ્યા સંપાદન કરાવવી, અને છેવટે કર્મલેખ એ છે કે ઉપરલેખક થવા પછી તેઓને યોગ્ય વર વધુને શોધીને યશ સંસારમાં જોડવા, એ મોટામાં મોટી માતા પિતાની પુત્રપુત્રી પ્રત્યે ફરજ છે.

પરંતુ મૂર્ખ અને અજ્ઞાની માતાપિતા પોતાની ફરજ બરાબર અદા કરતા આવડતી નથી. તેઓ પોતાની ફરજમાં મોગમાં મોટી મૂલ્ય કરે છે.

વંશુઓ, વિચાર કરો કે પોતાના જ સ્વાર્થને મટે મૂર્ખા માતાપિતા એવી સાથે વાલ્મીકી વૃદ્ધવિવાહ અને કન્યા વિક્રય કરે છે. માતા પિતા પોતાની નવ દશ વર્ષની વાલ્મીકી કન્યાને વૃદ્ધોને, પછે ૪૦, ૪૫ વર્ષના ઘરાટાઓને આપે છે, અને વાલ્મીકી તેઓની પાસેથી રૂપિયાઓની મોટી રકમ પણ લે છે એ રીતે દીન કન્યાનો વિક્રય કરે છે. આજ નિષ્કૃષ્ટ રીશનો જટમૂળથી કાઢી

નાશવા જોઈએ તેના વડલામાં કેટલીક જાતિમાં પણ એના મૂલ્ય રોપાય છે આનકાંડ આ રીશનો નથી જાતિઓમાંથી નીકળી નવા મામે છે અને કેટલીક જાતિઓએ તેના મૂલ્યને ઉઘેડી નાશવા છે પણ એ એવી જાત છે કે તેમાં આ વળે કુરિયાનોના મૂલ્ય રોપાય છે. ધિક્કાર છે એવા માતા પિતાને કે પૈસાને માટે વાલ્મીકીઓને મહામયાનક એ જડા કુવામાં ધકેલી દે છે અને ધિક્કાર છે એ વિવશ પડે વૃદ્ધોને કે જે પોતાની કામગીરી સંતાઓને પુરી કરવા માટે વાલ્મીકી, દીન અને ગરીબી કન્યાને પાળી તેઓને માથે વિવશાનું અસહ્ય દુઃખ નાશી થોડા વર્ષોમાં મૃત્યુ પામે છે. હવે જો એ વાલ્મીકી વિવશને વાસસારી દીવર જેઠોની સાથે રહેવા મળે છે કે તરત ઉપરાલેખક થવા પછી તે વળે છે અને પાછળથી પાછા તેને દોષ દેવા તૈયાર થાય છે.

વાલ્મીકી સમર્પણી ન શોધાથી, માતા પિતાના હાજ ને વળી પોતાનું હિત ન સમજવાથી તે વિચારી ગમે જ્યાં દોરો ત્યાં જાય છે. “માથ દોરે ત્યાં જાય” એ કહેવત પ્રમણે તેની દશા થાય છે, પણ જ્યારે તે સમજવા લાગે છે, ત્યારે તો તે પોતાના માતા પિતાને શત્રુન ગણે છે. સ્વેચ્છા, એવા માતાપિતા, અને વાલ્મીકી વિવશનો પામો નાશનાશો તમે તે ગરીબી વાલ્મીકીના વૃદ્ધ શત્રુન છો, તમે મોટામાં મોટા પાપ કરનારાઓ અને દુર-વિચારી છો. વંશુઓ, તમે તેના શાપાટે છો ? મિત્ર કે હિતેચ્છુ જે હોય છે સાચાનું મહત્ત્વ રૂચ્યું છે અને દુઃસ્વેથી વચાવે તો વધો તેને તો તમે દુઃસ્વેથી ધકેલી હવે તેના માતા પિતા કે હિતેચ્છુ તરીકે દાવો ચાહો તો વધી વનનાનું નથી વગી તમે કેમ છો ? પાપને ઉત્પન્ન કરનાર જે હોય

તે પાપી કહેવાય છે. બાલ વિવશ ચોરી કરતા, શુદ્ધ ચોલના, હિંસા કરતા, કુશલ સેવના શીલે છે તેથી પાપોની ઉત્પાદક બને છે. દુર્વિચારી કેમ હો? કે માત્રાપે પરણાવતી વસ્તુ અને વૃદ્ધો-૯ પરણતી વસ્તુ જમા ૧૧ બાલકોનું હિત વિચાર્યું નથી તેથી તમે દુર્વિચારી છો.

હવે મલકાપુર (વરડ) કાઠાપુરા અને વંશાઢા (નિમાઢ) ના પોરવાઢ જાતિને ધૂવ સારી રીતે વિચાર-કારવાની જરૂર છે કે:-

આ જાતિમાં એક વ્યક્તિ ૪૦ વર્ષની ૨૫-૨૫માં ૧૦ વર્ષની કન્યા સાથે (૧૨૦૦) રૂપિયા આપીને આવતે વર્ષે ઢરન કરવાનું નિર્ધાર્યું છે । ૫૨જી મુધી કે કન્યાના પિતા પાસેથી કરાનાનું (સ્ટાપ) ૧૧ હુલાવી લીધું છે । ૫૩ી ગ્રેગર વર્ષે એવોન એક વનાવ ૧૧ થઈ ગયો છે.

માટે પોરવાઢ જાતિના પત્નો શું તમે આજ વંદ કરી કંઈ છો? કે સ્વાર્થત માં બીનાનું હિત વેલાનું નથી, કે વેપાર રોજગારમાંથી ફા-સદ મલતી નથી કે છે શું તે સમજાવું નથી. મિત્રામાંથી જાપ્રત ખાઓ, જાતિમાં છતાં અન્યાયો રોરો અને લીન બાલાકાઓને વિધવાની દુ:ખ-રૂપી વેડીથી મુક્ત કરો, તમે પંચ થયા છો વંદેક ન થયા યોગ્ય. કાર્ય થાય તો તેને માટે રૂઢ આપવા તથા જાતિ વહાલ કાઢના સમર્થ છો જતાં ૧૧ જાતિ સુધારવાનો સો વંદે હયાલજ કરતા નથી. નરા વિચારો, સોચ કરો અને ઉપયોગ હિન તપાસી યોગ્ય હોય તે કરો. આ કૃષ્ણ પર જો પંચ ધ્યાન નહિ આવે, વિવાહ વડે નાથ અને ઘોઢા વર્ષમાં માત્ર વશ વિચારી વિવશ થાય તો તે સર્વનું પાવ તમારે સાર છે. એક જાતિ સેવક

પ્રાતિજ દિ. જૈન વોર્ડિંગ ।

ફંડની સ્થિતિ:-આ બોર્ડિંગ ખુશ્લી મ-કાએ લગભગ સવા વર્ષ થયા બાદથી, તેમ છતાં તેના સ્થાપી ફંડ સાર નેધેએ તેવા સંગીન પાયા ઉપર તેની વ્યવસ્થા બેવામાં આવતી નથી. ફંડ સાર ને ટીપ સર, થએલી તે પથ પુરી સમ હોય તેમ લાગતું નથી. આથી મુસોલી એ ઉપસ્થિત થવાની કે બમા સુધી ટીપ પુરી થશે નહિ ત્યાં સુધી બેનેલગ કમીટીએ હરાબ્યા પ્રમાણે બાબત તેઓ બરે તેમ લાગતું નથી. તેથી બે ફંડની કુલ રકમ રૂ. ૩૦૦૦૦૦ ખારવામાં આવે તો પ્રતિવર્ષે લગભગ રૂ. ૧૩૫૦૦ ના બ્યાગનો ફંડને ઘોડા લાગવાનો, અને ટીપના પેસા, સેલ સેલ ના પેસે હોવાથી બોર્ડિંગનું ખર્ચ ચલાવવાને ફંડમાં મારવા પડે તેવી સ્થિતિમાં આવી પડવાનું. ટીપમાં બરાબેલી રકમ અમુક હાતેથી વધુક હરાવાને હરાવ પસાર કર્યો, પણ તેને કપારે અમલમાં મુક્યો તે કોષ બેશીને પુછાવપર બેન-લી રાખ્યો હોય તેમ દેખાય છે । આટલેથી પણ દવે નક્કન થઈ, (૧) બાકીની ટીપ પુરી કરાય (૨) ટીપમાં બરાબેલી રકમ અમુક હાતેથી વધુક કરી એકલ કોષણે કસોબોહાના બને મુજામાં આવે, બાકી રહેલી રકમ ઉપર અમુક તેરીખનું બ્યાગ હરાવવામાં આવે અને (૪) તે બ્યાગ દર વર્ષે એકલ કરવાનો થયેલ કરવા-માં આવે, તો ફંડની રૂ. ૩૦૦૦૦૦ નેટલી ખારવામાં આવેલી રકમને બિલકુલ આંધ બાબ્યા શિયાવ બોર્ડિંગનું ખર્ચ થયે નય. -વિચાર્ય-ગોતી સંખ્યા સરેરાશ ચાલીસ ખારવામાં આવે તો તેમનું પ્રાતિજ ખર્ચ રૂ. ૨૦૦૦ જેણે મળતાં, દર વર્ષે રૂ. ૨૪૦૦ બોગન ખર્ચ લીગેરના આવે. દવે ચાલીસ છાત્રમાં ૨૫ છાત્રા પેટીંગ અને સરેરાશ ૧૫ છે કરાં નોનપેટંગ રાખવામાં આવે તો તેઓની વાર્ષિક શીના રૂ. ૧૨૫૦૦ આવે એટલે શીની રકમ બાદ કરવાં (૨૪૦૦-

૧૨૫૦=૧૧૫૦) ૧૧૫૦] ૩. જોત્તન ખર્ચ વીજ-
રેના આવે. જો ઉપર પ્રમાણે વ્યાજ મેળવતામાં
ખદિખસ્ત કરવામાં આવે તો લગભગ રૂ. ૧૩૫૦
ની આવક થાય. આથી ઉલટી ૧૩૫૦-૧૨૫૦=
૨૦૦] રૂ. ની ફર વર્ષે ખચત રહેશે. હુંકામાં
આથી કાંઈને પશુ બારે ન પડે તેવી રીતે ફંડ
ધીમે ધીમે એકત્ર થશે. વ્યાજની સારી રકમની
આવક થશે, અને ફંડને મિલકતુર આપ આપ્યા
વિના ખોરડિંગતું કાર્ય થએ જશે.

વ્યવસ્થા:—દાલમાં ખોરડિંગની અંતરંગ
સ્થિતિ શી યથ રહી છે તે ચર્ચવાને હું ઇચ્છતા
નથી, પણ એટલું તો મારે કહેવું પડશે કે
દાલમાં જે ખોરડિંગ ઉપર દેખરેખ રાખનારાઓ
છે તેમાંના બહુભાગ જરૂરી અંકગતિવાળા દેખાય
કે. એ દિવસમાં એક દિવસ પશુ ખોરડિંગની
કુલાકાત લેતા હોય ચા તેના હેવાલ જાણવા
જાણતા હોય તોપણ ખોરડિંગનું સદ્ભાગ્ય, અને
તેઓએ કરાવ્ય તેમ કહું હશે તો સેવા થોડમ
ચામુંના ઉપાયો તેમણે લીધા હોય તેમ જાણવું
જરૂરી આવી પરિણામ જોઈએ તે કરતાં ઉલટું
આવે તે દેખાતું છે. સુપ્રિન્ટેન્ડેન્ટ તેમજ હોલ-
ડાયને ખરોખર ચાનક આવે તે સ્વાભાવિક છે;
અને તેથી તેઓ પોતાની ફરજ પ્રતિ દુર્લભ
હેવા પ્રેરાવ તેમાં કંઈ નવાઈ નહિ.

સુખાઇ યુવક મંડળને વિજ્ઞાપ્તિ:—
ખોરડિંગની મેનેજીંગ કમીટી ખરોખર જાણત યથ,
ઉપર પ્રમાણે ફંડની વ્યવસ્થા જેમ અને તેમ
જાણીદે કરે તથા ખોરડિંગની વ્યવસ્થા જાણવાને
ચાંપતા ઉપાયો લે તેવી જાળવણ કરવાનું કામ
એકદમ યુવક મંડળે હાથમા લેવું જોઈએ છે.
તેમનું મંડળ તે પશુ એક પંચ છે; મારે જો તે
મારે તો આ જાળવતાં ખોરડિંગના કાર્યવાહકો
ઉપર બહુ સારી અસર કરી શકે.
જો મેનેજીંગ કમીટીની નજર હોય તો
તેઓએ તેમના મંડળના માણસોમાંથી એક
ખોરડિંગ-કમીટી ચુકી કાઢી, અને તેમાંથી
ખોરડિંગના દિસાજ ખિતાબ વગેરે ઉપર દેખરેખ

રાખવાને એક સેક્રેટરી નિમ્ણ, તે વર્ગીય
સલાહ લઈ મેનેજીંગ કમીટી જે ખર્ચનો અ
(બજેટ) નક્કી કરે તે પ્રમાણે ખર્ચ
ખોરડિંગની વ્યવસ્થા સાચવે એટલેકે ફંડ વગેરે
વ્યવસ્થા મેનેજીંગ-કમીટી કરીને અને તે
જાણે નક્કી કરે તે આધારે ખર્ચ કરી વર્ગી
કમીટી ખોરડિંગની વ્યવસ્થા જાળવી રાખે. સુખી
ની ફરદારી તેમજ હોલડાયના પેટાંગ તોનપે
ગના કાર્મ પાસ કરવા વગેરે ખોરડિંગને લગત
જાળવણીને નિયંત્રણ વર્ગીય કમીટી કરી શકે તેમ હોવું
જોઈએ. યુવક-મંડળ જો ઉપર પ્રમાણે કામ કર-
વાને ઉત્સુકતા દર્શાવે તો હું ધારતા નથી કે મેનેજીંગ
કમીટી પોતા ઉપરનો બાર જોડો કરવાને નાસા
જતાવે. મેનેજીંગ કમીટીને પશુ હું સાચે સાં
વિનંતી કરું છું કે જો ખોરડિંગની વ્યવસ્થા
ખરોખર જાળવી હોય, કાર્યને બહુ સરલ બના-
વવું હોય તો તે મંડળ ઉપર પ્રમાણે કામ કર-
વાની ઉત્સુકતા દર્શાવે તો તે કામ તાતીરે
સોપી દેવાની ઉમદા તક મુમાવરી જોઈએ નહિ.
યુવક-મંડળ સુવરેલા ત્રિચારનું હોઈ તેના ઇન્કાર
કરે તે સર્વથા અસંભવિત છે. મેનેજીંગ કમીટીને
જોતું જોઈએ છે કે યુવક-મંડળ જેવું કાર્ય કરી
શકે તેવું બીજું કાંઈ કરી શકે નહિ. હાલ જે
અસદ્કારની ચળવળને દીવાની રહ્યા છે તે ખરોખર
પુરકોજ છે.

એક જ્ઞાતિ બાંધ

સાદે ચિત્ર ।

સમ્મેદશિખરજી, ચંપાપુરી, પાવાપુરી, માંગીતુંગી,
સોનાગિરિ, મુકાગિરિ, માતકુલી, પાકાગદ,
ગિરનારજી, શ્રી ગોમ્મટસ્વામી, ત્વામી શ્રી પન્ના-
હાલની, મુનિ ચન્દ્રસાગરજી, ત્વામી સમ્મેકન,
વ્રઠ શીવલક્ષ્મણજી આદિકે સાદે ચિત્ર સોસેમેં
જઢવાને યોગ સંપાર હૈં । મૂળ્ય દરદ્રક્ષા સિર્ક
પૃક ૨ આના ।

મૈનેજા:—દિં જૈન પુસ્તકાલય—સુરત

भारत दि० जैन महिला परिषद् की

प्रमुखता

पं० ज्यंदावाई [आरा] का

व्याख्यान ।

कानपुर ता० २-४-२१

मिय समागत भगती गणों

मुझमें ऐसी कोई चोरयता प्रतीत नहीं होती
जिममें मैं आप लोगों जैसी धर्मज्ञ, देशहितैषिणी
वहिनोंकी इस महती परिषद्की समा यक्षा हो सकूँ
तथापि इतना अक्षय है कि मैं आप लोगोंकी एक
सेविका हूँ। और यथाशक्ति सेवा करनेमें किसी प्रकारकी
टुटि नहीं करूंगी। इस परिषद्के दशवें अधिवेशनके
निर्विघ्न कार्य संपन्न होनेके लिये जो आप लोगोंमें मुझे
समापतिका आभेन प्रदान किया है, इसके लिये मैं
कोटिश धन्यवाद देती हूँ। यद्यपि इस प्रकार
मरके योग्य मेरी वयस मेरी बुद्धि एवं मेरा ज्ञान
पर्याप्त नहीं है तो भी आप पुनर्नीया वहिनोंकी आज्ञा
शिरोधार्य करना कर्तव्य समझ कर सेवामें
उपस्थित होती हूँ। इस मृत्यु कार्य के अचोपान्त
निर्वाह करनेमें आप लोगोंकी पूर्ण कृपाका ही भरोसा है।

आमसे दश वर्ष पहले जब कि यह परिषद् श्री
समेद दिगंबरजी परम पवित्र भूमिपर स्थापित हुई थी
उस समय सौ समानमें बड़ा गांव अज्ञानान्धकार छा रहा
था उस समय यह धारा नहीं थी कि परिषद अपना जीवन
चिरस्थायी रख सकेगी अथवा अपने नियमावली कृष्ट भी
समामका सङ्गठन कर सकेगी, परन्तु

परमात्माकी कृपासे यह मय मित्यथा निरुद्धा, इसके
मित्र २ अधिवेशन मित्र २ स्थानोंमें श्री गनन्य शिखर,
दाहोद, अम्बला, उदयपुर, आदिमें यथासाध्य समारोह और उत्साहके साथ हुए,
नदनुकूल आन यहा कमिथरुम भी मन सन्तुष्टके बीचमें कार्य चल रहा है। कानपुर निवसिनी
वहिनोंके इस अर्घ्व उत्सव और सङ्गठनको देखकर बड़ा हर्ष होता है। इस युक्त प्रानमें भी स्त्री
समानके नवीन सुधारकी आशाका सञ्चार होता है। अधिवेशनोंकी बात तो थोड़ी
परन्तु अब दूसरी बात का विचार करना भी आवश्यक है। वह यह है कि परिषदसे स्त्री
समानको कौन २ से लाभ हुए ? इसके नियमोंका प्रतिपालन और संचालन कर्तक समानने किया ?
इसका उत्तर हमको सन्तोषजनक नहीं मिलता। इस विषयमें यही कहना पड़ता है कि अभी तक हमारा वास्तविक सुधार कुछ भी नहीं हुआ है। हम लोग अधिवेशनोंमें एतद्विहित हुई,
प्रस्तावोंसे सहमत हुई परन्तु अपने २ घर जाकर इसके निमामनुकूल नहीं चली इसीका यह प्रतिकूल है कि अविद्या, बाहुविवाह, वृद्धविवाह,
वधूवध, दरिद्रता आदि दुष्ट शत्रुओंके पनेसे अभी तक नहीं निकली हैं। यहा पर यह प्रश्न उत्पन्न होता है कि ऐसा क्यों हुआ,
आज तक महिला मण्डलने अमठी कार्रवाई क्यों नहीं की ? इसका उत्तर केवल इतना ही है कि हमारी समान व्यक्तिगत सुधार नहीं जानती।
इस समय प्रत्येक व्यक्ति यही कहना है कि अकेले हथारे करनेसे क्या होगा ? क्या एक मनुष्यके कुसीति ओढनेसे देशका सुधार